रवि ठाकर री वातां

विश्ववन्द्य भारत री विभूति रवीन्द्रनाथ ठाकुर री वातां रो राजस्थानी अनुवाद

अनुवादिका

रानी लक्ष्मी कुमारी चूंडावत

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी,
उदयपुर

प्रकाशक
डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक
राजस्थान साहित्य अकादमी
उदयपुर ।

प्रथम संस्करण
१९६१

मूल्य
तीन रुपये पच्चीस नये पैसे

मुद्रक
जगन्नाथ यादव
अध्यक्ष
केशव आर्ट प्रिण्टर्स
अजमेर ।

समर्पण

त्वदीय वस्तु गोविन्दे तुभ्यमेव समर्प्यते

प्रकाशकीय निवेदन

*

स्व० रवीन्द्रनाथ ठाकुर की कृतियाँ आज भारतीय वाङ्‌मय में ही नहीं, अपितु विश्व-साहित्य में समादरणीय हैं। विभिन्न भाषाओं में उनके अनुवाद हुए हैं। इतना ही नहीं, कई विद्या-व्यसनी तो रवीन्द्र, शरत् और बंकिम का साहित्य समझ पाने के लिये ही बंगला सीखते हुए देखे गये हैं।

साहित्यकार चाहे किसी भी भाषा में रचना करे, वह साहित्य मात्र उसी भाषा-भाषी क्षेत्र के लिये न होकर समूची मानवता के लिये होता है। इसीलिये उसकी आवाज को जन-जन तक पहुँचाने का दायित्व निभाया जाता है और इसीलिये भाषा और लिपि के एकीकरण की बात सोची जाती है।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने रवीन्द्र-शताब्दी-समारोह के अवसर पर यह आवश्यक और उपयुक्त समझा कि विश्व-कवि की कुछ रचनाओं का राजस्थानी-अनुवाद प्रकाशित किया जाय। प्रस्तुत प्रकाशन उसी निश्चय की क्रियान्विति है। अनुवाद या रूपान्तर का काम वस्तुतः बड़ा कठिन है। भाषाओं का जन्म और विकास वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक आधारों पर होता है। अतः एक भाषा की अभिव्यंजना किसी दूसरी भाषा में पूर्णरूपेण समाहित नहीं हो पाती। फिर भी श्रेष्ठ रचनाओं के अनुवाद किये जाने के महत्त्व से असहमति प्रकट नहीं की जा सकती।

प्रस्तुत प्रकाशन अपने उद्देश्य में कितना सफल रहा है, इस मूल्यांकन की अपेक्षा हमसे नहीं, पाठकों से ही की जानी चाहिये।

डॉ० मोतीलाल मेनारिया
संचालक,
राजस्थान साहित्य अकादमी,
उदयपुर।

सादर अभिवादन

वंग भूमि इस युग में हमारे सारे देश के लिए प्रेरणा स्रोत रही है। प्रारम्भ में पाश्चात्य शक्तियों का वर्षों तक अखाड़ा बना रहने के कारण पश्चिमी वातावरण का प्रभाव सर्वप्रथम बंगाल पर पड़ना स्वाभाविक ही था। अंग्रेजी राज्य में कलकत्ता वर्षों तक हमारे देश की राजधानी रहा। अंग्रेजी साहित्य तथा पाश्चात्य साहित्य का परिचय एवं प्रवेश हमारे यहाँ वंगभाषा के माध्यम से ही हुआ था। आज भी बंगाली हमारे देश की सर्वोच्च विकसित भाषा है।

बंगाल के क्रान्तिकारियों ने ही सर्वप्रथम हमारे देश में स्वतन्त्रता का शंखनाद किया था। हमारा प्रान्त राजस्थान तो वंगभूमि के मनीषी विद्वानों, साहित्यकारों और कलाकारों का सदा ही ऋणी रहेगा। राजस्थान को उसके वीरत्व का भान इस युग में बंगाल ने ही करवाया था। सारा वंग साहित्य राजस्थानी पराक्रम, त्याग और बलिदान से परिपूर्ण है। तीर्थयात्रा के लिए रवाना होने वाले बंगाली बन्धुओं के तीर्थों की सूची में चित्तौड़गढ़ और हल्दीघाटी भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तीर्थ होते हैं, इसीलिए साल की साल सैंकड़ों बंगवासी चित्तौड़गढ़ और हल्दीघाटी को अपनी श्रद्धाञ्जलि चढ़ाने आते हैं। वास्तव में राजस्थान का शौर्य और त्याग अंधकार में विलीन हो रहा था उसको वंगीय बन्धुओं ने प्रकाश पुंज से आलोकमय कर दिया। अपने विक्रम और बलिदान के कारण राजस्थान हमारे देश के लिए ही नहीं बल्कि विश्व भर के लिए आदर्श प्रतीक बन गया।

अपनी वृद्धावस्था में रविबाबू को राजस्थानी वीरकाव्य सुनने का अवसर मिला। वे मन्त्र-मुग्ध की तरह सुनते रहे फिर बोले, 'अपनी जवानी के दिनो में यदि यह राजस्थानी वीर काव्य मुझे सुनने को मिला होता तो मैं अपनी सारी जिन्दगी ही इसी काव्य के उद्धार और प्रचार में लगा देता'। रवि बाबू की इतनी उच्च धारणा थी राजस्थानी वीर काव्य के लिए।

राजस्थान और बंगाल के सम्बन्ध बड़े भावनापूर्ण रहे हैं। राजस्थानी वीरत्व और बलिदान बंगाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के महत्त्वपूर्ण अंग बन गये हैं। वंग भाषा के खास खास साहित्यकारों की कृतियों का अनुवाद राजस्थानी भाषा और साहित्य के लिए अनिवार्य आवश्यकता है। इस दिशा में अपना कर्त्तव्य महसूस कर, विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की शताब्दी समारोह के शुभावसर पर उनकी २१ कहानियों का अनुवाद इस संग्रह में प्रस्तुत करते हुये विश्ववन्द्य महापुरुष की पवित्र स्मृति को तथा यशस्विनी बंग-भूमि को सादर अभिवादन करती हूँ।

अक्षय तृतीया सं० २०१८
लक्ष्मी निवास कॉटेज
बनी पार्क जयपुर

रवि
ठाकुर
री
वातां

सूची

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर

आंधी रा अमला में

'डॉक्टर ! डॉक्टर !'

'जीव खाय गिया, यो ई कोई समै है आवा रो आधी रात रा ।'

आंखियां उघाड़ी तो ठाकरसा दीखिया, दक्षिणाचरण बाबू । चमक ने उठियो । जूनी टूटोड़ी कुरसी खांच ने सरकाई, वांने विराजवा ने कियो । घवरायोड़ो मूडां कानी नाळवा लागियो ।

घड़ी आडी ने नाळूं तो अढाई बजरिया ।

वांरो मूंडो धोळो फट्ट पड़रियो, आंखिया रा डोळा वारै निकळरिया जांणै छटक न नीचे आय पड़ेला । वे घवरायोड़ा कैवण लागा, 'आज पाछो ऊधम व्हेण लागगियो । डॉक्टर, थांरी ओखद कांई कार नीं करे ।'

म्हूं थोड़ोक रुकतो रुकतो बोलियो, 'आप दारू री छाकां क्यूंक वत्ती लेवा लागगिया हो ।' ठाकरसा बोळा ई बेराजी व्हिया । बोलिया, यो थांरा मन रो भरम है भरम दारू नीं, आद सूं अंत तांई थां विगत नीं सुणोला जतरे थांरी समझ में ई नीं आवाने है के ई री जड़ कांई है ।

आळ्या मांयने घासलेट रा तेल री चिमनी री वात्ती टमटम कर री ही, म्हें वीं वात्ती ने छनीक ऊंची कीधी । वाती थोड़ीक वत्ती निकळगी, धूंवो निकळवा लागो । चीड़ री पेटी पै अखबार रो पान्नो बिछाय, डील पै धोवती रो पल्लो न्हाकर म्हूं बैठगियो ।

दखिनाचरण बाबू कैवण ढूकिया, 'म्हारी पैलोड़ी परणी जेड़ी घर गिरस्थी ने सांभगी लुगाई, दीवो ले'र हेरियां लावे। जां दिनां म्हूं छक जवानी में हो। थां जांणो वा औस्था ई एड़ी व्हे। जठी ने जोयो जठी ने रंग र रस ई रस दीखे। म्हारा तो घटता में पूरा व्हेवा ने कविता र सास्तर पढ़ियोड़ा हा। म्हने रैय रैय काळीदासजी रो स्लोक चींता आवतो, 'गृहणी सचिवः सखीमिथः प्रियशिष्या ललिते कलाविधौ।' और तो सो क्यूं ठीक हो पण म्हारी परणी पै वीं ललित कलाविधि री कांई सीख नी चालती। म्हूं तो चावतो रात रिझावण, दिन बतलावण। म्हूं कदी रसरंग री वातां करतो, हेताळू रो हिवड़ो चीर ने बताण लागतो तो वा दांत काडवा लाग जावती। गंगाजी री धारा में ज्यूं इन्दर रो एरावत हैरानगत व्हेगियो हो, ज्यूं वीं री हाँसी सूं टकराय रस सूं भीज्योड़ा रंग सूं भीन्योड़ा म्हारा गीत, दूवा अर गल्लां, चूंध्यो चूंध्यो व्हे उड़ जावता। सांच कैवूं थांने, उणरी हाँसी में गजब री तागत ही।

पछै, आज चार बरस व्हिया, म्हारे एक खोड़ीली मांदगी लागगी। पैलां तो होठां माथै जैरीलो गूमड़ो व्हियो, पछै सन्निपात आयगियो। नरवा में कांई नीं घटियो। धरतियां उतार लीवो। डॉक्टरां ई ना कर दीधो। एक कोई विरमचारी आयोड़ो हो। म्हारे एक लागती रो वीं विरमचारी ने पकड़ लायो। वीं एक जड़ी गायरा घी सागै दीवी। जड़ी ने जस जावो के म्हारा दिन घटता जांने पूरा करणा हा। म्हूं ऊठ बैठियो।

वीं मांदगीं में म्हारी परणी रातदिन ऊभी री ऊभी रैगी। एक पल वा नीं सूती। खावणो, पीवणो, सोवणो कि नीं। म्हारे सिवाय जगत में कांई ज नीं दीखतो वींने। अथाक चाकरी, पूरो परेम देय, रात दिन री दौड़णां दौड़, माँ छाती रे बाळक ने चिपकाय न बचावै ज्यूं म्हारा पराण ने वीं बचाय लीवा। यूं जांणजावो के बारणां पै ऊभा जम रा दूतां सूं वा लड़नी री।

छेवट में जमरा दूतां नै, हारियोड़ा न्हार री नांई म्हने छोड़ न जावणो पड़ियो। जावता थकां वे म्हारी परणी पै हायळ मारता गिया।

जां दिनां वा आसा सूं हो। मरियोड़ी वेटी व्ही। जद सूं ई भांत भांत रा रोग उण रै गैल पड़गिया। पछै म्हूं उणरी चाकरी करतो। वा म्हनें चाकरी करतो देख विचळाय जावती कैवा लागती, 'यो आप कांई करो। मिनख कांई कैवैला। यूं घड़ी घड़ी रा म्हारा ओवरा में मत आवो।'

रात ने म्हूं म्हारा हाथ में पंखी ले यूं झलतो के जाणे म्हूं म्हारे ई ज वायरो कर रियो हूं। वा पंखी हाथ मांयनूं खोस लेवती। म्हूं वीं रा कनै बैठ जावतो, रोटी जीमवाने क्यूंक जेज व्हे जाती तो वीं रो जीव दौरो व्हेवा लागतो। वा

जीमवा री मनवारां करवा लागती। थोड़ीक ई क्यूं चाकरी कर लेवतो तो वा ओळमों देवा लाग जावती। वा कैवो करती, आदमियां ने या अतरी 'अति' नीं करणी चावै।

म्हांको वो बराहनगर वाळो घर तो थांरो देख्योड़ो होसी। घर रे मूंडागे ई ज बाग है, बाग रे मूंडागे गंगाजी वेयरिया है। म्हांका खास ऊठ बैठ रा कमरा नीचे ई दिखणांद कानी थोड़ीसीक जमीं यूं ई ज पड़ी है। वठे म्हारी परणी आपरा हाथ सूं म्हेंदी रा गोड रोप न, वांरी आड कर न फूलवाद लगाय दीधी। आखा ई बाग में एक वा ई ज जायगा ही जावक आंपणा देसी ढंग री। नुवां ढंग रा बागां री नाईं, सुगंध री जायगा भांत भांत रा रंगां रा फूल, फूलां नाम ई पत्तां री मोकळायत, वो में नीं ही। वठै तो आपणी देसी फूलवाद जूही, गोगरा, केतकी, गुलाब रा ठाठ हा। एक मोटो पसरियोड़ो बौळसरी रो रूंख हो। उण नीचै मकराणा रा भाटा रो चूंतरो हो। वा मांदी नीं पड़ी जठा पैलां, दिनऊंगां रा अर संझ्या रा, ऊभी रैय वीं नै धोवावती। ऊनाळा रा दिनां में सांझ रा कामधाम सूं निपट न बैठवा री मरजी री जायगा ही। वठा सूं गंगाजी तो दीखे, पण नावड़ां में स्हेल करवा वाळा ने वा बैठी थकी नीं दीखती।

माचा पै वा घणां दिनां सूं पड़ी ही। एक दिन चैत म्हीनां री चांदणी रात में वीं कहियो, 'घर मांयने पड़ी-पड़ी म्हूं अमूजगी। म्हने बारे बगीची में तो ले चालो। थोड़ी ताळ वठै बैठूंला।'

म्हूं सावचेती सूं हाथ सांभ न वींने बौळसरी नीचै लेय गियो। धीरेकरी चूंतरा माथै सोवाय दीधी। म्हूं तो म्हारी साथळ माथै ई वीं रो माथो मेल देवतो पण म्हूं जाणतो वींने या बात अनोखी लागेला। जो म्हैं तकियो लाय सिरात्यां लगाय दीधो। एक दो एक-दो बौळसरी रा फूल झड़ रिया हा। पत्ता मायनूं चांदणी आय वींरा पीळा पड़ियोड़ा मूंडा पे पड़ री ही। चारूं कानी थिरता ही, सुगंध सूं गेह डंबर व्हियोड़ा अंधारा में बैठियो म्हूं वींरा मूंडा साम्हो चोघ रियो हो। कजाणां क्यूं म्हारी आंखिया जळजळायगी।

म्हैं धीरे धीरे म्हारा दोई हाथां सूं वींरो नवायो हाथ उठाय लीधो। वीं मना नीं कीधो। थोड़ी ताळ यूं ई बैठियो रियो। म्हारा हिवड़ा में हिलोळो सो उठ्यो, म्हारा मूंडा सूं अचाणचक निकळ गियो, 'थारी प्रीतड़ली म्हारा सूं भूलणी नीं आवेला।' म्हूं उणीज वगत चमकियो, या बात कैंवा री नीं पण कैवणी आयगी। म्हारी परणी मुळकी। उणरी मुळक में गरगली पड़ जावे जेड़ी लाज

ही, सुख हो, आणंद हो अर क्यूंक अण भरोसा री लळक ई ही। व्यंग रो तीखो वाढ़ व्हैतो ई अचरज नीं।

म्हारी वात रा पडूत्तर में वीं चूंकारो नीं कीधो पण मुळक ने जताय दीधो के 'नीं भूलोला, या तो व्हेणी नीं। नीं म्हूं एड़ी आस ई करूं।'

वीं मीठी, कंवळी पण कटारी जेड़ी तीखी मुळक सूं डरपते थके म्हें कदी प्रीत री वातड़लियां हिवड़ो खोल न नीं कीधी। उण री पूठ पाछै घणी प्रीतड़ली री वातड़लियां मन में उकळती पर मूंडा पै नीं कंवणी आवती। छापा रा छपियोड़ा आखरां में जां वातां ने पढ़तां पढ़तां आंखियां सूं धारवा छूट जावे वां वातां नै मूंडा सूं कैवा में हंसणों क्यूं आय जावे। म्हारी समझ में यो भेद नीं आयो, अतरी औस्था लेय लीधी तोई।

जीभ सूं कोई कैवे तो उण रो उत्तर पडूत्तर ई देवणी आवै। पण मुळकवा रो कोई कांई जुबाव दे। ज्यूं ई ज वीं वगत म्हने चुप्प रैवणो पड़ियो। अठीने एक कोयलड़ी तो कूकू री झड़ी लगाय राखी। वींरी कूकाट सूं म्हारे हिवड़ा में हूल पड़गी, बैठियो बैठियो सोचवा लागो एड़ी दूधां धोई रातड़ी में म्हारी कोयलड़ी रा कान क्यूं बैहरा व्हैगिया।

घणां घणां इलाज कराया पण वो रोग तो कटियो नीं। डाक्टरां सल्ला दीधी, एक दांण बारै लेजाय हवा पाणी बदलाय दो, फरक पड़ै तो पड़ जावै।

म्हूं परणी नै लेय इलाहाबाद आयो।

अठै आय न कैवता कैवता दक्षिणाचरण बावू ठम गिया, चोज री निजर सूं म्हारा साम्हा जोवा लागा। पछै दोई हथेळियां में माथो लगाय कजाणां काईं सोच में पड़ गिया। आळ्या में घासलेट री चिमनी टमटम कर री ही। कमरा में छांछर मांछर रो भणणाटो सुणीज रियो हो। एकणदम मून तोड़ वे बोलिया—

वठै डॉक्टर हारानचन्दर म्हारी परणी री दवा करवा लागा। घणां दिना इलाज चालियो पण फरक कांई पड़ियो नीं। छेवट में थाक न म्हांने ई थकाय न डॉक्टर जुबाव देय दीधो। 'म्हूं जाण गियो या सूल व्हेण ने नीं, वा ई जांणगी के माचा पै ई वीं ने ऊमर काढणी है।

एक दिन म्हारी परणी म्हने केय दीधो, 'मांदगी तो मिटवाने है नीं, नीं कोई झट कजा आवती दीखै। फेर थां कठा ताईं अधमरी अधजीवी रे लारे थांरो जमारो बिगाड़ो। दूजो वियाव करलो।'

वीं इण वात ने ग्रतरा सूधा पणां सूं कही जांणे वा एक ग्रकल री सल्ला देय री व्हे। कोई त्याग कररी व्हे के कोई वडापणो जताय री व्है एड़ी कोई वात वींरी भावना ने भींटी ई नीं ही।

ग्रवे ग्रोसरो हो म्हारे मुळकवा रो। पण म्हारा में वसी मुळक मुळकवा री सगती कठै ? म्हूं तो उपन्यास रा खास लाडा ज्यूं ठावापणा सूं ऊंचा साद में वोलियो 'जव लग घट में सांस...' वीं वीचे ई म्हारी वात काट दीवी, 'वस, वस रैवादो, वोल्या जोई घणां। थांरी वातां सुण न तो म्हारो मरजावा रो जीव करे।'

म्हूं तुरन्त हार मानवावाळो नीं हो, 'ई जमारा में तो कोई दूजी ने प्रीत करणी ग्रावे नीं।'

सुण ने म्हारी धण जोर सूं हँस दीवी। म्हने वोलतां ने रुकणो पड़ियो।

कजांणा वां दिनां म्हूं मन में मानतो के नीं पण ग्रवे म्हूं मानूं। उण री माचो छोड़वा री ग्रास नीं री जो सेवा चाकरी करता, म्हने थकेलो दीखवा लागगियो, काम-चाकरी करवा रो म्हें ग्राळखो कदी नीं लीवो, पण ग्राखो जमारो मांदा रा माचा री ईस वण ने काढ़वा रो विचार काळजा में कांटा ज्यूं सालतो। चढ़ता जोवन में जदी म्हूं ग्रागली ग्राडी ने भाळतो तो म्हारी जिंदगी म्हने डेडाट करता फूलड़ा जेड़ी लागती जि मांयनूं सुगंध री डंवरां फूट री व्हेती। ग्रवे म्हने म्हारी जिंदगी ग्रथाग, विना छाया री मरुभोम जेड़ी लागी। म्हारी चाकरी रे नीचे लुक्योड़ा थकेला ने वीं देख लीधो दीखतो। म्हूं म्हने नीं समझियो पण वीं म्हने समझ लीवो। जिमें मित्योड़ा ग्राखर नीं व्हे, एड़ी टावरा री पैली पोथी री नाई वीं म्हने वांच लीधो। म्हूं म्हारा उपन्यास रा लाडा री नांई कविता छांटवा लागतो तो वा एड़ी गैहरी प्रीत सूं, कौतक सूं मुळकती के म्हारा मूंडा सूं चूंकारो नीं निकळतो। म्हारा हिवड़ा मांयली वात ने, जि ने म्हूं नीं जाणतो वा ग्रन्तरजामी री नांई जांण जावती। वे वातां ग्रोजूं म्हने चीतां ग्रावे तो कटार पेर ने मरजावा रो मन करे।

डॉक्टर हारान म्हारी जात रा हा। वांरे घरे म्हने जीमवा ने नूंतवो करतो। थोड़ा दिन ग्रावतां जावतां ने व्हियां पछे वांरी वेटी री म्हासूं वा संद-पिछाण कराय दीवी। वेटी कुंवारी ही। व्हेला वरस पनराक री। डॉक्टर कैवता हा के वांरी मरजी माफग वर नीं मिलवा सूं वां हाल विंयाव नीं कीवो। पण वारळां सूं सुणी के लड़की रो कुळ उगणीस वीस है।

ई दोस रे सिवाय लड़की में कांई ज खामी नीं ही। जेड़ी फूटरी ही वेड़ी गुणवंती। भणियोड़ी पढियोड़ी। देखण में, हालण चालण में, पेरण ग्रोढण

में, मान मुलायजा में सब भांत सरावा जोग ही। कदी कदी म्हूं वीं रे लारे वातां करवा बैठ जावतो तो मोड़ो व्हे जावतो। परणी नै दवाई पावा रो टैम ई टळ जावतो। वा जाणती के म्हूं डॉक्टर रे घरे हूं पण कदेई वीं आंख रे फणकारे नीं जतायो के म्हूं मोड़ो क्यूं आयो।

म्हूं जिंदगी रा मरूभौम में पाछी म्रिगतिसणा देखवा लागियो। तिरस लाग री ही। आंखियां रे आगै तीरां तांई भरियौ तळाव उछाळा खाय रियो है। निरमळ सीळो जळ ल्हेराय रियो हो। म्हूं म्हारा मनड़ा री वाग ने खैंचतो पण मन मतंग हाथा बारे भाग्यां जायरियो।

मांदी लुगाई रो कमरो पैला सूं दूणो अणखावणो लागवा लागियो। रोज ई चाकरी में चूकां पड़वा लागी। ओखद पावा में, खुवावा में खलल चालवा लागी।

डॉक्टर हारान म्हने कैवो करता, 'जीं री माचो छोड़ावा री आस नीं, वीं री मरजावा में ई मुगती है। वांरे जीवता रियां नीं वे सुखी रै नीं घरवाळा सुखी रै।'

चालती वात में यूं कैय देवता जदी तो कोई वात नीं पण म्हारी परणी आड़ी इसारो करन नीं कैवणो चावतो। जीवा मरवा री वातां में डॉक्टरां रो मन भाटा री नाईं करड़ो पड़ जावै। अतरो ठूंठ व्हे जावे के वे समझै ई नीं के मांदा मिनख रा घरवाळां ने कस्यो अबखो लागतो व्हैला।

एक दिन म्हें पागती वाळा कमरां में सुणियो, म्हारी परणी कैय री ही, 'डॉक्टर सा'ब, क्यूं दवायां पाय पाय हकनाक खरचो लगावो। मांदगी छूटवा वाळी तो है नीं क्यूं नीं म्हने एड़ी दवाय दो के जीव निकळ जावे। म्हारी मोखस व्हे जावे।

'राम राम! एड़ी वातां नीं करणी।'

सुण न म्हारा काळजा में खटको पड़ियो, चित्त भंग व्हेगियो। डॉक्टर परा गिया तो ढोल्या री ईस पै जाय न बैठ गियो, परणी रे माथै हाथ फेरवा लागो। वीं कियो, 'अठे तो तपरियो है। थां वारै जावो। थांरै टैलवा ने जावा रो वगत व्हैगियो। थोड़ी देर टैल आवो तो भूख लागै तो क्यूं जींम चूंट लेवोला।'

टैलवा ने जावा रो अरथ हो डॉक्टर रे घरे जावणो। म्हें ई ज वीं ने समझाय दीधो टैल न आया भूख खुल जावै। अबै म्हूं भरोसा रै साथै केवूं के वा म्हारा ईं रोज रा आळखारो मरम समझती। म्हूं ई ज अजांण हो जो वीं ने भोळीढाळी जाणतो।'

अतरी वात कैय दक्षिणाचरण बाबू हथेली पै माथो टेक न छाना माना बैठा रिया। पछै वोलिया, 'एक गिलास पाणी पावो, तिरस लागी है।'

पाणी पी न कैवणो मांडियो,

एक दिन डॉक्टर री बेटी मनोरमा म्हारी परणी सूं मिलवाने आवा रो कहियो। राम जाणे क्यूं म्हारे या बात मन नीं भाई। नटूं जेड़ी बात ई कोयनी ही। एक दिन, दिन आंथ्यां री वा म्हांके अठै आई। वीं दिन म्हारी अस्त्री री और दिनां सूं मांदगी बत्ती ही। जि दिन मांदगी जोर पै व्हेती उण दिन वा घणीज मांत रैवती। बीचै बीचै मुट्ठियां भींचाय जावती, मूंडो नीलो पड़ जावतो। यां ऐंठताणां सूं ई कष्ट रो वेगो पड़तो। कठी ने ई कोई खड़खड़ाटो नीं हो। म्हूं माचा री ईस पै छानो मानो बैठ्यो हो। वी दिन उण में अतरी आसंग नीं ही कै म्हनें टैलवाने जावा रो कैवती के कष्ट बत्तो होवै री वजै सूं मन में चावती व्हेला के म्हूं कने बैठियो रैवूं। आंख में चमको नी पड़े ज्यूं लालटैण ने बारणा रे ओले गाल दीधो हो। कमरा में अंधारो हो, सुणसाण व्हेरियो हो। बीचै बीचै पीड़ा ओछी पड़ियां वीं रो गैरो सास सुणीज जातो हो।

ठीक वीं वेळा मनोरमा आय बारणां कनै ऊभी री। पसवाड़ै पड़िया लालटैण रो चानणो वींरा मूंडा पै पड़ियो। वीं अंधारा रे मांयने कांई दीख्यो नीं जो वा ऊभी ऊभी अठीने-वठीने झांक री ही।

म्हारी परणी चमकी। म्हारो हाथ पकड़ न पूछ्यो 'या कुण है?' निबळाई में एकदम अणजाण मिनख ने देख न वा डरपगी। पावणो तो नीं बोलणो आवणियो हो पण दो तीन दाण पूछियो।

'या कुन? या कुन?'

म्हारा सूं एड़ी जबरदस्त भूल व्ही के म्हूं झट वेगी री कैय दीधो, 'म्हूं तो नी जाणूं।' लकन मूंडा बारे निकळियां ई हा के जाणै कोई मन पै लाकड़ी वाही, दूजै ई पल म्हूं बोलियो, 'अरे ऐ तो आंपणै डॉक्टर साब री बेटी दीखे।'

म्हारी परणी एक दाण म्हारा मूंडा साम्ही विस्वास सूं आंकी। म्हारा सूं आंख उठाय ने वींरे साम्ही देखणो नीं आयो। दूजै ई पल वा धीरे धीरे बर में आयोड़ी पांवणी सूं बोली, 'आवो मांयने आवो।' म्हारा सूं बोली, 'लालटैन तो ऊंची करो थोड़ी।' मनोरमा मांयने आय न बैठगी। वीं रे साथे वा धीमे धीमे बातां करवा लागी। अतराक में डॉक्टर ई आयगिया। लारे वे ओखद री दो सीसीयां लेता आया हा। वां दोई सीसीयां ने म्हारी अस्त्री ने झेलाय न कहियो, 'ई लीली सीसी में तो मसलवा री दवाई है, ई दूजी सीसी में पीवा री

डॉक्टर पंप ले न आवे आवे जतरे तो पींजरो खाली पड़ियो हो ।'

दक्षिणाचरण एक दांण फेर पांणी पीधो, 'ओह, तपत घणी ।' यूं केय वै वारै बरामडा में जाय थोड़ा टैल, ठंढा व्हेय न मांयने आया । परतख दीखरियो के वे कांई कैवणो नीं चावे पण कोई मांडाणी वां मू कैवाय रियो है ! वां पाछी वात मांडी ।

मनोरमा ने परण न म्हूं पाछो घरे कलकत्ते आयो । मनोरमा वीं रा बाप रा कैवा सूं म्हनें परणी ही । पण जदी म्हूं वीं सूं लाड प्यार री वातां कर, वीं रो अर म्हारो हिवड़ो एक करणो चावतो तो नीं वा हँसती नीं मुळकती । ठावीं ठावी बैठी रैवती । म्हनें कांई ठा पड़ती के वीं रा चित्त में कांई कांटो है ।

यां दिनां म्हें दारू पै घोड़ा उठाय दीधा । सरद रूत लागी ज ही, दिन आंथियां रा म्हूं मनोरमा रे लारे बराहनगर वाळा बाग में टैलरियो हो । अंधारो गैंहरो व्हेतो जायरियो हो । पंखेरूवां रा पांखडा रा फड़फड़ाटा अबै घूंवाळा मांयनूं नीं सुणीज रिया हा । आड़ापाड़ा रा रूंखा री डाळां वायरा सूं हाल री ही ।

टैलतां टैलतां थोड़ीक थाकगी जो मनोरमा वीं बौळसरी वाळा चूंतरा पै वांवटया रो सिरांणो लगाय न, डोडी व्हेगी । म्हूं ई भड़ै जाय न बैठगियो ।

अंधारो छायगियो । वठां सूं तारां छायो आभो दीखरियो हो ।

वीं दिन सांझ रा म्हारी दारू री छाक लियोड़ी ही । आंख में कुछ रगत ही । रूंख री छाया नीचे, पीळा रंग री ओढणी ओढयां, ढीळांग कांमणी री काया, म्हारा हिवड़ा ने उथल पुथल कर दीधो । म्हने लागियो, या वा छाया है जो कदी वांह्यां में नीं वांवणी आई म्हासूं ।

अतराक में रूंखा री छाया में वासदी रो गोळो दीखियो । अंधारा पख रो बूढो, पीळो चंदरमा पूंवासियो । धीरे धीरे चालतो वो रूंखा रे मथारे आयगियो । धोळा मकराणां रा भाटां पै सूती भांमण रा मूंडा पै किरणां पड़ीं । म्हारा सूं नीं रैवणी आयो । दोई हाथां सूं वीं रा हाथ पकड़ न बोलियो, 'मनोरमा, थूं म्हारा पै भरोसा नीं करै पण म्हूं थनें प्यार करूं । जीव मूं चावूं थनें । थारी प्रीतड़ली म्हारा सूं कदी भूलणी नीं आवेला ।'

मूंडा सूं ये लफज निकळतांई म्हूं चमक गियो । चीतां आयो, या ई ज वात म्हैं एक दांण किने ई एकने ओरने ई कही ही । वींज वेळा हा''' हा हा '' हा कर न कोई हँस्यो । वीं बौळसरी रा रूंख, ऊपरे व्हे, अंधारा पख रा पीळा खाडा चंदरमा रे नीचे व्हे, गंगाजी रा ईं तट सूं लेय पैला तट तांई वा हँसी सण '' ण

करती निकळगी। जांणै कोई ठट्ठा लगाय न हँस्यो व्हे। राम जांणै वा काळजो चीरणी हँसी ही के आभो फाड़णी ही। म्हूं तो भांफ खाय न चूंतरा सूं नीचे गुड़क गियो। चेतो आयो तो कमरा में पड़ियो हो।

मनोरमा पूछ्यो—'थां रे अचाणचको व्हे कांई गियो ?'

म्हारे धूजणी छूटगी, कियो —'थैं सुणियो नीं ! हा....हा .. हा....हा करती एक हँसी आभा रे अड़तां आरपार निकळगी।'

वा हँसवा लागगी—'वा हँसी थोड़ी ही। ओळमभोळ व्हिया सारसां री ओळ उडी ही। म्हें वांरा पांखड़ा रो फड़फड़ाटो सुणियो हो। थां छनीसीक वात सूं ई डरप जावो।'

दिन में तो म्हनें ई पतियारो आयगियो के वा पंछियां रा उड़बारी ज अवाज ही। ई रुत में उत्तराध सूं कूंजा नंदी रा कांकरा चुगा ने आवो करै। पण ज्यूं ई दिन आंथमतो, म्हारो वो भरोसो परो जावतो। म्हारे तो मन में जमगी के चारूंकानी रा अंधारा में वा हँसी वळियोड़ी है; कजांणां कि वगत अंधारा नैं चीर आभ में वा हँसी गूंजवा लाग जाय। म्हूं डरूं फरूं रैवतो। अठा तक के अंधारो व्हेतां ई मनोरमा सूं बोलवा री छाती नीं पड़ती।

एक दिन, बागवाळी कोठी ने छोड़, मनोरमा रे लारे बोट में बैठ स्हेल करवा गियौ। पोस रो म्हीनो हो। नंदी रा ऊरळा भुरळा वायरा में आय म्हारा मन रा डर भौ निकळ गिया। नराई दिन आणंद सूं निकळिया। चारूं पासे परकरती आप कलोळां कर री ही, परकरती ने खुलदस्त खेलतां खावतां देख मनोरमा ई आपरा हिवड़ा री खिड़कियां बारियां खोलवा लागी।

बोट, गंगाजी र धारा ने छोड़ पदमा नंदी फंटी जठी ने जाय पूगियो। वा गजवण पदमा, हेमंत रुत री बांबी में पड़ी नागण ज्यूं, माड़ी, दुबळी व्हियोड़ी नींद में सूती अळेटा खाय री ही। उत्तराध तट माथै रेतरड़ो ई रेतरड़ो पड़ियो हो। नीं तो तिगकलियो ई ऊभो दीखतो हो नीं मिनख रो जायो। दिखणांद रा तट पै, नान्हा नान्हा गांमा रा आंबा रा बाग वीं डाकग पदमा रे मूंडागे हाथ जोड़्यां थर थर धूज रिया हा। पदमा री नींद टूटतांई जो ई पसवाड़ो फेरियो तो तटां री धरती धमाका करती ढस पड़ेला।

टेनगा घूमवा रो मजो ई अठे है। म्हें बोट रो वठे लंगर न्हकाय दीधो। एक दिन म्हां दोई जणां घूमता टैलता नराई दूरा परागिया। देखतां देखतां सूरज बापजी अस्ताचल पधारगिया। चांदणां पख री रूपो उछाळती चांदणी छटकगी।

नजर पसरे जतरे घोळी धोळी रेत पे, चांदणी वींरा पूरा रूप अर जोवण ने ढाळ दीवी। म्हांने लागवो लागो, चन्दरलोक रा सपना रा देस में म्हां दो ई दो विचर रिया हां। राता रंग रो दुसालो, मनोरमा रा माथा सूं खसक न मूंडा पे आय रियो हो। पल्लो नीचां तांई लटक रियो हो। गैहरो सणणाटो व्हेगियो, अणपार चारूं दसा में चाँनणी सिवाय काँई नीं दीख रियो हो। मनोरमा दुसाला वारे हाथ काढ़ न धीरेकरो म्हारा हाथ नै मसकाय दीवो। म्हारा सूं अड़ न ऊभी रैगी, तन, मन, जीवन, जोवन रो सैग भार म्हनें सूंप न ऊभी रैगी। म्हूं आणंद सूं उछळता मन में सोचरियो, घर रा वाड़ा में जड़िया थका ई कोई मन भर प्रेम करणी आवें कांई। चौड़ा चौगान अणंत आभा रे सिवाय दो प्रीत छकियोड़ा मनड़ा रे मावा री जायगा ई दूजी कसी है? लागवो लागियो, म्हांके घर नीं बार नीं, पाछो कठे ई जावणो ई नीं। यूं हाथ में हाथ लीवाँ, बराबर चलियाँ जावणो है। कठै? खबर नीं। बस चलियाँ चालणो है। चालतां चालतां पाँणी रा एक खाडा कनैं पूग गियां, चारूं पासे रेत रा टीबा बीच में पाँणी। पदमा सरक गी ही, थोड़ी दूरी वैवा लागगी जो पाणी अठै भराय गियो हो।

रेत रा टीवा बीचै थिर तळाई रा पाणी पे चानणी री एक लांबी ओळ अचेत नींदा में पड़ी सूती ही। अठै आय न म्हां दोई ऊभा रैगिया। मनोरमा कजाणां कांई सोच म्हारा मूंडा कानी झांकी। वीं रा माथा परळो दुसालो खसक गियो। चाँदणी सूं चमकता चांद जेड़ा मूंडा ने पकड़ र ज्यूं ई म्हें होठ अड़ायो न वीं निरजण मरूभौम में एकणदम कोई तीन आवाज लगाई 'या कूण, या कूण, या कूण?'

म्हूं चमक गियो, मनोरमा धूजगी। पण दूजे ई पळ म्हैं दोई जाणगिया के या मिनख री बोली नीं, पंछी री है। नंदी रा रेता में विहार करणिया जळ रा पंछी कुरळाया है। रात रा सूना में अणचींत्या मिनखा ने देख वे चमक गिया है।

म्हां चमक न, डरप न, आगता आगता वोट कानी पाछा फिर गिया। रात घणी परी गी ही। वोट में आवता ई म्हूं विछाणा पै जाय पड़ियो, पड़ताई नींद आयगी। मनोरमा ई थाकगी जो पड़ताई सोयगी व्हेला।

आधी रा अमला में अंधारा में कजांणा कुण मच्छरदानी कने आय ऊभी री। लांबी, पातळी, लोही मांस रो नाम नीं, कोरी हाडकी री एक आंगळी सूती थकी मनोरमा कानी कर म्हारा कान रे कनै आय छाने छाने घड़ी घड़ी री पूछवा लागी, 'या कुण? या कुण? या कुण?'

झटदेणी रे ऊठतां ई म्हैं दीवासळाई वाळ दीवो सळगायो। दीवो वाळता ई गायब। म्हने लाग्यो म्हारी मच्छरदानी धूजावती, वोट ने हलावती, पसीना सूं भींज्योड़ी म्हारी देही रा लोहिया ने जमावती, हाःहा·हाःहाः हंसती, सैंपट्ट भागगी। पैला वा पदमा रै पार व्ही, पछै रेता ने पार कीधो, पछै आखा देस रा गामा ने, सहरां ने, परवतां ने, चौगानां ने पार करती गी। देस देसान्तर, लोक परलोक ने पार करती झीणीं झीणीं व्हैती उड़ती गी। म्हने लागियो वा जीवण मिरतु रा देसां ने ई पार करगी। वींरी अवाज झीणीं व्हेती गी, व्हेती गी। अतरी झीणीं अवाज म्हैं कदी नीं सुणी नीं सोची। म्हारा माथा में जाणे वा अवाज भरगी। वा अवाज झीणीं झीणीं व्है कठै री कठै परी गी, पण म्हारा माथा ने छोड़ियो नी। छेवट में कायो व्हेगियो, नींद आई ज नीं तो सोची दीवो बुझाय र सोवूं तो आंख लाग जावै। दीवो बुझाय न सूतो न वा मच्छरदानी कने आय ऊभी रैगी। रूंध्या कंठ सूं म्हारा कान रे कने आय वोली, 'या कुण ? या कुण ? या कुण ?' म्हारी देही रो रूम रूम वीं ताळ पै ताळ लगाय बोलवा लागियो, 'या कुण, या कुण, या कुण ?

वीं सूनी रात में जाणै म्हारी घड़ी सरजीवत व्हैगी. वा ई वींरा कांटा ने मनोरमा री आडी ने कर ताळ पे ताळ देवती बोलवा लागी, 'या कुण, या कुण, या कुण ?'

कैवतां कैवतां दक्षिणाचरण बाबू रो मूंडो पीळो पड़गियो, कंठ रुभ गियो। म्हैं वां रा डील रै हाथ अड़ायन कहियो, 'पाणी पीलो।'

अतराक में म्हारी चिमनी दप दप करन बुझगी। निजर बारै पड़ी तो सन्दूरी फूटरी, कागला वोलरिया, तूती सीट्टी देयरी। घर आगली सड़क माथे भैंसागाडी रा पेड़ा खड़ खड़ करिया। उजाळा में देखिया तो दक्षिणाचरण बाबू रा मूंडा रा भाव बदलियोड़ा दीख्या डर रा के कोई संका रा अैहनाण मूंडा पै नीं हा। रात रा माया जाळ में, वैम री धुत्त में जो वां अतरी वातां कैय दीधी ही जो मन में उणां नै ओलज आय री ही। मन में वेराजी व्हैरिया दीखता जो सिस्टाचार री काईं वात नीं कीधी। ऊठ ने परा गिया।

दूजे दिन कोई आय न आधी रा अमला में म्हारो आडो भड़भडायो, 'डॉक्टर, डॉक्टर !'

डाक बाबू

नौकरी लागतां ई डाक-बाबू ने ओलापुर गांम में आवणो पड़ियो। छोटोसो क गांमड़ियो। कने ई ज नील री एक कोठी ही। उण कोठी रे सा'व घणी कोसीसां कर कराय अठे डाकखानो खोलायो।

डाक बाबू नान्हापणां सूं ई कलकत्ता में मोटा व्हिया। पाणी री माछळी ने किनारा पे न्हाक दे र उणरी दसा व्हे वा दसा ई गांमड़िया में आय डाक बाबू री व्ही। एक अंधारी ओवरी में दफतर हो। कनैई सूगला पाणी रो नाडो भरियो हो अर चारूं पासे कांकड़। नीलरी कोठी में जो अेलकार गुमास्ता वगैरा काम करवा वाळा हा उणां ने वगत ई कठै के बैठै-ऊठै, वात करे। उणां ने भला आदमी मिलवा जुलवा काबिल ई नीं समझे। खासकर कलकत्ता में मोटा व्हियोड़ा छोरा तो ऊठवा बैठवा वात करवा में समझे ई नीं। अणजांणी जगा में जाय के तो वे बांडा बावळा चालवा लाग जावे के अणमणां मूंडो चढाया बैठा रै। ईं ज वजै सूं गांव रा लोगां साथे डाक बाबू री ऊठ बैठ नीं व्ही। उण रे कनै काम-काज ई कोई घणो नीं हो जो उण में लागियो रैवे। कदी कदी कविता लिखणे री कोसिसां करतो तो बस यूं जसातो के जांणै रूंखड़ा रा हालता पानड़ा देखवा में, आभा री वादळियां ने देखवा में ई ज सुख है। रात्यूं रात जै कोई कैंणी मांयलो दैत आय वां ओळवार लागियोड़ा रूंखड़ा नै काट मोटी सड़क बणाय देतो, वीं सड़क रै दोई आडीने मोटा मोटा पावया घर चुण जावतो तो सांच कैवूं डाक बाबू ने जांणे नवो जनम मिलजावे।

डाक बाबू री तनखा घणी थोड़ी । हाथां सूं पोय न खावे । गांम री एक मां बाप बायरी छोरी आय हाथहीड़ो कर जावे । वीं ने ई दो रोटी देय देवे ।

छोरी रो नाम रतन, बारा तेराक बरसां री व्हेला । ब्याव रो कोई सतूनो दीखतो नीं ।

सांझ री वेळा गुवाळियां रा घरां सूं गैरो गैरो धूंवो निकळतो, चारूं कानी भींभरी झणकारा लेग लागती, गांव रै बारे गौरमां में नसो कीवां छोरां री टोळी ढोल मंजीरा बजाय गावा लागती अंधारी ओवरी में बैठा अकेला डाकबाबू रा जीव में ई झोला खाता रूंखड़ा ने देख ताड़ातोड़ी लागती तो घर रा कूणां में दीवो बाळ डाक बाबू हेलो पाड़तो, 'रतन' ।

रतन बारणा आगे बैठी बुलावा री वाट नाळती रेती । पण एक दांण हेलो पाड़ियां मांयने नीं जावती, पूछती 'कांई है बाबूजी, क्यूं बुलावो ?'

डाक बाबू कैवतो, 'थूं कांई कर री है ।'

रतन कैवती, 'चूल्हो बाळवा जाऊं रसोड़ा में ।'

डाकबाबू कैवतो 'रोटी पछे करजे, जा पैला हुक्को भर लाय दे ।'

थोड़ी देर मे दांई गाल फूलाय चिलम पै फूंक देती रतन मांयने आवती ।

हाथ मांयने सूं हुक्को ले डाक बाबू झटदेणी रो पूछतो 'है, रतन, थनें थारी मां याद आवे ?'

उण री मां री कैणी घणी लांबी है । थोड़ी घणी याद है थोड़ी घणी चित्तां उतरगी । मां बिचै ई बाप उणरो बत्तो लाड राखतो । बाप री थोड़ी थोड़ी वीं ने याद है । मजूरी कर दिन आथियां रा बाप घरे आवतो, वां मांयली कोई सी क संझ्या उणरा मन पै तसवीर ज्यूं मंडियोड़ी है । कैणी सुणाती सुणाती रतन डाक बाबू रा पगां कनै आंगणे बैठ जावती वीं ने याद आवती, वीं रे एक छोटो भाई हो । घणां दिनां री वात है, चौमासा रा दिनां में तळाई माथे दोई भाई बैन मिल न डाळी रो मच्छी पकड़वारो कांटो बणाय अन्यामन्या रा माछळा पकड़ वारी रम्मत रमता । घणी सारी मोटी मोटी वातां में सूं एक या खास वात वीं ने घणी याद आवे । यूं ई वातां करतां करतां कदैई घणी रात परी जाती तो डाक बाबू रोटी बणावा रा आळगस कर जातो । सुवै री जो बासी दाळ साग बची रैवती, रतन चूल्हो सुलगाय दो चार रोटी पोय ले आती, दोय जणां पेट वीं सूं भर लेता ।

कदै ई कदै ई संझ्या रा ओवरी रा कूणां में दफ़तर रा पाटा पै बैठ डाक बाबू ई आपरा घर री वातां करतो, छोटा भायां री, मां री, बेन री, पराया गाम में अकेला घर में पड़िया लगाने जिणा री याद आवती उणांरी वातां करतो । जो वातांरैय रैय मन में आवती, जां वातां नै नील कोठी रा गुमास्तां सूं, लोगां सूं ई नीं

कैवणी आवती। वां ई ज वातां-ने छोटीसीक अणभणी छोरी ने कैवणो खोटो नीं लागतो। अठा तक व्हैगी के वातां करती वेळा छोरी डाक बाबू रा घरवाळा ने मां, जीजी, भायो, कैवा लागगी, उण रा छोटा सा मन रा पाठा पै वीं कल्पना सूं उणांरी तसवीरां मांड लीवी।

एक दिन चौमासा रा दिनां में वादळा नीं हा, साफ दुपैरी ही, नवायो नवायो सुवावणो वायरो वाज रियो हो। वनसपती मांयनू सोरम आय री ही। यूं लागरियो हो जांणे धरती री छोड़ी लगी ऊनी ऊनी सांस डील रे आय अड़ री है। एक वादीली चिड़कली भरी दुपैरी में, कुदरत रा दरबार में आपरी सारी सिकायतां री गळगळी व्हे घड़ी घड़ी फरियाद कर री ही। डाक बाबू कनै कोई काम नीं हो। मेह सूं धुपियोड़ा रूंखड़ा बरखड़ा, हालता कंवळा कंवळा पानड़ा, म्हेल माळिया जेड़ा धोळा धोळा वादळा तावड़ा में चमकता घणा फूटरा लाग रिया। देखवा लायक हा। डाक बाबू उणां ने देखता जाय रिया हा अर मन में सोचता जाय रिया हा 'जै इण वगत म्हारी ई कोई म्हारा कनै व्हेती। हिवड़ा में हेत भरियोड़ी कोई जीवती जागती फूतळी व्हेती।' सोचतां-सोचतां उण नै लागियो जांणे चिड़कली या ई ज वात कैय री है, सुनमान दुपैरी में पानड़ा ई या ई ज वात कैयरिया है। किने ई भरोसो तो नीं आवै, किने ई खवर ई नीं पड़ै पण सुणसाण दुपैरी में छुट्टी रे दिन, गांमड़िया गांम रा छोटी सी तनखावाळा डाक बाबू रो मन एड़ाई भंवर जाळ में भंमतो रैवतो।

डाक बाबू एक नीसकारो न्हाक हेलो पाड़ियो, 'रतन।'

रतन जामफल रा गोड नीचे वैठी काचा जामफल खायरी ही। हेलो सुणियो तो भागी आई, सांस भरियोड़ी वोली, 'बाबूजी, म्हने बुलाई के ?'

डाक बाबू कियो 'थनै भणावूं चाल।' पछे आखी दुपैरी उण ने अ, आ, इ, ई भणावतो रैवतो। थोड़ा दिनां में मिल्योड़ा आखर भणाय दीवा।

सावण रो म्हीनो, वरखा विलूंब री। तळाव, नाळ, खाडानाडा, वाळा खाळा पाणी सूं थवोळा खाय रिया। रात दिन मींडका री डरडर, वरखा री रमझम सुणीजती रैवती। गांव रा गेला में आवणो जावणो रुक गियो। नावड़िया पै चढ हाटां पै सौदो लाणने जावणो पड़तो।

सुवै सूं ई घटाटोप वादळा व्हेय रिया डाक बाबू री सिष्या कदरी बारणा आगे वैठी बुलावा री वाट नाळ री। आज सदामत री नांई हेलो नीं पड़ियो, छेवट में वा विना बुलायां हाथ में पोथी लै धीमी धीमी मांयने गी। देखियो, डाक बाबू माचा पै पड़ियो है वीं जाणी बाबूजी सूता है, धीरेकरी पाछी वारै

निकळवा लागी । अतराक में हेलो सुणियो 'रतन !'

झट पूठी फिर न बोली 'वाबूजी, आप तो सोय रिया हा नीं ?'

डाक बाबू वोलियो. उणरा सुर में गरीबाई ही, 'म्हारो जीव सोरो कोयनी, रतन । देख तो म्हारा माथा पै हाथ तो मेल ।'

जठै कोई मां न मां रो जायो देस ई परायो । दूर दिसावर में । घनघोर बरसती बरखा में नाचाक सरीर थोड़ीसीक चाकरी तो चावै ई ज । बळता थका माथा पै चूड़ावाळा कंवळा हाथ रो परस याद आय ई जावै । मांदा मिनख रो जीव करै नेह भरी नारी रा सरूप में माँ के बैन कनें बैठी व्हे । परदेसी रा मन री अभिलाखा अेहळी नीं गी । टाबरी रतन अबै टाबरी नीं री । उणीज पळ वीं मां रो पाट लेय लीधो । वैद ने बुलाय लाई, ठीक वगत पै ओखद देय दीधो । आखी रात सिराणै बैठी जागती री । खावा ने बिना कहियां वणाय ले आई । पल पल पै पूछती री, 'वाबूजी, कांई फरक दीखे ?'

डाक बाबू मांदगी सूं उठियो तो पण निवळाई घणी व्हेगी । मन में धार लीधी "बस, अबै अठा सूं आपणी बदली कराय ईज लेवणी । अठै साजो मांदो रैवूं अठा रौ पांणी सदे नीं एड़ा एड़ा वायना मांड बदली री अरजी अफसर कने कलकत्ते भेज दीधो ।

मरीज री टैल चाकरी सूं फारग व्हे रतन पाछी बारणा रे बारै आपरी जायगां आय बैठी । अबै उणने पैलांरी नांई हेलो नी पड़तो । बीचै बीचै वा झांक र मांयने झांकती, डाक बाबू अणमणो थको पाटा पै बैठियो दीखतो के खाट पै पड़ियो दीखतो ।

रतन बुलावा री वाट नाळती जदी वो ऊकळते काळजे अरजी रा जुबाब री बाट जोवतो रैवतो । टाबरी बारणा बारे बैठी बैठी आपरा पाठ ने एक दांण नीं हजार दांण घोख न्हाकियो । वा डरपती कठै ई अचाणचक रो हेलो पाड़ लीधो अर वा मिल्योड़ा आखरां ने वीसरगी तो ?

छेवट में एक अठवाड़ा पछे एक दिन संझ्यारा हेलो पड़ियो । घबरायोड़ी रतन मांयने गी, पूछियो, 'बाबूजी, म्हने बुलाई कांई ?'

'रतन, म्हूं काले जाय रियो हूं ।'

'कठे जावोला, बाबूजी ?'

'घरे जावूंला ।'

'पाछा कद आवोला ?'

'अबै नीं आवूं पाछो ।'

रतन आगे कांई नीं पूछियो ।

डाक-बाबू आगे व्हेयन बोलियो, "मैं बदली कराणे री अरजी दीदी ही, अरजी मंजूर नीं व्ही। काम छोड़ घरे जायरियो हूं।"

नरी देर तांई दोई छाना रिया। एक कूंणां में दीवो टमटम करतो बळ रियो हो। एक जगां घर री जूनी छात सूं पाणी टबक रियो, गारा रा सरवा में टबटब टबका पड़ रिया।

थोड़ी देर पछे रतन ऊठी; चूल्हो बाळ रोटी पोवा लागी, और दिनां जेड़ी चांपर आज उण में नीं ही, बीचे बीचे क्यूं चिंता आय बळोट री।

डाक बाबू खाय न उठियो तो अचाणचक टाबरी पूछियो, 'बाबूजी म्हने थांरे घरे ले चालोला ?'

डाक बाबू हंस न बोलियो 'किया हुवै।' वजै कांई है वां समझाणे री जरूरत नीं समजी। आखी रात सपना में कांई र जागता कांई टाबरी रा कानां में डाक बाबू रा हंसता लगां रो सुर गूंजतो रियो, 'किया हुवै।'

दिन ऊगां ऊठ न डाक बाबू देखियो न्हाण ने पाणी त्यार है। कलकत्ता री बांण रे माफक वे बालटी में पाणी भर ने न्हावता। रतन उणां ने पूछियो नीं हो के वे किण बगत जावेला। कठेई झांझरके परा जावे यो बियान रात पी फाटियां पैलां ई रतन नदी सूं पाणी भर न लाय मेल दीवो।

न्हाय धोय रतन ने हेलो पाड़ियो। रतन छानी मानी घर में गी हुकम री बाट में एक दांण मालिक रा मूंडा साम्ही नाळी। डाक बाबू बोलियो, 'रतन, म्हारी जायगां पे जो बाबू आवेला उणां ने म्हूं भळामण देदूंला जो थनें आच्छी तरै राखेला। म्हूं जाय रियो हूं इणरो सोच मत कर।'

ये वातां वां घणां अपणायत अर मोह सूं कही ही। पर लुगाई रा मन ने कुण समझे। रतन घणी दांण मालिक रा हेला चुपचाप खम लीवा पण आज री ये मीठी मीठी वातां उण सूं नीं खमणी आई। वा एकणदम डभूका भर भर ने रोवा लागी, बोली, 'नीं नीं, थां किणनै ई म्हारी भळामण मत देवजो। म्हारे तो रैवणो ई नीं।'

डाक बाबू रतन रो यो हाल कदैई नीं देखियो जो हैरान व्हे गियो। नवो डाक बाबू आयो। उगनें सारो चार्ज देय जूनो डाक बाबू व्हीर व्हेवा लागो।

व्हीर व्हेती वेळा रतन ने बुलाय न कियो 'रतन, म्हारा सूं थनें कदैई कांई नीं देवणी आयो। आज जावती दांण थनें कांई देय ने जावूं। इण सूं थोड़ा दिन थारो काम चालेला।'

गैला खरच सारू रिपिया राख न बाकी रा तनखा मिली वे रिपिया खुलिया मांय सूं काढ देवा लागा।

रतन तो आंगणे धूळा में लोटगी, पग पकड़ ने बोली, 'बावूजी, थारे पगां पड़ूं, पगां पड़ूं । म्हने कांई मत दो । थांरे पगां पड़ूं । म्हारे सारू किणी ने ई कांई मत कंवजो ।' यूं कैय रतन तो भागगी ।

जूनो डाकबाबू एक गेरो नीसासो भर हाथ में बैग लटकाय, कांधा पे छतरी मेलं, मजूर रे माथे लीला रंग री अर धोळा रंग री पटड़ियां वाळी पेटी मेलाय धीरे धीरे घाट कानी चालियो । नावड़ा पै चढ़ियो, नावड़ो चालियो । बरखा रा पाणी सूं चौड़े पाट पड़ी नंदी, धरती रा आंसू री नांई चमकवा लागी तो डाक-बाबू रा मन में ऊंडी पीड़ा सी व्हेवा लागी । गांव री एक छोरी रो करूणा भरियो मूंडो, उण सूं ई इधक आंसू भरियोड़ा नैण, मरम री पीड़ा वण उणरा काळजा में सालवा लागा । एक दांण तो मन में आई चालो पाछा चालां, संसार री खोळा सूं छटक पड़ियोड़ी टाबरी ने साथे लेता चालां । पर जतरे नाव रा पाल में हवा भरणी आयगी । नदी जोर सूं बैय री ही । नाव गांम सूं आगे निकळगी । नंदी रै किनारा परळो मसाणं दीख रियो हो । नंदी री धारा में बैवता थका मुसाफिर रा पसतावता मनड़ा में विचार हलोळा लेवा लागा, "जिंदगी में कजाणा कतराई विजोग, कतरी मीतां आवती रैवेला, पाछा जावा सूं कांई लाभ । संसार में कुण किण रो व्हियो है ?'

पण रतन रा मनड़ा में कोई एड़ो विचार नीं आयो । वा डाकखाना रे एड़े छेड़े आंसूड़ा टळकावती फिर री ही । उणरा मन में टमटमाती आसा अवै ई ही के कदाच बावूजी पाछा आय जावै ।

हाय रे, बिना बुद्धि रा मानव हिड़दा, थारी भरांति कदै ई मिटे ई ज कोयनी । युक्ति सास्तर रो कायदो घणो दोरो थारी समझ में बैठै । सरासरी थूं आंख्यां सूं देखे उण माथै ई थनें भरोसो नीं आवे । झूठी आसा ने दोई हाथां सूं बांध छाती रै चैंठाया राखे । छेवट में एक दिन वा आसा, नस नस ने काट, छाती रो लोही पीय ने लोप व्हे जावे, जदी चेतो आवै । मोटो अचंभो तो यो है के एक जाळ सूं निकळ तुरंत ई दूजा भरांति रा जाळ में फंसवा ने मन आगतो व्हे जावै ।

जासूस

म्हूं पुलिस रो जासूस हूं। म्हूं दो वात जांणूं एक म्हारी लुगाई नें दूजा म्हारा रजक ने। पैलां म्हांको पूरो परवार भेळे रैवतो, जि भेळे म्हूं ई हो। म्हारी परणी री वठै वेकदरी व्हेती देखी तो म्हूं भाई सूं लड़ झगड़ न्यारो व्हे गियो। भाई सा'व ही कमाय कजाय म्हां लोगां रो पेट भरता हा, ईं वास्ते लुगाई ने ले न्यारो व्हेणो छाती रो काम हो।

पण म्हने म्हारा पै बीसवा बीस भरोसो हो। म्हूं जांणतो हो के जस्यां म्हे म्हारी पदमण लुगाई नैं वस में कीधी ज्यूं ई लिछमी ने ई कर लेवूं। यो बंदो महिमचंद्र, दुनियां में किणसूं ई पाछे रैवणियो नीं हैं।

पुलिस में वळियो तो मामूली ढंग सूं हो पण जासूस रा दरजा पै पूगतां देर नीं लगाई।

दीवा री ऊजळी लौ सूं काळो काजळ निकळै ज्यान म्हारी परणी रा सुभाव सूं ईसको अर वैम निकळतो। पण उण सूं म्हारा कांम में आड़ नीं पड़ती। खुफियागीरी रा काम में जगां जगां जावणो पड़तो, समै कुसमै रो विचार करवा लागो तो काम ई नीं चालै। खरी वात तो या है के समै री जगां कुसमैं, स्थान री जगा कुस्थान नें बत्तो वापरणो पड़ै। म्हारी परणी जनम री वैमी सुभाव री ही। उण रो वैम बधतो ई जातो। वा म्हने डरपावा ने कैवो करती, 'थां तो दांय पड़ै जदी मन में आवै जठै रेय जावो, म्हारा सूं कदी कदी मिलो तो थांने म्हारा पै वैम नीं आवै कांई ?'

म्हूं पडूत्तर देतो, 'वेम करणो म्हारो धंधो नीं। घर में तो म्हूं वैम ने वळवा ई नीं दूं।'

परणी कैवती, 'वैम करणो म्हारो ई धंधो कोयनी, यो तो म्हारो सुभाव है। म्हनें जो राई रा दाणां जतरो ई थारां पे वैम रो कारण मिल जावै तो म्हूं तो सैंग थोक करवा नें त्यार व्हे जावूं।'

डिटेक्टिव लैण में म्हूं सब सूं ऊंची तरक्की करूंला, नाम. कमावूंला यो म्हें प्रण कर राखियो हो। ईं लैण रे बारे में जतरी पोथियां म्हने मिली म्हें वांच लीधी। जतरा उपन्यास हाथे लागा सगळा ने पढिया। ज्यूं पढ़तो ज्यूं मन रो संतोख व्हीर व्हेतो जातो. धीरज छूटतो जातो। क्यूं के आंपणां देस रा गुन्हैगार कम हीमत अर नासमझ है। वे कसूर करे जां में कोई तत ई नीं, मामूली सा गुन्हा। पेचीला, गांठ गंठायला तो वे व्हेवे ई नीं के म्हांरा जेड़ा ऊरमावाळां जासूसां ने कि काम कर न नाम करवा रो चानस तो मिले। आदमी रो खून करवा री जोरदार उत्तेजणा तो आपांरा देस रा खूनियां सूं दवावणी नीं आवे। जाळ रचणिया जाळ फैलावे उण में वे आप ई फंस जावे। गुन्हा कर न वां सूं भाग छूटवा री चतराई नाम री चीज तो वांने आवे ई नीं। एड़ा देस में जठै मड़दपणो ई कोयनी, छाती चल्ला मिनख ई नीं वठै खुफियागीरी करवा में नीं मजो ई आवे नीं आंजसणो ई।

कलकत्ता रा मारवाड़ी जुवां रमणियां ने चटकी बजावतां पकड़ लेवतो तो मन में कैवतो, 'गुन्हैगार कुळ रा कळंका, दूजा रो जड़ा मूळ सूं नास करणो तो चतर चोरां रो काम है। थां जेड़ा बोदा ढांढां ने भगमा पैर लेवणा चावै।' हत्यारां ने पकड़तो तो ई म्हारो मन यूं ई कैवतो 'नाजोगां, अंगरेज सरकार री फ़ांसी रो तखतो थां जेड़ा आंजस बायरा मिनखा सारूं है कांई। थां रा में नीं तो सोचवा री तागत है नीं मन पै थांरो करड़ो काबू है। नालायकां, कि ऊरमां पे थां हत्या करवा री गलती कीधी।'

म्हूं सपना देखतो लंदन अर पेरिस रा मिनखां सूं भरियोड़ा, चौड़ा चौड़ा मारगां रा। जां मारगां रे दोई पसवाड़े सियाळा रा सी सूं ठरियोड़ा, आभा रे माथो आड़ायोड़ा, ओळवार मोटा-मोटा घर ऊभा है। म्हारा रूंगटा ऊभा व्हे जाता। सोचवा लागतो, यां डीगा डीगा म्हेलां जेड़ा घरां में, सड़कां में, मिनखा रा रेला, काम रा रेला अर उच्छवां रा रेला रात-दिन वैवता रैवे। जां में वट्टपाड़, धाड़ा-पाड़, धरपाड़ नामी नामी चोर कळा रा जाणकार बैठा है। खून अर काळख जेड़ा काळा पापां रा रेला ई यां रे नीचे नीचे वेवता जायरिया है। वीं रे भड़े ई

विलायती समाज रा सिस्टाचार, नाच गांणां, हँसी, खेल, आणंद मंगळ रा उच्छब रंग राग उड़रिया है। एक है आंपणो सहर कलकत्तो। जि में सड़कां में घर गळियां में कांई व्हे ? घरां में रोटी साग, घर रो काम धंधो के पढ़ाई रा इमतिहान। तास चौपड़ रमलो के घणी लुगाई भचेड़ा खायलो। घणो करे तो भाई भाई झोड़ कर मुकदमा लड़ ले। बस ई सूं सिवाय कांई है ई नीं।

म्हूं सड़कां में र गळियां कूंच्यां में फिरता वटाऊआं रे लारे पड़ जावतो वां रा मूंडा ने गौर कर न देखतो, हाली चाली देखतो। झांकवा में बोलवां में थोड़ोक ई वैम पड़ जावतो तो वारे लारे लारे जावतो, खबर लगावतो, कांई नाम, कठे रैवे। छेवट में निरास व्हे केवणो पड़तो, कुछ नीं, दागीला कोयनी ये, भला आदमी निकळिया। और तो ओर वांरा लागती रा भाईवंद ई कांई दोस नीं लगावे वांरे माथै। गैलारखुवां में जीं पै सब सूं ज्यादा वैम बदमास व्हेवा रो व्हैतो, देखतां ई पक्को भरोसो आय जावतो के यो सखस अवारूं अवारूं कि रो ई खून कर, भेख बदल न खुफिया पुलिस री आंखियां में काजळ घाल रियो है, वीं रे लारे लागतो तो आखर खबर पड़ती के यो तो धरमादा रा स्कूल रो मास्टर है। छोरां ने भणाय घरे जायरियो है। पछे सोचतो, जो ये ई ज कि दूजा देस में जनम लेवता तो नामी चोर धाड़ायत निकळता। खाली आंपणो ई ज देस एड़ो भागहीण है जठै हींमत अर मड़दपणो नी व्हेवां मूं पंडताई करतां ई ये जमारो काढ़ देय, पेन्सन खावतां मर जाय। म्है अतरी कोसिसां अर छांग वीण कीधी न वो निकळियो धरमादा स्कूल रो मास्टर। म्हारा मन में उण सारूं अतरीक खधा ई नीं री जतरीक वापड़ा गरीब थाळी लोटियो चोरणियां चोर सारूं व्हेती।

एक दिन री बात है, रात रा कोई साढाक आठ वजिया व्हेला, म्हें म्हारा घर कनें देखियो, विजळी रा थांबा हेटे एक आदमी ऊभो। वीचै वीचै आगतो व्हे, एक ई जगा अठी नूं वठीने गरडका मार रियो। वीने देख म्हने पतियारो आय गियो के वो की न की छाना रा पड़पंच में है जरूर। अंधारा में लुक न वींरो उणियारो म्हें खूब आछी तरह सूं देखियो। औस्या छोटी, दीखण में गत रो, रूपाळो। म्हें मन में कियो, साजस करवा री ऊमर ई या है, उणियारो ई एड़ो ई ज है। घणी देर तांई तो म्हें मनोमन सरायो वींनें। पछै जीव कैवा लागो, 'भगवान ईं नें जो सिफत बखसी है वीं ने काम में लेवे जदी तो तारीफ है नीं तो कांई।'

म्हूं अंधारा सूं बारे आय, वीं रा मोर थेपड़ न पूछियो,'कौ, राजी तो हो?

वो चमकियो जोर सूं, मूंडो पड़गियो धोळो फट्ट। म्हें कियो, 'माफी दीजो। गलती व्हेगी, म्हें जाणियो।'

म्हें गलती कांई नीं कीधी, जि ने जाणियो वो ई ज हो वो। पण अतरो चमकणो ठीक नीं हो वीं रो। म्हने क्यूंक अफसोच व्हियो। वीं ने उण रा सरीर पै काबू रखणो चाईजतो। असल वात या है के वड़ापणां रो पूरो नमूनो गुन्हेगारां में ई दौरो लाधे। चोर ने ई नामी चोर बणावाने सिफता वखसवा में कुदरत कंजूसी कर जावे।

म्हूं पाछो आंखियां सूं दूरो व्हे गियो। देख्यो वो विजळी रो थांवो छोड़न परो गियो। म्हूं ई लारै लागो। देख्यो चालतो चालतो वो गोलदिग्घी रा वाग में परो गियो, तळाव री पाळ पै दोव माथै जाय न चित्त पड़गियो। म्हें विचारी, कोई तरकीवां विचारवा ने जगा ठाळे तो एड़ी जगा ठाळे। कठे तो बिजळी रा थांवा नीचली पगडंडी, कठै वाग रा तळाव रा पाळ री वा तृण सेज। कोई वैम ई करे तो वत्ता सूं वत्तो अतरोक ई ज करै के जुवानड़ो काळा आभा में प्यारी रो मुखचन्दर मांड न अंधारा पख री रात रा तोड़ा ने पूरी कर रियो है। चाहे जो कैवो, लड़का री कानी म्हारो मन वधवा लागियो।

घणी खोज खबर कर न वींरा रैवास रो पतो लगायो। होस्टल में रेवे, नाम मनमथकुमार, कॉलेज में भणे। इमतिहान में फेल व्हेन ऊनाळा री छुट्टियां में अठीने वठीने फिर रियो। होस्टल रा रैवासी दूजा लड़का सैंग ई आप आपरे घरे परा गिया। ऊनाळा री लांवी छुट्टियां में होस्टल छोड़ न लड़का घरे भाग जावे पण इण लड़का पाछे कुणसो कुग्रेह पड़ रियो है जो छुट्टी नी जाण दे। म्हें धार लीधो के वीं खोड़ीला ग्रेह ने हेर न छोडूंला

म्हूं ई पढवा वाळो लड़को वण होस्टल में जाय वैठो। पैलपोत जदी वो म्हारा मूंडा साम्हो नाळियो, जद वीं री निजर में कांई हो जो म्हारी समझ में नीं आयो। यूं लागियो जाणे वो अचम्भा में डूव गियो व्हे अर म्हारा हिवड़ा मांयली वात रो वैरो पड़ गियो व्हे। म्हूं जाणगियो सिकार है तो सिकारी रे जोग। सूधो सूधो पकड़ में आवे जेड़ो यो नीं। म्हूं वीं ने प्रीत री रांड़ी सूं वांधवा री सोची, वो तो झट वंवणी में आय गियो। म्हूं जाण गियो यो ई म्हने तीखी निजर सूं देखे है म्हनें परखणो चावै। मिनख ने पिछाणवां में यो अतरो सावचेत रै, ये एहनाण तो गुरुवां रा है। ई ओछी औस्था में या अतरी झीणी चतराई देख म्हूं मन में राजी व्हियो।

मन में विचारी एक लुगाई ने वीचे लावणी जरूरी है। लुगाई विना ई चंट छोरा रा मन री गांठा खोलणी दोरी व्हेला।

एक दिन गळगळे व्हेन म्हें वीं ने कियो, 'वेळीड़ा, आज मनड़ा री वातड़ली कीधां विना हिवड़ो नीं मान रियो है। म्हारो जीवड़ो एक पदमण में

लाग रियो है पण वा तो म्हांरी साम्ही झांके ई नीं ।'

पैलां तो वो चमकियो पछै म्हां आडी ने नाळ ने मुळकियो, या कोई अणव्हेणी वात तो है नीं । ईं तरै रा तमासा देखवा ने ई तो कौतकी बिरमा अस्त्री पुरुष न्यारा न्यारा सिरजिया है ।

'म्हने सल्ला ई दे अर मदद ई दे ।'

वो राजी व्हेगियो ।

म्हें झूठी जोड़ न पूरी ख्यात वणाय लीधी । वो घणा चाव सूं सुणतो रियो, पण घणो बोलियो नी । म्हारी तो धारणा है के कोई संगीड़ा साथीड़ा ने प्रीत री वात, खास कर न एड़ी खोटी प्रीत री वात कैवो तो दोसती गैरी व्हे जावे । मित्तारता झट गाढी व्हेवती दीखे । पण अवार तांई एड़ा कोई ऐहनांण नीं दिखिया । मनमथ पैलां नाम ई वत्तो थोड़बोलो व्हे गियो । यूं ई लागियो के म्हारी सैंग वातां ने गांठ बांध न राख लीधी व्हे । मोटयारड़ा पै म्हारी स्रधा वधगी ।

अठी ने मनमथ रोजीना आडो अड़काय न मायने कांई कांई पड़पंच रचे, कठाक तांई वींरा पड़पंच आगै वध रिया है जिरी म्हनें कांई ठा नीं लागी । पण ईं में कोई संका नीं के वे आगे तो जरूर ई बधरिया है । वींरो मूंडो देखतांई दरपण ज्यूं दीख जावतो के वो किं न किं ऊंडा मामला में गरक है, अर वो मामलो बस पाकियो ई जाणो । म्हें पड़कूंची बणाय वीं री डेस्क ने खोली । मांय ने एक तो घणी ज अबखी कवितां री कापी, कालेज रा लेकचरां रा नोट, घरवाळां रा मामूली कागद पत्तर, बस और कांई नीं लाधियो । घर रा कागदां सूं अतरीक ई ठा पड़ी के घर वाळा तो घरे आवा ने कैयरिया है अर वो जाय नीं रियो है । पण क्यूं ? जरूर कोई खास वजै व्हेला । । जै वो सांचो व्हेतो तो आपसरी रा वाद में कदी न कदी तो पड़दो अळगो व्हेतोई । ईं मोटियारड़ा रो हाल चाल, विवरण जांणवा ने म्हूं अतरो इच्छुक व्हे गियो के जिरो लेखो नीं ।

छेवट में म्हने वातां री नी सरीर वाळी अस्त्री ने परगटावणी पड़ी । पुलिस में नोकर हरमती म्हारी मदद पै आई । मनमथ ने म्हें केय दीधो, ईं हरमती रो म्हूं करमहीण प्रेमी हूं । वीं रे सागै गोलदिग्घी जाय जाय तळाव री पाळ पै दोव में बैठ, हरमती रो नाम लेय लेय म्हूं गळगळा कण्ठां सूं कविता बोलवो करतो, 'चांद थूं है, चांदणी थूं है ।' हरमती क्यूंक तो मांयला अर क्यूंक बारळा मन सूं वतावती के वीं रो हिवड़ो मनमथ चोर लीधो है । पण आसा ही जेड़ो कोई फळ नी मिलियो । मनमथ दूरा सूं ई, माया मोह में बिलमिया बिनां तमासो देखतो रैवतो ।

एक दिन दुपैरी रा म्हें देख्यो के वीं रा कमरा रा कूणां में एक फाटियोड़ी पत्तरी पड़ी है। म्हें फाटियोड़ी चगथियां ने जमाय न वांचवा री चेस्टा कीधी। पण अतरी सी क अधूरी ओळ वांचणी आई, 'आज संझ्या रा सात बजियां लुक न थांरे अठै' बस घणी माथा फोड़ी कीधी पण आगै जुड़ियो नीं।

म्हारी आतमा परफुल्ल व्हेगी। जूना जमाना रा दुरलभ पराणी रो हाडकियो लाधवा सूं जीवतत्व री सोध करणियो पिंडत आणंद सूं उछळ जावे वा ई गत म्हारी व्ही।

म्हूं जाणतो के आज रात रा दस बज्यां रा हरमती रे आपणे अठै आवा री है। बीचै ई यो सात बजियां वाळो मामलो कठा सूं आय रियो है। जुवानडा री अकल री र छाती री तारीफ करणी होसी। कोई छाना रो काम करणो व्हे तो वो ई ज औसर आच्छो रे जिं दिन घर में भाड़ भीड़ व्हे। पैलो फायदो तो यो व्है के वीं दिन सगळां रो धियान खास काम पै व्है। दूजो फायदो यो कै जिं दिन कोई खास काम व्हेतो व्हे वीं दिन कोई छाना रो काम करैला, ईं पै किंरो ई वैम नीं जावै।

एकणदम म्हारा मन में एक नुवो वैम उठियो। म्हारली मितरता अर हरमती रे सागे प्रीत री रम्मत ने, ईं तो आपरो काम काढ़वा रो गेलो बणाय लीधो है। जदी ज तो नीं तो वो आपां ने भेळा राखे नीं अळगा ई करे। वो जांणे के म्हांका ये ढंग ढाळा वींरा छाना रा काम पै पड़दो न्हाकता रे, दूजा जणां याई ज सोचता रैय जावे के मनमथ तो यां लोगां रे लारै ई ज लागियो रै। वो ईं भरम ने बणाया राखणो चावै।

वारणूं भणवाने आयोड़ो, घरवाळां री हाथाजोड़ी पै ई, छुटियां में घरै नीं जावै। होस्टेल में अकेलो पड़ियो रै। ईं रो मतलब के वो एकांत चावै। म्हूं उणरा कमरा में रैय वींरा एकमाड़ा पणा में भांगो न्हाक रियो हूं। बत्ती खाते एक लुगाई ने लाय एक नुवो छातीकूटो जीव ने लगायो है पण वो जाबक बेराजी नीं। या ई सांच है के हरमती माथे उणरो कोई लाग लगाव नीं, नीं म्हारी वातां में ई कोई इणरो खास मन रमें। म्हूं तो मनो मन खूब सोच समझ न ईं नतीजा पै पूग्यो के मनमथ री म्हां दोवां सारू घिरणा ई बधी ही।

ईं रो तो एक ई अरथ निकळियो के मिनखां ने तो जतावतो रैवे के यो एकलो नीं रैवे, ईं रे सागे ओर ई कोई है। राखे आंपणा कनैं म्हारा जैड़ा नुवा आदमी ने जो जियादा कांई जांणे ई नीं। वीं ने ई कोई लुगाई सूं लगायां राखे। किं ने ई एकमन व्हे कठी ने ई लगाय देवणो व्हेतो लुगाई सूं बत्ती कोई चीज नीं।

मनमय री चाल हाल, पैलां फोकट अर वैम करावाणी ही, पण म्हांके आयां पछै वा वात नीं री । अतरी आगळी वात विचार लेणो कोई छोटी वात नीं है, उण री ईं विलच्छण बुद्धि पै म्हूं तो फिदा व्हेगियो । सोचवा लागो, आंपरा मुलक में ई एड़ा दूर री सोचणिया, तुरत बुद्धि वाळक जनम तो लै । कोड सूं हिवड़ो भरीज गियो । मनमय मन में कि नीं विचारतो तो म्हूं वीं नैं पकड़ न छाती रे लगाय लेतो ।

उण दिन मनमय सु ं मिलतां ई म्हूं बोलियो 'आज सांझ री सात वजियां होटल पै जं मवा चालां ।' सुण न वो चमकियो, पछै सावचेत व्हेय न वोलियो, 'आज तो भाई, पेट मांयनै जायगा ईं कोयनी ।'

होटल रो खाणो खावा ने मनमय कदी नीं नटतो, आज कांई वात है ? भांप गियो म्हूं आज मनड़ो कठी ने ई उळझ रियो है ।

यूं तो म्हूं संझया री वेळा होस्टल में नीं रैवतो पण आज तो वातां रो एड़ो छप्पर वांधियो के उठवाई ज नीं दीवो । मनमय रो मन मांयनूं विचळाय रियो । जो म्हूं कैवतो उण वात पै ई हुंकारा भरतो जायरियो आगे व्हेन कोई हरफ नीं वोलियो ।

छेवट में कायो व्है न घड़ी देख न वोलियो, 'हरमती ने लेवाने नीं जावणो है कांई ?'

म्हूं चमक न वोलियो, 'अरे हां, वीसर ई गियो । एक काम करो, थां खाणो वाणो वणाय न त्यार राखजो, म्हूं एन साढा दस वजियां वीं रे सागै अठे आय ऊभो रैवूंला ।' यूं कैय चालतो व्हियो ।

म्हूं उमगाय गियो, म्हारी नस-नस में खुसी री ल्हेर ल्हैरावा लागी । सांझ रा सात वज्यां ने मनमय उडीक रियो हो, उण सूं कम उडीक म्हारे थोड़ी ही । म्हूं होस्टल रे कनै एक जायगा लुक गियो । खिण खिण घड़ी देख रियो । विजोगी प्रेमी अभिसारका रो उछळते काळजे गेलो देखे ज्यूं म्हूं देख रियो हो । गवूळी वेळा आई, अंधारो गैरो व्हैतो जाय रियो । सड़क परळा दीवा जुप गिया । देख्यो, एक पालकी, वंद पालकी होस्टल रा वारणा में वळी । ईं पाळकी में व्हैला कांई ? घूंघटा में लुकियोड़ो छिपियो पाप ! उडिसा देस रा उड़िया भोयां रा कांधा पै चढ़ियोड़ी, कॉलेज रा होस्टल में यूं एड़ी सौरी सोरी वळ जाय, यूं विचारतां म्हारा तो रूंगटा ऊभा व्है गिया । सागै ई डील में खुसी री फरफरी आयगी । म्हारा सूं रैवणो नीं आयो । वगत ने गमायो नीं । होस्टल में फटकारियो, धीरे धीरे पड़ी चढ़ न ऊपरे गियो । मन में तो ही के लुक न देखूंला पण काम पार नीं

पड़ियो। मनमथ नाळ रे मूंडागला कमरा में ई ज साम्हो साम्ह बेठियो। दूजे पासे बेठी घूंघटा वाळी लुगाई। दोई मीठा मीठा धीरे धीरे वात कर रिया। म्हें देखियो के मनमथ म्हनें देख लीवो तो चट देणी रो कमरा में वळ न बोलियो 'मेज माथे घड़ी भूल गियो हो लेवा ने आयो हूं।'

मनमथ तो वाको फाड़ियां हो ज्यूं रो ज्यूं रेंगियो। यूं लाग्यो के यो झांप खाय न हेटो जाय पड़ी। खुसी सूं म्हारी कळी कळी खुल री। म्हें आगते व्हैय न पूछी, 'अरे, यो कांई व्हैगियो, जीव तो सोरो है?'

उण रो तो चूंकारो नीं निकळियो।

पछे म्हूं पूतळी री नांई थिर बेठियोड़ी लुगाई कानी फिर न धियान सूं देख न पूछियो, 'आप मनमथ रे कांई लागो?'

कि पडूत्तर नीं। पण देखियो के मनमय रे तो वा कांई नीं लागे। म्हारै लागे। म्हारी ज परणी है।

पछे कांई व्हियो जि रो अंदाजो तो सेंग ई लगाय लेय।

या है म्हारी जासूसी जीवणी री पेलोड़ी तारीफ!

घणां दिनां पछे म्हारै एक साथी जो ई खुफिया हो म्हने कियो, 'मनमथ रे सागे थां री लुगाई रो खोटो ताल्लुक नीं व्हे तो ई अचरज नीं।'

म्हें कियो, 'थां सांच केवो।' म्हें हेर हेराय परणी री पेटी मायनूं एक कागद काढ़ियो हो जो वीं रा हाथ में दीधो। कागद यूं हो—

'सुचरिता,

करमहीण मनमथ ने तो थां भूल गिया व्होला। बाळपणा में म्हूं नानेरे काजीवाड़ी जावतो जदी थां रे घरे आवो करतो, आपां भेळा खेलता रमता। आपणो वो खेलवा रमवा रो ताल्लुक खतम व्हे गियो। थां जाणो के नीं, पण म्हें लाज सरम छोड़, कांण कायदो छोड़ ने थांसू परणाय देवारी अरदास घरवाळां ने कीधी ही। पण थांरा घर रा अर म्हारा घर रा दाना बूढा नट गिया के दोई एक औस्था रा है।

पछे थांरो वियाव व्हे गियो। चार पांच बरसां तांई तो म्हने कीं ठा नीं लागी के थां कठे हो। अबे बेरो पड़ियो के थां रो खांवंद पुलिस में काम करे, पांच महिना व्हे गिया, थांरी बदली अठे कलकत्ता में ई ज व्ही है। म्हे थांरा घर रो पतो लगाय लीधो।

थां सूं मिलण री अणूंती आस तो राखूं ई नीं। वो अन्तरजामी जांणे, म्हूं थांरी भली चंगी गिरस्थी में पग देवणो ई नीं चावूं, थांरा घर ने भांगवा री वांछा म्हारा मन रे अड़ न नीं निकळी है।

संझ्या री वगत म्हूं थांरा घर आगला फुटपाथ पे विजळी रा थांवा नीचे, सूरज भगवान रा दरसणारथी री नांई ऊभो रेवूं। सात साढा सात वजियां दिखणादू कमरा में थां रोज दीवाणियां में तेल घाल, वात्ती संजोय, वठे वारी रे मूंडागे राखवा ने आवो। उण वगत एक पुळ सारूं, दीवा रा चानणा में थांरा दरसण कर लेवो करूं। समझो तो वस म्हारो यो ई कसूर है।

या दिनां में संजोग सूं थांरा परणियोड़ा रे अर म्हारे ओळखांण व्हेगी। वांरो चलण म्हें देखियो उण सूं म्हें सतूनो लगाय लीधो के थां सुखी कोयनी हो। था पे म्हारो कोई जोर नीं। पण जि वैमाता आंक लिखिया के थांरे पूछड़ै म्हूं ई दुख देखूं, वींज वैमाता थांरो दुख दूरो करवा रो भार ई म्हारे माथे न्हाकियो है।

म्हारा गुन्हा पे धियान मत देवजो पण सुकरवार ने संझ्या रा सात वजियां थां छानेकरा एक दांण पालकी में बैठ न अठे आय जावजो। म्हूं थांने थांरा परणिया री छाना री वातां वताऊं। जो थां रो म्हारा पे पतियारो नीं व्हे तो म्हूं थां ने आंखियां देखाय देवूं। सागै ई थांने कीं सल्ला ई देवूंला। म्हूं भगवान पैं भरोसो कर न कैवूं के वीं सल्ला पै चालियां थांरो दुख ओछो पड़ेला।

म्हारो कोई लोभ लालच नीं है जो वात नीं है। म्हूं म्हारी आंखियां सूं थांने देख लूंला, थांरी बोली सुणूंला, थांरा चरणां रा परस सूं म्हारी या अंधारी ओवरी पवित्तार व्हे जाय। वस, या अतरी सीक ऊणायत है मनड़ा में। जो थांने म्हारा पै एतवार नीं है, अतरोक सुख ई नीं देवणो चावो तो थांरीं मरजी। पाछो लिख दीजो। म्हूं सेंग हकीगत लिख भेजूंला। जो म्हने थां कागद रो जुवाब देवा जोगो ई नीं समझो तो थांरा परणिया ने या पत्तरी बंचाय देवजो। पछै जो म्हने कैवणो सुणणो है वां ने ई कैवूंला सुणूंला।

थांरो
सदा भलो चावणियो
मनमथकुमार मजूमदार
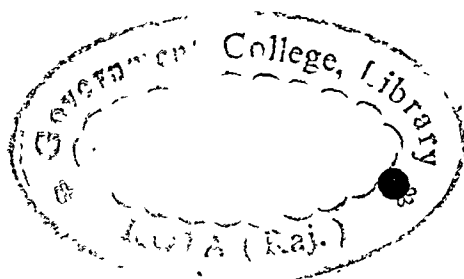
अणव्हेणी वात

एक हो राजा ।

बस, जां दिनां इण सूं बेसी जाणवा री जरूरत ई कठै ही ? कठा रो राजा, कांई नाम, ये सैंग सवाल पूछ पूछ जमती कैणी रो रस कोई नीं बिगाड़तो। राजा रो नाम सिलादीत हो के साळीवाहन, राजा कासीजी रो हो के कनौज रो, अंगदेस रो हो के बंगदेस रो के कलिंगदेस रो हो। तवारीख, भूगोल अर तरक ने जां दिनां कोई खास अैमियत नीं देवता। असली वात तो वा वात ही के जिण ने सुण रस रा गुटकळिया भरणी आय जावे, वात सुणवा ने मन भागियो जावे, हाथे नीं रैवे। वा वात ही 'एक हो राजा।'

आजकाल रा सुणवावाळा तो कमर कस न सवाल पूछण ने अड़ जावे। कैणी सरू नीं करो जठा पैलां ई मान लेवे कैणी मन री जोड़ियोड़ी है। आप वड़ा ठावा वण न मूंड़ो मचकाय न पूछे, 'थां कैणी केयरिया हो 'एक हो राजा' री।' या वतावो वो राजा हो कुण ?'

कैणी केवणिया ई चतर व्हे गिया आजकाने। वे ई तवारीखां रा मोटा जाणकार री नांई मूंडा ने चौगणो चौड़ो कर न बोले, 'एक हो राजा, वीं रो नाम हो अजातसत्रु।' सुणवावाळा आंख मींच न चट देणी रो पूछ ले, 'अजातसत्रु ? अच्छा सा, वतावो, कस्यो अजातसत्रु ?'

कैणी कैवणियो वस्यान ई मूंडो छीदो कर न थिरता सूं कैवतो जावे, 'अजातसत्रु व्हिया है तीन। एक तो ईसा सूं तीन हजार वरस पैलां जनमिया, दो

वरस आठ म्हीनां री उमर में सुरग सिधार गिया। बड़ा अफसोच री वात है के वां री जीवणी री पूरी हकीगत कोई पोथी में नीं लाधे। पछे दूजा अजातसत्रु री दस ख्यातां लिखणिया रा नांम गिणावै। वां री जुदा जुदा दस राय माथे आपरी राय जाहिर करे पछै तीजा अजातसत्रु री हकीगत पै आवै। सुणवावाळा मन ई मन में दाद दीधा विना नीं रैवे, गजब रो पिंडत है! एक कैणी मांयने कतरी सीखवा जोग वातां वताई। एड़ो आदमी जो कैवे वो सांच ई कैवे। पछे पूछे, अच्छा सा, वीं रे पछे कांई व्हियो?'

आदमी ठगावणो चावे, ठगावणो आछो समझे। पण कठे ई कोई मूरख नीं समझले यो संको ई मन में वेठियो रै। ईं वास्ते वो चित्त मन सूं चतर व्हैवा री कोसिस करै। फळ कांई मिले, छेवट में वो ठगीजे अर वड़ी डोफर सूं ठगीजै अंगरेजी में एक कैणावत है, 'सवाल मती करो नीं तो भूठो पडूत्तर सुणणो पड़सी।' टावर तो समझे इण बात रो मरम। वो कदे ई कोई सवाल नीं पूछे। ईं वास्ते जूनी कैणियां रो रूपाळो भूठ टावर रे आगे साफ है, सांच जेड़ो सहल है, झरता भरणां री नाईं निरमळ है। आजकाल री चतराई रो भूठ पड़दा मांयलो भूठ है। जे कठे ई राई रा दाणा जितरो ई छेकलो रैय जावै तो मांयलो भांडो फूट जावे। सुणवावाळा मूंडो फेर दे, कैवावाळा ने भाग छूटवा ने ई गेलो नीं लाधे।

टावरपणां में म्हां सांचीला रस रा रसिया हा। जद कदी कैणी सुणवा ने बैठता तो ग्यान सीखवा रो मन में तिल मात्तर ई भाव नीं रेवतो। अण भणियो, सूधो सरल मन वीं कैणी रो मरम समभ जावतो के ईं में सार कांई है। आजकाले तो अतरी नवरी विना काम री वातां भसणी पड़े के थाक जावां। छेवट में आय न ऊभो रैणो पड़ै वींज असल मुद्दा पै 'एक हो राजा'। म्हने चोखी तरै याद आवै वीं दिन सांझ पड़िया ढूंज आय री, मेह वरस रियो। यूं लागरियो कलकत्तो पांणी में वेय जाय। सैरिया में गोडां-गोडां तांई पांणी भर रिहो। म्हने पूरो नैहचो हो के आज मास्टरजी आवा ने नीं। पण तोई वांरे आवा री वगत व्ही जतरे धड़कते काळजे तिवारा में बैठ्यो गेला साम्हो नाळतो रियो।

वरखा थोड़ी रुकती दीखती न तो म्हूं चित्तमन सूं भगवान ने सुमरवा लागतो, हे ठाकुरजी बापजी, थोड़ी देर और सात साढा सात वज्यां तांई तो वरसतो रीजो।' म्हने यूं लागरियो हो के नगर रा कूंणां में रेवणिया ई एक आकळ वाकळ टावर री भूत जेड़ा भैंकर मास्टर रा हाथ सूं रिच्छा करवा रे अलावा मेह री संसार में कांई जरूरत ई नीं। एकदांण जूना जुगां में देस भदर व्हियोड़ो एक यक्ष ई या ई जाणतो के असाढ रा वादळा रे कने कोई मोटो काम तो है नीं। रामगिरि रा डूंचका माथे वेठ्योड़ा विजोगी रो सनेसो दुनियां रे पैले

छेड़े अलकापुरी रा म्हेलां रा झरोखा झांकती विजोगण कने लेजावणो कोई दौरो काम थोड़ो ई है। दौरा व्हे जेड़ो काम ई कांई गैलो केड़ोक रळियावणो है।

टाबर री अरदास सूं तो नीं पण पवन रे पांण वरखा बरसती री, रुकी नीं। बरखा नीं रुकी पण मास्टरजी रो आवणो ई नीं रुक्यो। गळी रा कूणा में, ठीक टैम पै जाणी पिछाणी छतरी निजर आई। सारी आसावां एक छिण में धूळा भेळे मिलगी। म्हारो काळजो मूंडो रै आय अड़ियो। पराई आतमा ने संतापणो पाप है। पाप रो फळ भुगतावणियो कोई व्है तो ईं रो एक ई ज डंड है वो डंड है आगला जनम में म्हूं मांस्टरजी बणूं अर मास्टरजी म्हांसूं पढवावाळा।

छतरी देखतो ई म्हूं तो भागियो वठा सूं। मांयने मां अर नानी दीवा रे उजाळे तास रम री। हूं तो छानोमानो एक आडी ने पड़ गियो। मां पूछियो, 'कांई व्हियो ?'

म्हूं मूंडो तोबड़ा जेड़ो करन वोल्यो 'म्हारी आसंग कोयनी, म्हूं आज भणूंला नीं।' मांदो बणगियो।

आसा तो है के कोई अधकड़ आदमी म्हारी या कैणी वांचेगा नीं, अर नी कोई मदरसा री पोथी में ई ईंने घालेगा। क्यूं म्हें जो काम कीधो कायदा रे खिलाफ हो, जिंरो म्हने कोई डंड नीं मिलियो। साम्हो म्हारो मनचाह्यो व्हे गियो। मां नौकर ने केय दीधो, 'आज रैवादे। मास्टरजी ने कैदे जो परा जावे।'

मां नचींती व्हियां तास रम री, मां ने मन में हंसणो तो आयो व्हेला के बेटे मांदा व्हेवा रा छैन केड़ाक कीधा। म्हूंई तकिया में मूंडो घाल घणो हंसियो। म्हां दोवां रो ई मन दोवां सूं ई छानो नीं रियो।

ईं तरै रा रोग ने मिनख सूं घणी देर तांई निभावणो नीं आवै। थोड़ी देर पछै ई ज म्हूं तो नानी रे लारे पड़ गियो 'नानी, कैणी कै' नानी, कैणी कै। दो दांण चार दांण कियो जतरे तो कोई सुणाई व्ही नीं। मां बोली, 'उतावळ मत कर, वाजी खतम व्हेवा दे।'

म्हें कियो, 'नीं मां, बाजी काले खतम करजो, अबारुं तो नानी ने कैणी कैवा दे।

मां तास रा पत्ता फैंक न बोली, 'जाओ, काकी, कुण ईं रे लारे माथो पोलो करे।' जरूर मन में वीं योई ज सोची व्हेला, 'आपां रे तो काले मास्टर नीं आवे, आपां तो काले ई तास खेल लेवां।'

म्हूं नानी रो बांवट्यो खेंच्यां खेंच्यां बिछावणा पै लेग्यो र पैला तो तकिया रे चिपट न, पगां ने पछाट न, बिछावणा पै लोट न मन री खुसी दबावतो रियो,

पछे बोलियो, 'नानी कैणी कैवो नीं।

वारे झमाझम झमाझम छांटा पड़ रिया। नानी मिसरी घोळती बोली, 'एक हो राजा, वीं रे ही एक राणी—

ओह, थाई चोखी व्ही नी तो एक मानेतण अर कुमानेतण राणी रो नाम आवतां ई छाती धड़का करवा लागै। पैलां ई जाए जातो बापड़ी कुमानेतण राणी पै दुख आवा वाळो है। जीव जाणवा ने आगतो व्हे जावे देखां कांई व्हे, कांई दुख आवे।

जदी सुणियो के अवे कांई दुख री वात नीं। राजा रे कोई वेटो नीं हो जो राजा घणां दुखी रैवता, दान कीधा, वरत कीधा, जप कीवा, अवै तप करवा रो ओसरो आयो। वन में तपस्या करवा ने चालिया। अवै जाय न जीव सोरो व्हियो। मारी समझ में वेटा रो नीं व्हेणो तो कांइ एड़ी दुख री वात नीं। हां, अतरोक जरूर जांणतो के वन में जावा री जरूरत आय पड़े तो वस मास्टरजी सूं पिंड छुडावा ने भलांई आवो।

राजा, राणी ने अर एक छोटी सी वेटी ने छोड़ वन में तप करवा चालिया। एक वरस व्हियो, दो वरस व्हिया, यूं करतां वारा वरस व्हेय गिया। राजा नीं आया।

अठी ने कंवरी सोळां वरसां री जोधजवान व्हेगी। परणवा री ओस्था आई। पण राजा तो नीं आया।

वेटी ने देख देख राणी तो अंन्न पाणी छोड़ 'दीधा म्हारी एड़ी सरव सुलखणी कन्या कुंवारी ज जमारो काढेला कांई ? हे भगवान, म्हारा परालवध में कांई लिखियो है।'

छेवट में राणी राजा ने हाथ जोड़ न कंवायो, 'म्हने राजपाट, अंन्नधंन्न कांई नीं चावे। आप एकदांण म्हेलां पधार म्हारे अठे जीमलो।'

राजा हांमळ भरी 'आच्छो।'

राजा आया। राणी तो वीं दिन घणी चतराई सूं तेरा तींवण छप्पन भोजन वणाया। कंचन रा थाळ, रतन कटोरिया में जीमण परूस्यो। चंदण रो पाटो ढाळियो। कंवरी ने हाथ में चंवर दे ऊभी कर दीधी। राजा आज वारां वरसां सूं म्हेलां में पग दीधो। कंवरी रा रूप सूं म्हेल जगमग कर रियो। राजा कन्यां रो मूंडो देखता रैगिया, जीमणो भूलगिया। राजा पूछियो 'राणी, या सरब अंग सोना री साट जेड़ी किण री कन्या है।'

राणी बोली, 'राजा, या तो थांरी कन्या है।'

राजा अचंभा गत व्हेगिया, 'अरे, सांची ! म्हूं अतरीक छोटी ने मेलगियो,

दूजे दिन बामण रे बेटे पौसाळ सूं आवतांई पूछ्यो, 'बता, थूं म्हारे कांई लागे।'

कंवरी बोली, 'आज संझ्या रा थां जीम न पोढोला जदी बताऊं।' बामण कियो, 'वा।' अबै बैठो वो घड़ियां गिणै कदी दिन आंथे कदी बतावे।'

राजा री कंवरी सोना रा हिंगळाट पै, धोळा फूलांरी सेज बिछाई, सोना रा दीवा में तेल भर न संजोयो, माथो गूंथियो, केसरिया कसूमल पैर, सोळा सिणगार कर बाट नाळे कदी दिन आंथमे।'

रात पड़ी बामण रो बेटो जीम न सूणेट री ओवरी में आयो। हिंगळाट पै आय ने सूतो। मन में सोचिरियो, 'आज बैरो पड़ेला ई नौ खंडिया म्हेल री रूपवंती नार म्हारे कांई लागै।'

राजा री कंवरी पति रा परसाद रो थाळ खाय वठै आई। आगे देखे तो बामण रो बेटो मरियो पड़ियो। फूलां मांयनूं सांप निकळ वींने डस लीधो जो मरगियो। मृत देह सोना रा हिंगळाट पै फूलां री सेज पै पड़ी। सुणतां ई म्हारो काळजो धड़कतो थको, जाणै ठम गियो।

रूभ्या गळा सूं उदास व्हेन पूछ्यो, 'पछै कांई व्हियो? नानी कैवा लागी। पण अबै उण री जरूरत कांई है, वा तो ओर ई अणव्हेणी वात है। कैणी जिण रे गैल ही वो तो सांप रा डसवा सूं मर गियो। फेर ई 'फेर'? जां दिनां म्हूं टाबर हो, जाणतो ई नीं, के मरयां पाछै ई कोई 'फेर' व्हे। वीं 'फेर' रो जुबाब तो नानी कांई नानी री नानी आय जावती तो ई नीं देवणी आवतो! विस्वास रा जोर माथे सांवत्री, जमराज रो लारो कीधो। टाबर रो विस्वास ई मजबूत व्हे। ईं वास्ते वो ई मरियोड़ा नायक ने पाछो जीवावणो चावे। नींठ नींठ तो या रात आई जिमे मास्टर सूं पिंड छूटियो। उण रे समझ में ई नीं आवे के अतरा सौक सूं कैवाई कैणी अचाणक सांप रा डस जावा सूं खतम व्हे जावे। जदी तो नानी ने कैणी पाछी मोड़ ने लावणी पड़े। कैणी ने अर कैणी रा नायक ने सरजीवत करणो पड़े।

पण वो काम अतरो आपै आप व्हे जावे के झमझम करती वरखा री रात में टम टम करता दीवला री जोत में वा कज़ा ई डरावणी नीं रै वे। अबै कज़ा कज़ा कठै री। कैणी रो नायक जीवतो व्हे जियो। कैणी आगे चालगी, सुणता सुणता टावरिया री आंखडलियां में नीदड़ळी घुळगी। नानी रा लाड़ला, परियां रा देस रा सपना देखता सोयगिया। पछै परभात री सीळी लैहरां हुलराय हुलराय जगाय दे।

टाबर पगां में सात समंदर पार जाय, काळ ने जीत ने जठै कैं'णी खतम व्हेती वठै मीठा सुर में सुणता हा,

इत्ती कांणी, बोदी राणी ।
इन्न घुम्मक्कड़, चूल्हा में लक्कड़ ।
चूल्हा चूल्हा माथे चकली ।
नान्हा री सासू नकटी ।

अबै और वात व्हेगी । अबै कैणी रे बीचां बीच कोई करड़ो कठोर कंठ सुर सुणीजै ।

बस, इतनी ही कहानी, लेखक की नानी ।
लेख निक्खकड़, माथे पै लक्कड़ ।
माथे पै चकली, लेखक की............

बस, भाई ! अबै आगे नीं कैवां । कजाणां कोई आप रे ऊपरे वात पचाय ले तो ?

छुट्टी

गाँम रा छोरां रा सरगणा फटिकचन्द्र ने एकणदम एक नुवी कुलंग सूझी । नंदी रे तीर माथै सांखू रा रूंख रो एक मोटो लट्ठो पड़ियो । नावड़ा रे मस्तूल बणावण खातर राख मेलियो हो । छोरां सोची ईं ने नंदी में बैवाय दां ।

काम पड़ेला जदी घर धणी ने लट्ठो अठै नीं लाधेला जदै उण ने केड़ोक अचंभो आवेला, केड़ीक रीस आवेला वीं वगत रा मजा रो मजो लेवतां छोरां ने फटिक री वात आसे आयगी । कमरां बांध, पट्ठा उच्छाव सूं काम करण ने त्यार व्हेगिया । अतराक में फटिक रो भाई माखणलाल, ठावो मूंडो कर लट्ठा पै जाय न बैठ गियो । वीं ने रंग में भंग करतां देख दूजा छोरा दबक गिया ।

एक छोरे धीरे धीरे वीं रे कने जाय धक्को दे दीधो पण माखण हाल्यो नीं । चारूं कानी छोरां वळावळी ने परो ऊठवा ने कैयरिया पण वो यूं रो यूं खैर रा खूंटा री नांई बैठयो रियो । कीं री भ्रासंग नीं पड़ी के उठाय दे ।

छेवट में फटिक डोळ काढ न बोलियो, 'देख, ऊठ जाव नीं तो मार खाय ।'

माखण और ई बत्तो जम न काठो बैठियो ।

अबै फटिक रो धरम व्हेगियो के डंड देवे । फौज रे मूंडागे, फौज रा मांझी रो सिपाई हुकम टाळ दे तो पछै राज किया चाले । गालड़ा पै थप्पड़ मारणे री फटिक विचारी पण छाती नीं पड़ी । वीं एड़ो मूंडो वणायो जाणे, वीं रो मन व्हे तो अबारूं माखण रा हाड़किया भांग राळे पण चाह्य कर न भांग

नीं रियो है, वीं ने दूजी एक अछूती रम्मत सूझी है जो वा रमां। वीं अछूती रम्मत वताई के मांखण सूधी लट्ठा ने नंदी में गुड़काय दां।

माखण जांणियो, ईं में तो वीं रो और ई मड़दपणां है। पण वीं ने या नीं सूझी के ईं मड़दपणां रे लारे लारे नंदी में पवार जावा री जोखम ई है।

छोरां तो वांच कमरां न गुड़कावा लागा, 'हां, मड़दा, थोड़ो और, सावास मोटचारां।' लट्ठ गुड़िदो नीं खाघो जठां पैली माखण ऊंधे मूंडे धम्म।

रम्मत सरू व्हेतां ई कस्योक मजो आयो, छोरा राजी व्हिया। फटिक थोड़ोक घवरायो। माखण तो पड़ियो पछे उठियो पैला, फदकतां ई फटिक रे झूम गियो। हाथां मारे दांतां खावे, गालड़ा लवूर लीवा। रोवतो रोवतो घर रो गैलो लीधो रम्मत खतम व्हेयगी।

फटिक थोड़ीक कांस उपाड़ ले आयो। एक नाव आधीक पांणी में डूब री जिरी कोर पे वेठ गियो, कांस चाववा लागो।

अतराक में दूजा गाम रो एक नावड़ो आय घाटे लाग्यो। वीं माय सूं एक अधकड़ आदमी उतरियो, मूंछ्यां काळी, माथो धोळो हो। वीं फटिक ने पूछ्यो, 'चक्रवर्तियां रो घर कठीने है रे, छोरा? कांस चावते चावते वीं कियो, 'वो रियो।', पण वीं कठीने वतायो जिरी ठा नीं पड़ी।'

वीं पाछो पूछियो, 'कठीने है?'

पडूतर मिलियो, 'म्हनें खवर नीं।' पाछी कांस चाववा लाग गियो।

गैलारथु वापड़े और कि दूजा ने पूछ ठिकाणे पूगियो।

थोड़ीक ताळ व्ही न, घर सूं चाकर आय न वोलियो, 'फटिक! मां वुलाय रिया है।'

फटिक वोलियो, 'नीं, आवूं, जा।'

पण वाघो पूरो वाघ हो, वीं जीभ री लापालोळ नीं कीवी, पकड़तां ई वांवटिया, खोळ्यां में लटकाय, चालतो व्हियो। फटिक रीस कर हाथ पग पछांटतो ई रैगियो।

फटिक ने देखतांई मां रीस करवा लागी, 'फेर थें माखण ने ठोकियो?'

फटिक वोलियो, 'म्हें नीं ठोकियो।'

'फेर झूठ वोले।'

'म्हें नीं मारियो। पूछलो वीं ने।'

'माखण ने पूछियो तो वीं पैला वाळी सिकायत दुसराई 'हां, मारियो।'

अने फटिक सूं नीं रैवणी आयो। भलफ न माखण रा गालड़ा माथे खेंच न पक रैपट री मारी, 'फेर कूड़ बोलरियो।'

मा, माखण रो पुखस लीधो फटिक ने जोर सूं झंझेड़ न्हाकियो दो र तीन चंरगटां मूंडा पै मारी तो फटिक मां ने पाछो धक्को देय दूरी कर दीधी।

मां बरळाई, 'हैं, थूं मां रे साम्हो हाथ करे।'

अतराक में वो आदमी आय पूगो जो नावड़ा सूं उतर फटिक ने चक्रवर्तियां रा घर रो गैलो पूछियो हो। घर में वळता ई पूछियो, 'हैं, यो कांई व्हेय रियो है ?'

फटिक री मां अचंभा सूं अर आणंद में भर न बोली' अरे ये तो भाई आय गिया, कदी आया भाई ?' भाई रे हाथ जोड़िया।

घणां दिनां पैलां फटिक री मां रा भाई पच्छम कानी वारै चाकरी पै गिया हा। पाछा नूं फटिक री मां रे छोरा ई व्हेगिया न मोटा ई व्हेगिया। पाछलो छोरो व्हियो न थोड़ा दिनां पछे वीं में दुख आय पड़ियो। विधवा वैन सूं मिलण ने एकदांण ई भाई नीं आया हा।

आज वरसां सूं छुट्टी लेय, विसंभर बाबू बैन सूं मिलण ने आया। थोड़ा दिन रिया, आळछौल में निकळ गिया। जावा लागा जदी विसंभर बाबू बैन ने छोरां री भणाई पढाई सांरू पूछियो तो ठा पड़ी के फटिक तो घणो नसरड़ो, जी भायलो व्हेगियो। भणै न पढै। नान्हकियो माखण स्याणो, सूधो है। आखर वांचवा में ई जीव लागै वीं रो तो।

वैन बोली, 'फटिक तो म्हारा काळजा बाळ न्हाकिया।' सुण न विसंभर कियो, 'फटिक ने म्हूं म्हारे लारे लेय जावूं वठै कलकत्ते ई भणावूं।'

वा झटदेणी री राजी व्हेयगी, फटिक ने पूछियो 'क्यूं रे फटिक, मामाजी सागै कलकत्ते जाय ?'

फटिक तो फदकवा लागी 'हां जावूं।'

यूं तो फटिक री मां ने कलकत्ते भेजण में अबकाई जेड़ी बात नीं ही। वीं रा मन में संका बैठचोड़ी ही के कठैई यो फटिक, माखण ने किं दिन नंदी में नीं धक्को दे दे। कठै ई माथो नीं फोड़ दे. कै कोई और कुचमाद नीं कर दे। पण तो ई कळकत्ते जाणै रा नाम सूं वीं रो मन भारी व्हेग्यो। वठी ने फटिक 'मामाजी कदी चालो, मामाजी कदी चालो' पूछते पूछते मामाजी ने काया कर दीधा, एड़ो हरख चढियो के नींद नीं आवती।

कलकत्ते नानेरै पूगतांई फटिक ने मामीजी मिल्या। परवार में आगे यूं ई तीन छोरा हा। घटता में पूरो व्हेवा ने यो एक और वधियो, मामीजी ने यूं लागो। वां री गिरस्थी लीक लीक पै चाल री ही, बीचे एक तेराक वरस रा छोरा ने ले आवणो घर में घोड़ो बांधणो है, छोरो ई गामड़िया गाम रो, अण

भणियो । विसंभर अतरी ऊमर लेय लीधी पण लखण नीं आया ।

सांच पूछो तो तेरा चवदा वरस रा टावर सूं बत्ती कोई आफत नीं । या ऊमर ई एड़ी व्हे के नीं तो उण सूं कोई सोभा ई व्है नीं कोई वो काम रो व्हे । नीं तो वीं रा लाड ई आवे, नीं वींरे सागै कोई वातां चीतां रो ई मजो आवै । जो वो थोड़ो तोतळाय न वोले तो लागै इतराय रियो है । जो गैहरा साद सूं ठावी वात करै तो लागै वडां वूढां री देखादेखी कर रियो है । उणरो वोलणो ई वकवाद करणो है । वोलवा में ई कांई, गावा छीतरा री आडी नूं ई वो गोभियो है । पैंइसा काट न गावा सींवावो, वो लड़ाक देणी रो लांवो वधे एकणदम, गावो आवै ई नीं । टावर रा मूंडा पे भोळापणो रैवे जो तो खतम व्हे जावे, कण्ठ भारी पड़ जावै जो लोगां ने कजाणां कस्यो रो कस्यो लागै । बाळपणां री अर जवानी री तो कतरी खोड़ां ने माफी वखस दीधी जावे पण ईं उमर वाळा री मामूली खामी, मोटी व्हे न दीखै ।

देखवा वाळो ई ज नीं खुद ईं उमर रो टावर ई मन में अणमणो रैवे के वो कठै ई ठीक जंचे ई नीं । नीं टावरां में नीं वडां में । मन में आपरी हस्ती पे वो सीटावो करे । एक गोभचो ओर है, ईं औस्था में बाळक रा मन में घणी ऊणायत रैवे के कोई वीं रा लाड राखे । जो कोई भलो मिनख वीं ने हेजाय लेवे लाड करे तो वो हुकम रो तावेदार बण जावे । पण व्हेवो कांई करे के कोई वीं रा लाड प्यार करे नीं, यूं जाणे के ईं औस्था में लाड लडावणो तो माथै चढावणो है । व्हे कांई के वाळक आपने विना धणी धोरी रो गळी रो गंडकड़ो समझवा लाग जावे ।

एड़ी हालत में, मां रा घर री जगां ने छोड़ न दूजी जायगा तो नरक जेड़ी व्हे जावे । कठी ने सूं ई वीं ने मोह नी मिले जो काळजा में करोतां चालती रैं । इण ओस्था वाळा ने लुगाई जात, सुरग लोक री परी अमोलक वसत दीखे । इं वास्ते जै कोई लुगाई उण रो अणादर कर दे तो घणो ई ज दुख व्हे ।

मामी रा नैणा में फटिक सारु कोई अपणायत नीं ही, वो तो खारो लागतो । फटिक ने इं ज वात री अवकाई घणी आवती । कदी मामी हेलो पाड़ न कोई काम भळाय देवती तो फटिक री छाती चौड़ी व्हे जाती । हरख ई हरख में दूणो काम कर देतो । पण मामी वीं रा हरख ने ठण्डो कर देवती, 'वा घणो, वा घणो, रैवा दो, जावो, पढो ।' फटिक ने लागतो, मामी रो यो जुलम है ।

घर रे मांयने तो आव आदर हो ई नीं, भाग सूं वारे ई कोई जगा एडी नीं जठे दो घड़ी मन ने भोळावे । ओर नीं तो दो घड़ी जीव भर न चाळो ई करले । घर री भींतां रा जेळखाना में रैवतां रैवतां वीं ने आंपणो गांम चींतां श्रायो । वीं गांम ने चींतारतो रैवतो जिमें अमूझ न, घणा कोड सूं सहर में

आयो। वठा रो वो लांबो चौड़ो चौगान जठे आखो दिन किन्नियां उडवो करती। नंदी रा किनारा, जठे बांसरी रा सुर वाजता रेवता। मन में आयो न पांणी में धम्म देणी रा गण्ठा बीड़ता। तिरवा री कोई रोक नीं। संगीड़ा साथीड़ा चीतां आवता जारे लारे मारधाड़, कूटापीटी चालवो करती। सेंगा सूं ऊपरां चीतां आवती वा रातदिन धाकलती रेवणी मां, कूटणी मां। वीं री मन तो मां कानी भागतो रेवतो।

ई लांबा पातळा कोझा छोरा रो भंवरो भटकतो रेवतो; कोई वी ने लाड सूं बतळाय ले, कोई हेत भरी आंखियां सूं वींने देख ले। जिनावर माथे हाथ फेरावा ने हेताळ् ने सूंघवा ने आकळ वाकळ व्हे जावे ज्यूं ईं बाळक रो मन ई आकळ बाकळ व्हेय रियो। गधूळी वेळा में मरी मां रो बाछड़ू डीडावे ज्यूं ईं रो मन मां मां कर डाडां मारवा लागतो।

आखा स्कूल मे उण सरीखो भोगो अर आळखातक दूजो छोरो नीं हो। कांई पूछता तो बाको फाड़ियां ऊभो रेवतो। मास्टरजी ठोकणो मांडता तो गदेड़ा री नांई मार खायां जावतो, खायां जावतो। लड़का ने रमवा री छुट्टी व्हेती जद यो रोई कने ऊभो ऊभो घरां ने देखवो करतो। दुपेरी रा तावड़ा में, घर री चानणी पे एक दो छोरा छोरी रमतां दीख जावता तो ईं रो चित्त विचळाय जावतो।

एक दिन मन में काठो मत्तो कर मामा ने पूछियो, 'मामाजी, म्हूं मां कने गांम कदी जावूंला ?'

मामा बोलिया, 'स्कूल री छुट्टी व्हियां।'

आसोज में नोरतां री छुट्टी व्हेला, हाल तांई तो घणांई दिन आडा पड़िया है।

एक दिन कांई व्हियो। स्कूल री पोथियां फटिक गमाय दीधी। एक ईं या ई पाठ याद कोनी व्हेतो, रेता में पूरो व्हेवा ने पोथियां गमगी। काई करे बापड़ो अबे। मास्टर जी तो दिन ऊगां ठोके, अर मांजनो बखाणे। स्कूल में एड़ी गत व्ही के मामा रा बेटां ने वीने आप री लागती रो बतावतां ओलज आवती। फटिक रा मांजना बखाणीजता तो दूजा लड़कां सूं ये बत्ता राजी व्हेता।

बरदास्त सूं बारै व्हेगियो जदी फटिक मामी कनें जाय, मोटा गुन्हैगार री नांई बोलियो, 'म्हारी पोथियां गमगी।'

मामी होठां री कोरां पे रोस री लीकां खांच न बोली, 'भलो कीधो। म्हारा सूं पांतरे पोथियां नीं मोलावणी आवे।'

फटिक छानो मानो पाछो फिरगियो। वो मन में पछतावा लागो, परायो

पैंत्सो वगाड़ रियो है वो। वीं ने मां बाप पै गुमान ई आयो न रीस ई आई। आप री दसा पै वो लजाय गियो।

स्कूल सूं आवतां ई फटिक रो मायो दूखवा लागो, मांय नूं जीव अमूजवा लागो। वी ने लागियो ताव आय रियो है। मन में यो ई सोच आयो के मांदो पड़गियो तो मामी रा जीव ने घोझियो व्हे जाय। वीं री मांदगी, मामीजी रा जीव ने कसी सान्लिला जो वो जांणतो हो। मांदगी में उण जेड़ा फटोळ, मूरख, नवरा छोरा री चाकरी, मां सिवा दूजी जणी कुण करै। दूजी जणी सूं चाकरी करावा जोगो वो है ई कठै।

दूजे दिन फटिक तो भाग गियो। एड़े मेड़े पाड़ पांड़ोस रा घरां में खबर कंघी, कठे ई नीं लाधियो।

उण दिन, रात री बरखा वरस री ही, ओजूं वार खांडी नीं व्ही। सावण भादवा रा मेह री नांई जम न वरस रियो। वीं ने हेरतां मिनख भींज्या, हकनाक ई हैरान व्हिया। कठै ई नीं लाधो तो छेवट में विसंभरबाबू जाय थांणा में रपट कर दीवी।

आखो दिन यूं ई निकळियो। सांझ रा एक गाडी विसंभरबाबू रे घर रे बारणे आय न ठमी। बरखा यूं री यूं वरस री ही, गोडां गोडां तांई गैला में पाणी भरियो हो।

दो सिपाया भेळा व्हे न फटिक ने उतारियो, चोटी सूं लगाय ने एड़ी तांई पांणी सूं भीज रियो हो, आखो डील कादा सूं लथपथ व्हेय रियो मूंडो र आंखियां लाल चट्ट व्हेरिया। सी सूं थरथर धूजरियो। विसंभरबाबू दोई हाथां में तोक न म्हांयने लेय गिया।

मामी देखना ई फुगकारो कीवो, 'क्यूं पराया टावर ने राख दुख मोल लेयरिया हो। भेज दो परो ईं ने ईं रे गांम।'

विसंभर आखो ई दिन चिंता फिकर करता रिया, कांई खावो पीवो नी, झाळ में आय वारा टावरां पै चिड़ता रिया।

फटिक रोवते थके कियो, 'म्हूं तो मां कने जायरियो हो। ये धींगाणी म्हनें पकड़ न ले आया अठै।'

ओचवोच ताव में पड़्यो रियो, आखी रात सीतांगी वातां करतो रियो। विसंभरबाबू डॉक्टर ने बुलाय लाया।

फटिक एकर राती राती आंखियां खोल, न छात साम्हो टकटकी लगाय न पूछियो, 'मामाजी, म्हारी छुट्टी व्हेगी कांई ?' विसंभरबाबू अंगोछा सूं आंसू पूंछ न, ताव में बळता बाळक रा नवळा हाथ हेत सूं गोद में राख न बैठिया रिया।

फटिक वळे वड़वड़ावा लागो, 'मां, म्हने मार मती म्हें कांई नीं कीधो।' दूजे दिन, थोड़ो दिन चढ़ियां, थोड़ीक ताळ सारू फटिक ने चेतो आयो, कजांणा कि ने देखवा री उम्मेदवारी में घर रा कूणां कूणां ने आंखियां फाड़ न देखवा लागियो। नफाफड़ व्हे, आस छोड़ भींत आडी ने मूंडो फेर न सूयगियो।

विसंभर वावू वीं रा मन री वात ने अटकळी, कान रे भड़े मूंडो लेजाय न धीरेकरा, मिठास सूं बोलिया, 'फटिक वेटा' थारी मां ने वुलाई है, आती व्हेला।'

दूजो दिन ई यूं ई निकळ गियो। डॉक्टर उदास व्हेय, फिकर करतो वोलियो, 'ढंग ढोळ कोझा है।'

विसंभरवावू टमटम करता दिवला रा चांनणा में, माचा रे कनें वैठ फटिक री मां रे आवा री वाट देखरिया।

फटिक जहाज रा खलासियां री नांई वांरी राग में वड़वड़ाय रियो, एक वांव मिला नीं, दूजा वांव मि-ला-आ-आ-नीं। कलकत्ता आवती वैळां थोड़ी दूर वो स्टीमर में चढ़ियो हो। स्टीमर रा खलासी पांणी में रारड़ी न्हाक गावा री राग में पाणी मापे। सन्निपात में पड़ियो फटिक ई खलासियां री नांई, करूणा भरिया सुर में पांणी माप रियो हो। जि अथाग समंदर में वीं रो जीवण जहाज, डूव रियो हो, वीं समंदर में वीं ने थागो नीं मिल रिया हो। डूंजरा वायरा री नांई फटिक री मां घर में वळी। गळो फाड़ कूकाई। विसंभर घणी दोरी वीं ने डाडां मारती ने रोकी। लाडला लाल रा माचा माथे झांप खाय न पड़गी, रोय रोय हेला मारवा लागी, 'फटिक रे, म्हारा लाल रे, म्हारा सूवा रे।'

फटिक जांणे घणो सोरे ईं हेला रो जुवाव दीधो, 'हैं ?'

मां पाछो कियो, 'फटिक रे, वेटा, म्हूं आयगी।'

फटिक धीरे धीरे पागती फेरी, किरा ई साम्हा झांकिया विना, धीमे धीमे, दवियोड़ा कंठ सूं वोलियो, 'मां अबे म्हनें छुट्टी व्हेगी। मां, अवे म्हूं घरे आवूं, मां।'

●

रासमणि रो बेटो

रासमणि, काळीचरण री ही तो मां, पण मां ई वा ही बाप ई वा ही। माथ रा पळटा सूं वीं ने बाप री जायगां ई लेवणी पड़ी। जठै मां रा अर बाप रा, दो ई पद मां ने संभाळणां पड़ै वठै टाबर दोरा ई सुधरे। रासमणि रा परणिया भवानीचरण सूं बेटा पै आंख राखणी नीं आवती। कोई वां ने पूछ्यो के थां बेटा ने लाड में क्यूं इतरावो, भवानीचरण पाछो जो जुवाब दीवो, वीं जुवाब ने समझवा ने वां रा घर री जूनी ख्यात सूं वाकब व्हे जाणो चावे।

चानवाड़ी रा मोटा, मातबर, आछा रजक वाळा घर में भवानीचरण जनमिया हा, भवानीचरण रा बाप अभैचरण री पैलोड़ी परणियोड़ी रा बेटा श्यामाचरण हे। बूढापा में लुगाई मरियां अभैचरणजी दूजो वियाव करवा रो मतो कीधो तो बेटी रे बाप, पैलां ई ज बेटी रे नाम गांम लिखाय लीवा। आलन्दी रो इलाको लिखाय बेटी ने डोकरा ने परणांई। जवांईजी री ओस्था रो मंन में हिसाब लगाय लीधो। बेटी रांड व्हे जाय तो ये गामड़िया गुजारो करवाने घणां, सोक रा बेटां रो मूंडो नीं देखणो पड़े। बेटी रे बाप, परणायां पैला जो धारियो वो आगे तो फळगियो। दोयता भवानीचरण रे जनम रे थोड़ा दिनां पाछे जमांईजी तो चालता रिया। बेटी रे नाम गामड़िया कडाया वे वींरा कबजा में आय गिया। बेटी ने जागीर रे धनियाणी व्हेती आप री आंख सूं देख बाप रो ई सोरों सोरो जीव मुगत व्हियो।

सौकीलो बेटो श्यामाचरण वां दिनां मोट्यार जुवान हो। श्यामाचरण

रो मोटो बेटो, भवानीचरण सूं एक बरस मोटो हो। काका भतीजा रे बारा म्हीनां री लौड़ बडाई ही, श्यामाचरण आप रा बेटा रे लारे माई मां रा भवानी-चरण ने ई मोटो करवा लागा। श्यामाचरण मांई मां रा गुजारा रा पैइसा ने नीं भींटतो। बराबर धिगालिया धिगालिया रो हिसाब बताय, पैइसा सूंप, मां रा हाथ री रसीद लेय लेवता। जणों जणो वां रा भलापणां रा सरांवणां करतो।

सांची पूछो तो घणां जणां ईं भलापणां ने भोळापणो समझता। वां री जांण में फोकट ही या सफाई। बाप दादां री कदीमी जागीर रो हिस्सो एक दूजी लुगाई रा हाथ में सूंपणो, गांमवाळां रा मन में नीं भावतो। जै सफाई रो हाथ बताय श्यामचरण वीं लिखापढी ने उड़ाय देता तो सांचाणी वांरी तारीफ करता आड़ोसी पाड़ोसी। एड़ा भला काम में सल्ला देवणियां रो ई टोटी थोड़ो ई पडजातो। पण श्यामाचण आप रा कदीमी हक हकूकां ने छोड़, मांई मां रा गुजारा री जागीर ने कायम राखी।

कि तो ईं भलापणां सूं अर कि माई मां रो सुभाव ई भलो हो। मांई मां ब्रजसुंदरी, श्यामाचरण पै पूरो भरोसो राखती, बेटा ज्यू जांणती। टका टका रो हिसाब देवा लागतो जद कदै ई कदै ई वा नाराज व्हेय न ओळमो देवा लाग जावती, 'यो थांरो म्हारो कांई है बेटा अतरो? म्हूं कसी जागीर ने लारे बांध न ले जावूं। है जो थांरो ईज है।' पण श्यामाचरण तो हिसाब देवा में र रसीद लेवा में कदी ढील नीं कीधी।

श्यामाचरण आप रा बेटां पै पूरी आंख राखतो। पण भवानी ने आंख रे सणकारे कदी कांई नीं कियो। मिनख कैवता, देखो, है तो मांई मां रो पण आपरे पूतां सूं सवायो लाड़ राखे। ईं रो फळ यो निकळियो के भवानीजी ठोठ रै गिया, काम काज कांई आयो नीं, पराया सारै जमारो बीतावा जोगा रै गिया। लैण देण, जागीर रा काम रे तो वां हाथ ई नीं अड़ायो। बारा म्हीनां में दो चार दांण रसीदां पै दसगत करणां पड़ता जो दसगत कर न फारिग व्हे जाता। दसगत क्यूं करणां पड़े? आप कदी ईं वात पै सोचियो ई नीं। सोचता ई खरी तो समझ में तो आपरे आवा ने हो।

अठी श्यामाचरण रो मोवी पूत तारापद बाप रे लारे काम काज करतो जो पूरो फरवट व्हे गियो काम में। श्यामाचरण रे फौत व्हेतां ई तारापद भवानी ने जाय कियो, 'काकाजी, अबै आंपांरो भेळो रेवणो ठीक नीं। कूण जांणे कदी कोई वात पै झोड़ पड़ जावे। आपसरी में लड़ां झगड़ां तो भूंडा लागां। घर खळविखळ व्हे जावे। थांरो म्हारो रूपाळो ईं में ईज है के राजी राजी, भरिये भरम न्यारा व्हे जावां।' भवानी तो सात भव में ई नीं सोचियो के वींने न्यारो

भलाई रो काम भेल राखियो। दूजां री उपगार व्हो र मत व्हो आप रो कर ई रिया हा।

बगलाचरणजी राय दीधी, 'वसीयतनामो लावो र मत लावो। बाप दादां रा माल में दोई भायां री बरोबर पांती व्हे ईं में पूछणो ई कांई।'

तारापद कनें एक वसीयतनामो निकळियो। जिमें भवानी री पांती में कांई हो ई नीं। सगळी जमीं जायदाद पोता रे नाम कर राखी ही।

मुकदमा रा समंदर में बगलाचरण रे भरोसे भवानी नाव छोड़ दीधी। जमीन जायदाद, धन संपत्ति रो खेंगाळ व्हे गियो। भवानी मुकदमा में नांगा व्हे गिया, आलंदी री घणी खरी जमीन तो मुकदमा रा खरचा खाता में बाणियां रे घरे पूगी। थोड़ी घणी री जिसूं दाळ रोटी भलां ई चालो। जूनो घर रेग्यो जो ई भवानी जाण्यो भलो भाग। ईं ने मोटी जीत जांणी। तारापद कबीला ने ले सहर रा मकान में रैवा लागगियो। दोई कडूंब रो आवण जावण खतम व्हेगियो।

[२]

श्यामाचरण रो यो धरमहार पणों ब्रजसुन्दरी रा हिवड़ा ने सालतो रैवतो। बाप रा वसीयतनामा री चोरी कर भाई रे लारे धोखाबाजी तो कीधी ज पण बाप रे लारे ई विस्वासघात कीधो। जीवती री जतरे डोकरी निसासा भर भर कैवती री 'भगवान पूगेला'। भवानी ने ई दिलासा देती रैती, 'कानून न कचेड़ियां तो म्हूं जाणूं नीं पर देख लीजे एक दिन थनें थारो वसीयतनामो मिलेला।'

मां रा मूंडा सूं घड़ी घड़ी री आसा भरियोड़ी दिलासा सुण भवानी ने ई भरोसो आय गियो वसीयतनामो जावै कठे। आंपणो है तो एक न एक दिन आपां तीरे आयां रैवेला। आसा भरी दिलासा ई घणी ही तसल्ली करवाने। मां सती ही, सती री वायया फळेला ई ज, हक री चीज हकदार ने मिले ई, पक्को नेहचो हो भवानी ने। मां रे मरियां पछै तो यो नेहचो और पक्को व्हेगियो। मरियोड़ी मां री पुन्न अर तेज चौगणो व्हेय न उण ने दीसवा लागो। तंगातंगी अर फोड़ा तो घणां पड़तां पण भवानी हियापो नीं लीवो। कैवो करता या हाथ री तंगी, लेण देण री खैचतांण सदामद थोड़े ई रैवेला, दो दिन रा फोड़ा है निकळ जाय। पाछा आपणां ई दिन पावरा आय जद पाछा सैग थोक व्हेला।

जूनी पुराणी ढाका री धोवतियां फाटगी, अबे रेजा री जाडी धोवतियां मोलावणी पड़ी, पूजा रा उच्छव में ई सदामद वाळो खरचो कठा सूं आवतो, कंकू लच्छो चढ़ाय पूजा रा दस्तूर कीधा। कारू कमीण, आया गिया पांवणा पीर

नौसासा भर जूना जुग री वातां चलाई तो भवानी हंस दीधो। सोचवा लागियो वो ई जूनो जुग पाछो आय, यां ने कांई खबर के यो दो दिन रो खेल है। एड़ा धूम धड़ाका सूं पछे पूजा रो उच्छव मनाऊंला के देखवावाळा देखता रैय जाय। आगे आवणिया जमाना रा धूम धड़ाका ने वे एड़ा परतख देखता के आज रा हाल जमाना री तंगातंगी पे वांरी निजर ई नीं पड़ती।

यां सपना देखवा में पक्को साथी हो वां रो खास हाजरियो नटवर। ठाकर चाकर गरीबी गुजारता सलाह मसविरो करता के दिन पावरां आयां पूजा रा उच्छव में कांई कांई खुसियां करांला। किने नूंतां देवां किने नीं देवां। कलकत्ता सूं नाटक मण्डळी बुलावांला के नीं, यां मुद्दा पै जोर रो आपसरी में झोड़ व्हे जातो। नटवर आपरी क्रिपण आदत सूं लाचार उच्छव रा खरचा में काटापीटी करतो, भवानी चिरड़ जावता। नाराज व्हे रीस रोस व्हेवा लाग जावता। एड़ी परचावां चालती रैती।

धन दौलत, जमीं जायदाद रो कोई एड़ो खास हेजको नीं हो भवानी रे। हां, मन में एक अणख जरूर आवती के पछे वीं जमीं जायदाद ने भोगेला कुण। अस्त्री रो पेट फाटियो नीं। परणावा जोग टाबरियां रा बाप, भवानी कनें भलो चावणियां वण न आवता, दूजो वियाव करवा री सल्ला देवता तो मन हालवा लागतो। नुवीं लाडी रो खास कोड व्हे जेड़ी वात तो नीं ही पण जूनी रीत रे मुजब अन्न, वस्त्र अर चाकर री नांई अस्त्री ने ई रईसी रा अहनांण मानता। रईसी तो घरे आवा री आसा अर टाबर नीं व्हियो तो? आवावाळी जमीं जायदाद ने बिलसवावाळा री चावना जरूर ही।

भगवान भली कीधी, बेटा रो मूंडो देखियो। जो देखो वोई कैवे, घर रा भाग पलट गिया जांणजो। बड़ा ठाकर सा अभैचरणजी पाछा आया है। वे री वे मोटी मोटी आंखियां। वो ई ज ललाट। टाबर री जनमपत्री देख जोसी कियो 'कुण्डळी में ग्रेहां रो एड़ो संजोग बेठियो के गयोड़ो राज पाछो घरे आयां बिना रैवे ई नीं।' बेटो व्हियां पछे भवानी रो सुभाव वदलवा लागियो। अबार तांई तो वे टोटा नफा ने माया रो खेल केय मन ने भोळाय देवता पण अबे मन भोळावणी नीं आवतो। शानवाड़ी रा नामदार, ठाकरां रा ठिकाणा में बुझता कुळ रा दीवा, नामीं नखतरां में जलमियोड़ा साव पैईसो चावे के नीं? ओजूं तांई बराबर पीढियां सूं ई घर में ज्यां जनमिया वांरा लाडकोड वीं ज ठाठ बाट सूं व्हेता रिया। यो ई ज पूत एड़ो जनमियो जिण रा लाडकोड करणे री ठाकरां में सामरथ कोयनी, आपरी या मजबूरी ठाकरां ने भांयनूं खावती रै। म्हारा खानदान री आडू मुरजाद लायक बेटा साव कीं नीं कीधो। ठाकरां ने लागे जाणे

मोटो कसूरवार हूं ईं टाबर रो। आपरी समरथ सूं सवाय लाड कोड करे। भवानी री परणी रासमणि दूजा ई सांचा री ढळियोड़ी ही। वीं रा मन में भवानी रा कुळ रा मोटापा ने लेय कोई अंजस के चिंता के दुख जेड़ी वात कदे ई नीं आई। भवानी जाणता हा, मन में मूंडो बिगाड़ न कैवो करता, 'रासमणि तो माफी री हकदार है। वा बापड़ी कांई जाणे कुळ री मोट मरजाद। घर गुवाड़ी वाळा रे जनमियोड़ी घरवट्ट, कुळवट्ट री रीतां कांई समझे? राजव्यां री रीत रो राजवी जांणे।

रासमणि उरळा मन सूं मान जावती के 'म्हूं घर गुवाड़ी वाळां री बेटी, मोट मुरजाद सूं म्हारो कांई लेणो देणो। म्हारो काळीचरण जीवतो रो।' गमियोड़ो वसीयत नामो पाछो लाधेला, घर री संपदा रो सूखियोड़ो तळाव पाछो डाकवा लागेला यां वातां ने वा ईं कान सूं सुणती दूजा सूं काढ देवती। अठीने बालमजी रा ये हाल के कोई मिनख गाम में एड़ो नीं जिण सूं वसीयतनामा रो जिकर नीं कीधो व्हे। ईं री चरचा नीं करता तो खाली आपरी लुगाई सूं। एक दो दांण वात चलाई पण वात करवा रो मजो नीं आयो जो मन मार न रैगिया। रासमणि नीं तो पाछलां दिनां री मैहमा सुण न राजी व्हेती, नीं आगे आवणिया भला दिनां री वात में ई रस लेवती। आज रा टोटा रा टापरा में झांय झांय करतां जमारो काढ री ही। दिन ऊगतां ई लाव लाव तेल लूण, लाकड़ी री लागती। लिछमी तो सौरी सौरी घर छोड न पधार जावे पण जावती लगी अतरो भार छोड न जावे के पाछलां री बोझो उठावतां टाट पोली पड़ जावे। आजीवका रो आसरो तो टूट जावे पण आसरे पड़ियोड़ा पिंड नीं छोड़े। भवानीचरण सुभाव रो एड़ो के टोटो फांसी आप भोग ले पण मूंडा रो जुबाब नीं दे। बोझा सूं लदियोड़ा भरियोड़ा गिरस्थी रा गाडा ने खैंचणो पड़े रासमणि ने। मदद नांम री चीज तो कोई वीं ने दे नीं। आच्छा दिनां में तो हाली नवाली मजा ठोकता, आळस में पड़िया रैवता। अबे दौरा व्हेतां मौत आवे। काम करवा रो कैवो तो लागै जांणे माथा पै भाटा री ठोकी। चूल्हो सुलगावणो पड़ै तो माथो दुखाय ले, पांच पांवडा चालवा ने कैवो तो गोडा बाव सूं जुड़ जावै। ईं उपरै एक तुर्रो और है, भवानी कैवे, आसरे पड़ियोड़ा ने रोटी देय एवज में काम कराणो और ई भूंडो। बदला में काम लीधो न आसरो देवा रो महात्तम गियो। आपणां ठिकाणां में कदै ई यूं नीं व्हियो।' जो काम करो बापड़ी रासमणि करो। सैंग बोझो उण पै लदै। रात दिन, आ[illegible] पाछली कर घर रो ढांवो ढाबे। काठामाठा, खैंचातांणी कर आपरो ई पेट भरे न दूजा रा[illegible] ई पेट भरे। ईं हालत में मिनख में कंवळाई कींकर रैवे, रसोवड़ा में जाय खाली रोटी भा[illegible]

ज करणी व्हे जदी तो कांई वात नीं पण तेल लूण रो उपाय करवारो काम ई रासमणि रो। ऊपरे छोगो यो के, रोटा खाय न पड़्या रेवण्या नंदा करे वां रोटियां री अर रोटियां रा देवाळ री।

रासमणि ने कोरा घर रो ई काम नीं करणो पड़े। थोड़ा घणा खेत; वाड़ है जां रो लेणो देणो, उगाही, हिसाब किताब ई करणो पड़े। लेवा देवा में आजकाले कसाकसी है जेड़ी कदी नीं ही। भवानी रो पेइसो ठीक अभिमन्यु री उलटी विद्या जांणतो। वीं ने कढणो ई आवतो घसणो नीं आवतो वां मांगवा रो तकाजो करणो, उगाई करणी तो सीख्यो नीं। पण, रासमणि उगाही रा मामला में एक छदाम छोड़वावाळी नीं। करसा आपसरी में वेठ रासमणि री खोटी खाता, काम करणिया कामेती साखावादो करता के छोटा घर री है, देखे वापरे घो करे आपरे। कदी कदी तो घर रो धणी वेराजी व्हे जावतो के यां ओछापणां सूं म्हारा ठिकाणां री आच्छी नीं लागे। पण यां नंदा अर नाराजगियां ने रासमणि गनारती नीं। आपरा ढंग सूं आपरो काम निवेड़ती रेवती सेंग वातां रा दोस माथा पे झेलती, मूंडा सूं मंजूर करती, 'भाई, म्हूं तो री छोटा घर री बेटी, ये राजव्यां री रीतां आपा तो जांणां नीं।' घरां वाळां रे वारळां रे भलांई आंख में खटको। कमर रे खकोल ओढगा रो छेवड़ो ने लाग जावती काम रे लारे। छाती किण री जो मूंडा पे आय न कांई केवे।

खावंद ने कदी कोई काम सारु केवती नीं, केवणो तो कठे ई रियो वीं ने तो साम्हो सोच लागियो रेवतो के कठे ई वीचे आय न काम काज में आप री डोड पंचायत नीं करवा लागे। यूं ई वो उद्मी आदमी नीं हो फेर रासमणि केवती रेवती, 'यां रेवादो; म्हूं सेंग काम निवेड़ लेवूं।'

खावंदजी जलमरा ई परायो मूंडो जोवाणिया हा लुगाई ने घणों केवणो नीं पड़तो। रासमणि रो घणां वरसां तांई पेट नीं मंडियो जो, भोळा सुभाव रा पराई खाटी खावणियां खावंद सूं उण री दोई तरे री भूख, मां पणां री अर लुगाई पणां री भूख, तिरपत व्हेती रेती। भवानी ने वो एक मोटो टाबर समझती। सानु रे मरिया पछे घर री लुगाई वा ही अर धणियाणी वा ही।

भवानी लुगाई रा हुकम में चालतो रियो ओजूं तांई। पर अबे वेटा काळीचरण रा मामला में, हुकम में चालणो दोरो व्हेगियो। रासमणि भवानी री निजर सूं आप रा बेटा ने नीं देखती। भवानी रो तो वा हर तरे सूं विचार राखती। काम काज रे अड़ाया ई नीं तो यां विचारा रो कांई दोस मोटा घर में जनम लीधो काम कठा सूं सीखता। ई वास्ते वा वियान राखती के यांने कोई भांत रा फोड़ा नीं पड़े। घर में मोकळी तंगी व्हो पण वांरे चावती

चीज ज्यूं त्यूं कर न लावती। वां ने कोई वात रो फोड़ो नीं पड़वा-देवती। पण बेटा री अर वाप री बराबरी थोड़ी है। वा तो वीं रा पेट री औलाद ही। वीं रे रईसी किया निभैला। उण ने तो हाथ पग हलाय पेट भरणो है, कमाई करणी है। सोलियाळ व्हे जाय वो जमारो बिगड़ जावेला। अबारुं दोरो व्हेला तो पछे मेनत मजूरी कर पेट सोरो भरेला। वीं री आदतां एडी नीं पटकूं के यो चावै न वो चावै। काळीचरण ने खावा पीवा ने ई घर में हो जेड़ो ई देवती। कलेवा में गुड़ धाणीं। सियाळा में ओढ़वा ने दुलाई, उण सूं डील ई ढंक जावै, माथो अर कान ई ढांकणी आय जावै। पौसाळ रा पिंडतजी ने बुलाय न भळावण देय दीधी, 'टाबर ने कस न पढावजो, निगै राखजो। अणूंतो मुलाहिजो राखवा री जरूरत नीं।'

बस अठै ई ज आय मुस्कल पड़ी। भोळा सुभाव रा भवानी में ई कदी कदी ऊफाण आय जावतो, रासमणि देखियो अणदेखियो कर जावती। भवानी री तो आदत ही लूंठा आगै हमेसां नीचो माथो घालवा री। माथो तो नीचे अबके ई घाल दीधो पण मन नीं झुकियो जो नीं झुकियो। ई ठिकाणा रो छोरुं दुलाई ओढे न गुड़ धाणी खावें। एड़ी वात तो कदी पीढया में ई नीं व्ही।

दुरगा पूजा रा दिन वां ने याद है। बाप दादा रा वगत में केड़ाक बेमोला नुवा नुवा गाभा पैर न केड़ाक उच्छाह सूं वे उच्छव में जावता। आज रासमणि काळीचरण सारुं एड़ा सूंघा कपड़ा मंगावे जेड़ा तो वां दिनां चाकरां ने देता तो ई परा फैंकता। रासमणि एकदांण नीं पचास दांण समझाया के काळीचरण वां वातां सूं वाकंब ई नीं है, जो मिल रियो है उण में राजी है पछे क्यूं वातां कैयकैय ई रा मन में दुख उपजावो।' पण भवानीचरण सूं भूलणी नीं आवतो के काळीचरण आपरी घरवट्ट जांणै ई ज कोयनी जदी ज तो वो ठगीज रियो है। भवानी ने सबसूं ज्यादा अबको लागतो, वां रा बेटा रे कठा सूं ई कोई तोहफा में रमकड़ो आवतो अर वो रमकड़ा ने लेय राजी व्हेतो उछळतो कूदतो वां ने देखावाने आवतो जदी।

वां सूं देखणी कोनी आवतो मूंडो फेर वठा सूं ऊठ जावता।

भवानी रो मुकदमो चालियो जद सूं ई पिरोतजी रे घरै लिछमी पांवणी व्हेगी। यां दिनां तो पूजा रा दिनां में पिरोतजी रा बेटा बगलाचरण, कलकत्ता सूं लाद विलायती रमकड़ा री दुकान खोल दे। भांत भांत री सौक री चीजां देख गांम रा मिनखा रो मोलावा ने जीव विचळाय जावै। कलकत्ता रा बाबू लोगां रा घरां में यां रो चाळो सुण गामरा मिनख ई आपरी आसंग सूं सवायो खरच कर मोलाय लेवे।

एक दांण बगलाचरण एड़ी अजब गजब री मेम लायो, जिमें चाबी भर दे तो वा कुरसी सूं ऊठ पंखो झलवा लाग जावें। ई पंखो झलती मेम ने देख काळीचरण रो जीव वस में नीं रियो, वीं रो मन ई रमकड़ा ने लेवाने आकळ बाकळ व्हेगियो। जागतो मां ने कहियां कांई व्हेला, सूवो बाप कनें गियो, बाप ने मनड़ा री बातड़ली बताई। बाप बड़ा उरळा मन सूं हामळ भरी मेमड़ी ने लाय देवा री। दाम सुणियां तो मूंडो उतर गियो।

रिपिया पैइसा री ऊगाई करणो ई रासमणि रा हाथ में है, खरचो करणो ई वीं रा हाथ में। भवानी मंगता री नांई दाता रा दुवार पै गिया। पैला तो अठीली बठीली, फोकट री बातां कीवी, पछे झट आपरा मन मांयली कैय दीधी। रासमणि मूंडो देख न बोली, 'मगज फिरतो नीं गियो है?'

भवानी सोच विचार न बोलिया, 'देखो, रोटी रे लारे म्हनें थां घी अर खीर देवो उण री कांई जरूरत है?'

'है क्यूं नीं जरूरत।'

'वैदजी कैवे हा यां सूं तो पित्त वधे।'

जोर सूं माथो हिलाय रासमणि बोली, 'थांरा वैदजी तो सैंग जांणै।'

'म्हूं तो कैवूं हूं, रात रा परांमठा री जगा भात दे देवो करो। परांमठा सूं में भाटो सो पड़ जावो।'

'आज ई पेट में भाटो पड़ गियो है कांई? उमर तो बीतगी है रात ने परांमठा खावतां।'

भवानी तो कैवो जो त्यागवा ने त्यार हा पण परणी एड़ी करड़ी री के चुप्प व्हेणो पड़ियो। घी मूंघो व्हेतो जायरियो पण रासमणि भवानी सारू पूड़ी परांमठा बणावती ज। परभाते रा जीमण में दही अर खीर बणतीज। ई घर में सदीप सूं ये तींवण बणता जो बणताई ज यां में फेरफार नीं व्हियो। भूल्यां चूक्यां कदीक दही नीं व्हेतो वो रासमणि ने या चूक चुभती रैवती। भवानीचरण रे घी, दही, खीर, पूड़ी री तिल मात्तर कमी कर न वां मेम सा'ब री घर में पधारावणी नीं व्ही।

भवानी एक दिन पिरोतजी रे घरे पूग्या, बतायो यूं के जांणे घूमता टैलता आय निकळिया है। अठीली बठीली बातां कर न वीं हूली-रो पूछियो। या तो जाणता हा के बगलाचरण उणां री माली हालत सूं वाकब है पण लाजां मरतां जमीं में धस्या जायरिया हा के यो कांई जांणेला के एक मामूली सी गुड़ी, बेटा सारू कोनी मोलावणी आय री है। संकता संकता धीरेकरो दुपट्टा नीचे सूं गाबा में पळेटियोड़ो, घणमोलो कस्मीरी दुसालो काढयो।

भरियोड़ा गळा सूं बोलिया, 'दिनमान एड़ा ई है। हाथ में रोकड़ तो हा नीं, सोचियो दुसालो थांरे अठे गैणे राख टाबर रे गुड्डी ले लूं।'

दुसालो एड़ो कीमती नीं व्हेतो तो बगलाचरण ने कांई एतराज नीं हो। पण वो जाणतो ई ने पचावणो दौरो है। आखो गाम कूकवा लागेला। रासमणि रा सुणावणां ने झेलणा दोरा पड़ेला। दुसाला ने पळैट न भवानी ने पाछो लावणो पड़ियो।

काळीचरण रोजीना बाप ने पूछ लेवतो, 'बापजी, मेम रो कांई व्हियो ?'

बापजी रोज हंस न कैवता, 'पूजा आवा दे बेटा, ओजूं तो घणां ई दिन आडा है।'

रोज रा रोज धींगाणी मुळक'न टाबर ने कूड़ी दिलास देवणो दौरो व्हेगियो। आज चौथ तो व्हेगी। सातम आडा दिन तीन रिया। भवानी कांई न कांई मिस कर न मांयने गिया। वात करता करता एकणदम बोलिया, 'है, म्हूं देखरियो हूं काळीचरण माड़ो व्हेतो जाय रियो है।'

'थूंको, मूंडा सूं। मोडो क्यूं व्हेण लागियो।'

'देखो कोनी, मुरझायोड़ो सो बैठियो रे। रमे न खेले छानो मानो रे।'

घड़ी एक ई छानो मानो रेवतो व्हे तो चावे कांई। उदमाद तो करतो रे।'

गढ़ री अठीली भींत ई नींवण निकळी। भाटा पे गोळा रो सैनांण ई नीं मंडियो। गैरो सांस लेय, माथा पे हाथ फेरता भवानी बारे आय गिया। अकेला चौकी पे बैठ न चिलम रो लांबो सटकारो खैंच्यो।

पांचम रे दिन थाळी में खीर ने दही यूं रो यूं पड़ियो रियो। रात ने एक पेड़ो खाय न. ऊठ गिया। पूड़ी रे नख ई नीं अड़ायो। अतराक ई ज बोलिया, 'भूख कोयनी।'

अबकाळे गढ़ री भींत में मोटी बगारो पड़ियो। छठ रे दिन काळीचरण ने रासमणि एकमाड़ी लेजाय लाड सूं वतळायो, 'मंटू, थां मोटा व्हे गिया बेटा, थां चीजां मांगवा ने जिद्द करो ओजूं ई, माड़ी वात। जांणो जो चीज मिले नीं वीं रो लाळच करणो आधी चोरी है। जाणो नीं ?'

काळीचरण रीं रीं करवा लागियो, 'म्हूं कांई करूं। बापजी कहियो, लाय देवूं।'

रासमणि ई लाय देवूं रो अरथ अरथावा लागी के यां दो लफजां में कतरो लाड है, कतरो प्यार है अर कतरो दुख है। वां रा ला-य- दूं ला में आंपणां गरीब घर री कतरी हाण है। रासमणि आजलग कदै ई यूं टाबर ने नीं समझायो हो जो कैवणो व्हेतो बस हुकम देय देती। आज जो विसतार सूं समझाया तो

सातम रे दिन काळीचरण री आसा फळी ही, पंखो झळणी मेम हाथे लागी। आखो ई दिन मेम तीरूं पंखो झलाय झलाय दूजां छोरां ने बतावतो रियो। देख देख छोरां रा मन में ईसको आवतो रियो। यूं मोल लियोड़ी व्हेती तो आखो दिन कदाच नीं देखतो। देखतां देखतां औरणी आय जावतो पण आठम रे दिन मेम पाछी आपरे घरे परी जावेला ज्यूं देखवा रो मन चालतो रियो। रासमणि पिरोतजी रा बेटा ने दो रिपिया रोकड़ा देय एक दिन वेई गुड्डी ने भाड़े ले आई ही। आठम रे दिन लांबो सांस लेय, डिब्बा में घाल न काळीचरण जाय बगलाचरण ने पाछी सूंपियायो। उण एक दिन री मीठी याद आवती री। वीं रा कळपना जगत में तो ओजूं तांई पंखो झाल ई री व्हेला। अबै काळी मां रो सल्ला में सलाहकार व्हेगियो। अबै भवानीचरण आवते बरस पूजा में एड़ा एड़ा घणमोला रमतिया, तोहफा में देवा लागा के उणा ने आपने अचम्भो आवतो। संसार में दाम दीधां बिना कांईज नीं मिले। अर वो दाम कतरा दुख देखियां मिले, ईं सार ने काळीचरण समझवा लाग गियो। घर गिरस्थी ने ढावणी है, बोझो वधावणो नीं है, या सीख किणी दीधी कोयनी पण काळीचरण समझ गियो। सीख सरीरां ऊपजै दीधां लागै डाम।

अबै घर रो बोझो माथे ओढवा ने त्यार व्हेणो है। या वात हिया में उतार भणवा पढवा में लाग गियो। पास व्हियो, वजीफो मिलण लागियो तो भवानीचरण कैवा लागिया, 'घणोई भण पढ़ गियो, अबै घर रो काम संभाळ।'

काळीचरण मां ने कियो, 'मां कलकत्ते जाय न आगै री भणाई नीं करूंला तो म्हूं जोगो कियां बणूंला ?

'हां बेटा, कलकत्ते तो जाणो ई होसी।'

काळीचरण कियो, 'म्हारे माथै पईसो लगाणो नीं पड़ेला, वजीफो मिले ई है, काम चिकाय लेवूंला, नीं व्हेला तो छोरा भणाय कांई उपाय कर ई लेवूं।'

घणा दोरा भवानीचरण ने राजी कीधो। घर में जमींदारी रो एड़ो काम ई कांई है जो अंवेरे, तो यूं कैतो तो भवानीचरण रो जीव दुख पावतो। रासमणि बोली, 'भण पढ न काळी ने जोगो तो वणणो है नीं ?' पण पीढ्यां में ओजूं तांई कोई वारै गियो नीं जो ई इण घर रा तो सैग एक एक सूं एक जोगा व्हिया है। भवानी ने तो दिसावर ने जमपुरी बरोबर लागती। वां रे या ई समझ में नीं आई के काळीचरण जेड़ा वेटा ने वारै भेजवा री वात सोचणी ई कियां आवै। और तो और गांम भर रो ठावो मिनख, अकल रे उजीर बगलाचरण री वा ई ज राय व्ही जो रासमणि री राय ही। वीं बगत री वात की, 'यां ने कलकत्ते भेज दो, एक दिन वकील वण न ये वीं गमियोड़ा वसीयतनामा ने हेर न पाछो लावेला, वैमाता

रा लिखियोड़ा आंक कदेई टळे ? कळकरी जावतां ने रोक ई नीं सके कोई।'

वात खट्ट देणी री आसे बैठगी, भवानी ने घणी तसल्ली मिली। जूना कागद पानड़ा काढ न काळीचरण सूं वसीयतनामा री चोरी री वात केवा लागिया। काळीचरण रा मन में, हार्यां वारे गयोड़ी जमीं जायदाद री कोई खास कसक तो ही नीं। वाप कैवतो गियो वो हूंकारा भरतो गियो। भवानीचरण बेटा ने कलकत्ता भेजवा री त्यारी करवा लागा। जाणे रामचन्दरजी लंका रा गढ़ पै जावा री त्यारी कर रिया व्हे। या जात्रा कोई असी वसी जात्रा पढवा री के पास करवा री जात्रा थोड़ी ही। या जात्रा तो गियोड़ा राजपाट ने पाछो घरे लावा री जात्रा ही।

कलकत्ते जावा रा मोरत रे एक दिन पैलां रासमणि काळीचरण रा गळा में तावीज बांध न पचास रिपिया रो नोट हाथ में पकड़ायो, 'ईं नोट ने संभाळ ने मेल दीजे, अवखी वेळा चावै जदी काढजे।'

पेट काट काट न घणां दोरो संचियो थको यो पचास रो नोट हो। काळीचरण ईं नोट ने माथे चढ़ायो, मन में संकळप लीधो के मां री या सैनाणी है। दोरी कमाई रा यां रिपिया ने, अवेर न गाढा कर न राखूंला।'

भवानीचरण अवै आजकाले वसीयतनामा री घणी वात नीं करे। आज-काले तो काळीचरण री ज वातां करता रे। वीं री वात करवा ने आखा वास में फिर ले। कागद आवता ईं घरे जाय न वांचे। नाक नीचे चस्मो उतारता ई ज नीं। पीढ्यां में कदी कोई कलकत्ते गियो ई ज नीं, वां रो वेटो कलकत्ते पढे, आजस सूं छाती सवा हाथ चौड़ी व्हे जाती। 'म्हारो बैटो कलकत्ते पढे, कठा री कोई वात उण सूं छानी नीं। हुगली कने गंगाजी पै एक पुळ और वण रियो है। एड़ी एड़ी खवरां तो उणां रा घर री खवरां व्हेगी। 'सुणिओ के, गंगाजी पै एक मोटो पुळ वण रियो है, आज ई काळीचरण रो कागद आयो, कागद में सब खवरां लिखी है।' यूं कैवता थकां चट देणी रो चस्मो काढता न पूंछता। पछे कागद ने वांच न सुणावता। 'है देखो कांई जमानो वदलियो है। कुण जाणे अगाड़ी ओजूं कांईं व्हेला। अवे है, गंडकड़ा, मिनकिया सैंग ई गंगा ने पार करेला। कळजुग आय गियो कळजुग।'

जिण सूं ई वे मिलता माथो हलाय न कैवता ई ज, 'कैवूं हूं नी के अवै गंगाजी घना दिना ठैरवाने नीं।' मन में वांने या आसा ई ही के गंगाजी जावा लागेला जदी वा खवर ई सब सूं पैला काळीचरण रा कागद में आवेला।

कलकत्ता में काळीचरण, सांझ सुवै कठै ई खाता लिखतो, टावरां ने भणावतो न आप रो गुजरान अवको दोरो करतो। घणी मुस्किल प्रवेशिका री

इमतिहान पास कीधो। वजीफो मिलण लागियो। भवानीचरण सारू तो या वात तवारीख में सोना रा हरफां में मंडणी चावे। मन मेंग्राई सारा गांम ने ई खुसी में गोठ देवा री। नाव तो अबे किनारे लागवा ई ज वाळी है। क्यूं नीं अबे वींरे भरोसे मन खोल खरचो खातो करूं। रासमणि रो तौर देख न गोठ रुकगी।

काळीचरण ने अबकाळे कालेज रे कने एक मेस में जायगां हाथे लागगी। मेस रे दरोगे नीचला खण्ड में एक काम नीं आवती वा ओवरी रैवा ने देय दीधी। कालीचरण वींरा टाबरां ने पढावतो, दोई वगत वो रोटी खावा ने देय देतो। मेस री ओवरी में रेवतो जी में संद आवती जो कंदी कंदी वासती। वीं ओवरी में एक साता ही दूजो कोई भेळे नी रैवतो। अकेलो काळीचरण हो जो पढाई में भांगों नीं पड़तो। काळीचरण री आसंग ई नीं के आराम री चीजां पोसावे तो पछे वो यां वांतां ने सोचवा रा फोडा ई क्यूं देखतो।

वीं मेस में भाड़ो देय न रैवणिया हा, खास कर न वे ऊपरळा खण्ड में रैवता, वांरे लारे काळीचरण री सेंध बेंध नीं ही तोई छातीकूटो व्हेणो लिखियो व्हे तो परो व्हे। मेस रा ऊपरला खण्ड में एक बड़ा आदमी रो बेटो रैवतो। कॉलेज में पढ़ती वगत मेस में रैवा सूं उण ने कोई लाभ नीं हो पण वीं ने मेस में रैवणो सुवांवतो। वीं रा घरवाळा तो घणी दांण कैवायो के भाड़ा पै घर लेले। मोटो परवार है दो चार घर रा आदमी लुगाई वठै रैवो करां। पण शैलेन्दर आळखो लेय लीधो के घर में रैवा सूं भणवा पढवा में भांगो पड़े। वात दूजी ही शैलेन्दर ने दोस्तां रे लारे हा हू करणी, धाम घड़ाको करणो सुवांवतो आड अडावण घर वाळा आय जावै तो ये सैंग बन्द व्हे जावे। यां रे तो ताळो लागै जो लागै, आंगछ में रैवणो पड़े जो सिवायखाते। 'यो करो, यो मत करो, यूं करियां खोटी लागै।' सूता बैठ्यां यो दुख वो मोल क्यूं ले। आजादी रे साथे मेस में रे। आपरी नींद सूवे, आपरी नींद जागे। यूं आदमी मेस में तो घणाई रैं, पण ई किरी जिम्मेदारी किरे ई माथै नीं मते आवे मते जावै। नंदी रा वेवता पाणी री नांई वेवता जावे पण छेकलो कठे ई नीं छोड़ न जावे।

शैलेन्दर सुभाव रो खरचीलो आदमी हो। उण रा मन में दया ई ही। दूजां री मदद करवा ने ई वो ताखड़ो रैवतो। ताखड़ो अतरो रैवतो के दूजो वीं रो सरणो नीं लेवतो तो वो वीं ने दुख देवा ने ई ताखड़ो व्हे जातो। उण री दया जदी निर्दयी बणती तो वा पछे जलाल वण जावती।

मेस में रैवणियां ने सिनेमा बतावणो, होटल में खुवावणो, रिपिया उधारा देवणो, अर देय न भूल जावणो उण रा गुण हा। नुवों परणियोड़ो जुवान पूजा में घरे जावा लागतो। ढाबा रा पैईसा चुकायां पछे आंट में कांई नीं रैवतो

तो एड़ी वेळा में शैलेन्दर चीतां आवतो, 'भाई घरे जाय रियो हूं; घरे लेजावाने सामान खरीदाय देवो ।' शैलेन्दर साथै जाय असी सौक री चीजां री हाट बतावतो । एड़ी दुकान पे जाय सूधो, रद्दी चीजां मोलावतां देख शैलेन्दर सूं रैवणी नीं आवतो, 'थनै चीज री पैचाण ई नीं, हट, म्हूं छांट दूं ।' शैलेन्दर आच्छी, बढिया वसत टाळवा लागतो, दुकानदार कैवतो, 'चीजां री पैचाण तो यां बाबूजी ने है ।' छांटियोड़ी चीजां रा दाम सुण मोलावणियां रो चालतो सांस हब जावतो । शैलेन्दर रो हाथ बटवा माये जावतो । अगलो आदमी नटा नटी करतो जतरे शैलेन्दर रिपिया गिणतो निजर आवतो ।

शैलेन रे आड़े पाड़े जतरा जणा हा सगळा शैलेन री बगसीसां माथै चडाय राखी ही । लोगां ने देवा रो ढग नै अतरो सौक हो के कोई लेवतो नीं तो दुस्मण री गरज पालतो ।

बापड़ो बिचारो काळीचरण, नीचे अंधारी ओवरी में सूगली चटाई पे बैठ, फाटियोड़ो बरियान पेर, पोथी रा पान्नां मे आंखियां अड़ायन, पाठ याद करतो रैवतो । वजीफो लेणो जो वीं ने ।

कलकत्ते आती वेळां, मां उणने आंण देवाय दीवी के बड़ा मिनखां रा बेटां लारे खेल तमासा में कदी मत जावजे ।

वो ई मोटा मिनखां सूं नीं मिलतो । वो जांणतो हो के वे गरीब है, घर में नातवानी है, मोटा आदमियां रा बेटां सागे रैवणो नीं पोसावे । वो शैलेन रे भड़े व्हेय नीं निकळियो । जाणतो वो जरूर हो के जो शैलेन रो मन मनावणी आय जावे तो वीं रा रोज रोज रा घणां कळेस कट जावै । फोड़ा देखतो, दुख पावतो पण शैलेन रो मरजीदान बणवा री मन में नीं आई ।

शैलेन ने या अकड़ लागी । काळीचरण अतरो गरीब हो के वीं री गरीबी शैलेन ने अणखावणी लागती । पगथ्या उतरतां चडतां, गाबा गोदड़ा पे शैलेन री निजर पड़ जावती यो वीं नें काळीचरण रो कसूर दीखतो । गळा में तावीज हालवो करतो, दोई वेळा पूजा पाठ करतो । ऊपरली पाळटीवाळा खूब हंसता ईं रा गंवार पणां पे । शैलेन री पाळटी रा दो लड़का वीं री ओवरी में आवा जावा लागा, जांणवां ने के यो एकलखोरो लड़को करै कांई है । थोड़बोला काळीचरण रा मूंडा सूं कोई बात नीं कैवावणी नीं आई । ओवरी एड़ी कठे के जिमें घणी देर बैठणी आवे, वैंगा ई भागिया वे ।

वां सोचियो एक दिन आंपा रे नूंतो देवां, बिचारो निहाल व्हे जाय । बुलावो भेज्यो । काळीचरण कियो म्हूं तो पारटियां में खावूं नीं, अर म्हारी आदत

ई कोयनी। काळीचरण गियो नीं तो शैलेन अर शैलेन री पाळटी लाल पीळी पड़गी।

ऊपरळा कमरा में, वीं री ओवरी रा माथा पै थोड़ा दिनां अतरो ऊधम मचायो के काळीचरण रो भणणो पढ़णो मुस्कल व्हेगियो। बिचारो दिन में तो एक रूंखड़ा रे नीचे बैठ न पढतो, रात ने पौ नीं फाटती जठा पैली ऊठ जावतो भणवाने। खावा पीवा ने तो पूरो मिलतो नीं। मैंनत करतो रात दिन, काळीचरण रे तो माथो दूखवा रो रोग लाग गियो। कदी कदी तो दो दो चार चार दिन माचा पे पड़ियो रैवतो। बाप ने मांदगी रा समीचार नीं लिखिया। वो जांणतो के बाप ने ठा पड़गी तो भागिया आवेला। भवानीचरण तो जांणता के काळीचरण कलकत्ते घणो सुख में है। वे तो ईं खयाल में हा के रोई में ज्यूं घास पात, रूंखड़ो विरखड़ो, मते ई ऊग जावै ज्यूं कलकत्ता में आराम रो सामान हाथ पग हलायां बिना, आंपणे आप मिल जावै। काळीचरण आप रा बाप ने इणी ज वंम में रैवा दैवणो चावतो।

मांदो व्हे न माचा पै पड़ियो तोई घरे राजी खुशी रा समीचार लिखतो रैवतो। एड़ी हालत में ऊपरे माथा पै शैलेन री पाळटी वाळा उधम मचावता जदी तो वो महादुखी व्हे जावतो। ज्यूं ज्यूं वो नातवानी, वेइज्जती अर दुख देखतो ज्यूं ज्यूं वीं रा मन रो संकळप और ई गाढो व्हेतो जावतो के ईं दुख सूं मां बाप ने बारे काढणां ई ज है।

काळीचरण आपने बिलकुल लोगां री निजर सूं दूरो राख एकमाड़े रैवा री कोसीस कीधी। पण माथा रे ऊपरै ऊधम चालतो ई रियो।

एक दिन कांई देखे के उण रा जूना जोड़ा में सूं एक पगरखी गायब, उण री जगां एक जाबक नवो, बढिया जूतो पड़ियो। ईंयां दो भांत री परग-खियां पैर न कॉलेज तो जावणी आवे नीं। किसूं ई सिकायत करे तो ई कांई सार निकळे बिचारे मोची रा अठा सूं जूनी जोड़ी लाय काम काढियो।

एक दिन एक लड़के अचांणचक रो ओवरी में वळ न पूछियो, 'म्हारी सिगरेट री डाबी थां ऊपरां सूं लाया कांई? लाध नीं री है।'

काळीचरण झंझेड़ो खाय न बोलियो, 'म्हें थां लोगां रा कमरा में पग ई नीं दीधो।'

'यो रियो, अठै ई तो पड़ियो है।' यूं केय दो पांवड़ा भर खूंणां में पड़िया मूंघा मोल रा सिगरेट केस ने ले ऊपरे परो गियो।

कालीचरण धार लीदी, अबै अठे नीं रैवणो। अबकाळे, एफ. ए. में वजीफो मिल जावे तो कठै ई ओरठे जाय न रैवूं।'

मेस रा सँग लड़का मिल धूम धड़ाका सूं सुरसती री पूजा करवो करता हा। खास खरचो तो शैलेन रो ई ज लागतो हो पण चंदो थोड़ो घणो सगळा लड़का देवता। अबकाळे खाली तंग करवाने, लड़कां चन्दा रो पांनो लाय काळीचरण रे मूंडागे मेलियो। जां लोगां नूं काळीचरण कदे ई कोई तरे री मदद नीं मांगी, जां रो बुलावो आवतो तो ई वो नीं जावतो, वां लड़कां आय न चंदो मांगियो तो कजांणा कांई सोच काळीचरण पांच रिपिया देय दीधा। शैलेन ने आज तांई कोई पाळटी रे लड़के पांच रिपिया नीं दीधा हा। काळीचरण री गरीबी अर कंजूसी री वे हंसी उडावता रेवता पण आज उण रा पांच रिपिया रा दान नूं वळगिया 'जांणां हा घर री र ढोल री दसा है जो, या अतरी अकड़ किण पे है। आंपां पे नाम जमावणो चावे।'

सुरसती जी री पूजा खूब ठाठ सूं व्ही। काळीचरण रा पांच रिपिया नूं कांई फरक पड़णो हो। पण काळीचरण रे तो पांच रिपिया नूं घणो फरक पड़ियो। पराये घरे रोटी खावतो, वगत पे मिलती नीं मिलती। रसोड़दार ने कांई कंवणो थोड़ो ई आवे मोड़ो वेगो व्हे तो, दो पैईसा आट में व्हे तो पेट ने तो भाड़ो देवे। वीं री पूंजी या पांच रिपिया ही जो सुरसतीदेवी रे चरणां में भेंट व्हेगी।

काळीचरण रा माथा रो रोग जोर पकड़गियो। चावे जतरो पडणी नीं आयो। फेल तो नीं व्हियो पण वजीफो ई नीं मिल्यो। कांई करतो, पढ़ाई रा वगत में कमी कर एक जगां और ट्यूसन करणी पड़ी। ऊपरळा कमरा में माथा पै धमाधम व्हे तो तो ई वा ओवरी छोड़णी नीं आई क्यूं के वीं रो भाड़ो नीं लागतो। ऊपरळा खंडवाळा जांणता के अबकाळी छुट्टी पछे काळीचरण पाछो मेस में नीं आवेला। पण वगत माथे ओवरी रो ताळो खुळ गियो। मामूलीसीक धोवती न वो ई जूनो कोट पैरियां काळीचरण आपरा घूंसाळा में वळियो। कुली रा माथा सूं मैली कुचैली गांठड़ी उतारी टीन री पेटी उतारी, पैईसा दीधा। गांठड़ी में नरी सारी हांडिया ही, जांमें केरी रो अथांणो, बोरां रो अथांणो अर नरी ई तरे रा अथांणा बणाय वीं री मां सागे घाल दीधा। काळीचरण जांणतो हो के वो मांयने वारणे व्हे जदी पाछा नूं भेद लेवण्यां छोरा ओवरी मांयने आय जावे। और तो कोई वात रो उणने एड़ो सोच नीं हो पण वीं ने या वात नीं खटती के मां रा हाथ री कोई चीज रे वे हाथ अड़ावे। वीं री मां जो आप रा हाथ नू बणाय न चीजां घाली है वे तो अमरत सूं सवाई लागती वीं ने। पण वां चीजां रो महातम गांम रा गरीब छोरा ई समझे, सहर रा चंट लड़का कांई कदर कर जांणे। अथांणा जीं तरे रा वरतनां में हा वां में सेहरीपणा

रो वैभव कठे ।- वां हांडियां ने देख वे दांत काढेला, रौळ करेला । ये सहरी छोरा लारै लारे वीं री कौगत करेला जो वीं ने खटेगा नीं । उणां री रोळां सैलड़ा ज्यूं चुभती वीं रे । पैलके पाटा रे नींचे अखबारां रा पानड़ा सूं छिपाय वीं एड़ी वसतां ने राखी ही, अबकाळे वो ताळा में जड़ न राखतो । बारणै जावतो तो ओवरी रे ताळो लगाय न जावतो । उण रो ताळो लगाणो वीं चंडाळ चौकड़ी ने अबखो लागो । शैलेन बोल्यो, 'घर में तो ऊंदरा उपवास करै, ताळा जड़ै पाव पांचेक रा । जांणे राज रो खजानो अठे ई ज लाय न मेल्यो है । वैम व्हैला मन में के वां रो नुंवा कोट कोई ले नीं लेवे । भाई, राबा, एक नवो कोट ईं ने देवाय ई देवो । जामियो जि दिन सूं वो एक ई ज कोट पैर रियो है ।'

शैलेन ओजूं तांई वीं काळी ओवरी में पग नीं मेल्यो हो । पगथ्या उतरतो न उण री नजर पंड जावती तो वीं ने उबकाई आणी ढूक जाती । रात री वेळा, बिना बारी री ओवरी में, दीवो मूंडागै मेल उघाड़ो डील कर, काळीचरण कॉलेज री भणाई करवा ने बैठतो तो देख न शैलेन रा तो रूंगटा ऊभा व्हे जाता ।

शैलेन वीं रा साथीड़ा सूं बोलियो, 'भायलां, ठा तो पाड़ो अबकाळे कठा रो खजानो लेन आयो है जो एक पुळ ताळो खुलियो नीं रे ।'

काळीचरण री ओवरी रो बोदो सो ताळो हो । कोई पड़कूंची लगायां उघड़ जावतो । एक दिन काळीचरण तो पढाण ने गियोड़ो हो । दो तीन कुचमादा छोरा लालटेण लेय ओवंरी में गिया, जोवा लागिया, पाटा रा नीचा सूं अथांणा, सकरपारा हेर बांरै काढिया । ये चीजां वांने कोई लुकावा जेड़ी नीं लागी ।

हेरतां हेरतां तकिया रे नीचे कड़ी सूधी कूंची लाधगी । कूंची सूं टीन री पेटी रो ताळो खोलियो । मांयने मैला गाबा, पोथियां, कतरणी, चक्कू, कलम, जेड़ो सामान पड़ियो । पेटी जड़वा वाळां ई ज हा के हेटे ई हेटे रूमाल में बंधियोड़ी कोई चीज दीखी । खोली तो मायने पुडकी, पुडकी खोली तो कागज, कागज मांयने कागज, कतराई कागज उघेड़ियां मांयने पचास रिपियां रो नोट निकळियो ।

वीं नोट ने देख न सैग जणां ठट्ठा लगाय लगाय दांत काढ़वा लागा । अबै समझिया वे के इण नोट बेई घड़ी घड़ी रो ताळो जड़ीजतो । शैलेन ने घणो अचम्भो आयो ईं छोरा री कंजूसी पे अर बेमीपणा पे । अतराक में काळीचरण री खांसी सुणीजी । ताळो जड़तां ई भाग न चढ़ गिया सैंग जणां । भागते थके एक जणै ओवरी जड़ दीधी । शैलेन घणो हंसियो उण नोट ने देख देख न ।

पचास रिपिया डैडेन री निजरां में ना कुछ हा, पण काळीचरण कने अतरा पईसा व्हेता कोई अटकळियो ई नीं। काळीचरण अणरो सावचेत रै, देखांण चोरी व्हियां पछै यो कांई करे। यो तमासो देखण नै चंडाळ चौकड़ी आवती व्हेगी।

दावरा नै पड़ाव रात रा नौ वजियां काळीचरण पाछो आयो तो अणरो थाकियोड़ो हो के कठीनै झांकणो नीं आयो। माथो फाट रियो। वो तो सोच कर रियो के या पीड़ा ओजूं वेगी सी मिटवा वाळी नीं है।

दूजे दिन गाबा पैरवा लागो, पाटा रा नीचा सूं पेटी काढी तो पेटी खुली। वो मोळन तो नीं गत्ते पर ताळो लगाणो भूल गियो व्हेला। चोर आवतो तो ओवरी रो ताळो जड़ियो थोड़ो ई लावतो।

पेटी खोली तो सामान उथल पुथल व्हियोड़ो। छाती धड़कगी। आगता आगता सामान काढ न संभाल जोयो तो मां री दियोड़ो नोट नीं। काळीचरण कपड़ा दाण एक एक गाबा ने काढ़ ने झड़काया, चारूं कानी हाथ फेर फेर न देखियो, नोट नीं। कमरा खण्ड रा छोरा एकवार गोळ उतरे न चढे, ओवरी मान्हा ताळता जावे। काळीचरण री पळ वळ री खबरां सारे पूग री। डाक्टर कैंथी किरायदार मुगाई सात री। डैडेन आवरी परचे सूवो व्हा मार रियो. ताळ्यां रा फटाका वाज रिया।

नोट मिलणे री आस नीं री। माथा री पीड़ सूं, पाछो पेटी में मेलवा री अकल नीं री तो वा गोदड़ा में जाय ऊंदे मूंडे पड़ गियो। वीं री मां कतरा फोड़ा वेल न, पेट काट न यां रिपिया ने भेळा कीदा हा। मां रा अथाग नेह रो सागर मंथन व्हियो, वीं मंथन मांय सूं जो अनमोल चीज निकळी ही वो हो यो नोट। वीं अनमोल चीज री चोरी व्हेगी, काळीचरण ने लाग रियो के घणो अपुन व्हियो, यो मोटा सराप ज्यूं लागेला वीं ने। गाळ में वीं चौकड़ी रे आवा जावा रा पग वाज रिया हा। वां तो फेरी लगाय राखी। गाम में लाय लागगी व्हे, सब बळ जळ न राखोड़ो व्हेय गियो व्हे न पसवाड़े नंदी खळखळ करती, तमासो देखती वेवती व्हे, एड़ो हाल कर राखियो। अणन्या खंड में व्हा सुण न काळीचरण ने खियाल आयो। या तो चोरी वोरी नीं, वीं री कोमत करवा ने चंडाळ चौकड़ी नोट ने रफा कीदो है। चोर लेय गिया व्हेता तो इण ने अतरी वेदना नीं व्हेती। वीं ने लागियो, वन जोबन सूं आंवा यां छोरां म्हारी मां सान्हो हाथ ऊंचायो है। अतरा दिन व्हेगिया वीं ने मेस में रैवतां ने पण वीं पगाल्या पै पग नीं दीदो हो। वीं रे तो झाळ उठी जो मनफियो उपरे, ढोल पै फाटियोड़ो डरियाण, पण में पगरखी नीं। माथा री पीड़ सूं मूंडो लाल व्हेयगियो।

दीतवार रो दिन। कॉलेज जावा रो रगड़ो नीं। वारै बरामडा में कुरसी,

मूंडा पै बैठिया रोळां कर रिया। काळीचरण री छाती में सांस नावड़ नीं रियो, रीस सूं कांपते गळे, बोलियो, 'लावो, म्हारो नोट लावो।'

जो वो अरदास री अवाज में कैंवतो तो फळ चोखो मिलतो पण गेला री नांई कूकावतां देख शैलन ने एकदम रीस आयगी।

अबांरू जो घर रो चाकर अठै व्हेतो तो कान पकड़ाय ईं गंवार ने वारै कढाय देवतो। शैलेन री आंख में ललाई देख पूरी परंघे एकदम ऊभी व्हेगी, डक्कर न पूछियो, 'कस्यो नोट ? कांई कियो ?'

'म्हारी पेटी मांयनू थां नोट काढ लीधो।'

'ओछे मूंडे ऊंची वात। म्हांनें चोरटा समझ्या कांई !'

काळीचरण रा हाथ में अबार जै कांई व्हतो तो माथा फोड़ देतो। वींरो ढंग ढालो देख दो चार जणां हाथ पकड़ लीधा। पींजड़ा में पड़िया हार री नांई वो डक्करवा लागो। ईं जुल्म रो बदलो लेणे री नीं ताकत वीं में है, नीं सबूत है। सैग जणां उण रा वैम ने गैलपणो बताय हांसी करैला। जां छोरां या अमोघ शगती काळीचरण पै वाही ही वै तो ओर ई नाचा कूदी कर रिया।

वीं दिन काळीचरण री रात किया निकळी, कोई नीं जांणे। शैलेन सौ रिपिया रो एक नोट काढ न दीधो, 'जावो, वीं गधेड़ा ने दे आवो।' वेळीड़ा बोलिया, 'वा गजब करो थां, उण रा मगज री गरमी तो उतरवा दो। लिख न माफी मांगै, पछै सोचां वीं री अरजी पै।'

सब जणां जाय सोयगिया।

दिनूगां काळीचरण री वात ई भूलणी में पड़गी। नाळ उतरतां नीचे ओवरी में भणकारो सुणिजियो, जांणियो, वकील ने बुलाय सल्ला कर रियो व्हेला। आडो मांयनूं अड़काय राखियो। बारणूं कान लगायो तो कानून जेड़ो कोई हरफ ई नीं। गैली गैली वातां बक रियो। ऊपरै जाय न शैलेन ने कियो। शैलेन नीचो आयो बारणा कनें ऊभो रियो। काळीचरण तो अंड बंड कांई रो कांई बकतो जाय रियो। रैय रैय न 'बापू बापू' बरळाय रियो।

शैलेन रा मन में भै बैठ गियो। नोट रा धक्का सूं यो तो बेंडो व्हेयगियो। बारणूं दो तीन दांण हेला पाड़िया, 'काळीचरण बाबू, काळीचरण।' पण मांयनां सूं कोई बोलियो ई नीं। मांयने वड़बड़ाय रियो। शैलेन जोर सूं हेलो मार न कियो, 'काळीचरण बाबू, आडो खोलो, थां रो नोट लाध गियो।'

शैलेन सोचियो ई नीं के वात अठां तांई पूग जावेला। शैलेन मूंडा सूं तो कांई नीं कियो पण तन में पछतावण रा सागर में डूब गियो।

वीं कियो, 'कुंवाड़िया तोड़ न्हाको।' एक आघे जणे सल्ला दीधी, 'पुलिस

ने बुलाय न तोड़ां। सांचै ई बैंडो व्हैगियो तो कजाणा कांई करे, काले केड़ोक लपक लपक ने आय रियो हो।

शैलेन कियो, 'नीं, नीं, भाग न आंपणां डॉक्टर ने ले आवो।' डॉक्टर कने ई रैवता, थोड़ीक ताळ में आय गिया।

कुंवाडां रे कान लगाय न बोलिया, 'वेहोसी में बक रियो है।' कुंवाड़िया तोड़ न मांयने वळिया, पाटा परळो बिछाणो बिखर रियो, आधोक धरती सूं अड़रियो। काळीचरण आंगणे वेहोस पड़ियो। हाथां पगां ने पछांट रियो, आंख्यां रा डोळ छटक्या पड़रिया। यूं लागरियो जांणै मूंडा सूं लोही अबार पडवा लाग जाय।

डॉक्टर कने वैठ न आच्छी तरै देखियो, देख न शैलेन न पूछी 'ई रा घर रो कोई मिनख है कांई ?'

शैलेन रा मूंडा रो रंग उतर गियो। 'क्यूं ?'

डॉक्टर ठिमरास सूं बोलियो 'समचो देवाय दो, अेहनांण चोखा नीं है। शैलेन कियो, म्हांरी कोई खास ओळखांण तो है नीं। घर रा मिनख कठै रे, कांई ठा नीं। पण अबारूं करणो जो तो करो।'

डॉक्टर वोलियो, 'ईं ओवरी मांयनूं पेला काडो ईं ने। हवावाळी जगा ले चालो। रात र दिन सारू नरस राखणी पड़ेला।'

शैलेन, आप रा कमरा में तोकाय न लायो, संगीड़ा, वेळीड़ा ने सीख दीधी के भीड़ रैणी ठीक नीं। वरफ री पोटळी काळीचरण रे माथे मेल न पवन घालवा लागो।

काळीचरण मां वाप रो नाम पतो किण ने ई वतावतो नीं, वो डरपतो के ये छोरा मसखरियां करेला, कुलंगा करेला। डाकखाने जाय कागद गैर आवतो। घर रा कागद डाकखांना रा पता सूं मंगावतो जो वठै जाय ले आवतो।

काळीचरण रा घरवाळां रो पतो ठिकाणो जांणवाने एकदांण ओजूं पेटी खोलणी पड़ी। पेटी में कागदां रा दो वंडल लाधा। दोई वंडल घणां जतन सूं फीता में वंधियोड़ा। एक वंडल में मां रा कागद, दूजा में वाप रा। मां रा कागद तो थोड़ाक हा, वाप रा वत्ता हा।

कागदां ने हाथ में लेय शैलेन आडो अड़काय दीधो, काळीचरण रे सिरांतियां वैठ न कागद वांचवा लागो। कागदा में घर रो पता देखतां ई चमक गियो शैलेन। शानवाड़ी, चौधरियां री हवेली, भवानीचरण चौधरी। कागदां ने मेल वो तो सणणाटा में आंया काळीचरण रो मूंडो देखवा लागियो। थोड़ा दिनां पेलां उण रे एक वेळीड़े कियो हो के काळीचरण सूं शैलेन रो थोड़ो थोड़ो

उणियारो मिले । बेळीड़ा री वात में सार निजर आयो । उण रा दादा दो भाई हा, श्यामाचरण अर भवानीचरण, या जांणतो हो वो । ईं रे पछे कांई व्हियो जिरी चरचा वीं सुणी नीं घर में । भवानीचरण रे कोई बेटो ई है अर उण रो नाम काळीचरण है, या नीं जाणतो वो । तो यो काळीचरण उण रो काको है ।

शैलेन ने अबै याद आवा लागो, वीं री दादी जीवती री जतरे भवानीचरण रो नाम घणां मोह सूं लेवो करती । भवानीचरण रो नाम लेवती जद वीं री आंखियां जळजळाय जावती । यूं तो भवानीचरण वां रा देवर हा, पण ओस्था में बेटा सूं ई छोटो हा पेट रा बेटा री नांई वीं पाळ न मोटा कीधा हा । जर जमीन रो झगड़ो व्हे न्यारा व्हेगिया, जठा पछे भवानीचरण रा समीचार जांणवा ने वीं रो मन तरसतो रियो । वे तो आपरा टाबरां ने कैवो करता, 'भवानीचरण जाबक भोळो ढाळो, सूत्रो आदमी है, थां जरूर उण ने ठगियो व्हेला । सुसराजी रो तो अतरो लाड हो वां पैं । म्हारी तो मानणी में ईं नीं आवै के सुसराजी वां ने यूं नांगा भूखा छोड़िया व्हे ।'

उणां री ये वातां बेटा ने अबखी लागती । पछे शैलेन ने चीतां आयो, वो ई दादी सूं नाराज व्हे जावतो । दादी भवानी रो पुखस अतरो करती ज्यूं वीं ने ई भवानीचरण पैं रीस आय जावती । आज वीं ने बेरो पड़ियो के भवानीचरण केड़ीक नातवानी रा दिन काट रियो है । काळीचरण हजार भांत रा दुख देख लीधा पण शैलेन रो हजूरी वण हाजरियां नीं दीधी । शैलेन रो मन काळीचरण पै आंजस गियो । जै काळीचरण हाजरियां भरणियो बण जावतो तो शैलेन ने मन में ओलज आवती । शैलेन री पाळटीवाळा काळीचरण रा ठट्ठा लगावता रिया ईं वास्ते शैलेन काका ने वीं घर में राखणो वाजब नीं समझियो । डाक्टर री सल्ला ले, घणां ऐतियात सूं काळीचरण ने एक दूजा आच्छा घर में ले गियो ।

भवानीचरण, शैलेन रो कागद वांचता ई, टूटते काळजे कलकत्ते भागियां आया । आवा लागा तो रासमणि, अवेरियोड़ो पैंइसा टका ने परणिया रे हाथ में देय दीधो, 'देखजो, हें, कांई तरै री कमी मत राखजो । कांई देखो तो म्हनें समीचार घाल दीजो । म्हूं आय जावूं ।' चौवरी खानदान री बीनणी रो कलकत्ते जावणो अतरो अणव्हेणो हो के पैली खबर पे किया जावे । काळी माता रे हाथ जोड़ बोलमा कीधी, डाकोत ने बुलाय ग्रेह सांति कराई ।

भवानीचरण काळीचरण ने देखियो तो पगां नीचली धरती खसकगी । काळीचरण ने ओजूं होस नीं आयो । वे वां ने मास्टर सा'ब कैय न हेलो पाड़तो जीं वेळा वां रो काळजो फाटवा लागतो । काळीचरण बीचे बीचे 'बापजी, बापजी,' कैय न बड़बड़ावतो, वे हाथ पकड़, मूंडा कनें मूंडो ले जाय जोर जोर सूं कैवता,

'म्हूं हूं नीं बेटा, थारा कनैं बेठ्यो हूं नीं ।' पण बेटा में बाप ने ओळखवा रा कोई ऐहनांण नीं दीस्या ।

डॉक्टर कियो, 'ताव उतरियो है, अबै कदाच ठीक व्हेला ।' भवानीचरण तो सोच ई नी सकता के काळीचरण ठीक नीं व्हेला । वां रे तो निस्चै धारणा ही के यो मोटो व्हेय वंस रो भागीरथ बणेला, ईं री हस्ती ने कोई मिटावणियो ई नीं । ईं वास्ते डॉक्टर वां ने थोड़ोसोक फरक बतावतो तो यां ने घणो फरक दीखतो । घरे रासमणि ने कागद लिखता ज़ि में तो कोई चिंता जेड़ी वात ई नीं रेवती ।

शैलेन्दर रा भला पणां सूं भवानीचरण ने घणो अचंभो व्हेतो । कुण कैवै के यो आंपणो, नजीक रो नीं है । कलकत्ता जेड़ा सहर रो भणियो पढ़ियो लड़को व्हे न वां ने अतरो मान दे अदब राखे के जिण हद्द नीं । वां सोची, कलकत्ता रा लड़कां री सायद रैणी एड़ी व्हेती व्हेला । मन में कैवता, कलकत्ता रा लड़का में एड़ा गुण नीं व्हे तो किण में व्हे । आंपारै गामां रा छोरां में नीं तो पढ़ाई, नीं कोई लखण । यां री होड़ वे कांई करे ।

काळीचरण रो ताव कम पड़वा लागो, धीरे धीरे होस आवण लागो । बाप ने ढोल्या कनें देख चमक गियो । मन में एकणदम विचार आयो के कलकत्ता में म्हूं केड़ी हालत में रेवूं जो अबै यां सूं छानी रैणी नीं । ईं सूं बत्तो सोच यो लाग्यो के म्हारो गामड़िया गांम रो रैवणियो बाप यां सहरी छाकटा छोरां री कौगत री चांदमारी बण जाय । चारूं आडी ने झांकियो पण कांई समझ ई नीं रियो के वो कठे है । सपनो सपनो लाग रियो वीं ने । उण वेळा वीं में बत्तो सोचवा री तागत ई नीं ही वीं जाणियो मांदगी रा समीचार सुण बाप भागिया आया है अर वीं सूगली जगां सूं कठै ई औरठे ले आया है । कियां लाया, कठा सूं पैंईसो लाया, माथा रो चुकावती वेळा केड़ीक मुसीबत भोगणी पड़ेला, निबळाई रे कारण कांई नीं सोचणी आयो । वो तो एक बात सोचरियो हो के, चावे जो वो उणने भी जीवणो है, जीवा सारूं दुनियां री हर चीज पे उणरो हक है ।

भवानीचरण कमरा में नीं हा । शैलेन एक तासली में थोड़ीक रसाळ लेन काळीचरण कनें आयो । काळीचरण तो बाको फाड़ियां मूंडो देखवा लागियो । मन में या ई ज आई के इण में ई कोई मसखरी तो नीं है । पछे सोचवा लागियो के बाप नै ईं रा हाथ सूं कस्यां छुड़ावूं ? शैलेन तासळी ने मेज पे मेल काळीचरण सूं मुजरो कर नें बोलियो, 'म्हैं मोटी गलतियां कीवी, म्हने माफ करो ।'

काळीचरण नें तो और ई अचंभो आयो । पण वीं रो मूंडो देख नें पतियारो आय गियो के छळ तो कोयनी मन में । पैली पोत जदी वीं जोवन में

छकिया शैलेन रो दपदप करतो मूंडो देखियो तो मन मिलवा ने उमगायो हो पण आप रा दाळिदर सूं लाज्यां मरतो नके नीं गियो। उण रो घर ई शैलेन रा जोड़ा-तोड़ा रो व्हेतो तो वरोबरिया री नांई उण रे सागे ऊठ बैठ ने हरखावतो ई ज। अतरा नजीक रैतां थका बीचे जो एक भींत ऊभी ही वीं ने उलांघवा रो कोई गैलो नीं हो। नाळ चढतां उतरतां शैलेन रा झीणा दुपट्टा सूं सुगंध री एड़ी डंबरां निकळती के काळीचरण री अंधारी ओवरी गरणाय जावती। उण वेळा पोथी ने थोड़ी अळगी कर, मुळकता मुखड़ा रा, हगामी जीवड़ा रा शैलेन ने देखवा ने काळीचरण रो जीव चाल जावतो। पछे शैलेन रा आंवा जोवन रो धक्को खाय काळीचरण माचो पकड़ियो ई ज हो। आज शैलेन रसाळ री तासळी लैय ढोल्या कनै आय उभो रियो तो एक गैरो नीसासो लेय वीं रा मूंडा साम्हों जोधियो पण माफी री वात मूंडा सूं निकळी नीं। धीरेक सी रसाळ उठाय खावा लागियो। इण भांत वीं ने केवणो जो कैय दीधो।

काळीचरण रोज अचंभा सूं देखतो रियो के गामड़ेल बाप रे लारे शैलेन खूब हसतो बोलतो। शैलेन वां ने बाबा कैवतो, खूब घुळ-घुळ न वातां करता आपंसरी में। ईं हंसी मसखरी री परवाई सूं भवानीचरण रा मन में जवानी री याद दास्तियां याद आयगी। दादी रा हाथ रा बणायोड़ा अथांणा, चटणियां ने शैलेन चोर चोर न कियां खावतो, वा वात आज शैलेन निलज्जो बण न सुणाई। काळीचरण ने घणो आणंद आयो ईं वात रो। आपरी मां री हाथ री बणायोड़ी चीजां, वो आखा जगत ने बुलाय ने खुवावा ने राजी है, पण जै कोई इण री कदर करतो व्हे तो। मांदगी रो माचो काळीचरण रै खुसी री मैफिल व्हेगी, एड़ा सुख रा पुळ कदाच वीं देखिया ई कोनी हा। पल पल में मां री याद आय री; अबारू जो वा ई अठै व्हेती तो, हगामी जीव रा, ईं फूटरमल रा केड़ाक कोड़ करती वा।

हूं, एक वात रो जिकरो चाल जावतो वो काळीचरण रा सुख री धारा में आड़ व्हे जातो। काळीचरण ने आपंरी नातवानी रो ई गरूर हो। कोई समया में उणा रो घर सूंन्न; धन, लिछमी सूं भरियोड़ो हो, इण रो घमंड करवा में ई उण ने लाज आवती। 'म्हां गरीब हां, इण सांच ने वो कोई भांत रा पड़दा सूं ढांकवा ने राजी नीं हो। भवानीचरण ई वां चंगा दिनां री वातां घमंड जतावा ने नीं करता। वां ने आप रा सुख रा दिन, जवानी रा दिन चीतां आय जावता जो वात करता रैवता। वीं जमाना रो जिकरो चालियो नीं न फिर फांद न वसीयतनामा रो नाम आयां सरतो। वसीयंतनामा रो नाम आवतां ई तो वो दगो याद आवतो, दगो याद आवतांई भवानीचरण रो लोही ऊकळवा लागतो।

काळीचरण री मन कुरणावा लागतो, वीं ने बाप री थंय वेंडावणो लागतो। वो अर वीं री मां तो ई थंयकूट ने राजी राजी खमता रिया पण शैलन रे मूंडागे बाप री या आदत वीं ने अगखांवणी लागती। कतरी दांण बाप ने बरजियो, कतरी दांण समझायो के यो मन रो झूठो वेम है। पर ज्यूं समझावतो के झूठो वेम है ज्यूं ज्यूं वे आपरी वात रे घत्तो जोर लगावता। पछे रोकणो काळीचरण रे हाथे नीं रेवतो।

घणी तो काळीचरण ने अबखाई यूं आवती के शैलेन नें वो जिकरो सुणणो ई ज नी सुवावतो। वो नो तातो व्हेय भवानी री वातां ने, भांत भांत री जुगतियां सूं काटवा लागतो। दूजी सैंग वातां में तो भवानी सगळा री राय मानवा ने तावड़ा रेवता पन ईं मामला में तो वां कदे ई किण ने ई पूठ नीं बताई। वां री मां भगिवोड़ा पडियोड़ा स्याणा लुगाई हा, वां वारा हाय सूं कलमदान में वसीयतनामो अर जागीर रो पट्टो राखियो। पछे कलमदान खोलियो तो वसीयतनामा रो वड़वड़ो ई नीं। यो चोरी नीं तो कांई साउकारी है। काळीचरण रीस पै सीळो छांटो न्हांकतो, 'वारें तो कठै ई गियो है नी। जमी भोग रिया है जो ई तो थांरा टावर ई ज। थां ने तो ईं में ई राजी रैणो चावै के पैडसो टको घर में ई ज रियो।'

शैलेन ने खटती नीं ये वातां। वो ऊठ न परो जावातो। काळीचरण रो मन पाकिया दुखणा री नांई दूखतो, 'शैलेन कांई जाणतो व्हेला के ईं रो बाप पैइसा रो लोभी है। शैलेन ने किया समझावूं के म्हारा बाप जावक भूवा है. पैइसा रो लोभ तो वां रे अड़न ई नीं निकळियो।

अतरा दिनां में शैलेन आपरी ओळखांण भवानी ने अर काळी ने जरूर कराय देवतो पण ईं वसीयतनामा री चोरी री चरचा सूं वो रुक गियो। वीं रा बाप दादा वसीयतनामा री चोरी कीवी, या वात कि हालन में वीं रा गळा नीचे नीं उतरती पग लारै री लारै जीवड़ो कैवतो के यां ने बाप दादा री पीढ्यां रो माल नीं मिल्यो, उण री कांई एड़ीज वजे तो व्हेणी चावै। पछे वीं उण मसला पै वाद करणो ई ज छोड़ दीवो।

ओजूं ई सांझ पडयां काळीचरण रो जीव सोरो नीं रेवतो। मायो दूखवा लागतो, ऊन ई चढ़ जावती। पण वो ईं मांद ने मांद ई नीं मानतो। पढ़वा ने वीं रो मन आंगतो व्हेगियो। एक र ई वजीफो हायां वारै पगेगियो, अबकाळे ई नीं मिलियो तो गजब व्हे जाय। शैलेन रे छाने छाने भणवा लागियो। डॉक्टर तो पूरी मनां कर राखी ही। पण वो धारतो ई नीं।

बाप ने कियो एक दिन, 'बापजी, थां घरे परा जावो, मां एकली है,

म्हूं तो अबै साउ व्हेयगियो, सोच जेड़ी कोई वात नीं।' शैलेन ई बोलियो, 'हां, अबै एड़ी कोई वात नीं, निबळाई है जो सावळ व्हे जाय। म्हां हां ई पछै।'

भवानी कहियो, 'हां, जो तो है ई, काळीचरण सारूं म्हनें कीं सोच फिकर कोयनीं। म्हूं नीं आवतो तो ई थां सैंग थोक करता ई ज। पण जीव नीं मानियो फेर थांरी दादा रो फुरमांण कियां टाळतो म्हूं।'

शैलेन हंसते थके कियो, 'बावा, थां ई तो लाड लड़ाय वां ने माथे चढाय दीधा।' भवानी दांत काढिया, 'देखां, घर में नुवी वीनणी आय जद देखां थां कतरीक आंकन में राखो जो।'

भवानीचरण तो जमारो ई काढियो हो लुगाई रा हाथ री सेवा चाकरी करावतां, घरियावड़ा हा। कलकत्ता में आराम रा सैंग थोक व्हेतां थकां ई वां ने घर री मन में आवती। रासमणि रा हाथ री चाकरी चीतां आय जावती। घरे जावा री घणी मनवार नीं करणी पड़ी सुबै असवाब बांध बूंध न जावा ने त्यार बैठिया हा। काळीचरण ने जाय देखियो तो आंखियां लाल बूंद, लोही रा टोपा जेड़ी व्हेय री ही, डील वळरियो वासदी ज्यूं। राते मझ्यान रात तांई 'लौजिक' घोखतो रियो, पछै करूंटा फेरतां रात काटी, नींद नीं आई।

काळीचरण में निबळाई घणी ही, मांदगी पाछो पळटो खायगी। डॉक्टर ने ई भारी चिंता व्हेगी, 'शैलेन ने एकमाड़ो ले जाय न कियो, 'मांदगी उळटे गैले पड़गी है अबकाळे।'

शैलेन, भवानीचरण ने कियो, 'बावाजी, थांने ई फोड़ा पड़े न काळीचरण री चाकरी आंपा सूं सावळ कोनी व्हे। दादीजी ने बुलाय लां तो चाकरी चोखी तरै सूं व्हे।'

शैलेन वात तो घणी फेरफार न कीधी पण भवानी रा काळजा में डबको पड़ गियो। वैम अर भै बैठगियो छाती धड़ धड़ करवा लागी। हाथ पगां रे धूजणी छूटगी।

रासमणि ने कागद भेजियो, वा तुरंत बगलाचरण ने लारे लै भागी आई।

कलकत्ता आय न दो चार घड़ी ज बेटा रे भेळी री। सांसा निकळगी। सन्निपात में मां ने हेला पाड़तो रियो। वीं रा वे हेला मां रा काळजा आखी ऊमर सालता रिया। भवानीचरण ई धक्का ने किया झेलेला, पिराण नीं छूट जावै कठै ई। या विचार वा गाढी री। बेटो आयो र पाछो परो गियो है जो बस अबै खांवद है, या मान वजर री छाती कर भवानीचरण री चाकरी में लागगी पिराण रोय रिया के यो दुख अबै नीं सेवणी आवे रे। पण पापी पिराण निकळिया नीं।

घणी रात परीगी। दुख रा सागर में डूबियोड़ी रासमणि री दो पलक सारू आंख झपकी, आंख क्यांरी झपकी मूरछा सी आयगी। भवानीचरण री आंख में नींद रो वट्ट नी, करूंटा फेरता रिया फेरता रिया। गेरो नीसकारो न्हाकियो, 'हे दयामै, भगवान।' ऊठिया, धूजता हाथ में दीवो लेय वीं ओवरी में गिया, जि ओवरी में टाबरपणां में काळीचरण पढ़तो। वीं सूनी ओवरी में पाटा माथे रासमणि रा हाथ री सीवियोडी, बूंटा वाळी गद्‌ली बिछी ही। जायगां जायगां स्याई रा दागा ओजूं लागरिया। मेली भींतां पै कोयला रा मांडणा मंडरिया, पाटा रा एक कूंणा पै मेला मेला रंग री कॉपियां पड़ी, 'रोयल लीडर' अखबार रा फाटोड़ा पान्ना पड़िया। हाय, हाय, उण रा बाळपणा रा नान्हाक पग री एक छोटीसीक पगरखी पड़ी। जि साम्हो आज तांई कोई झांकियो ई नीं पण आज वा ई ज घणी मोटी व्हे न दीख री। दुनियां में आज एड़ी कोई मोटी चीज नीं जो इं नान्हीसीक पगरखी ने आपरी आड में लुकाय, बाप री नजर सूं ओले राख दे।

टीण री एक पेटी पै दीवो मेल न भवानीचरण पाटा पै बैठ गिया। वां री फटियोड़ी आंखियां में आंसू तो नीं हा पण वां रो काळजो हुबकाय रियो, सांस नीं लेवणी आय रियो।

वे ऊगमणी दसा री बारी खोल, लोह री तांणी पकड़ बारै झांकवा लागा।

काळी रात, छांटो छड़को व्हेय रियो। डंडा रे बारणै गेरी रोई ही। वीं ओवरी रे बारणै ई ज मूंडागे काळीचरण वगीचो लगायो वीं रा हाथ री बायोड़ी बेलड़ी पसर री फूलड़ा सूं लड़ालूंब व्हेयरी। वीं टाबर रा हाथ रा लगायोड़ा गोडां ने देख भवानीचरण रा पिराण कंठा तांई आय रूकगिया। अबे जाणै कोई काम ई नीं है दुनियां में करवा जोगो। पूजा री छुट्टियां आवेला, पण वो तो अबै नीं आवे, यो गरीब घर तो वीं रो सोग ई करतो रैय।

'अरे, म्हारा लाल' केय न डाड मार दीधी। भवानीचरण वठै आंगणै बैठ गिया। काळीचरण कलकत्ते गियो आप रा बाप ने नातवानी सूं बारै काढ़वाने। भाग री वात, नातवांन बाप ने बिलकुल ई नातवान कर परो गियो।

वरखा रो दरड़को जोर रो आयो।

अंधारा में, चारा में, पानड़ा में किरा ई पग वाजिया। भवानीचरण री छाती धड़कवा लागी। जो अणव्हेणी वात ही वी री आस जागी, काळीचरण आपरा वगीचा ने देखवाने आयो। पण जोर री वरखा व्हेयरी है वो भीज जाय। अणव्हेणी भरमणा सूं वां रो मन सरणाय गियो। वां ने लागियो जांणै बारी

रै मूंडागै कोई ऊभो, धोळो पछेवड़ो ओढयां थका। उणियारो ओलखणी नीं आवे, पण डील रो लांक काळीचरण रो पड़ै।

भवानीचरण एकदम पगां पै ऊभा व्हेगिया 'आय गियो बेटा' कैवता थका आडो खोल न बारै भागिया, जठै अबारूं अबारूं वीरो बेटो ऊभो हो, बारी रै मूंडागै। वठै तो कोई नी। वरसती वरखा में वा आखी वगीची रो गरड़को लगाय दीधो। कोई तो नीं। अंधारी काळी सूनी रात में भरियोड़ा सास सूं हेलो मारियो, 'बेटा, काळीचरण।'

कोई पडूत्तर नी। वा रो हेलो सुण न भागियोड़ो आयो वो हो वां रो चाकर नटवर। वो वां ने सांभ न मांय ने लेय गियो।

दूजे दिन नटवर, कचरो बुहारो करवाने वो ओवरी में गियो तो वी ने बारी कनें एक पोटळी पड़ी दीखी।' वीं पोटळी ने ले भवानीचरण कनें गियो। भवानीचरण वीं पोटळी ने खोले तो मायने जूना कागद। चस्मो लगाय न वांचिया। वांचता ई भागियोड़ा रासमणि कनें गिया।

कागजां ने हाथ में लेवती रासमणि पूछियो, 'कांई है ?'

'वो ई ज जूनो वसीयतनामो।'

'कूण दीधो।'

'राते काळीचरण आयो जो देय-न गियो।'

रासमणि बोली, 'अबे आंपा रे कांई करणो ईं रो।'

'अबे आंपा रे कांई काम रो', यूं कैय भवानीचरण फाड़ न चूंथो चूंथो कर न बगाय दीधो।

आखा गांम में हाको व्हेगियो। बगलाचरण घमंड सूं माथो हिलाय न कियो, 'म्हें पैलांई कियो के काळीचरण रा हाथ सूं वसीयतनामो पाछो आवेला।'

रामचरण मोदी कियो; 'काले रात री गाडी सूं एक गोरोसीक छोरो आय म्हनें चौधरियां री हवेली रो गैलो पूछियो। म्हे उण ने गैलो बताय दीधो, उण रे हाथ में एक छोटीसीक पोटळी ही।'

'फजूल री वात,' कैय न बगलाचरण उण री वात ने काट दीधी।

सजा

दोई भाई दुक्खी र छदामी कोळी दिन ऊगां हाथ में दांतळी र गंडासो लेय न काम पे निकळिया जठा पैलां तो देराणी जेठाणी भचेड़ा खाय चुकी ही। पाड़ावाळा रे तो या कोई नुवीं वात नी। उणां री तो आदत पड़गी है, कुदरत रा अतरा कारखाना रोज चालता रे वां मांयलो यो ई एक व्हेगियो। लुगायां रा कंठा सूं गाळ्यां रा बरड़ाटा सुणता ई आपसरी में मिनख केय देता, 'लो व्हेगियो सरू।' जाणे यो तो दिन री ऊगाळी व्हियां ई सरै। परभात रा सूरज ऊगे जदी कोई नीं पूछे के यो क्यूं ऊगो। ज्यूं ई कोळियां रा घर में देराणी जेठाणी लड़ती जदी किण रे ई मन में वजे जाणवा री रत्ती मात्र इच्छा नीं व्हेती।

यो रोज रो राड़ो पड़ोसियां सूं वत्तो दोवां रा मोट्यारां ने जरूर अवखो लागनो पण असी कोई खास अवखाई जसी वात नी। वां रो मन तो एड़ो व्हेगियो के जाणे दोई भाई संसार री मुसाफरी एक गाडा में लारे बेठा कर रिया है। गाडा रा विना आंगियोडा दोई पैड़ा खरड़ खरड़ करता जाय रिया है। पण वो खरड़ाटो तो उण सफर रो एक अंग है, हिस्सो है। सांची तो या के घर में जिण दिन कोई रोळो रवदो, हाको हूल्लो नी व्हेतो, चारूं पासे मणणाटो रैतो तो साम्ह्रो भै लागतो, कणाणां कांई विजोग आय पड़े।

हां, तो उण दिन दोई भाई दिन आंथमतां थाकापचिया घरे आया तो आंगे घर में सणण सप्प। वारे ई अमूजो घल रियो हो। दुपेरां रा बरखा रो जोर रो दरड़को पड़ियो अबे ई बादळा घुमड़ायो रिया। वायरा रो नाम नीं, पानड़ो

नीं हाल रियो। घर रे ऐरे मेरे चारूं आडी ने झाड़किया वधरिया, पाणी में पटसण रा खेत डूव रिया जां मायनूं भूंड़ी वासना आय री। पाखती वाळा नाड़ा मांयने डेडरा डेहक रिया। संझया रा मूना में भींभरी रा झणणाटा सूं आभो भरीज गियो। नुवीं नुवीं वादळियां आभा ने ढांक राखियो। कनै ई वरसाळु नंदी पदमा ठेवा खाय री, ढावां पूर मन रे मत्तो वैय री। घणां खरा खेतां ने वैवावती घरां कनै आयगी। दो चारेक आंबा, कटहळ रा रूंखड़ा ने जड़ामूळ सूं उपाड़ फैंकिया। उणा री जड़ां पाणी वारे दीख री जांणे आभा रो छेल्लो भड़ो पकड़वा ने आंगळियां पसारी व्हे।

दुक्खी र छदामी उण दिन गांम रा ठाकर रे अठे वेगार में गिया हा। नंदी रे पैली पार खेतां में साळ पाकगी। नंदी आय री, पाणी में साळ नीं डूवे जठा पैळे काट लेवा ने करसा मजूर मारोमार लाग रिया हा। कोई खेत में साळ काट रियो कोई पटसण काट रियो। यां दोई भायां ने राज रो सैणो वेगार में पकड़ लेगियो। ठाकरां री कचेड़ी में जगां जगां पाणी टवूक रियो। आखो दिन ये केलू सारता रिया, छान वांवता रिया। रोटी खाणे री वेळा ई नीं मिली के घरे आर रावड़ी रेड़ो कर आता। ठिकाणा री आड़ी नूं भूंगड़ा मिलिया जो चाव लीवा, वीचे वीचे छांटां में कतरी दाण भींजिया ई हा। दूजी जगा जावता तो हक री मजूरी तो मिलती, वा ई आज नीं मिली। गाळियां मिली जो सिवायखाते।

कादा कीच, पाणी में व्हेय न दोई भाई सांझ रा घरे आया। आगे छोटकड़ी वीनणी—चंदा तो ओढणी रो पल्लो विछाय आंगणा में ऊंधी पड़ी। दुपैरां री वादळी रे लारे लारे आज वा ई नैणा सूं धारवा न्हांक सांझ तांई छानी व्हे न पड़ी ही। अबै'वारै अमूजो घल रियो जेड़ो अमूजो उण रा मन में ई घल रियो। मोटोड़ी वीनणी राधा मूंडो सूजाय वारणा में वैठी, कने डोढ़ेक वरस रो छोरो रोय रियो। दोई भायां घर में पग मेलता ई देखियो के छोरो उघाड़ पुघाड़ो आंगणां में चित्त पड़ियो।

भूखां मरतो दुक्खी घर में वळतां ई वोलियो, 'ला रोटी दे।'

मोटोड़ी तो भभकी, जांणे सोर पे वत्ती मेली, 'खावा ने है कठै जो दूं? वान मेल्ह गियो हो के? म्हूं जावती के कमावाने?'

आखा दिन रो थाकियोड़ो, गाळियां खाधो थको, घर में आवतां ई यो कळेस। भूखा मरतां ने लुगाई रा ये वोल, खास कर न पाछला वोल रो गूढ़ अरथ, काळजा रे आरपार व्हेगियो। डोको लगायोड़ा न्हार री नांई डकरियो, 'कांई कियो।' दुक्खी तो आघ देखियो न थाघ। हाथ मायली दांतळी लुगाई

रे माथे झाटक दीवी । राधा दोराणी कने जावती पड़ी । पड़तांई सांस निकळ गियो । चंदा रा गावा लोहियां सूं ललंवर व्हेगिया । 'हाय म्हारी मां' कैय न वा वरळाई । छदामी दौड़ न उण रो मूंडो भींच लीवो । दुक्खी हाय मांयली दांतळी अळगी फैंक, ओगतायोड़ो माया रे हाथ देय न बैठ गियो, छोरो जाग गियो, डरप न कूकाय कूकाय रोवा लागो ।

वारै पूरी सांती ही । अहीरा रा छोरा गायां भैंस्यां चराय पाछा गांम में आय रिया हा । नंदी रे पैले पार साळ काटवाने मिनख गयोड़ा हा, वां मांयला पांच पांच, सात सात जणां डूंडा में बैठ पाछा आय रिया हा । मेनत मजूरी में मिलियोड़ा दो चार साळ रा पूळा माथा पै मेल राख्या हा । सब ई जणां आप आप रे घरे आय गिया हा ।

रामलोचन काका डाकखाना में कागद गेर न घरे आया हा, निचंत व्हिया चिलम पी रिया हा । अचांणचक चींतां आई दुक्खी ने वांटा पै खेत दे राखियो, हांसल रा रिपिया बाकी है । आज देवा री वो कैन गियो हो । अबै घरे आय गियो व्हेला । रामलोचन कांधा पै दुपट्टो न्हाक, छतरी हाथ में उठाय चालिया ।

दुक्खी रे घर में वळता ई उणां रा तो रूंगटा उभा व्हेगिया । घर में दीवो न वात्ती । आंगणा में अंधारो गप्प । अंधारा में दो चारेक जणां छाया ज्यूं दीखै । तिवारा रा कूणां में रैय रैय दब्योड़ा साद सूं कोई रोय रियो । छोरो 'मां मां' कर न हेलो पाड़णो चावे ज्यूं ज्यूं छदामी वीं रो मूंडो भींचे । रामलोचन संकते संकते पूछियो, 'दुक्खी है कांई ?' दुक्खी ओजूं तांई पखांण री मूरती व्हियोड़ो बैठो हो । वीं रो नाम लेय हेलो पाड़तांई तो वो टावरां री नांई डाड मार न रोवा लाग गियो । छदामी झट देणी सूं तिवारा सूं उतर रामलोचन कने आंगणा में आयो । रामलोचन पूछियो, 'लुगायां लड़ न मूंडा सूजाय राखिया व्हेला, ज्यूंई ज अंधारो है कांई ? आज आखो दिन भुसती री ।'

छदामी ने ओजूं तांई सूझियो नीं के कांई कैवे । भांत भांत री वातां उण रा माथा में गरोळा खाय री ही । अबार तांई तो वीं या ई ज विचारी के रात पड़ियां लास ने कुवा बावड़ी कर दूंला अतराक में तो चौधरी काका आय गिया । जांरी सपना में ई नीं सोची ही आवारी । आगत में वीं ने कोई चोखो जवाब नीं उकळियो, कैवणी आय गियो 'हां, आज घणी लड़ी ।' चौधरीजी तिवारा कानी चढ़ता बोलिया, 'पण दुक्खी क्यूं रोय रियो है ?'

छदामी देखियो अबै रासो विगड़ियो, मूंडा बारै निळगी, 'लड़तां छोटोड़ी, मोटोड़ी रे माथे दांतळी री मार दीवी ।' मिनख आयोड़ी विपदा ने ई मोटी समझे । या एक दम वीं ने सूझेई नीं के दूजी विपदा ई आय सके । छदामी

तो उण वेला या सोच रियो हो के इण वेळा कस्यां ई बच जावूं। झूठ उण सूं ई मोटी विपदा ले आय या वात उण रे मगज में ई नीं आई। रामलोचन रे पूछता ई उण ने यो जवाब उकळियो अर वीं ज वगत केय दीधो।

रामलोचन चमक न पूछियो, 'हैं! कांई कियो। मरी तो नीं?'

छदामी बोलियो, 'मरगी।' वो पगां में पड़ गियो।

चौधरी विचार में पड़ गियो, सोचवा लागिया, 'राम राम, कवेळी वेळा कठे आय फंसियो। कचैड़ियां में गवाहियां देवतां देवतां जीव नीसर जाय।'

छदामी तो पग ई ज नीं छोड़िया, कैवा लागियो, 'चौधरी काका, अबै लुगाई ने कियां वचावूं?'

मामला मुकदमा री सल्ला देवा में रामलोचन आखा गांम में अव्वल हो। थोड़ो सोच न कियो, 'देख, एक काम कर, थांणा में भाग जा। जाय न कैवजे, म्हारो मोटोड़े भाई दुक्खी सांझ रा घरे आयो जदी रोटी मांगी। रोटी नीं ही जो लुगाई माथा पे दांतळी री देपाड़ी जो वा मरगी। यूं जाय न केवजे जो थारी लुगाई छूट जाय।' छदामी रो गळो सूख गियो, उठो व्हे न बोलियो, 'चौधरी काका, लुगाई तो दूजी ले आवूं पण भाई फांसी पै चढ़गियो तो दूजो जामण जायो कठा सूं लावूं!'

लुगाई रे माथे यो झूठो दोस लगायो हो जीं वेळा वीं नें ये वाता नीं सूझी ही, ओगत नीं बंधी ही र मूंडा बारे निकळगी। अबै आप रा मन ने तसल्ली देवा ने ये जुगतियां भेळी कर रियो हो।

काके ई उणरी वात ने वाजब मानी, बोलिया, 'तो पछे जो बात बीती वा कैय दीजै। चारूं कानी तो बचाव भाया व्हे कोयनीं।' यूं कैय रामलोचन आगा पांवडां दीधा। वात री वात में आखा गांम में हाको व्हेगियो 'कोळियां रा घरां में लड़ती लड़ती चंदा रीस में आय जेठाणी रो दांतळी सूं माथो फाड़ दीधो।' पाळ फूटतां ई पाणी री बाढ आवे ज्यूं पुलिस गांम में आय ऊभी री। कांई कसूरवार न कांई वेकसूर सगळा घबड़ाय गिया।

(२)

छदामी विचारी जो गैलो पकड़ लीधो वीं पै चालणो ई ज ठीक। रामलोचन रे आगे जो वात वीं रा मूंडा सूं निकळगी वा वात आखो गांम जाण गियो है। अबै जै दूजी वात कैवे है कजांणां कांई नतीजो निकळे, कुण जाणे कांई रो कांई व्हेजावे। वीं री अकल चक्करायगी। भली भांत समझ गियो जो पैला वीं वात केय दीधी है, उणां में पांच चार अठीली वठीली और जोड़ियां तोड़ियां छोटोड़ी छूटे तो छूट जावे। दूजो कोई अबै गैलो नीं।

छदामी आपरी लुगाई चंदा ने अरदास कीवी के यो दोस थूं थारे माथे ले ले। सुणतांई चंदा तो उछळी। छदामी वीं ने ऊंची नीची लीवी, समझाई 'थूं भरोसो राख, म्हूं थनें केयरियो हूं। म्हा छूड़ाय ले आवां।' भरोसो देवा ने तो दीवो पण वीं री जीभ मूखरी, मूंडो धोळो फट्ट पड़रियो।

चंदा वरस सतरा अट्ठाराक सूं वत्ती नीं ही। भरमा गोळ मूंडो, नीं घणी लांबी नीं ठेंगणी, आच्छी, विचला रास री। दौलड़ा हाड री कसियोड़ो डील, हालती चालती, फिरती घिरती रो कोई अंग अड़ौळो नीं लागतो। नवी वणियोड़ी नाव री नांई छोटी र आच्छा डौळ री, सोरी सोरी सिरक जावे, कठा रो ई संव ढीलो नीं। दुनियां रा सैंग धंधा देखणे रो जाणणे रो सोक है उण ने। सैरी में दूजां रे घरे बैठ गप्पोड़ा मारणा आच्छा लागे, पणघट पै पाणी भरवा जावे तो में कमर पै घड़ो मेल, दो आंगळियां सूं घूघटा रो काणकोलियो कर अचपळा नैणां सूं झांकती चाले। जो देखण जोग वसत व्हे उण ने काळा काळा नैणां सूं जरूर देखे।

मोटोड़ी वीनणी बिलकुल इण री उलटी ही। करगसा, ओ'दवायरी, माथा रो ओढणो अवेरणी आवतो न कांख मांयलो छोरो। घर रो काम तो उण ने करणो आवतो ई नीं। वा केगावत फवती, करवा ने हाथ में काम नीं ऊभो रैणे री फुरसत नीं। छोटोड़ी कैवती सुणती घणो नीं ही। तीखा दांत गड़ाय देती, वटको भर लेती पछै वा हाय, हूय करती, गाळियां भुसती, यूं वास ने माथे ऊंचाय लेवती। आखो वास कायो व्हे जातो।

यां दोई धणी लुगाई ने भगवान एक सा घड़ियां। दुक्खी डील रो लांवो चौड़ो, हट्टो कट्टो, चपटो नाक, आंखियां एड़ी जाणे वे दुनियां ने समझे ई नीं अर नीं कांई पूछणो ई चावे। भोळो ढाळो पण खतरनाक, जोरदार पण गरीवड़ो, एड़ा आदमी, हेरियां थोड़ा लावेला।

छदामी ? छदामी तो एड़ो लागतो जांणे काळा भाटा ने कोर कारीगरां मूरती घड़ी है। थोड़ोक ई कठै थोथलियो नी, कठै ई सूखियोड़ो नीं, सरव अंग भरियो पूरियो। कैवो तो नंदी री कनारियां सूं नीचे डाक पड़े, कैवो तो वांस रा झाड़ां पै चढ टाळ टाळ न डाळियां काट लावे। जो काम कैवो जो कर दतावे, यूं ई नीं करे, हुंसियारी रे साथ करे। सैंग काम उण सारू सोरा है। लांवा लांवा काळा केसां में तेल घाल न पट्टा पाड़ न कांवा तांई लटकायां राखे। वणियो ठणियो रैवे।

दूजी दूजी गांम री लुगायां रा रूप निरखवा सूं टाळो तो वो नीं खातो, वां री निजरा में आप रा रूप ने मंड देवा रो उण रो मन ई घणो करतो।

पण तोई आपरी मूंध मारूणी रा लाड ईं क्यूंक ज्यादा करतो। दोई लड़ता ई हा पाछा हेत ई वेगा व्हेता। एक सूं दूजो हारतो नीं। एक वात और ही जिसूं यां रो हेत गाढो व्हे जातो। छदामी समझतो के चंदा रा डील पै अचपळाई है, एड़ा माणस माथे घणो भरोसो नीं करणो चावे। चंदा समझती के उण रा खांवदा री आंख लागणी है। उण ने काठो नीं बांधियो तो हाथां बारै निकळ जाय।

वो राधा वाळो वाकौ व्हियो जिण रे कैई दिन पैलां सूं धणी लुगाई बिचे जोर री खैंचातांण चाल री ही। वात या ही के चंदा देखियो उण रो मोटियार काम रो मिस कर कठै ई बारै परो जावे। कदी कदी तो पूरा एक एक दो दो दिन बारे रै घरे आवै। आवे जदी कमाई लारे कांई लायोड़ी व्हे नीं। लखण ठीक नीं लागिया तो वीं पैंतरो बदलियो। वा ई पणघट पै घड़ी घड़ी री जावा लागी, गळी मोहल्ला में फिर फिराय घरे आय ने कासीपरसाद रा बिचलौड़ा बेटा री चरचावां करती।

छदामी ने रात में जक पड़े न दिन में जक पड़े। काम धंधा में एक घड़ी जीव नीं लागे। एक दिन तो वो भौजाई ने ओळंमा देवा लागो, लड़वा लागो।

भौजाई पाछो हाथ लांबो कर कर, चूड़ियां बजाय बजाय, मरिया बाप रो नाम ले ले कैवा लागी, 'वा रांड तो भतूळिया ज्यूं भागती फिरै। वीं ने म्हूं कियां संभाळूं ? देखजो थां या घराणां री नाक कटाय।'

ओवरी में चन्दा बैठी ही, बारै आय धीरेकरी बोली, 'भाभीजी, थां क्यूं डरपो हो ?'

बस, पछे कांई कैवणो। दोई अड़ पड़ी।

छदामी आंखियां काढ़ न बोलियो, 'अबके जो सुण लीधो के थूं एकली पाणी भरवा परी गी तो हाडकिया भांग न कोथळो कर देवूं, हांऽऽ।'

चंदा बोली, 'भांगो तो म्हारा जीव ने ई साता व्हे जावे।' यूं कैवती थकी उणीज वगत चंदा बारे जावा ने त्यार व्हैगी। छदामी रपट न चंदा रो चूंडो पकड़ियो, घींस न धक्को देय मायनें घाल कोठड़ी रो कूंठो जड़ दीधो। दिन ढळियां रा छदामी घरे आयो तो आगै ओवरी खुली पड़ी र खाली पड़ी। चंदा तो फटकारो दीधो जो तीन गांम उलांघ न नांनांणे जाती बोली। छदामी घणी दौरी मनाय मनूय घरे लायो। अबकाळे छदामी हार गियो। वीं देख लीधो के मुट्ठी में पारा ने भींच न राखणो जतरो दोरो वतरो ई दोरो ईं लुगाई ने मुट्ठी में राखणो है। पारा री नांई पांचूं आंगळियां री संध में सूं या ई छटक छटक जावे। वात ई खरी है बांधियां तो बळद रै मिनख थोड़ाई रै।

कांई न जोर जबरदस्ती नीं कीधी। छदामी री काया कळपती रे। ईं अचपळी जोध जवान धण रो मोह, वैम में बदल गियो। वो वैम हिवड़ा रो दरद बण रात दिन डसतो रैतो। कदी कदी तो वीं ने अतरो दुःख व्हेतो के वो सोचवा लागतो के या रांड मर बळ जावे तो पापो कटे। मिनख ने मिनख मूं जतरो ईसको व्हे बतरो ईसको तो जमराज सूं ई नीं व्हे।

चंदा ने छदामी खून माथे ओढ लेवा ने कियो तो चंदा री आंखियां फाटी री फाटी रैगी। वीं री दोई काळी काळी आंखियां बळबळता खीरा री नांई छदामी ने बाळवा लागी। उण रो तन अर मन तड़फवा लागो के ई राखस धणी रा पंजा मायनूं निकळ न भाग जावूं। आतमा अमूज न खिलाफत करवा लागी, मन तो बारोठियो व्हेगियो।

छदामी घणी खातरी दीधी, मन मनायो के डरपवा री कांई वात नीं। पछै वीं ने सिखाई पढाई थाणां में कांई कैवणो, कचैड़ी में कांई केवणो। पण चंदा तो वीं री लांबी चौड़ी सीखावण पूरी सुणी ई नीं, भाटो व्हियां बैठी री। दुक्खी तो सगळा कामकाज में छदामी रे भरोसे ई ज रैवतो। छदामी कियो के चन्दा रे माथे इलजाम लगाय दीजो तो दुक्खी बोलियो, 'पछै बीनणी रो कांई व्हेला।

'वीं ने तो म्हूं छुड़ाय लूंला।'

भाई री वात सुण पंच हत्यो दुक्खी निचंत व्हेगियो।

[३]

छदामी लुगाई ने सिखायो 'यूं यूं कैवजे, जेठाणीजी म्हनें मारवाने दांतळी लेय न आई जो म्हूं ई दांतळी उठाय वां ने रोकवा लागी जो कजांणा किण तरै लागगी। ये सारी वातां रामलोचन री बतायोड़ी ही। ईं रे सागे सागे जो जो वातां कैवणी जरूरी ही वे सगळी वां छदामी ने बताय दीधी।

पुलिस तो तैकीकात करवा लागी। आखा गांम रा मन में या वात पक्की जमियोड़ी के जेठाणी रो खून चंदा कीधो। गांमवाळां रा बयाना सूं ई यो ई साबित व्हियो।

पुलिस चंदा ने पूछियो तो चंदा हंकार लीधो, 'हां, खून म्हें ई ज कीधो।'

'खून क्यूं कीधो ?'

'म्हनें सुवावती नीं ज्यूं।'

'कोई लड़ाई झगड़ो व्हियो ?'

'नीं।'

'वा पैला थनै मारवाने आई ?'

'नीं ।'

'थनें दुख देवती ?'

'नीं ।'

जवाब सुणिया तो सब हैराणगत व्हैगिया ।

छदामी रा तो होस उड़गिया बोलियो 'था सावळ नीं कंय री है पैलां मोटोड़ी ....'

दरोगे डांट लगाय वीं ने चुप कर दीवो । आखिर तक जठे जठे जिरह व्ही सब जगां एक सो जुबाब देवती री मोटोड़ी रो हमलो करियोड़ो कठै ई चंदा नीं हंकारयो जो नीं हंकारयो ।

एड़ी जिद री पक्की लुगाई कठै ई नीं देखी । फांसी रा तखता कानी पांवडां भरती जाय री, रोकिया रुक नी री । कांई खतरनाक रूसणो कीधो । चंदा कदाच मन में कंय री', म्हूं थनें छोड ई जोवन ने ले फांसी रा तखता पै चढ जावूं । फांसी रो फंदो गळा में घालूं । म्हारा ई जनम रो छेल्लो बंध फांसी रो फंदो है ।'

भोळी भाळी वीनणी छोटी सी रंभा लाडी चंदा, कैदी बण न चाली, घूंघटो काढ न आई जि गांम में, मिंदर रे आगे, चौवटा रे बीचे, ठाकरां रा रावळा आगे व्हे, डाकखाना र स्कूल रै भड़ै व्हे गांम री वा नैन्ही लोड़ी वीनणी, कैदी बण चाली । जांणियां पिछाणियां, सैंदा मिनखां रै मूंडागे कळंक सूं काळो मूंडो कर हमेसां वास्ते घर छोड़ न चाली । छोरां रो टोळो रो टोळो लारे चालियो । गांव री लुगायां, साथणियां लुक लुक न वीं ने देख री । कोई घूंघटा रो काणकोलियो कर न झांक री, कोई किवांड़ां री संध मांय नूं देख री, कोई रूंख री आड़ में ऊभी व्हे नाळ री । वीं ने सिपायां रे बीचे जावती देख कोई लाज सूं मरी जाय री, कोई नफरत री नजर सूं देख री, किरा ई भै सूं रूंगटा ऊभा व्हेयरिया । डिपटी मजिस्ट्रेट रे मूंडागे ई चंदा आप रो कसूर कबूल कर लीधो । वाको व्हेवा रे पैलां मोटोड़ी री ओर सूं कोई हमलो के ज्यादती के जुलम व्हेवा री वात चंदा रा मूंडा सूं निकळी ई नीं । पण छदामी जि वेळा गवाहीं रा कठैड़ा में हाजर व्हियो तो रोय दींधो 'फरियाद है, म्हारी लुगाई बेकसूर है ।'

हाकम धमकाय धमकाय रोवता ने चुपकर सवाल पूछवा लागिया । वीं सारी हकीगत सांची सांची सुणाय दीधी । पण हाकम ने वीं री वात पै भरोसो नीं आयो । क्यूं के खास अर भरोसा रे शरीफ गवाह रामलोचन कियो 'खून व्हेवा रे तुरंत पछे म्हूं मौका पै गियो जद छदामी म्हारा पगां में पड़ न रोयो

के लुगाई ने किण तरै बचावूं, गैलो बतावो। म्हूं कांई नीं बोलियो। गवाह छदामी म्हनें पूछ्यो के जै म्हूं केय दूं के म्हारे बड़े भाई रोटी मांगी, वीं रोटी नीं दीवी। जो रीस में आय मार दीवी। यूं कियां म्हारी लुगाई बच जाय कांई?' म्हें कियो, खबरदार। हरामजादा, कचैड़ी में एक हरफ ई झूठ मत बोलजे, ईंसूं बत्तो कोई पाप नीं है।'

रामलोचन पैलां तो चंदा ने छुड़ावने घणी वातां जोड़ी पण वीं देखियो या तो आगे व्हेय आप रो पग खोड़ा में घाल री है जद सोची, चंदा ने छुड़ावता आंपां मरांला। झूठी गवाही देवा रो जुरम कठै ई म्हारा पै ई ज नीं लाग जावे। ईं वास्ते आंपा जांणा जतरो ई कैवां।

डिपटी मजिस्ट्रेट मामला ने सेशन रे सिपुरद कर दीवो।

दुनियां रा धंधा तो ज्यूं चालता आया ज्यूं ई चालरिया। खेती-बाड़ी, हाट बजार, रोवणा गावणा सब चालरिया हा। पैलां ज्यूं ई लीलो कच साळ रा खेतां में सावण रो मेह लूंब रियो हो।

पुलिस, मुलजिम अर गवाहां ने लाय सेशन जज री अदालत में हाजर कीधा। अदालत में घणां ई मिनख आय आय ने मुकदमा री पेशी में बैठा हा। रसोवड़ा रे पाछला सूगला पाणी रा नाडा री जमीन रो एक मुकदमो चाल रियो हो। जिरी पैरवी करवा ने कलकत्ता सूं वकील बुलाया हा। फरियादी रा चालीस गवाह हाजर व्हिया हा। सब जणां आपणां हक रो कौडी कौडी हिसाब लगाय रिया हा। बाळ री खाल काढवा वाळा फैसला करावाने दोड़िया आया हा। वां री धारणा ही के ईं वगत इण सूं बत्तो दुनियां में कोई जरूरी काम नीं।

छदामी वारी मांयनूं, सदामत री आगती अगयायोड़ी दुनियां ने एक धार देख रियो, सपना ज्यूं लागरियो सब उण ने। अदालत रा चौक मांयला बड़ला पै बैठी कोयल बोल री 'कू····कू'। वां री दुनियां में कोई कानून, अदालत नीं है नीं ज्यूं।

चंदा, जज रे मूंडागे अगताय न बोली, 'अरे बापजी, एक ई वात ने घड़ी घड़ी री कतरीक दांण बताऊं?'

जज, चंदा ने समझाई, 'यूं जाणे जि कसूर ने थूं मंजूर कर री है वीं री सजा कांई है?'

'नीं।'

जज कियो, 'वीं री सजा है फांसी—मौत।'

चंदा बोली, 'बापजी, थांरे पगां पड़ूं, म्हनें वा ई सजा दो। अबै म्हारा सूं खमणी नीं आवे।'

छदामी ने अदालत में पेश कीधो तो चंदा वीं री आडी तूं मूंडो फेर लीधो।

जज बोलियो, 'सुण, उठीने गवाह री आडी मूंडो कर न बता थारे कांई लागे ?'

चंदा दोई हाथां सूं मूंडो ढांक न बोली, 'म्हारा घर रो धणी।'

जज पूछियो, 'थनें यो चावे ?'

चंदा बोली, 'ऊंह, अतरो ज्यादा चावे के····।'

जज पूछियो, 'थूं ने नी चावे ?'

चंदा जबाव दीधो, 'अतरो ज्यादा चावूं के········।'

छदामी ने पूछियो तो वीं कियो 'खून म्हें कीधो है।'

जज पूछियो, 'क्यूं ?'

छदामी बोलियो, 'रोटी मांगी नीं दीधी ज्यूं।'

दुक्खी गवाही देवा ने आयो तो झांफ खाय न पड़ गियो। होस आयां जबाब दीधो, 'बापजी, खून म्हें कीधो।

'क्यूं ?'

'खावा ने रोटी मांगी, नीं दीधी ज्यूं।'

जिरह कर ने गवाहां रा बयान सुण न जज समझ गियो के घर री वहू री आवरू बचावा ने दोई भाई कसूर आप रे माथे ओढ़ रिया है।

चंदा तो थाणां सूं लेय सेशन तक एक वात केवती आयरी कठै ई तो एक हरफ रो फरक नीं।

दो वकीलां आगे व्हे चंदा ने फांसी सूं बचावा री घणी कोसिसां कीधी पण कांई जोर नीं चालियो।

जिं दिन, चंदा छोटीसीक गोळ मटोळ मूंडा वाळी चंदा हाथ री ढूलियां ने फैंक, मां बाप रो घर छोड़ सासरे आई, वीं दिन-परणेत री सुभ घड़ी में कोई कळपना ई ने कर सकतो आज रा दिन री ? चंदा रो बाप मरती वेळां नचींते व्हे कियो हो, 'चावे जो व्हो, म्हारी छोरी तो ठिकाणेसर लागी।'

फांसी लागवा रे पेला जेलखाने रा मेरबान डाक्टर चंदा ने पूछियो, 'किसूं ई मिलवा री मन में है ?'

'एक दांण म्हारी मां ने मिलाय दो।'

'था रो घर रो धणी थारा सूं मिलणो चांवे वी ने बुलाय लूं ?'

चंदा बोली, 'हूं, मौत ई नीं आई !'

●

काबली

म्हारी पांच बरसां री टाबरी मिनी घणी चरपरी, वीं री जीभ एक घड़ी जक नीं ले। बारा महीना री ही जदी वीं री जबान उघड़गी। जि दिन सूं बोलणो आयो, एक पल छानी नीं रेवती। कतर कतर कतरणी री नांई जीभ चालवो ई ज करती। वीं री मां तो घणी चरपर चरपर करती देख धाकल देवती। पण म्हारा सूं धाकलीजतो नीं। मिनी छानी मानी बैठ जावती तो म्हनें अणखावणो लागवा लाग जावतो। म्हारे अर वीं रे ई ज वातां घणी घुटती।

दिन ऊगां ई ज्यूं म्हें म्हारा उपन्यास रो सत्तरवों परिच्छेद लिखवा ने हाथ अड़ायो न मिनी आयगी, 'काका, आंपणो रामदयाल है नीं, आंपणी डोढी वाळो है नी जो कागला ने 'कौवो' कैवे। वो कांई नीं समझे।'

म्हूं न्यारी न्यारी भासां सारू कांई कैवूं जठा पैलां तो वा दूजा परसंग पै आयगी, 'देखो काका, भोळो कैवे हाथी सूंड सूं पाणी वादळा में फैंके ज्यूं बरखा व्हे है? भोळो झूठो है नीं? वो तो वकवक करे नीं?

म्हारा पडूत्तर री वाट नीं नाळी वीं। झट देणी री एक अवखी वात पूछ लीधी, 'काका, मां थांरे कांई लागे?'

म्हें कियो, 'मिनी थूं जा, भोळा रे साथे रम, जा। अवार म्हूं थोड़ो काम कर लूं, हैं।'

वा मेज रे कनें, म्हारा पगां नकै बैठ, दोई गोड़ां ने अर हाथां ने हिलाय हिलाय भागती आगती बोलवा लागी, 'आटयो वाटयो, दही में साटयो।' म्हारा उपन्यास

रा सत्तरवां परिच्छेद में उण वगत परतापसींग कांचनमाळा ने अटक मांय नूं काढ़ अंधारी रात में, ऊंचा गोखड़ा सूं नीचे बैवती नदी में कूद रियो हो।

म्हारो घर गैला रे माथे हो। मिनी 'आट्या बाट्या' ने छोड़ न भागी। जोर सूं हेला पाड़वा लागी, 'कावली ओ काबली।' मैलो कुचीलो, ढीलो ढबळक कुड़तो पैरियां, माथा पै साफो बांधियां, कांधा पै मेवा रो झोळो लटकायां, हाथ में दो चारेक अंगूरां री पेटियां लीयां एक लांब तड़ांग काबली धीरे धीरे सड़क पै जाय रिया हो। वीं ने देख मिनी रा मन में कांई आयो जो तो खबर नीं। वा जोर जोर रा हेला पाड़वा लागी। म्हें जांणियो, ईं सत्तरवां परिच्छेद रे लिखवा में घो आड अडायो व्हे जाय, वो तो अबारूं मेवा रो झोलो कांधा में घालियां आय ऊभो रेवेला।

मिनी रो हेलो सुण न काबली मुळकते थके वीं रा आडी ने मूंडो फेरियो, घर आडी ने पांवडो भरियो न मिनी तो भागी जो कजांग कठे ई लुकगी। वीं रा मन में वैम बैठियोड़ो हो के वीं रा झोळा ने हैरे तो, मांयनूं दो चारेक जीवती जागती छोरियां निकळ जावे। काबली मुळकते थके आय न सलाम कीधी, ऊभो रैगियो। म्हें सोची तो ही के अबार परतापसींघ न कांचनमाळा मोटी आपदा में है पण घरे बुलाय न कांई नीं मोलावणो ई आछो नीं लागे।

क्यूंक मोलायो। पछे अठीला वठीला गप्पोड़ा मारवा लागिया। अबदर रैहमान री, रूस री, अंगरेजां री, सीमाड़ा रा हिफाजत री वार्ता चालगी।

ऊठ न जावती वेळां, अधकचरी बोली में काबली पूछियो, 'आप री बाई कठै गिया?'

म्हें मन रो वेम भांगवा ने मिनी ने बुलाय लीधी। वा म्हारे अड़ न ऊभी, काबली रा मूंडा ने, मेवा रा झोळा ने वैम सूं देख री। काबली झोळा मांयनूं दाखां र खुरबांण्यां काढ न मिनी ने देवा लागो। मिनी कांई नीं लीधो, म्हारा गोडा रे छैंटगी। पैली ओळखांण वां री यूं व्ही।

थोड़ा दिनां पछे, एक दिन परभात रा, म्हूं कठै ई बारै जाय रियो हो। देखूं कांई, म्हांरा वाईजीलाल बारणां कनें बैंच पै बैठिया काबली सूं चपर चपर कर रिया। कावली वीं रा पगां कनें बैठियो, मुळकतो जाय रियो अर मन लगाय न सुण रियो। बीचै बीचै कावली आपरी वात ई अधकचरी बोली में कैवतो जाय रियो। मिनी ने उण री पांच बरस री ऊमर तक एड़ो धियान सूं सुणवा वाळो स्रोता काका रे सिवाय यो ई ज मिलियो हो। म्हें देखियो, वीं रो छोटोसोक पल्लो वदामां सूं दाखां सूं भरियो हो। म्हें काबुली ने कियो, 'ये क्यूं दीधा इण ने?

अबै मत देवजो।' यूं कैय दुनिया मांयतूं अधेली काढ न वीं ने झेलाई। वो संकियो नीं, अधेली लेय झोळा में न्हाक दीवी।

पाछो घरै आय न देखूं तो वीं अधेली घर में राड़ो कर राखियो। मिनी री मां, हाथ में अधेली लीवां मिनी ने बाकल री, 'बता, या अधेली थनें कठै लाधी ?'

मिनी केयरी, 'काबली दीवी।'

'थूं अधेली लीवी क्यूं ? बता।'

मिनी रीं रीं कर रोवा री त्यारी कर री, 'मैं मांगी कोयनी वीं ज दीवी ही।'

म्हैं आय, मिनी ने आवा वाळी विपदा सूं बचाई। वीं ने बारै ले आयो।

खबर पड़ी, काबली रे लारे मिनी रो यो पैलो मिलाप नीं हो। वो कतरी दांण आयो हो, पिस्ता, बदामां री मूंक खुवाय खुवाय मिनी रा छोटा सा मन ने आपणो कर लीदो।

म्हैं देखियो, वां दो ई गोठिया में दो चार बोल तो जमियोड़ा है। रैमत ने देखतां ई मिनी पूछती, 'काबली, ओ काबली, थारा झोळा में कांई ?'

रैमत 'हां' रे माथे यूं ई बेमतलब अनुस्वार लगाय हंसतो थको कैवतो, 'हांथी।' ई हंसी में कोई ओंगो अरथ व्हे जेड़ो कांई नीं। पण ई कौतक में वां दोवां ने ई मजो आवतो। सरद रुत रा पैला पोहर में म्हने ई वां री हांसी सुंवाई एक दो बातां और ही जो वे रोजीना कैवता। रैमत मिनी ने कैवतो, 'कदै ई सासरे मत जावजे हैं।'

यूं तो आपणां अठा री छावरियां जामे जिं दिन सूं ई सासरा रो नाम जांणे। पण म्हां नुवा जमाना रा मिनख हा जो मिनी ने सासरा रो ग्यान ओजूं म्हां लोगां सूं मिलियो नीं। रैमत रो अरथ वीं रे सांगोपांग समझ में नीं आवतो। मिनी सूं कोई बात व्हो जुवाब दीधां बिना नीं रैवणी आवतो। वा साम्हो रैमत ने पूछती, 'थां सासरे कदी जावोला ?'

रैमत मदमता रा मुसर साम्हूं मुक्को उठाय न कैवतो, 'म्हूं सुसर ने मारूंला।'

या सुण मिनी खूब हंसती।

देखतां देखतां मस्त सरद रुत आयगी। पैलां रा जुगां में राजा ई ज रुत में दिगविजै करवा ने निकळता। म्हैं कलकत्तो छोड़ न पग बारै ई नीं मेलियो हो। कदाच ई ज वास्ते म्हारो भंवरो सातूं दीप में भंमतो रैवतो। देस परदेस री बातां जाणवा री म्हारा मन में हमेसां लागी रैवती। कोई देस रो नाम सांभ-

ठेता ई म्हारो चित्तड़ो वठै जाय लागतो। परदेसी माणस ने देखतां ई म्हारो मनड़ो नंदियां, परबतां अर जंगळा रे बीचै एक छोटीसीक कुटिया रो चित्तर उतारवा लागतो। हंसी खुसी, आजादी रे सागै मुसाफिरी रा सपना देखतो। म्हूं तो ठांण सिणगार हूं। म्हूं भलो ने म्हारा घर रो खुणो भलो। खुणो छोड़ न घर बारे पग देवणो मरणो लागै। परभात रे पोहर, म्हारा छोटासाक कमरा में, मेज कनें बैठ वीं कावली सूं गप्पोड़ा मार, देसाटण रो काम काढ लूं। म्हारी आंखियां आगे काबुली सांगोपांग काबल री तस्वीर उतार दे। दोई आडी ने ऊंचा नीचा, बळियोड़ा राता राता मंगरा। ऊंचा ऊंचा विखम परबतां रा सांकड़ा घाटा। लदियोड़ा ऊंटा री कतारां जाय री है। साफा बांधियोड़ा सौदागर, गेलारथु ऊंटा पै चढिया जाय रिया है, पगां चाल रिया है। किरे ई हाथ में बरछो, किरा ई हाथ में तो'ड़ादार बंदूकां। वादळा गाजता व्हे जेड़ा गैरा सादमें, अधकचरी बोली में देस री वातां करता जाय रिया है।

मिनी री मां वैमी सुभाव री लुगाई है। रात ने कोई रोळो सुणियो न वीं ने वैम आयो के दारू पीधोड़ा आंपा रा घर साम्हीं आय रिया है। वीं री जांण में तो या दुनियां ईं खूंणां सूं वीं खूंणां ताई, चोर धाड़ायती, गुंडा, दारूड़िया, सांप, बिच्छू, मलेरिया मोतीझड़ा सूं भरी है।

अतरा बरस व्हेगिया वीं ने ई दुनियां में रैवता ने पण वीं रा मन रो यो भे अर वैम ओजूं नीं मिटचो।

रैमत कावली री कानी सूं वा नचींती नीं ही। म्हनें घड़ी घड़ी री सावचेत रैवा ने कैवो करती। म्हूं उण रा वैम पै हंसियो तो वा एकणदम कतरा ई सुवाल पूछण ढूकगी।

'क्यूं, टाबरा री चोरी कोनी व्हे कांई ?' 'काबल में छोरा छोरी रो वेपार नीं व्हे के ?' 'लांबा झांबा काबली सारू छोटा साक बाळक री चोरी करणी मोटी वात है कांई ?' एड़ा कतराई सुवाल करगी।

म्हनें मानणो पड़ियो के ये अणव्हेणी वातां तो कोनी पण वैम जेड़ी वात ई कोयनीं। एतबार करणे री सगती भगवान सगळा ने बांटती वेळा एक सरीसी नीं बांटे। म्हारी लुगाई रा मन रो वैम मिटियो नीं। खाली उण रा वैम [illegible] सूं ई दोस देखियां बिना रैमत ने घरे आवता ने म्हें बरजियो नीं।

सालोसाल माह रा म्हीना में रैमत आप रे देस परो जावे। यां दिनां में गराहकां सूं पैइसो ऊगावाने करड़ो काम करणो पड़े। घरे घरे जावणो पड़े पण तो ई दिन री ऊगाळी वो आय न मिनी सूं मिलै जरूर। यूं लागतो के जांणे दोवा मांय ने कोई पड़पंच चाल रियो है। जि दिन परभात री पोहर आवणी

नीं आवतो तो सांझ रा हाजर लावतो। अंधारा मांयने घर रा खूंणां में, ढीलो ढबळक जामो पजामो पैरियां, लांबतड़ाक, झोळा झोळी वाळा काबली ने देख सांचांनी एकदम संका आय जावती।

पण जदी देखतो के मिनी, 'काबली, काबली' हेला पाड़ती हँसती हँसती भागी आवती र दो न्यारी न्यारी ऊंमरां वाळा में वा ई जूनी, भोळी हंसी व्हेवा लागती तो म्हारो हिवड़ो हुळसाय जावतो।

एक दिन सुवै म्हूं म्हारा कमरा में बैठो थको, म्हारी नुवी पोथी रा प्रूफ देख रियो। सियाळा री सी, सीख लेवां रे पैलां आजकाली दो चार दिनां सूं जोर रो पड़रियो। जठी ने देखे वठी ने सी री वात चाल री। एड़ा सी पाळा में, परभात रो तावड़ो, बारी मांय सूं आय, मेज रे हेटे, म्हारा पगां माथे आय गियो जो वीं री तपती सुंवाय री। कोई आठेक बजिया व्हेला। सुवै री हवा खोरी कराळियां, माथां रे गुळबंद पलेट पलेट पाछा आय रिया हा। सड़क माथे जोर रो हाको हूलो सुणीज्यो।

देखूं तो आंपणां रैमत ने दो सिपाई बांध न ले जाय रिया। कौतक देखणियां छोरां रो टोळो रो टोळो लारे चाल रियो। रैमत रा कुड़ता माथे लोही रा छांटा लाग रिया। एक सिपाई रा हाथ में लोहिया सूं लालीज्योड़ो छुरो हो म्हें बारणा बारै निकळ सिपाई ने पूछियो, 'कांई वात है?'

कीं तो सिपाई सुणाई न कीं रैमत सुणाई। म्हां के एक पाड़ौसी, रैमत सूं रामपुरी चादरो मोलायो। वीं रा थोड़ाक रिपिया देवणा हा जो देवा ने नट गियो। बस, ई ज वात माथे दोवां में बोलचाली व्हेगी। रैमत छुरो वाह्य दीवो।

रैमत वीं झूठा, नागा आदमी ने कान रा कीड़ा झड़े जेड़ी गाळियां ठरकावतो जाय रियो हो। अतराक में तो 'काबली ओ काबली' कैवती थकी मिनी घर सूं बारै निकळी।

रैमत रो मूंडो कोतक री हांसी सूं चमक गियो। वीं रा कांधा पै आज झोळो नीं हो जो दोई गोठ्यां रे बीचे हमेसां वाळी रोळ नीं व्ही। मिनी आवतां ई पूछियो, 'थां सासरे जावोला ?'

रैमत हँस न बोलियो, 'वठै ई तो जायरियो हूं।'

रैमत भांप गियो के आज वीं रा पडूतर सूं मिनी रा मूंडा पै हांसी नीं आई। मुक्को बताय न वो बोलियो, 'सुसरा ने मारतो पण कांई करूं हाथ बांधियोड़ा है।'

छुरो मार देवा रा गुस्सा में रैमत ने नरां ई बरसां री कैद व्हेगी।

वगत बीततो गियो काबली रो धियान ई नीं रियो चितां उतर गिया म्हां

घरे बैठ्यां रोज रो काम धंधो करता, सुख सूं जिंदगी वीताय रिया हा जदी कदे ई मन में ई धियान नीं आयो के वो आजादी सूं परवतां में घूमणियो फिरणियो आदमी, जेल री ओवरी में, वरस पे वरस किया काढरियो व्हेला।

अचपळा सुभाव री मिनी आंपणा मित्तर ने बीसर, नवी साईस रे सागे मित्तरता कीधी। पछे ज्यूं ज्यूं ओस्या आवा लागी ज्यूं ज्यू साथणियां रो साथ करवा लागी। और तो और अबे तो वीं रा बाप रा कमरा में ई घणी नीं आवे। म्हारे सागे ऊठणो बैठणो ई बंद व्हेगियो।

यूं करतां कतराई बरस पाछे वरस आवता रिया, जावता रिया। पाछी सरद रुत आई। मिनी री सगाई रो दसतूर व्हेगियो। पूजा री छुट्टिया में उण रो वियाव है। अबकाळे दुरगा विसरजन रे सागे सागे म्हांका घर रो उजाळो मिनी, मां बाप रा घर ने सूनो कर सुसरा रा घर में उजाळो करेला।

परभात रो सूरज घणो रूपाळो ऊगियो। चौमासा रे पछे सरद रुत रो नुवो नुवो ऊजळो तावड़ो सोनां री नांई चमक रियो। कलकत्ता री गळियां में ईंटा रा मेला मैला घर तावड़ा री आभा सूं उजळा व्हेरिया।

म्हां के घरे आज पौ फाटियां री सरणाई बाजरी। मिनखां रो आवणो जावणो चालरियो, वरांडा में, कमरां में झाड़ टांक रिया, जां रो टणटण म्हारा कमरा तांई सुणीजरी। 'चालो, झट करो, वठी ने जावो, अठी ने आवो' रा हेला पड़रिया।

म्हूं म्हारा लिखवा पढ़वा रा कमरा में बैठियो हिसाब मांड रियो अतराक में रैमत आयो, सलाम कर न ऊभो रैगियो।

एक दांण तो म्हारा मूं ओलखणी नीं आयो। नीं तो वीं रा कनें झोळो हो, नीं वे लांबा लांबा केस ई हा। मूंडा पे पैला वाळी आब ई कोयनी ही। छेवट में वीं री मुळक देख न ओळख्यो के यो रैमत है।

'कद आया, रैमत ?'

'काले संझ्या रो जेळ सूं छूटियो हूं।'

सुणतां ई वीं रा लफज तो म्हारा कान में वाजिया खटाक देणी रा। म्हें म्हारी आंखिया सूं कोई हत्यारा ने आज तांई नीं देख्यो। वीं ने देख म्हांरो जीव भेळो व्हेगियो। आज री सुभ वेळा में यो अठा सूं परो जावे तो चोखो।

म्हें वीं ने कहियो, 'आज तो उतावळ रो काम है, उण में लागियोड़ो हूं, अवार थां जावो, पछे आवजो।'

म्हारी वात सुण वो जावा लागियो पण बारणा रे कनें जाय थोड़ो अठी ने वठी ने व्हेय न बोलियो, 'बची ने देख लूं थोड़ीक।' कदास वो या ई जांणतो

के मिनी ओजूं ई पैला जेड़ी टाबरी व्हेला, देलां री नांई 'काबली ओ काबली' करती दोड़ी आवेला। वां दोवां रे बीचे वे ई पैली वाळी कौगत री हाँसी री वार्ता व्हेला। वो तो पैलां री मित्तरता री वात चींतार न एक पेटी अंगूरा री अर एक पुड़का में वदाम न दाखां कोई दूजा कावली कना सूं मांग तांग न लेवतो आयो हो। पैलां वाळो भोळो वीं रा कने नीं हो।

म्हें कियो, 'आज तो घर में कांम नरोई है। आज तो किण सूं ई मिलणो नीं व्हे।'

म्हांरो पडूत्तर सुण न वीं रो मूंडो लटक गियो। छानो मानो एकदांण म्हांरा मूंडा साम्हो नाळियो, पछे 'सलाम वाबू सा'ब' कंय बारणै निकळ गियो।

म्हारा काळजा में जांणे पीड़ा ऊठी। म्हूं विचार रियो के वीं ने पाछो हेलो पाडूं जतरे देखूं तो वो पूठो आवतो दिख्यो।

भड़ै आय न कियो, 'ये अंगूर न थोड़ीक दाख वदाम, बच्ची सारू लायो हो, वीं ने देय दीजो आप।'

म्हें वीं रा हाथ में सूं सामान लेय पैईसा देवा लागो, पण वीं म्हारो हाथ पकड़ लीधो। कैवा लागो, 'थांरी मैरबानी है। हमेसा याद आवोला। पैईसा रैवा दो।' थोड़ोक ठम न कैवा लागो, 'आपरी वेटी जेड़ी, देस में म्हारे ई वेटी है। म्हूं वीं ने चींतार चींतार आप री बेटी सारू मेवो ले आवो करूं। सौदो बेचवाने थोड़ा ई आवूं।'

कैंवते थकें, ढीला ढबळक कुड़ता मांय ने हाथ घाल छाती कनां सूं एक मैलो जूनो पातळो कागद काढ्यो न जावता सूं वीं रा पड़ खोल. दोई हाथां सूं म्हारी मेज माथै छीदो कर दीधो। कागद रा पानड़ा पे एक छोटा नान्हासाक पंजा री छाप ही। वेटी री ईं यादगीरी ने छाती रै लगाय रैमत बरसो बरस कलकत्ता रा गळीकूंच्या में सोदो वेचवाने आवतो। यो काजळ सूं मांडियोड़ो पंजो वीं रा काळजा रे अड़तो जो वीं ने लागतो के वेटी रो कंवळो कंवळो हाथ वीं री छाती रे अड़ रियो है। काळजा में जांणे हेमाळो ढुळ जावतो।

पंजो देख न म्हारी आंखिया जळजळायगी। म्हूं भूल गियो के यो कावली मेवा वेचवावाळो है अर म्हूं रईस हूं। म्हनें तो लाग रियो है जो वो है वो ई म्हूं हूं। वो ई वाप है। म्हूं ई वाप हूं। वीं परवतां रा वासी री छोटी सी पारवती रो पंजो देख म्हनें म्हारी मिनी याद आई। म्हें वीं ने उण ई वगत वारै बुलाई। मांयने रोका रोकी घणी ई व्ही पण म्हूं मानियो नीं। परणैत रो पूरो बेस पैरयां, गैणां गाचां सूं सजी बीनणी बणी मिनी लाज सूं भेळी व्हेती, म्हारा कनें आय ऊभी रैगी।

पैलां तो काबळी वीं ने देख हड़बड़ाय गियो। पैलां जसी वातां उण सूं करणी नीं आई।

पछे हंसतो थको बोलियो, 'बाई, सासू रे घरे जाय री है कांई ?'

मिनी अबै सासू रो अरथ समझे जो पैलां जेड़ो जुबाब देवणी नीं आयो। रैमत री वात सुण न वा लाज सूं लाल पड़गी। वीं मूंडो फेर लीधो। म्हनें वीं दिन री वात याद आयगी जि दिन पैलां पैल काबली सूं ओळखाण व्ही ही। मन में पीड़ जागगी। मिनी परी गी तो रैमत लांबो सास लेय वठी ज धरती पे बैठ गियो। अबै वीं रा मन में चानणां ज्यूं साफ व्हेगी के वीं री बेटी अतरी मोटी व्हेगी व्हेला। वी ने वा ओळखेला ई नीं। यां आठ बरसां में वीं रो कजांणा कांई व्हियो व्हेला। परभात रा पोहर में सरद रुत रा, सूरज री किरणां में सरणाई बाजवा लागी। कलकता री गळी में बैठियोड़ा रैमत री आंखियां में अफगानिस्तान रा सूखा परबत फिर रिया हा।

म्हें एक नोट काढ़ न वीं रा हाथ में मेलियो, 'रैमत, देस परो जा बेटी रे कनें। थूं जाय न बेटी सूं मिलेला, थां रा सुख सूं मिनी ने सुख मिलेला।'

रैमत ने रिपिया देवा सूं ब्याव रा उच्छब में एक दो मदा ने काट देवणां पड़िया। विचार राखी जेड़ी रोसनी नीं करावणी आई, अंगरेजी बैंड ई नीं आयो। घर में लुगायां घणी नाराज व्ही पण म्हारा विचार सूं तो एक सुभ काम सूं यो सुभ दिन और ई सुभ व्हेगियो।

बदलो

ठाकर मुकंदलाल जी रा पेलावाळा दीवाणजी री पोती र अर अवार वाळा मैनेजरजी री परणी इंद्राणी, ठाकरां रा दोहिता रा व्याव में बहू बनोळो जीमवाने खोटी घड़ी पुळ में रावळा में पग मेलियो हो।

ई सूं पेला री वि ई दो चार टप्पां में कैय दूं तो वात समझणो सोरो रैवेला।

ई वगत नीं तो मुकंदबाबू ई है नीं वां रा दीवाण गौरीशंकरजी है। काळ रा बुलावा ने दोवां सूं ई नटणी नीं आयो। दोई हा जदी दोवां रे ई आपसरी में खूब गेरा हा। गौरीसंकरजी मरिया मां बाप रो डीकरो हो, जमीं जायदाद कांई नीं ही। ठाकर मुकंदलालजी तो खाली वां रो मूंडो देख, भरोसो कर आप रा जो दो चार गांमड़िया हा वां ने भळाय दीधा। पछे आवावाळे जमाने सावत कर दीधी के ठाकरां, गौरीसंकरजी ने काम सूंप खोटो नीं कीवो। उदई ज्यूं वियाळो बणावे, मुरग चावणियां ज्यूं पुन्न भेळो करे, ज्यूं ई गौरीसंकरजी लोही पसीनो एक कर, राई राई कर ठाकरां री जमीन जायदाद वधावा लागा। घणी चतराई र हुंसियारी सूं पाणी रे भाव वांकागढ़ री जमीन मोल ले ठाकरां री जमींदारी में मिलाय दीधी। वीं ज दिन सूं मुकंदलालजी रो ठिकाणो, घराणो अव्वल दरजा में मानीजण लागो। वणी री वधोत्तरी रे लारे कामदार री व्ही। धीरे धीरे पक्को घर, खेती वाड़ी वधी। वार तिवार रो खरचो ई वधियो। जो तेसीलदारजी वाजता अबे दीवाणजी कैवावा लागा।

बस, पैलां री विगत तो या ई ज ही। आजकाले मुकंदलालजी रे खोळां राख्योड़ा बेटा है विनोदबिहारीजी। वां रे मैनेजर है दीवाण गौरीसंकर रा पोता जंमाई अंबिकाचरणजी। भणिया गुणिया। दीवाणजी रो वां रा बेटा रमासंकरजी पै जीव नीं धापियो। बुढापा में वां काम छोड़ियो जदी बेटा ने टाळ पोता जंमाई ने आप रे पाट बैठाय गिया।

काम धाम भली भांत चाल रियो। पैलां जमाना में हो वस्यो ई आज हो पण एक आंतरो जरूर पड़ग्यो। अबै ठाकर चाकर रो व्यौवार खाली काम काज रो व्यौवार है, मन रो नीं। पैलां जमाना में नांणो सूंघो हो, मन ई सोरो मिल जावतो। अबै सैंग जगा मन री फिजूल खरची जाबक बंद व्हेगी। खास आंपणा घरवाळा सारू ई मन रो टोटो है तो बारळा सारू तो आवे ई कठा सूं ?

यां दिनां ठाकरां रे रावळे दोयता रो बियाव व्हियो। बहू बनोळा रे दिन दीवाणजी री दोयती इंद्राणी रो पधारवो व्हियो। देखी जाय तो या दुनियां वीं विचित्तर लीलाधर रो कौतकघर है। अठे नाना भांत रा मिनखा ने भेळाकर ऊगे सूरज वां रा संजोग विजोग री अजब अजब कैणिया वो मांडवो करे न भांगवो करे।

ईं बहू बनोळा में, उच्छब रा मौका में, दो न्यारी न्यारी धात री लुगायां में टक्कर ऊडगी। देखतां देखतां बणावट रा वीं खाना में एक नूवा रंग रो सूत भिळ गियो, वीं में गांठ पड़गी।

इंद्राणी रात पड़ियां रावळे पूगी, आगे जीमण चूंठण व्हेगियो हो। ठकराणी नैणतारा मोड़ा आवा री वजे पूछी तो इंद्राणी घर रा काम काज रा, डील में आसंग नीं व्हेवा रा, एड़ा घणां आळखा लीधा, सुणवावाळा रो किरो ई जीव नीं धापियो मन मांयली वात इंद्राणी होठां पै नीं लाई पण तोई समझवावाळा सैंग समझ रिया हा। वात या ही के यूं तो मुकंदबाबू उणा रा धणी हा, टका पैइसा में ई बत्ता हा पण कुळ री मरजादा गौरीसंकरजी रा खानदान री ऊंची ही। इंद्राणी आप रा कुळ री मैहमा ने कदी नीं बीसरती। ठाकरां रै घरै जीमणो नीं पड़े ईं वास्ते ईंद्राणी जाण न ताळा लगायन आई। मांयलो मरम समझ न सैंग जणां जीमवा री मनवारां करबा लागा। पण ईंद्राणी नीं मानी जो नीं मानी। नख नीचो नीं कीधो।

पैलां ईं एक दांण ईं कुळ रा कुरब ने लेय मुकंदलालजी बीचै र गौरी-संकरजी बीचै ईं सूं ईं जबरदस्त भडंत व्हेगी ही। वा विगत ई अठै देवणी ठीक रै ई।

इंद्राणी फूटरी ही। बंकिमबाबू जगां जगां सुंदरी अर सौदामणी री

ओपमा दीवी है । पण वा ओपमा ज्यादातर जचे कोयनी । ईंद्राणी रे मांयने एक तरै रो प्रबळ वेग हो भळपटा लेती झाळ ही पण वा झाळ गंभीरता अर ठिमरास में लुकियोड़ी है । वीं री नस नस में बीजळी ही पण चमकती नीं ही ।

ईं रूपाळी टाबरी ने देख मुकंदबाबू मतो कीधो के वांरा भोळयां लियोड़ा टाबर सूं परणाय दे । वां गौरीसंकरजी रे वड़ाळो मेलियो । स्यामखोरी में गौरीसंकरजी किणी सूं एक पांवड़ो पाछे नीं हा, धणी वास्ते लोही बेवावा ने हाजर रैवता । आज वां रो दिन घरे हो, धणिया रा माथे हाथ हा । बराबरियां ज्यूं बरताव धणी करता पण मालिका रों कांण कायदो राखवा में एक रत्ती कोर कसर नीं कीधी वां । धणी रे साम्है मूंडो तो नमता जिमेकैवणो ई कांई । पूठ पाछे ई कठै ई धणी रो नाम आय जावतो तो वठै ई माथो नमाय न वात करता । पण ईं वडाळां पै वे कीं भाव राजी नीं व्हिया । लूण पाणी रो फरज अरं माथा रो करज, दांणो दांणो चूकावाने आधी रात रा हाजिर रैवता । पण कुळ री मरजादा वांरा सूं नीं छोड़णी आई । ठाकरां रा बेटा लारे पोती रो सगपण नीं कीधो ।

चाकर रो यो कुळ गरब ठाकरां ने नीं सुंवायो । वां रा तो मन में उलटो यो खयाल हो के यो वड़ाळो भेज वां खिदमतदार पै खावंदी कीधी है । पण गौरीसंकरजी ईं ने आपणी मांण हांण मानी तो ठाकर मूंडे नीं बोलिया ।

थोड़ा दिन अणबोलणा रिया जतरे गौरीसंकरजी री काया घणी कस्ट में री । धणियां रो बेराजीपो काळजा में सालतो रैवतो । वां एक मां बाप बायरा, गरीब पण खानदानी लड़का रे लारे पोती रो बियाव कर दीधो । लड़का ने घरे राख आप री गांठ सूं भणावा पढावा लागा ।

कुळ रा आंजस सूं छकियोड़ा दादा री पोती इंद्राणी आज आप रे मालकां रे घरे जाय न बनोळा में जीमी नीं । कणे री कांई वात, ईं व्यौवार पै मालक री बैर ने अमरोस आवणो ई हो । ठकराणी रा मन में खुणस बैठ गी । नैणतारा ईसका सूं देखवा लागी, वी ने दीखवा लागियो ईंद्राणी टच्चरां पै टच्चरां करती जाय री है ।

पैली पोत तो या टच्चर दीखी के इंद्राणी गैणां गांठा सूं लड़ांझड़ां, बण ठण न रावळे आई । कांई जरूरत ही सा, पण धन रो छक बतावणो ।

दूजी वात । इंद्राणी ने आप रा रूप रो घमंड घणो, ठसको घणो । है सा, रूपाळी है सा, पण काम काजी मिनख, चाकरी रा चाकरां रे अतरो रूप व्हेणो भळी वात नीं, अर चावना ई नीं । बीं रो यो कैवणो तो सांचो हो । रूपाळी तो वा एड़ी ही के लाखां में जोयोड़ी नीं लाधे । पण रूप रो घमंड अर ठसको

दीखतो जो नैणतारा रा नैणां रो दूसण हो। रूप तो भगवान रो दियोड़ो व्हे। किरा ई हाथ में लेवणो देवणो नीं। पण जिने दोस काढ़णा व्हे मन में आवे ज्यूं काढै। तीजो दोस काढ़ियो इंद्राणी रो तो घमंड सूं ई मायो नीचो नीं व्हे। हकीगत या ही के इंद्राणी रा सुभाव में ठावापणो हो। जांरे लारे घणी ज ओळखांण व्हे जाती वां री वात तो न्यारी पण दूजां रे लारे रळणी मिलणी नीं आवतो। मान न मान म्हूं थारो मेमान वाळी परकरती वीं में नीं ही। आगै व्हे न दूजां रा काम में नवरो न्यावटो नीं करती। खरा न खोटा दूसण हेर हेर ठकराणी ताती पड़ती गी। मोसा मार मार, घड़ी घड़ी री, मैनेजर साब रा जनाना, दीवाण साब रा भंवर बाई, कैय सुंणावणां सुंणावा लागी। एक चंट मूंडे लागियोड़ी डावड़ी ने सणकार दीधी जो इंद्राणी री देही रे हाथ अड़ाय अड़ाय साथण ज्यूं घुळ घुळ वातां करवा लागी। गैणां ने हाथ में ऊंचा नीचा कर देखवा भाळवा लागी। गळा रा कांठला री, बाजू री जोड़ी रा वखांण कर पूछवा लागी 'क्यूं बाई जी, यां पे सोना रो झोळ चढ़ियोड़ो है कांई ?'

इंद्राणी घणां ठिमरास सूं बोली, 'नीं तो, पीतळ रा है।'

ठुकराणीजी इंद्राणी ने हेलो मार न बोली 'थां वठे एकला क्यूं ऊभा हो ? यां पातळां ने हाट खोला वाळां री पालकी में दे आवो नीं।' घर री डावड़ी भडै ऊभी काम भळायो इंद्राणी ने।

इंद्राणी गैरी गैरी भोपणियांवाळी पलकां ने उठाय मोटा मन सूं एक पल सारूं नैणतारा ने देखी, दूजे ई पल सीरणी री बाजां उठाय नीचे देवा ने उतरगी।

जांरे वास्ते पातळां लै न गी वां इंद्राणी ने बाजां उठायां आवती देखी तो विचळायगी। बोली, 'अरे आप फोड़ा क्यूं देख रिया हो, दे देवो नीं वीं छोरी ने।'

इंद्राणी बोली, 'फोड़ा किया रा है।'

'तो लावो, म्हानें ई देय दो।' हाथ मांडियो लेवा ने।

'नीं, नीं, म्हूं ई लियां चाल री हूं।' कैवती थकी घणा अपणायत सूं जाय पालकी में पातळां मेल आई। जाणे अन्नपूरणा राणी व्हे आपरा भगत ने थाळ भेळाय री व्हे। यां दो छिणां रा संजोग में ई हटखोला री वीं सेठाणी रो मन तलफवा लागग्यो के ईं मिठबोली इंद्राणी ने म्हारी भायली बणाय लूं।

लुगायां वाळा ओंटा टोंटा, बोलणा, मरम रा वांण जतरा नैणतारा मारिया इंद्राणी सगळा झेल लीधा। वीं री देही में एक ई घसियो नीं। वीं रा सुभाव री गैराई अर तेजस्विता री ढाल रे अड़ अड़, टूट टूट न वे तीर कामठा नीचे पड़ गिया। ज्यूं इंद्राणी वातां खमती जावे पाछी बोले नीं ज्यूं नैणतारा री रीस

ओर ई भभके। इंद्राणी सँग समझ री, मौको देख, सगळां री आंख टोळाय, रामराम कीधां विना ई घरे आयगी। असी टळकी के किने ई खबर नीं पड़ी।

[२]

जो चुपचाप, छानामाना बरदास्त कर जावे, वांरे मांयली मार घणी ऊंडी बैठ जावो करे। इंद्राणी आज रा अपमान ने गिट तो गी, पण मांयने ई मांयने काळजा पै करोत चाल री ही।

इंद्राणी रे विनोदबिहारी के सगपण री वात चाली ही ज्यूं इंद्राणी रा भूवा रा बेटा भाई वामाचरण सागे नैणतारा रा सगपण री चरचा ई चाली ही। वो ई वामाचरण विनोदविहारी रे अठे मामूली अँलकार रो काम कर रियो। इंद्राणी ने ओजूं खूब आछी तरे याद है नैणतारा रो बाप छोटीसीक नैणतारा ने ले वों रे घरे आयो हो। वामाचरण रे सागै सगपण कराय देवा ने दीवाण गोरीसंकरजी री घणी गरजां कीवी। नान्हीक नैणतारा री ओस्था सूं ऊंची वातां सुण उण रे आगे लजाळु थोड़बोली इंद्राणी आप ने कमजोर, अजांण मानवा लागी। गोरीसंकर वीं टाबरी रो अचपळापणो देख घणां राजी व्हिया। पण लड़की रो खानदान उगणीस बीस व्हेवा सूं ईं सगपण ने ठीक नीं समझियो। पछे वां ई ज आगे व्हे न कोसिस कर न खानदान में पातळा, विनोदबिहारी रे साथे नैणतारा रो सगपण कराय दीवो।

यां सैंग वातां ने चींतार इंद्राणी रो जीव सोरो नीं व्हियो साम्हो आज जो मांजनो पड़ायो वो और इवक सालवा लागो। वीं ने महाभारत री कथा सुकराचारजजी री बेटी देवयानी अर शर्मिष्ठा री याद आई। आप रा मालिक री बेटी शर्मिष्ठा रो घमंड गाळ न देवयानी वीं ने आप री दासी वणाई ज्यूं वा ई नैणतारा ने करे तो बदलो लेवणी आवे। एक जमानो हो जदी मुकंदबाबू रे अठे गोरीसंकरजी रो ई वो पद हो जो दैत्यां रे अठे गुरू सुकराचारजजी रो हो। वीं गत गोरीसंकरजी चावता ज्यूं कान पकड़ न उठाता वैठाता। चावता तो गोरीसंकरजी वांकागढ़ री जमीन आप रे घरे मोल ले लेता। पण वां मालकां री भली चाही, वां ने ऊंचा उठाय आकास तक पूगाय दीधा। वां री पताळ तक जड़ां दीवाणजी रा परताप सूं पूगी है। जदी ज तो आज वां ने याद कुण करे। अवै जस क्यूं मानवा लागा। इंद्राणी सोचवा लागी, 'म्हारा दादा वांकागढ़ रो ठिकाणो मोल लेणो चावता तो डावल्या हाथ रो काम हो। वां में अतरो जोर हो। पण आप नीं मोलाय आपरा धणी जांण यां ने देवायो। देखी जावे तो या तो म्हांरा दादा री बगसीस है। आज वां रा बेटा ने जस जाणणो तो कठे रियो

साम्हों टचकां मारै। आज म्हांरा दादा रा दीधा लगा धन रा जोम में फाट रिया है, म्हांरा ई मांजना लेय रिया है।' इंद्राणी सोचती जावे ज्यूं चित्तड़ो दुखी व्हेतो जावे।

घरे आय् इंद्राणी देखियो भरतार आरामकुरसी माथे पड़िया अखबार बांच रिया है। वे रावळे ई नूंता में जाय आया हा, कचैड़ी रो काम काज ई निवटाय न वैठिया हा।

घणां जणां रो यो कैवणो है के लोग लुगाई रो सुभाव घणोंकर एक सरीखो व्हेवो करे। भाग सूं कठै कठैई लोग लुगाई रीं आदतां एक सरी सी देख वे समझ लेवे के कदाच सैंग ठोड़ यूं ई व्हेतो व्हेंलो। खैर चावे जो व्हो, अंबिकाचरण अर इंद्राणी री एक दो आदतां जरूर मेळ खावे।

अंबिकाचरण मिजलसियो मिनख तो है नीं। बारे जावे तो कामसर। आंपणो काम पूरो कर, दूजां नखूं काम पूरो कराय घर में वळे तो यूं लागे के बारला हमला सूं रक्षा करावाने गढ़ में आय वळियो। बारे व्हे तो वे अर वांरो काम। घर में आवे जदी वे अर वां री इंद्राणी। बस या ही वां री दुनियां, राजी हा आप री ईं दुनियां सूं। गैणां में लड़ालूंब इंद्राणी ओवरा में गी। वळतां ई अंबिकाचरण हंसी में कांई कैवणो चावता पर इंद्राणी रो फीको मूंडो देखियो तो होठां पर ली वात होठां पे रैंगी। फिकर सूं पूछियो, 'थांरे व्हे कांई गियो ?'

इंद्राणी मुळकी, जांणे चिंता कांई है ई नीं, 'व्हे कांई ? अवार तो पान मारू सूं मिलाप व्हेयरियो हे।'' अंबिकाचरण आंगणे अखबार फैंकतो बोलियो 'जो तो जांणूं हूं पण ईं रे पैलां कांई व्हियो जो बतावो।'

इंद्राणी गैणा खोलती बोली, 'वीं रे पैलां धणियाणी मोट मरजाद बगसी।'

'कसी मोट मरजाद ?'

इंद्राणी परणिया री कुरसी रा हात्था माथे वैठे गळा में बांह्यां घाल दीधी, बोली 'थां आव इज्जत दो जिसू बिलकुल उलटी।'

पछे सारी विगत मांड न सुणाई। पैलां तो मन में बिचारयो के खांवद ने कांई नीं कैऊं। पण आप री वात नीं राखणी आई। आज कांई पैलां ई कदी एड़ी परतिग्या उण सूं निभी नीं। बारळा रे आगे जतरी वा ठावी अर छानी रैवती वतरी सायब कनें आय खुल जावती। सैंग ऊपरळी मोट मरजादां, ने तोड़ वगाय देवती, मन री कोई छोळ ने दाब न राखणी नीं आवती।

अंबिकाचरण ने सुण न घणी रीस आई, वोल्या, 'आज ई अस्तीफो दे दूं।' उणी ज ताळ विनोदबाबू ने करड़ो कागद लिखवा ने वैठिया।

इंद्राणी कुरसी रा हत्था सूं ऊठ न नीचे ढळियोड़ी जाजम पै परणिया स्यांम रा पगां कनें बैठगी, एक हाथ वीं री खोळां में मेल न बोली, 'एड़ी उतावळ कांई है, कागद रेण दो अबारू'। करणो व्हे जो काले करजो।'

अंबिकाचरण तो ऊकळ रिया, 'नीं एक पळ ई म्हां सूं अबै रैवणी नीं आवे, इंद्राणी आप रा दादा रा काळजा री कोर ही। दादा रा हिवड़ा रा हेत सूं पोखिजियोड़ी इंद्राणी सुभाव में दादा रै माथै गी। घणीं आदतां वीं री आप रा दादा जेड़ी है। गौरीसंकरजी जतरी स्यामखोरी इंद्राणी में नीं ही पण वीं रा मन में या भावना जरूर ही के मालकां रे भलां सारू काम पड़े तो जीव ई देय देणो चावे। वीं रो परणियोड़ो. भणियो. पढियो हो, चावता तो वे उकालत ई कर लेता के कोई दूजो और चोखो धंधो कर लेता पण इंद्राणीं रा एड़ा खियाल देख वे चित्त मन सूं जो मिलतो जिमें राज़ी बाजी, ठिकाणा रो काम अवेर रिया हा। आज री मांजना पाड़ वात इंद्राणी रे साल री ही पण तो ई वीं रो मन नीं मान रियो के वीं रो खांवद ठिकाणा रो काम छोड़ अळगो व्हे जावे।

इंद्राणी जुगती सूं, अपणायत सूं बोली, 'विनोदबाबू रो ई में कांइ कसूर वां ने तो कांई खबर ई नीं। लुगाई री वात पे अतरा उतावळा क्यूं व्हो'।

अंबिका हंसवा लाग गिया, वां ने आपरी अकल पै ई हंसी आयगी बोलिया, 'वात तो ठीक कैवो। धणी व्हो न घोरी व्हो, आज पछे थां वां रे घरे कदी पग मत दीजो।'

वायरो आयो न वादळा ने उडाय ने लेगियो। वीं दिन तो अतरीक वात व्ही। घर में सीळसांति व्हेगी। परणिया रो आघ आदर देख इंद्राणी बारळी कड़वी वातां ने भूलगी।

ठाकरसा तो अंबिकाचरण ने काम काज सूंप नचीता। नचीता ई ज नी परायो मूंडो चोखे। आंख ऊंची कर काम नीं देखे। कोई कोई आदमी आपरी परणी रो जाबक ई धियान नीं राखे, बिलकुल बेपरवा व्हे जावे के वा कांई करे न कांई खावे पीवे। वसीज लापरवाई विनोदबाबू आपरा ठिकाणा साम्ही बरत रिया। जमीं, जागीर री आमदनी तो बंधियोड़ी आमदनी व्हे। विनोद ने वा आमदनी घणी थोड़ी लागती। विनोद रो जीव तो करतो के कोई एड़ो गैलो लाघ जावे जो कुबरे रा खजाना में जावतो व्हे। वो मझ्झ रात में छाने छाने जाय मन में आवे जतरो धन पोटां बांध न ले आवे। धन कमावा री वो सोचतो ई नीं छाने छाने कोसिसां ई करतो। अणूंता अणूंता रोजगार करवाने छाने सल्ला लेवतो, पछे ठगां रा जाळ में फंस जावतो। कदी तो सोचतो के आखा हिंदवांण रा बंवळिया रा गोडां रो ठेको ले लूं, बंवळिया कटाय गाड़ा रा पैडा बणावा रो कारखानो

खोलदूं । कदी छाने छाने वौपारिया सूं मिलतो, आखा सुंदरवन रा भंमरमाळ रो सेंत भेळो कर आखा मुलक में विणज करूं । कदे ई आयूंणा इलाका र जंगळा रो ठेको नेवाने मिनख भेजतो के हरड़े, बेड़ा, आंवळा रो वौपार आंपणो करलां । विनोद मन में जाणतो के म्हारा यां वौपारां री वातां कोई सुणेला तो दांत काढेला । वो एड़ा कवाड़ा मांयने मांयने लुक न करतो, चौड़े कदेई नीं करतो । चोज एड़ो राखतो जांणे कोई जांण जावेला तो चिण्यो चिणायो नौ खंडियो म्हेल ढेह पड़ेला । अबिकाचरण सूं तो ओर बत्तो संकतो । वीं ने कठे ई या ठा नीं पड़ जावे के पैइसो खराब कररिया है, ई वात रो संको रैवतो । अंबिका रे सागे एड़ो बरताव करतो जांगे घर रो धणी अंबिका है, वो जांणे ठिकाणां रो तनखा दार है जो आप रे सालाना गुजारो ले ।

बहू बनोळा रे दूजा दिन सूं ई नेणतारा आप रे परणियोड़ा रा कान में फूंक मारवा लागगी, 'थां तो लेखो जोखो पूछो नीं, जो कामदार सा'ब लाय हथेळी में मेल दे जिने माथे चढाय लो । वे घर खाय रिया है । वां री लुगाई जेड़ा गैणां पेर न आई वेड़ा गैणा थांरे घर में आय न म्हें तो आंख सूं ई देखिया नीं । ये गैणा आवे कठा सूं है ? आवे तो आंपणा घर सूं ई है । कामदारणीजी रो मिजाज र ठसको म्हूं तो देखती रैगी ।' घणी वातां जोड़ जोड़ ठकराणीजी ठाकरां रे कानां पसाव कीधी । इंद्राणी रावळे आय न चाकर छोरियां ने कांई कांई बोलणा सुणायगी जिरो एड़ो सबळो वरणन कीधो के ठाकर सा चक्कर में पड़ गिया ।

विनोद भोळो आदमी, दुबधा में पड़ गियो । उण री बांण ही एक कानी तो दूजां रो भरोसो करतो नीं, दूजी कानी कानां रो काचो । कोई उण रा कान भर देतो जो मान लेतो । उण रे मन में जमगी के मैनेजर पैईसो खावे । अमूंजणी वीं ने बत्ती यूं आई के कांम तो उण सूं व्हे नीं, मैनेजरजी ने पैईसो खावतां पकड़े कस्यां । गैलो नीं लाधे पकड़वा रो । ऊपर सूं रोवणो यो के मैनेजर सूं साफ साफ वात करवा री वीं में तागत नीं ।

अंबिकाचरण रो सारोवारो देख दूजा मना में बळता । वामाचरण जो दीवानजी रे लागती में भाणजो लागतो, अर दीवाणजी री मेहर सूं ई आज ईं जोगो वणियो । मन में वो दूजां सूं सवायो ईसको राखतो । वो मन में आप ने अंविका रो वरोवरियो समझतो । हां तो एक जात रा, बराबरिया, दो टका व्हेवा सूं ई कोई मोटो थोड़ो ई व्हे जावे । उण रा मन में वेम वैठियोड़ो के लागती रो व्हेवा रे कारण अंबिका जाण कर वीं री तरक्की नीं व्हेवा दे । बामाचरण रा विचार है के गाम कोटवाळी सीखावे । हाथ में काम री लाठी पकड़ाय दो मपणे आप काम चलावा जोगो व्हे जावे । खासकर मैनेजरी रो काम तो वीं री

राय में ना कुछ है। उण रो कैवणो है के जूना जमाना में रथ पै धजा फरकती वा धजा आज रा जमाना री मैनेजरी है। रथ ने घोड़ा खैंचे, कचैड़ी रो काम कामैती करे, धजा अर मैनेजरजी देखवा रा है, सोभा रा है।

ईं सूं पैला विनोद कदी काम काज री कोई बात नीं पूछतो, हां आप रे खानगी वैपार सारू अचाणचक रकम चावती तो खजांची ने एकमाड़ो ले पूछतो, 'रोकड़ में रकम कतरीक ई ?' खजांची रकम बतावतो जदी वो अठीने वठीने झांक न रिपिया मांगनो जाणे ये पराया रा व्हे। खजांची दसगत कराय रिपिया निजर कर देतो। नराई दिनां तांई विनोद रे मूंडा पै लाज चढ़ी रैवती।

विनोद री ईं आदत सूं अंबिका रे आगे अबखायां पड़ जावती। हिस्सा रा रिपिया जमींदार ने दीवां पछे रोकड़ में के तो मालगुजारी री अमानती रकम रैवती के तनखादारां ने चूकावा री, कै खरचा खाता री रकम रैवती। वे रिपिया जदी दूजा खाता में खरच व्हे जाता तो इंतजाम में अबखाई पड़ती। विनोद रिपिया ले, चोर री नांई छिपियो छिपियो फिरतो। पूछवा रो मौको ई ज नीं देवतो। कागद रो पाछो जुवाब नीं लिखतो। वीं आदमी री आंख में लाज ही और कठै ई नी ही ईं वास्ते उण सूं आंख मिलावणी नीं आवती।

धीरे धीरे विनोद रा ये चाळा बधवा लागिया तो अंबिकाचरण ने रीस आयगी। तिजोरी री कूंची आप रे कने लेय लीधी। विनोद रा मनमते रिपिया लेना रुक गिया। अतरो कमजोर मन रो आदमी हो विनोद के धरवणी व्हेता थकां ई हुकम देय मंगवानी नीं आया। अंबिका रो यो एहतियात ई अहळो गियो। लिछमी जिण सूं बेराजी व्हे जावे तो तिजोरी री कूंची वीं ने जावती ने थोड़ी ढाबे। नतीजो ऊंधो ई व्हियो। नतीजा री तो पछै जाय नींगे पड़ेला, अबार जो वात चाल री है जिं में क्यूं भांगो पाड़ां।

अंबिका रा करड़ा कायदा सूं विनोद मन में करड़ो व्हेयरियो हो। नैणतारा रा माटा निड़ावण सूं वीं रा मन में वैम उठियो। राजी व्हियो वो ईं वैम सूं। छाने छाने गुपचुप छोटा छोटा अेलकारां ने बुलाय, अंबिकाचरण री पोलां हेरवा लागो। वामाचरण खास खबरनवीस बण गियो।

मुकंदलालजी रा जमाना में दीवाण गौरीसंकरजी, आड़ा पाड़ा रा छोटा मोटा जमींदारां री जमीन जोरांमड़दी दबाय देता। यूं नरी जमीन वां पगां नीचे दाट लीधी। पण अंबिकाचरण ऐड़ा कामा रे नेड़ो नीं जावतो। व्हेतो जतरे मुकदमो ई नीं लड़तो, आपस में समजवा समजावा री कोसिस करतो।

वामाचरण ठाकरां रे मगज में बैठाई, 'अंबिकाचरण आगला कना सूं सूंक खाय वणियां रो हांग करे।' वामाचरन रो जीव ई कैवतो के जिरा हाथ

में काम री लाठी व्हे वो पैइसो खाधा बिनां रेवे ई नीं ।'

ज्यूं ज्यूं कानां में भरती व्हेती गी विनोदविहारी रा मन रो वेंम ई बधतो गियो । पण चौड़े धाड़े कैवा री वीं री छाती नीं पड़ती । एक तो वीं री आंख में लाज ही, दूजो वो डरपतो के अंबिकाचरण आंट खाय पांणी रे पड़नाळे नीं बैवाय दे कठै ई ।

नैणतारा परणियां रा मोल्यापणां सूं काई व्हेय एक दिन, विनोद रे पूठ पाछे, अंबिका ने बुलाय पड़दा री आड़ मांय नूं कैय दीधो 'अबै थांरी चावना नीं । बामाचरण ने काम सूंप दो ।'

अंबिका पैलां ई भांप गियो हो के ठाकर'सा री सभा में आंपणे खिलाफ पड़पंच चाल रियो है । नैणतारा रा हुकम पै वीं ने अचंभो नीं आयो । वां ई ज पगां विनोद कनें जाय न पूछ्यो, 'आप म्हनें सीख बगस रिया हो ?'

विनोद विचळाय न बोलियो, 'नीं तो ।'

अंबिका फेर पूछ्यो, 'म्हारा पै वेम करवा री कोई वजे है' ? विनोद लजाय गियो, 'नीं, तो कांई नी ।'

अंबिकाचरण नैणतारा रो जिकरो ई नीं कीधो, कचैड़ी में आय काम पै बैठ गियो । घरे गियो तो इंद्राणी ने वीं वात रे बारे में अलिफ सूं बे नीं कियो ।

थोड़ाक दिन निकळया न अंबिका ने इन्फलुन्जा व्हे गियो । मांदगी एड़ी कोई खास तो नीं ही पर नबळाई सूं कचैड़ी नीं जावणी आयो । सरकार में मालगुजारी भरवारा दिन हा, दूजा ई सांवठा काम भेळा व्हेय रिया । निबळाई व्हेतां थकांई अंबिका माचो छोड़ कचैड़ी गियो । कोई नीं जांणतो हो के अचाणचक रा मैनेजरजी आय जाय । सैग जणां कैवा लागिया 'नबळाई है, घरे पधार जावो । नबळाई है, पाछा पधार जावो ।'

पण अंबिकाचरण काम पै वैठ गियो । वीं ने मेज पै वैठ्यां देख अेलकार, गुमास्ता घबराय गिया । जांणे काम में एकचित्त व्हेय रिया व्हे ज्यूं जम जम न बैठ गिया । मेज रो खंड खोले तो मांय ने एक कागद नीं । अंबिका रा मूंडा सूं निकळ गियो, 'यो कांई ?'

सगळा ई जणां यूं नाळिया जांणे गैब रो गोळो आय पड़ियो, फाटी आंखियां वाको फाड़ियां देख रिया ।

वामाचरण ऊठ न वोलियो, 'क्यूं मांढाणी अणजांण बण रिया हो । सगळां रे मूंडागे तो पिंडा सूं कागद ले पधारिया है ।'

अंबिका रा मूंडा रो रंग उतर गियो, 'क्यूं'

चौपन्या में कलम चलावतो बामाचरण बोलियो, 'जो तो म्हां कांई जाणां सा।'

बामाचरण री मिसलत सूं पडूकूंची बणाय, खंड खोल विनोद कागज काढ लीधा। जांणियो मौको चोखो है अंबिका माथा पै पड़ियो है जतरे यां कागजां री तसल्ली सूं जांच करलां। स्यांणे बामाचरण ई बात री चोज नीं राखियो। वीं री या चाल ही के यूं आंपणी तौहीन समझ अंबिका अस्तीफो देय देवेला।

अंबिकाचरण खंड रे ताळो जड़, रीस सूं धूजतो विनोद कनें गियो। विनोद मांयने सूं केवाय दीधो के 'म्हांरो तो माथो फाट रियो है।' अंबिका सूधो घरे गियो, जाय माचा पै पड़ गियो। इंद्राणी भागी आई, आवती जांणे काळजा सूं परणिया ने ढांक लीधो। तसल्ली सूं बणी जो बात विगतवार सुणी। यूं तो वा ठिमराव वाळी ही पण आज तड़फ गी। छाती हबूका खावा लागी, काळा बादळां जेड़ा काळा काळा नैणां में बीजळी कड़की। एड़ा मानस री या बेकदरी, स्यामखोरी रो यो सरोपाव।

इंद्राणी रो मजरतो रोस देख अंबिका ने लागियो जांणे सगती सराप देवा ने ऊबी है। इंद्राणी रो हाथ पकड़ सीळो छांटो देवतो बोलियो 'विनोद टाबर ई ज तो है। सेंठ है, फूंक भर देवे ज्यूं बोल जावै।'

इंद्राणी परणिया स्याम रा गळा में दोई बाहवां घाल, छाती रे लगाय लीधो। घणी देर यूं ई बैठी री। आंखियां सूं तुंडगिया निकळणा ठमिया न घर घर आंसू झरवा लागा। इंद्राणी रो जीव केय रियो, दुनियां रा जोर जुल्म, मांण अपमान सूं दूरो लेय म्हांरा हिवड़ा रा जिवड़ा, ने काळजो चीर मांय ने बाल आडो जड़ दूं।

दोई जणां निरधै कीधो आज री आज नौकरी छोड़ देणी। जद घर वणां ने ई आंनां पे बैन है जीव नीं धापै तो नौकरी करणी वरया। आंपणा हाथ सूं ई छोड़ दां जो चोखो वे काठेगा जद मांजतो गनाय घरे जावां जि में कांई लाभ। या निरधै करवा सूं अंबिका रो मन तो हळको पड़ गियो पण इंद्राणी मांयने ई मांय ने सुळगती री।

अतरा में चाकर आय इत्तला दीधी, 'खजांची जी आया है अंबिका जाणियो, आंख री लाज री वजे सूं विनोद रा मूंडा सूं तो 'ना' निकळे नीं जो खजांची ने भेज घरे बैठवा री कैवाई है। कागद पै अस्तीफो मांड न वारे पोळ में। जाय खजांची रे हाथ में कागद झेलायो।

खजांची बडरायोड़ो हो। कागद साडं कांई नीं पूछ्यो। वीं रा मूंडा सूं तो या ई निकळी सत्यानास व्हेगियो, मैनेजर साव सत्यानास व्हेगियो।

'काई व्हियो ?'

जवाब में सांभळियो जणगे कस यो है। अंबिकाचरण तिजोरी री कूंची आपरे कनें लेय लीधी, खजाना सूं रोकड़ हाथे नीं आता जदी ठाकरसा तो छांने छांने सांथ करणो मांडियो। वे भांत भांत रा वैपारां में ठगावता गिया, टोटा पे टोटो खावता गिया। ठाकर जिद्द चढ़ता गिया, व्हेता र अणव्हेता गैना पकड़िया कमाई कर टोटो पूरो करवा रा। व्हेतां व्हेतां माथा पे केम है जतरो लेहणो व्हेगियो। जठी ने हाथ घाले वठी ने हाथे गाटो आवे, अंबिकाचरण माचा में ही पाछानूं खजाना में हो जतरो रीग पैइसो उठायने ले गिया। बांकागढ़ रा परगणा ने एक जमींदार रे अठे गैणे मेलाय दीधो हो। वीं जमींदार अतरा दिनां तो पेइसो मांगियो नीं, ब्याज वधावतो रियो, ब्याज वधावतो रियो। ब्याज खूब वधगियो तो देखियो, 'हां अबे आयो पकड़ में। अबे वो डिगरी लाय रियो है। सत्यानास व्हेगियो री का'णी या है।

सुण न अंबिकाचरण थोड़ी ताळ तो गरक व्हेगिया। पछे बोलिया 'आज तो म्हारो मगज काम नीं दे। काले वात करां।'

खजांची जावा लागियो तो अस्तीफा वाळो कागज पाछो लेय लीधो।

मांयने जाय अंबिकाचरण मांडन सारी वारता इंद्राणी ने सुणाय न बोलिया, 'एड़ी आफत में विनोद ने छोड़, अस्तीफो कस्यां देवां ?'

इंद्राणी घणी ताळ पखाण री पूतळी ज्यूं वेठी री, मांयने भांत भांत रा विचार आयड़ रिया हा। छेवट मन ने मार ऊंडो नीसकारो न्हाकती बोली, 'नीं, जी एड़ी आफत में कस्यां छोड़ां ?'

अबे 'रिपियो, रिपियो' रिपिया री पुकार व्हेवा लागी। पर रिपियो कठे ? अंबिकाचरण विनोद ने दबायो के रिपियो काढो घर मांयनां सूं। विनोद तो आप रा खाना रा वैपार वेई घणी दांण नैणतारा सूं पैईसो मांगतो हो पण वीं काढी नीं दीयो। अबकाळे विनोद नैणतारा रे हाथा जोड़ी कीधी, पगां पड़ियो, गरजां कीधी, गैणां मांगिया, पाछा पैईसा चुकाय देवां री सोगनां खाधी पण नैणतारा तो खोटो पीसो गीगलियो नीं काढयो। वीं सोचियो 'हो जो तो गमाय न बेठिया है। राने है यो देय दीधो तो बस रामजी रा नांम, वैठिया रैवां।' मुट्ठी रो माल गाढो कर न ऊंडो मेल दीधो। कठो ने सूं ई पैइसो हाथे नीं आयो। इंद्राणी रा मन में एक वात आई, एक अजब आणंद सूं वीं रो हिवड़ो हुळस गियो नैणतारा सूं बदलो लेण रो ओसर अबे आयो। धीरे करो अंबिका रो हाथ पकड़ न दबायो 'रेण दो, थां री पुग ही जतरा थां घणां ई दौड़णा दोड़्या। छोडो भाग भरोसे, व्हेणो व्हेला जो व्हेला।'

अंबिका मन में मुळकियो, सती रा काळजा में हाल तांई लाय लग री है बुभी नीं। ई विपदा में विनोद तो टाबर री नांई अंबिका रो मूंडो चोघतो, अंबिका ने दया आयगी। मन कैयरियो, ईं आपदकाळ में तो छोडणो ठीक नीं और दूजी कोई पूगणां नीं पूगी तो जमीं जायदाद गैणे मेलूं। इंद्राणी सौगन देवाय दीधो, म्हारो गळो काटन लोही पीवो जो जमीं जायदाद रे आंगळी अड़ाई तो।'

अंबिका रो दो गात्तियां बीचे माथो फंस गियो। सोचतो रियो ज्यूं इंद्रांणी ने समझावे ज्यूं वा बोलता ने रोके। छेवट में थाक न बैठ गियो।

थोड़ी ताळ बैठी रै, इंद्राणी उठी। तिजोरी खोल आपरो सैंग गैणो गांठो काढियो। थाळ में ढिगलो कर न हाथा में ऊंचायो थाळ बोझा सूं लचका कर रियो। थाळ ने लाय मुळकती थकी स्यांम रा पगां में मेल दीधो।

दादा एकाएक आपरी लाडली पोती ने जामी जि दिन सूं ले फेरा खाधा जतरे बरसो बरस घणमोला गैणा देवता रिया। वांरे फोत व्हियां पछे इंद्राणी रो घर अवेरणियो कन्थ जो भेळो करतो ईं ला औलाद लुगाई सारू गैणो गड़ावतो गियो। सोना रा अर जड़ाव रा गैणा मूंडागे राख इंद्राणी बोली, 'दादाजी आखी ऊमर घणियां सारू दौड़िया, वांरा दियोड़ा गैणा पाछा धणियां रे पेट रे अरथ ई लागै, दादाजी री आडी तूं ये गैणां म्हूं वां ने बगसीस करणो चावूं।' यूं कैय वीं माथो नुवाय। आंखिया मींच धियान कीधो। धोळा केसां वाळा, गौरा रंग रा चौड़ा ललाट वाळा, लांवां झांवां दादा री मूरती आय आंखियां आगे ऊभी री, सान्त ऊजळी हंसी सूं मूंडो दमदम कर रियो वा मूरती भड़े आय इंद्राणी रा नुवायोड़ा माथा पै हाथ मेल आसीस देय री।

वांकागढ़ रा परगणा ने पाछो मोल लेय लीधो। परगणो घरे आयां पछे एक दिन आप री मोट मरजाद ने छोड़ नैणतारा रे घरे इंद्राणी जीमवा ने गी। इंद्राणी रा डील पै सोना रो एक तार नीं हो।

जि दिन पछे इंद्राणी रा मन में अपमाण रो अमरोस नीं रियो।
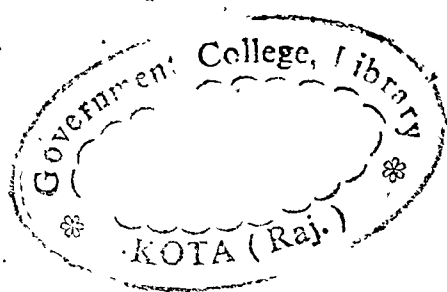
उद्धार

गौरी खावता पीवता घर में जनम लीधो हो, लाड़ कोड़ में मोटी व्ही। वींरा परणिया पारस रा घर में नातवानी कदरी पड़गी ही पण वीं आपरी हाथ री कमाई सूं पाछो घर रो ढाबो ढीबो जमायो हो। आगे घर वाला रो हाथ संकड़ाई में देख न मां बापां गौरी ने सासरे नीं भेजी ही के टाबर दुख पाय। ऊमर भींज्यां पछै गौरी सासरे आई ही।

कदाच ईं ज वजै सूं पारस वीं री हामकाम लोचणी परणी ने आप रा हाथ मांयली नीं मानतो। वैम तो वीं री नस नस मांय ने भरयोड़ो हो।

पारस पच्छम में एक छोटा सा क शहर में उकालत करतो। घर में कुडूंबा में और कोई मिनख हो नीं, लुगाई ने घर में एकली देख, चित में भांत भांत रा वैम ऊठता। काम छोड़ न वेळा कुवेळा अचांणचको घरे आय जावतो पैलां पैलां तो खांवद रे अचाणचक आवा रो अरथ वा नीं समझी। पछै कांई समझी जो वा ई जांणै।

घर में काम लाग्योड़ा नौकर ने वो बीचे बीचे अलायदो कर देवतो। जमियोड़ो नौकर तो वीं ने खटतो ई नी। काम रा आराम री नजर सूं गौरी जिं नौकर ने राखवा सारूं घणो कैवती वीं ने तो वेगो बींटो बंधावतो। गुमानण गौरी ने जतरी रीस आवती वीं रो खावंद वतरो ई बिचळाय न एड़ा अैंड बैंड काम करतो के गांठा घुळती जावती।

वीं सूं रैवणी नीं आवतो, काम करवा वाळी लुगाई ने एकमाड़ी लेय वातां

पूछतो तो गौरी ने ई खबर लाग जाती ।

मजेजण थोड़ बोली गौरी, अपमाग री मार खाय जखमायल न्हारड़ी री नांई मांयने ई मांयने ऊकळवा लागी । धणी लुगाई रे बीचै, वैम खाई खोद दीधी । गौरी रे आगे मन रा वैम ने कैवतो पैलां पारस संकतो हो । अवै वीं री ओलज जावती री । रोज पांवड़ा पांवड़ा पै वैम कर गौरी सूं लड़वा लागो । गौरी जतरी ई खमती जाती, वीं री वैमीली आंखियां रा तीखा तीरां ने वजर री छाती कर न झेलती जावती ज्यूं पारस रो वैम वधतो जावतो ।

यूं पति रो सुख तो मिल्यो नीं, कूंख फाटी नीं ही । जो ई भरी जुवानी में ई गौरी वीं रा मन ने धरम चरचा में लगाय दीधो । हरिभजन रा नुवां परचारक विरमचारी परमानन्दजी स्वामी ने बुलाय गौरी कंठी बंधाई । भगवान री कथा करावती । नारी हिड़दा रो सगळो अहळो नेह, भगती वण न गुरूजी रा चरणा में लोटवा लागो । परमानन्द रा साधुपणां में किने ई कोई वैम नीं हो । सैंग जणा वांरी सरावणा करता । पारस सूं मूंडो खोल न वां सारूं कोई वैम री वात कैवणी नीं आई । विना कहियां वीं रो मन अमूजाय रियो हो, वीं रो वैम अडीठ रा रोग री नांई, वीं रा ई ज अंतस ने वटका भर भर खाय रियो ।

एक दिन छतीसीक वात माये जेर वारै नीसर ई गियो । परणी रा मूंडा पै वो परमाननंद ने 'वाळखाळो, पाखंडी' कंय न भूंडो बोलतो बोलतो गौरी ने कियो के 'थू थारा साळगरामजी रे हाथ लगाय न कैय दे के वीं बुगला भगत ने थूं पाप रीं निजर सूं देखे के नीं ।'

गौरी पूंछड़ी दवियोड़ी नागण री नांई फुफकारो कीवो, 'हां देखूं, करणो व्है जो करलो ।

पारस वीं ज वगत घर रे ताळो ठरकाय, परणी ने ताळा में झड़ कचेड़ी परो गियो ।

रोस में भरियोड़ी गौरी कियाई आडो खोल घर वारै निकळगी ।

[२]

परमानन्दजी आप रे एकांत ओवरी में वैठिया सास्तर वांच रिया हा । वठै और कोई नीं हो । गौरी तो विना वादळां री अणगाजी अर अणघोरी बीजळी ज्यूं आय पड़ी, बिरमचारीजी रा सास्तर हाथ मायने रैगिया । गुरूजी पूछियो, यो कांई ?'

चेली बोली, 'गुरुजी, ई अपमाण भरिया संसार सूं म्हांरो उद्धार करो । म्हनें कठै ई ले चालो ।'

परमानंदजी, धाकन धुकल समझाय बुझाय गौरी ने पाछी घरे घाली। पण गुरूजी रो वीं दिन सास्तरां सूं धियान टूटियो जो पाछो नीं जुड़ियो।

पारस घरे आयो तो आडो खुलियो पड़ियो। परणी ने पूछियो, 'कुण आयो अठे ?'

'आयो कोई नी। म्हूं गी गुरूजी रे अठे।'

पारस रो मूंडो धोळो पड़ गियो, पग दूजे ई पल लाल बूंद व्हेन पूछियो, 'क्यूं गी ?'

'म्हारी मरजी।'

वींज दिन घर पै बैठाय परणी ने ओवरी में झड़ पारस एड़ा रोळा कीधा के आखा सहर में भूंडाई व्हेवा लागी।

यां, ओछी, सूगली वातां ने सुण परमानन्दजी रो हरिभजन ठकाणे लाग गियो। ईं सहर ने छोड़ न जावा री धार लीधी वां। पण बापड़ी गौरी ने इण दसा में छोड़ न वां रो पांवडो बारै नीं पड़ियो। बिरमचारीजी दिनड़ा कियां काट्या जो वो अंतरजामी जाणै। छेवट में ईं अटक में ई गौरी कने एक पाती आई, जिं में लिखियो हो,

'बच्ची, म्हें खूब धियान लगायो यां दिनां। पैलां ई घणी सतियां देवियां, क्रिस्न रा प्रेम में घर बार ने संसार ने त्यागिया हा। संसार रा माया मोह सूं थारो चित्त हट गियो व्हे, थारो चित्त हरि रा चरणां में लाग गियो व्हेतो म्हनें समीचार दीजे। भगवान री इच्छा व्ही तो वां चरणां री चाकर रो उद्धार कर प्रभु रा अभैकारी चरणारविंदा में पूगावा री कोसिस करूंला। फागण सुद तेरस बुधवार रे दिन दुपैरी री दो वज्यां, थांरी इच्छा व्हेतो तळाव रे किनारे मिलजे।'

गौरी पत्तरी वाच केसां री आटी में लुकाय दीधो। तेरस रे दिन न्हाणे सूं पैलां माथो खोले तो कागद रो बड़बड़ो ई नीं। वैम आयो, सोवती वेळा निकळ न बिछावणां पै पड़ गियो व्हेला। परणियो वीं पत्तरी ने पढ़ बळभळ न राख व्हेय गियो व्हेला ईं विचार सूं गौरी रो मन राजी व्हियो। पण लारे दुख ई व्हियो के वा पत्तरी, वीं ओछा मिनख रे हाथ रे अड़ अपवित्तर व्हेगी।

वा भागियोड़ी घरे गी।

देखे तो परणियो धरती पै पड़ियो हाथ पग पछांट रियो। मूंडा में झाग आय रिया। आखियां री कीक्यां ऊंची चढ़गी।

परणिया रा जीमणां हाथ री भींच्योड़ी मुट्ठी मांयतूं पतरी काढ़ गौरी डॉक्टर ने बुलायो।

डॉक्टर आवतां ई बोलियो, 'मिरगी।'

रोगी रो प्राण पींजड़ा में नीं हो उणवेळा ।

वीं दिन पारस ने कोई जरूरी मुकदमा री पैरवी करवाने बारै जावणो हो ।

बिरमचारीजी रो भंवरो हाथे नीं हो । वां रो तो अतरो पतन व्हियो के वे ये समीचार सुण गौरी सूं मिलण ने आया । तुरंत री विधवा गौरी बारी मांयनूं झांकी तो देखे पछवाड़ा रा तळाव रे किनारे गुरूदेव चोर ज्यूं लुकिया ऊभा हा । गौरी रे माथे जांणे बीजळी पड़ी । वीं आख्यां नमाय लीधी, वीं रा गुरूजी कठा सूं ऊतर न कठै आय पड़्या । दूजे ई पल वां रा पतण री तसवीर गौरी री आंख्या आगे खंचगी ।

गुरूजी हेलो पाड़ियो 'गौरी ।'

गौरी बोली, 'आई गुरूदेव ।'

मरवा रा समीचार सुण पारस रा हेतु मुलाकाती घर में बड़्या तो देखे परणियां रे पसवाड़े गौरी पड़ी है ।

वीं जैर खाय लीधो हो । आज रा जमाना में सती व्हेती देख सती ने दुनियां मायो झुकाय दीधो ।

●

उलट फेर

विपिन किसोर मोटा घर में जनमियो हो जो वीं ने खरचणी आवतो जतरो कमावणों नीं आवतो। जि घर में जनम लीधो हो वीं घर में वो घणां दिन टिक्यो नीं।

विपिन फूटरो फर्रो जवान हो। गावा बजावा में उस्ताज, काम काज में डफोळ। दुनिया दारी रा धंधा में नाजोगो, जीवणरी मुसाफरी में जगन्नाथ रा रथ री नांई अचळ खैंच्यां बिना एक आंगळ आगै नीं सरके। जि अमीरायत में वो खट जावतो वा वात तो अबै री नीं। करम चोखो हो जो राजा चित्तरंजन रे अठै वीं रो डांव लाग गियो।

राजाजी रा ठिकाणां सूं कोरट ऊठी ज ही। रिपियो पैइसो हाथे लाग्यो हो, नाटक री सौक लागी जो नाटक मंडळी रा फेर में फंसवा री कोसिसां कर रिया हा। विपिनकिसोर रा रूपाळा मूंडा पै, मीठा गळा पै रीझ वीं ने नौकरी देय दीधी।

राजाजी बी० ए० तांई भणियोड़ो हा। वां में उछांछळा पणों नीं हो। बड़ा घर रा व्हेतां थका ई नैम में चालता। वगत पै सोवता, वगत पै खावता। पण विपिन तो वांने नसा री नांई पकड़ लीधा। वीं रो गांणो सुणवां में, वीं रा लिख्योड़ा गीतां ने, नाटकां ने वांचवा में, आळोचना करवा में, वां रो मन एड़ो रमतो के जीमण पड़ियो पड़ियो ठंढो व्हे जावतो, पाछळी पोहर व्हे जावती।

दीवाणजी कैवा लागिया, 'मालक री लाख रिपियां री आदत है, दोस है तो यो एक विपिन पै मरजीपो।

राणी वसंत कुमारी लड़ पड़ती, 'कजांणा कठा सूं ई सूगला मूंडा रा बांदरा ने पकड़ लाया हो, वी रैं पूंछड़े डील रो ई धियान नीं राखो। ईं रो काळो मूंडो व्हे तो जीव ने जक पड़े।'

राजा आपरी मूंध माळणी रा ईं ईसका पै मनोमन राजी व्हेता, हँसता। सोचता, 'लुगाई रो सुभाव व्हे के जिने वा हेत करे वीं ने ई ज आंपणो जांणे। लुगायां रा सास्तर में कठे ई नीं लिख्यो है के संसार में आदर जोगा और ई गुणीजन व्हैवो करै। बियाव रा मंतरा रे लारे यो मंतर ई वे सीख लेवे के, दुनिया रा सैंग गुण वीं लुगाई मांयने ई ज है, सैंग लाड़ कोड़ री हकदार वा ई ज है। परणियो खावा पीवा में अध घड़ी मोड़ो कर देवे तो वींने नीं खटे। वा कदै ई नीं सोचे के आंपा रा आसरा में पड़िया आसायत ने चाकरी सूं काढ देवेला तो वीं बापड़ा रो कांई व्हेला। टुकड़ा टुकड़ा ने रोवतो फिरो ईं रो सोच नीं करै।

लुगायां रो यो विनां सोच्यां विचारयां पक्ष लेवारो, सुभाव अणूंतो तो लागतो पण चित्तरंजन कांई बत्ता चिड़ता नीं। वे तो विपिन रा सरावणां कर कर राणी ने चरडावो करता, चिरड़वा रो मजो लेवता।

पण यो राजसी खेल विपिन ने फोड़ा घालतो। रावळा में बेराजीपो व्हेवा सूं पग पग पै खावा पीवा रा फोड़ा पड़ता। मोटा घरां में, पैंतावा पड़ियोड़ा भला मिनखा रे लारे वरताव व्हेणो चावै जेड़ो व्हेवो नीं करै। राणीजी रो वेराजीपो देख न तो विपिन ने चाकर छोरी गनारता ई नीं।

राणी एक चाकर ने धाकलियो, 'थने तो देखूं ई नीं, रैवे कठै है थूं?'

पूसो बोलियो, म्हनें तो विपिनबाबू री चाकरी में चौईस ई घड़ी रैवा रो रावळो हुकम है।'

राणी बोली, 'अच्छा, विपिनबाबू लाटसाब बणगिया है।' दूजे दिन विपिनबाबू री ऐंठी थाळी रे पूसे हाथ नीं अड़ायो, ऐंठी पड़ी री। विपिनबाबू ने मांजणो तो आवतो नीं, पण ऐंठिया ठीकरा मांजवा लागा। कदी फाको करणो पड़ जावतो। पण विपिन राजाजी रे कानां तांई कोई वात नीं पूगाई। चाकर छोरां सूं लड़ न आगे सिकायत कर आंपणे आप ने ओछो करणो है।

यां वातां सू म्हेला बारणे मिनखां में तो मान वधियो पण रावळा में वां रो अणादर धाप न व्हेतो।

अठ नें रिहर्सल व्हे व्हेवायन सुभद्राहरण नाटक त्यार हो। म्हेलां रा चौक में नाटक मंडियो। राजाजी तो वणिया क्रिस्नजी। उरजण रो सांग लायो

विपिन । उरजण रो जेड़ो गळो हो वेड़ो ई रंग रूप ई । देखणवाळा 'वा वा' कर रीया ।

रात ने राजा आय वसंतकुमारी ने पूछयो, 'नाटक केड़ोक लागो ।'

राणी बोली, 'उरजण रो सांग विपिन खूब कीवो । चेहरो मोहरो ई आछा घराणांवाळा जस्यो है । गळा रा पियास रो तो कैवणो ई कांई ।' राजा बोलियो, 'म्हांरो चेहरो मोहरो कीं है ई नीं । गळो ई खारो हे क्यूं ?'

राणी बोली, 'आप री वात दूजी है ।' पाछी विपिन रा एक्टिंग री चरचा करवा लाग गी ।

राजा ईं सूं बत्ता जोरदार लफजां में विपिन री सरावणा घणी दांण कीधी ही । पण आज राणी री जीभ सूं निकळयोड़ी थोड़ीसीक सरावणां ई वां ने नीं खटी । वां ने लागियो के विपिन काम करे जिण सूं चौगणी सरावणां कम अकल रा आदमी करे । कां ई तो वींरा चेहरा में पड़यो है न कांई गळा में धरियो है ।

आज सूं थोड़ा दिनां पैलां वां री आप री वां कम अकलां में गणती ही पण आज एकणदम वां री अकल कस्या बधगी, राम जांणे ।

दूजा दिन सूं ई विपिन रे खाणा पीणा री साता व्हेगी । बसंतकुमारी राजा सूं बोली, 'विपिन ने बारे उतारा में, कचैड़ी रा औलकार गुमास्तां रे सागै राखणो ठीक नीं । चाहे जो व्हे, भला घराणां रो छोरू है ।'

राजा वात ने गटतां थका खाली 'हूं' ई ज कहियो ।

राणी राजा ने वेटा रा दसोटण माथै एकदांण फेरूं नाटक करावा ने कहियो । राजा वां री वात सांभळी अणसांभळी कर दीधी ।

एक दिन धोवती दुपट्टो ठीकसर नीं धोवणी आया तो राजा पूसा ने धाकलियो । पूसो कहियो, 'कांई करूं, पिरथीनाथ । राणी सा रो हुकम है चौईस घड़ी विपिन बाबू री टैल चाकरी में लाग्यो रेवूं ।'

राजाजी ऐंठ गिया । बोलिया, 'अच्छा, विपिन तो लाट सा'व व्हेय रियो है । आप रो काम ई हाथ सूं नीं करणी आवे ।'

विपिन ने पुनमूंषिका व्हेवणो पड़ियो ।

राणी तो राजा रे केड़े पड़गी, संभया रा वैठक घर रा पसवाड़ावाळा कमरा में पड़दो तणाय दो । गाणो व्हे जो म्हांई सुणां । विपिन रो गांणो आच्छो लागे ।

राजाजी दूजा दिन सूं ई नैम सूं रेवा लागगिया, वगत पे सोवणो वगत पे खावणो, गाणो बजाणो वंद व्हेगियो ।

दुपैरा रा राजाजी ठिकाणा रो काम काज देखता। एक दिन वे थोड़ा वेगा रावळा में पूग गिया। देखे, राणी आगे पड़ री ही।

राजा पूछ्यो 'कांई पढ़ रिया हो?'

राणी पैलां तो भेळी भेळी व्ही! पछे बोली विपिनबाबू रा गीतां री कॉपी है। एक दो गीत सीखवा ने मंगाई ही। अचांणचक रो आप रो सौक तो खतम व्हेयगियो। अबै गाणा सुणवा रो तो औसर ई नीं मिले।'

घणां दिना पैलां वीं सौक ने जडामूळ सूं खोद फैंकवा री कोसिसां राणी कीवी ही, वे वांने आज चींतां नीं आई।

दूजे ई दिन विपिन ने घरे जावा री सीख व्हेगी। आसरे पड़िया आसायत री काले कांई गत व्हेला ई बात पे वां थोड़ो ई विचार नीं कीवो।

सीख मिलवा रो विपिन ने अतरो दुख नीं व्हियो जतरो राजा रा बेराजीपा रो व्हियो। वीं रो तो राजा में जीव पड़ गियो हो, तनखा नाम ई वो राजा री मरजी ने अमोलक जांणतो। राजा वीं रा कांई कसूर पे बेराजी व्हे दूध रा माखा री नांई काढ न अळगो क्यूं बगायो। घणो ई सोच्यो पण कांई समझ में नीं आयो।

छेवट में एक गैरो निसासो भर, आपरा जूना तंबूरा पे खोळी चढाय, जठे कोई आंपणो नीं, वीं लांबी चौड़ी दुनियां में भटका खावा ने निकळ गियो।

जावती वेळा आप री पूंजी रा दो रिपिया पूसा ने इनाम में देवतो गियो।

त्याग

फागण म्हीना री रात है। आंबा रा मौड़ां री गंध सूं भारी व्हियोड़ो वसंत रो पवन धीमो मधरो चाल रियो है। तळाव री पाळ परला पुखता लीची रा रूंख रा गैरा गैरा पानड़ा मायतूं 'पपैया' री पी पी आय री। आखी रात व्हेगी पपैया ने बोलता ने, वठी ने मुकर्जी रा घर में सुरणेट री ओवरी में हेमंत ई जाग-रियो है। हेमंत कदी तो परणी रा माथा रो जूड़ो खोल न केसां ने आंगळी रे पळेट रियो है। कदी वो वींरी चुड़ियां ने कड़ा रे टकराय 'टण टण' बजाय रियो है। कदी जूड़ा रे पळेटी लगी फूलां री माळा ने उतार वीं रा मूंडा पै मेल देवे। संझ्या री वेळा छाना माना ऊभा थका फूलां रा पेड़ा ने सावचेत करवा ने वायरो एकदांण अठी नूं एक दांण वठी नूं धीमेक रा हिलाय देवे जो गत हेमंत रा मन री व्हेय री है।

पण कुसुम चांद री चांदणी में डूब्योड़ा आभा आडी ने टुकर टुकर देख री ही। परणा री अचपळाई वीं रे अड़ न टकर खाय ने जांणे पाछी भाग जावे। छेवट में हेमंत आगतो व्हेय न कुसुम रा दोई बांवटया ने पकड़ मचकाय न बोल्यो, 'कुसुम, हे कठे थूं? थूं तो अतरी छेटी परी गी के दूरबीण लगाय न आंख्यां फाड़ न देखूं तो नींठा नीठ बूंद जतरीक निजर आवे। आज म्हांरा मन में घणी आय री है, थोड़ी म्हांरे नेड़े तो आय जा। देख तो खरी कसीक रंगभीनी रातड़ी है।'

कुसुम आभा कानी सूं आंख्यां फेर न हेमंत कानी चोखती लगी बोली, 'या रूपावरणी रात, या वसंत री रंगभीनी रात एक पलक में उड़ जावे। म्हूं एड़ो मंतर जाणूं।'

हेमंत बोल्यो, 'जाणती व्हे तो वीं ने पढ़णो नीं। हां, जो एड़ो मंतर जांणती व्हे के जि सूं एक अठवाड़ा में तीन चारेक दीतवार के तातीलां आय पड़ै, एड़ो मंतर जांणती व्हे के या रात काले संभया री पांच छ बज्यां तांई लांबी बध जावे तो वो मंतर पढ़।' यूं कैवते थके वो कुसुम ने और ई सांगणी खैंचवा लागो। पण कुसुम बाथ में बंधी नीं।

वा कैवा लागी, 'मरती वेळा म्हूं एक वात कैवणो चावती वा वात अबारूं ई ज कैवा रो जीव कर रियो हैं। म्हनें चावे जो डंड दीजो म्हूं राजी राजी खम लेवूं'ला।'

डंड सारूं जैदेव रो कह्योड़ो एक स्लोक बोल हेमंत रस री वात करणी चावतो जतरेक वीं मचड़ मचड़ करती पगरखीं वाजती सुणी, जांणे कोई रीस में आय चाल रियो व्हे।

हेमंत रा बाप हरिहर मुकर्जी रा पग वाज रिया हा, हेमंत ओळखिया। वो घबराय गियो।

हरिहरबाबू बारणा कने आय रीस में भरयोड़ा हेलो पाड़ियो, 'हेमंत, बीनणी ने अबार री अबार घर बारे काढ़।'

हेमंत परणी साम्हो नाळियो, पण वीं ने तो तिल मात्तर ई अचरज नीं व्हियो। वा तो दोई हाथां सूं मूंडा ने छिपाय न कैय री धरती फाटे तो मांयने परी वळूं।'

दिखणाद रा वायरा लारे पपैया री मीठी मीठी 'पी' ओजू ई पैलां री नाई ओवरी में सुणीज री पण अबै किरा ई कांनां में नीं वळी। दुनियां घणी रळियावणी है पण एक पलक में कांई रो कांई व्हे जावे।

[२]

हेमंत बारणुं आय न परणी ने पूछ्यो, 'क्यूं, या वात साची है कांई ?'

'हां, सांची है।'

'तो पछे म्हनें अतरा दिन क्यूं नीं कहियो ?'

'कैवूं कैवूं करती री, पण म्हांरा सूं कैवणी नीं आयो। घोर पापण हूं म्हूं।'

'तो आज अबै सांच मांड न कै ?'

कुसुम ठिमरास सूं, मजबूती सूं सारी विगत कैय सुणाई। सुणाती वेळा वा ठावस सूं पांवडा भरती धीमी धीमी चालती वासदी री झाळां मांयनूं व्हेय न निकळगी। वा कठा सूं कतरी बळ री है, किने ई ठा नीं पड़ी। सैंग हकीगत सुण हेमंत उठो व्हे बारे निकळ गियो।

कुसुम जांणगी जो परण्यो स्याम ळ न वारे परो गियो अबै ई जमारा में पाछो मिलवा ने नीं। वीं ने अचरज ई नीं आयो। वीं ने प्रीत अर संसार, आद सूं लगाय अंत तांई कूड़ ई कूड़ दीखवा लागिया। हेमंत वीं ने प्रीत री हेत री वातां केवतो वां ने वींतार न वा फीकी, दुख री हाँसी हँसी। वां हाँसी, तीखी कटार री नांई काळजो चीरती आर पार निकळगी। जीं प्रीतड़ी पै वा अनरो गरब न गुमान करती, जिमें अतरो हेत, लाड़कोड़ भरियो हो, एक पल रो बिजोग ई काळ ज्यूं लागतो। वीं प्रीतड़ी ने अथाग अणंत जाणती वा, ई लोक में ई नीं परलोक में ई छूटवावाळी नीं जांणती। वा ई प्रीतड़ी रा या निकळी। बस ई ज नींव माये ऊभी ही वा। जात बिरादरी एक छन्योक घक्को दीधो न वा ढस न जाय पड़ी वेळू रेत में। अबाळं अबाळं पलक छिन पैलां हेताळु हेमंत गळगळो व्हे, कैय रियो हो, 'कसीक रळियावणी रातड़ी है।' वा रळियावणी रातड़ी तो ओजूं खतम कोनी व्ही है, ओजू वो ई पपैयो बोल रियो है, वोई न दिखणाद रो वायरो ढोल्या री मच्छरदानी ने हलाय रियो है। वा ई ज चांदणी केळ सूं थाक्योड़ी पदमण री नांई, ढोल्या रै पसवाड़े पड़ी है। तो यो सैंग कूड़ है? सैंग झूठ है? सैंग माया है? अर प्रीत? प्रीत ढग नूं भी वत्ती कूड़ है झूठ है।

[३]

पौ नीं फाटी जि पैला हेमंत प्यारीसंकर घोषाल री पोळ वारे ऊभो। आखी रात आंख नीं झपकी जो हेमंत गैला ज्यूं व्हेयरियो हो।

प्यारीसंकर पूछ्यो, 'कौ भाई हेम, कांई हाल चाल ?'

वासदी री झाला में बैठ्यो व्हे ज्यूं लागरियो हेमंत ने। धूजता गळा सूं बोल्यो, 'थैं म्हनें जात भ्रस्ट कीवो, म्हांरो सत्यानास कीवो ई रो डंड भोगणो पड़ी थांनै।' कैवतां कैवतां हेमंत रो गळो रुक गियो आगे बोल न निकळयो।

प्यारीसंकर मुळकतो थको मोसा में बोल्यो, 'थां म्हारी जात री रिछ्या कीवी ही, म्हांरी बिरादरी ने वचाई है। म्हांरा मोरां पै थांरो हमेसां मड़ो रियो है। घणो सुख दीधो म्हांनै थां। थां लोगां री घणी घणी मेहरां करयोड़ी है म्हांरां पै। है नीं ?'

हेमंत रे असी रीस री झाळ उठी के प्यारीसंकर ने भसम कर दूं पण वीं झाळ सूं वो आप भसम व्हेवा लागो। प्यारीसंकर तो सोरो सांतरो बैठ्यो देख रियो।

हेमंत रुकयोड़ा गळा सूं पूछ्यो, 'म्हें थांरो कांई बिगाड़ कीधो हो ? प्यारीसंकर बोल्यो, 'म्हनें थां या कैवो, म्हांरी एकाएक बेटी थांरा बाप रो कांई

पण झांका तांका व्हे । कॉलेज में भणवा री वेळा थां गैर हाजरी·कराय, दुपैरा में नाळ रा छाजा री छायां में चानणी रा खूंणा में वैठ पोथी रा पाना पळटवो करता । एकमाड़े धियान लगाय न भणवा में थांरो मन घणो लागवा लागगियो हो । विप्रदास जी म्हांरा कनै सल्लासूत करवाने आया तो म्हें उणां ने कहियो के, काका, थां रो कासीजी जांणे रो मत्तो हो जो थां कासीजी परा जावो, कुसुम ने म्हनें सूंप जावो ।'

विप्रदास जी जातरा परा गिया म्हें कुसुम ने श्रीपति चटर्जी रे घरे राख न वां री बेटी रा नाम सूं जग जाहर कर दीधी । ईं रा पछै जो व्हियो जो थां जांणो ई हो । सांची, सारी हकीगत मांड न कैवा में घणो मजो आयो । मन तो करे के ईं ने विगतवार मांड न पोथी छपावूं । म्हनें लिखणो नीं आवे । म्हांरो एक भतीजो लिख जांणे वीं ने कैवूं मांडवाने पण थां अर वो दोई जणां रळ न मांडो तो आच्छो रै । पाछली विगत म्हूं नीं जाणूं ।'

हेमंत, प्यारीसंकर री यां वातां पे धियान नीं दीधो । वीं पूछ्यो, 'कुसुम परणवा ने नटी नीं ?'

प्यारीसंकर बोल्या, 'वीं रो नटणो, नटणो हो के नीं, या खबर नीं पड़ी म्हनें । बेटा, लुगायां रो मन न्यारो ई व्हे । वे नटे तो जाणणो के हूंकारो भर री है । पैली पोत तो वा नवा घर में आय न कि वैडा ज्यूं व्हेगी । थां सूं नीं मिलणो व्हेती नीं ज्यूं । थां ई कजाणां कियां हेर लीधो वींरा घर ने । घणी दांण हाथ में पोथियां लीधा थां कॉलेज रो गैलो बीसर जावो करता, श्रीपति रा घर आगे कांई हेरवो करता । कॉलेज रो गैलो हेरता व्हो ज्यूं तो नीं लागता । किरा ई घर पाछला वाड़ा में कोई भली मिनख तो आवे जावे नीं । वठै कैतो कीड़ा मकोड़ा फिरवो करे के चेता चूक जुवान अलबत्तां गैलो काढ़ ले । म्हनें थां लोगां रा ये हाल हवाल देख ने अबखाई आवती, थां रे भणवा में हरजानो व्हेयरियो, कुसुम री दसा कुदसा व्हेती जायरी है ।'

एक दिन कुसुम ने म्हें म्हांरे कने बुलाय न कहियो, 'बेटी, म्हूं बूढो मिनख हूं, म्हांसूं सरमाणे री वात नीं । थारो जीव जीं पै है वीं ने म्हूं जाणूं । वो लड़को ई दुख पायरियो है थूं ई दुखी है । म्हें मतो कीधो है के थां दोवां ने ई जोड़ दूं ।'

सुणतां ई कुसुम तो डाड मार न रोई, बारणे भागगी । यूं म्हूं कदी कदी दिन आंथिया रा श्रीपति रे घरे जावतो, कुसुम ने हेलो पाड़तो, थांरी वात कर कर वीं री लाज छुड़ावतो । छेवट में वीं री लाज छूटीज । पछे रोज रो रोज वठे जाय न खूब आछी तरे वीं ने समझावतो के वियाव करले, और दूजो कांई गैलो नीं है ।

कुसुम कहियो, 'कस्यां व्हेला।'

म्हें कहियो, 'कस्यां कांई व्हेला। आच्छा कुळ री बताय काम काढ लेवूं।'

घणी देर उत्तर पड़ूतर करन वीं थांरा मन री जाणवा ने कियो। म्हें समझाई, वो तो चेताचूक तो व्हेय ई रियो है फजूल रा रोळा रवदा करणे सूं कांई। काम सांति सूं व्हे जावे तो चोखो। ईं भेद रो चौड़े व्हेवां रो तो भौ है ई नीं पछे वीं ने कैय न क्यूं वापड़ा रो जमारो बिगाड़ां। आखी ऊमर सोच विचार में पड़ियो रेवेला।'

कुसुम कांई समझी र कांई नीं समझी, म्हांरे समझवा में नीं आई। कदी तो वा रोवती कदी छानी मानी बैठी रेवती। म्हूं कायो व्हेय न केवतो के वा तो रेवादे, तो वा विचळाय न रोवा लाग जाती। पछे श्रीपति रा नाम सूं थांरे अठे वडाळो भेजायो। थांरी आडी नूं हामळ भरवा में कांई ज ताळ नीं लागी। सगपण पक्को व्हे गियो।

ब्याव रे एक दिन पैलां कुसुम एड़ी वीफरी के हाथां में मावे न बाथां में। वा पगां में आय न पड़गी, 'बाबा यो मत करो।'

म्हें कियो, 'केड़ी गैली टींगरी है। सेंग थोक व्हे व्हेवाय गिया न अबे कांई व्हे।'

कुसुम कियो 'थां तो हाको कर दो के रात ने कुसुम मरगी, म्हनें कठै ई बारे भेज दो।'

म्हें समझाई 'वीं लड़का रो कांई हवाल होसी, वो तो राजी व्हेय रियो है जांणे सुरग मिल रियो है। वीं री तो आसा फळ री है। काले म्हूं जाय अचाणचक रो केवूं के वा तो मरगी दूजे दिन पाछो म्हनें आय थनें खबर देवणी पड़े के वो मरगियो। पछे वीं ज दिन थांरा मरवा रा समीचार म्हांरा कनें पूगे। बूढापा में अस्तरी हत्या अर ब्रमहत्या करावणो चावे कांई?'

पछे सुभ घड़ी पुळ में वियाव व्हे गियो। म्हूं तो म्हांरी एक जिम्मेदारी सूं छूटचो।

हेमंत पूछ्यो, 'म्हांरे लारे आंटो काढणो जो तो आप काढ ई लीधो, अबे ईं ने चोड़े क्यूं कीवो।'

प्यारीसंकर बोलियो, 'अबे थांरी बेन रो सगपण पक्को व्हियो। म्हें विचारी के एक विरामण री जात तो भ्रस्ट कर ई दीधी। वो तो म्हांरो धरम हो, फरज हो। अबे दूजा विरामण री जात क्यूं वगड़वा दूं। या विचार म्हें उणां ने कागद घाल दीधो के हेमंत सुद्र री बेटी ने परणियो है, ईं रा सबूत म्हांरा कनें है।

हेमंत घणे दौरे मन में धीरप कर न पूछ्यो 'अवै जो म्हूं उण ने छोड़ दूं तो वीं रो कांई हवाल व्हेला । आप राखोला आप कने ।'

प्यारीसंकर बोलियो, 'म्हांरो धरम तो म्हें पूरो कर लीधो । पराया री लुगाई रो पेट भरवा रो धरम म्हांरो नीं । अरे कुण है रे, हेमंतबाबू सारू बरफ रा पाणी री गिलास लावजे । पान ई लेतो आवजे ।'

हेमंत ई खातरदारी री वाट नाळचा पैलां ई ऊठ गियो वठा सूं ।

[४]

अंधारा पख री पांचम । अंधारी रात । चिड़ां री चूं चूं ई नीं ही । तळाव री पाळ रा लीची रा रूंखड़ा यूं लाग रिया जांणे तसवीर रा पाठा पै काळी स्याई चौपड़ दीधी व्हे । खाली दिखणादू वायरो आय रियो, अंधारे वीं ने पकड़ लीधो व्हे ज्यूं गरोळा खाय खाय पाछो आय रियो । आभा रा तारा टम टम करता, सावचेती सूं अंधारा ने चीर न कजांणा कांई पड़पंच रचणो चावता हा ।

हेमंत रा सुणेंट रा ओवरा में आज संझ्या सूं ई दीवो नीं वळियो । हेमंत बारी कनला ढोल्या पै बैठ्यो गैरा अंधारा ने देख रियो । कुसुम धरती माथे बैठी, दोई हाथा सूं हेमंत रा पग पकड़ राखिया, माथा ने पगां में ढाळ राखियो । कोई हालतो न चालतो, थिर समंदर री नांई समै लाग रियो । जांणे मांझल रात माथे कोई चित्तराम मांड दीधो व्हे । चारूं पासे प्रळै, वीचे एक न्याव देवणियो, पगां कने गुन्हेगार ।

पाछी वे ईज मचड़ मचड़ करती पगरखियां सुणीजी ।

हरिहरबाबू बारणा कनें आय न बोलिया, 'घणी ताळ व्हेगी, अवै म्हूं विचारणे रो वगत नीं दूंला । बीनणी ने अबार री अबार बारे काढ़ दे ।'

कुसुम यां लफजां ने सुणतां ई एक खिण सारू हेमंत रा पगां ने काठा बाथ में घाल लीधा । छेल्लो मिलणो है, पगां रे आंखां ने लगाय लगाय, पगां रो धूळो माथा ने लगाय लीवो । हेमंत ऊभे व्हे न बाप ने कहियो, 'परणी लुगाई ने म्हूं नीं छोड़ूंला ।'

हरिहर डक्कर न बोलिया, 'तो कांई जात ने छोड़ देय ?'

हेमंत बोलियो, 'जात पांत म्हूं नीं मानूं ।'

'वो जा, थूं ई निकळ जा ।'

दालिया

[शाह सूजो, वींरा भाई औरंगजेब सूं झगड़ा में हार गियो तो डरपतो थको भाग न अराकान रा धणी रे अठे सरणो लीधो। वीं रे लारे वीं री तीन सरूपवान बेटचां ही। अराकान रे धणी रे मन में आई के वीं रा बेटां ने यां टाबरियां सूं परणाय दूं। ईं वडाळा रो नाम लेवतां ई शाह सूजो रीस सू रातो पड़ गियो। ईं रा फळ माड़ा ई लागिया। अराकान रे धणी सूजा ने दगा सूं मारवा रो मतो कीधो। नाव में स्हेल करावा रो मिस कर नंदी में डुबावा लागिया। या कुगत व्हेती देख छोटोड़ी बेटी अमीना ने तो सूजे आपरा हाथ सूं नंदी में फेंक दीधी। वचेट बेटी जुलेखा बाप रा भरोसा पात्तर, खास चाकर रेमत अली रे लारे तिर न पार निकळगी। मोटोड़ी बेटी आपहत्या कर लीधी। शाह सूजो झगड़तो झगड़तो काम आय गियो।

छोटोड़ी बेटी अमीना पांणी री धार रे लारे बैयगी जो एक माछळा पकडणियां रे जाळ में जाय फंसगी। वीं माछळीमार वीं ने जाळ बारे काढ लीधी जो वा वीं रे घरे ई ज मोटी व्ही। अराकान रो वो बूढो धणी तो मर गियो, वां रो बेटो पाट वेठचो।]

[१]

दिन री ऊगाळी माछळीमार डोकरे अमीना ने वाकली, 'तिन्नी!' वीं री अराकानी वोली में वीं अमीना रो नाम काढचो हो 'तिन्नी'। वीं घाकली,

'तिन्नी, आज थांरे व्हे कांई गियो है ? कांइ ज काम नीं कीधो थैं ? नवा जाळ रे गूंद ई नी लगायो । आंपणी नांव '

अमीना डोकरा कने जाय घणां हेत सूं बोली, 'काका, आज म्हांरी बैन आई है बैन । ज्यूं दो घडी वात कर री हूं ।'

'थांरी बैन ? थांरी बैन अठे कठा सूं आई ?'

जुलेखा कजाणां कठा सूं निकळ न आयगी, बोली, 'म्हूं, हूं, म्हूं ।' डोकरो हैरानगत रैगियो । जुलेखा रे कनें सगणो आय न धार धार ने जुलेखा ने देखवा लागियो । पछे झट देणीको पूछियो, 'थंने काम धंधो ई कांई करणो आवे के नीं ?'

अमीना बोली, 'काका, जीजा री आडी रो काम म्हूं कर दिया करसूं । जीजा ने काम करणो नीं आवे ।'

डोकरे थोड़ी देर विचार कर न पूछियो, 'थूं रैवेला कठे ?'

जुलेखा बोली, 'अमीना कनें ।'

डोकरे जाणियो यो कांई पंपाळ छाती पे आयो । रैवणी नी आयो पूछ ई लीधो, 'खावेला कांई ?'

जुलेखा बोली, 'वीं रो सोच थां मत करो ।'

यूं कैवती डोकरा कानी एक म्होर फैंक दीधी । अमीना म्होर ने उठाय डोकरा रा हाथ में देय दीधी । धीरेकरी बोली, 'काका, अबे कांई मत बोलजो, जावो काम करो, मोड़ो व्हेय रियो है ।'

जुलेखा भेख बणावती, जगां जगां फिरती फांदती, अमीना ने हेरती, माछळीमार री टपरी में किया आय पूगी, यो तो एक लांबो चोड़ो दास्तान है । कैवा में घणी वगत लाग जावे, अतरो ई जांणलो अबारूं के वीं रा बाप रो विस्वास पात्तर चाकर रैमत अली आजकाले वीं रो नाम सेख रैमान राख न अराकान री राजसभा में काम कर रियो है ।

[२]

छोटीक नंदी बेयरी । ऊनाळा रा दिन । परभात रा सीळा सीळा वायरा सूं केलू रूंख री राती राती फूलां री मांजरा भड़ भड नीचे पड़ री । रूंखड़ा हेटे बैठीं जुलेखा अमीना ने कैवा लागी, 'भगवान आंपा दो बेनां ने मरती रे आडा हाथ देय जीवण जीवणी दीधी जो क्यूं दीधी । खुदा आपां ने यूं जीवती राखी के आपां आंपणा अब्बाजान रो बैर लां । आंपा बैर नी लां तो आपणां जीवता रैवा में सार ई कांई है ?'

अमीना नंदी रे पैले कनारे घणां दूरा ऊभा गैरी छायावाळा रूंखा साम्ही झांकती थकी बोली, 'जीजा, रैवा दो नीं थां अबे वां वातां ने । म्हनें तो अबे या

दुनिया चोखी लागै। मार काट कर कर न मड़द मरे तो मरवा दो आमा। म्हनें तो म्हारे दा पगा ई खोटी नीं लागे।'

जुलेखा बोली, 'हुस्त, अमीना, थूं सायजादा री बेटी है सायजादा री। कठै वो दिल्ली रो तखत न कठै या माछळीमार री टापरी।' अमीना हँस न बोली 'जीजा, जे कोई लड़की ने माछळीमार री टपरी अर रेलू ग रूंख री छाया दिल्ली रा तखत सूं आछी लागै तो वो दिल्ली रो तखत हो वीं ने यार करे कांय नीं।'

जुलेखा क्यूं क अणमणी व्हेय अमीना ने मुळकती बोली, 'हां, थारो ई कांई दोस है, थूं तो कणां दिनां जावक ई टाबर ही। पण थूं सोच तो खरी, अब्बाजान सैंगा मूं बत्तो लाड़ थारो राखता जदी ज तो वां वांरा हाथ मूं पांणी में धर्नें न्हाखी। एड़ा बाप रा हाथ सूं दिखोड़ी मौत मूं ई जिंदगी ने बत्ती मत जांण। हां जो बापको आंटो ले ले तो या जिंदगानी सुफळ व्हे जावे।'

अमीना छानी मानी बैठी री। वा पैले कनारे छेटी छेटी तांई भ्यांकती रीं। जा वीं री मूंडो कैवरियो वा मन में सोच री जो। 'थारो कैवणो तो सांचो है पण.........' मतलब यो के वो सीळो मवरो वायरो, रूंख री छाया, चढ़तो जोबन अर कलांणा क्रिरी मीठी याद, वीं ने ऊंडा विचार में उतार दीवी।

थोड़ी देर पछै लांबो सांस लेय न वा बोली, 'जीजा, थां बैठो। घर रो सैंग काम पड़यो है। म्हूं चढूंगा नीं तो बापड़ो डोकरो भूखो रेय जाय।'

[२]

अमीना रो यो ढाळो देख जुलेखा रो मन घणो ई ज अणमणो व्हेगियो। घणी देर तांई मन मारियां बैठी री। अतराक मांयने धम्म देणी रो कि रे ई कूदवा रो बनीको सुणीज्यो, पाछा मूं कोई आवता ई वीं री आंख्यां मींच लीवी।

जुलेखा डरप न बोली, 'कुण ?'

नवो साद सुण न आंख्यां पर मूं हाथ छोड़ न एक मोट्यारड़ो मूंडागे आय न जुलेखा रा मूंडा साम्हो जोय न, डरपियो नीं बड़ा मजा सूं बोल्यो, 'अरे थूं तो तिसी कोय नीं है।' एड़ो बोलियो जाणे जुलेखा आप ने तिसी दणाय री व्हे अर वो बड़ो हुंसियार है जो झट ओळख लीवी।

जुलेखा ओढणी ने संभती थकी एकणदम ऊभी व्हेगी। उण री आंख्यां में वादळी बळ री। बीजळी री नांई कड़क न बोली, 'कुण है थूं ?'

मोट्यारड़ो बोलियो, 'थूं म्हनें ओळखे नीं। तिसी ओळखे म्हनें। कठै है तिसी ?'

हाकों सुण न तिन्नी बारणे आयगी। जुलेखा री रीस अर वीं जुवान रो अचंभो भरियो मूंडो देख अमीना ठीठी कर हंसवा लागी। बोली, 'जीजा थां नाराज मत व्हो। यो कोई आदमी है कांई। ईं कांई ढांढापणो कीधो व्हेतो अबार धाकल दूं ईं ने। क्यूं दाळिया, कांई कीधो थैं?'

जुवानड़ो बोलियो, 'पाछा नूं आय न खाली आंखियां मींच लीधी ही। म्हें जाणियो तिन्नी है पण या तो तिन्नी नीं........'

तिन्नी मांटीपणे मूंडा पे रीस लाय न बोली, 'छोटो मूंडे मोटी वात ? थैं कदी तिन्नी री आंखियां मींची ही कांई ? वड़ो छातीचल्लो व्हेगियो।'

जुवानड़ो बोलियो, 'आंखियां मींचवा में कांई छाती रो काम है, खाली आदत व्हेणी चावे। पण तिन्नी, सांच कैवूं आज थोड़ीसीक डरपणी लागी।'

यूं केय आंख टोळाय जुलेखा कानी आंगळी वताय अमीना रा मूंडा साम्हो झांक धीरे धीरे मुळकवालागो।

अमीना बोली, 'थूं वड़ो बोघो है। सायजादी रे मूंडागे ऊभा रेवा री थांरा में तमीज ई नीं है। तमीज सीख। देख सलाम कर यूं कर, यूं कैय जोबन रा भार सूं झुक्योड़ी देही बेलड़ी ने बड़ा नखरा सूं लुळाय जुलेखा ने सलाम कीधो। लारे लारे वीं मोटचारड़े सलाम करवा री काची पाकी नकल कीधी।

अमीना बोली, 'यूं पाछ पग्यां तीन पांवड़ा पाछा मेल।

जुवानड़े पाछा पग दीधा।

'सलाम करो।'

वीं सलाम कीधो।

पाछ पग्या तीन पांवडा चालो। यूं पांवड़ा मेलाती मेलाती वा वीं ने झूंपड़ी रा वारणा तांई लेयगी।

बोली, 'मांय ने वळजा।'

मोटचारड़ो मांय ने वळ गियो।

अमीना ओवरी रो आडो झड वारणूं सांकळ लगाय दीवी, बोली, 'देखो, घर रो काम करो, वासदी नीं बुझ जावे।'

पछे जुलेखा कनें आय बैठी, 'जीजा, नाराज मत व्हो, अठा रा मिनख ई अस्या ई ज है। म्हारो जीव धाप गियो यां सूं।'

अमीना कैय तो यूं री ही पण वीं रा मूंडा पेकै वरताव में कोई ओनांण अस्या नीं दीख्या के वा कैयरी है जो वीं रा मन री वात है, वीं रा वरताव सूं तो यूं लागतो के वा अठा रा मिनखां रो अणूंता पुखस लेवे।

जुलेखा वेराजी व्हे न बोली, 'अमीना, थारो ढाळो देख न म्हूं तो अचंभा

गत व्हेगो । विनां जाग रो एक जुवान आदमी आय थारा डील रे आंगळी अड़ाय दे या तो हद व्हेगी ।'

अमीना ई बैन री हां में हां मिलाई । 'हां, देखो तो खरी । जे कोई नवाव के वादशा रे वेटे म्हारी देही री आंगळी अड़ाई व्हेती तो म्हूं वीं ने मार थप्पड़ वारे काढ़ देती ।'

जुलेखा सूं हंसी ने रोकणो नीं आई । हंस न बोली, 'अमीना, सांच केवजे, थूं कैय री ही नीं के दुनियां थनें चोखी लागे जो कांई ई बोका छोरा पूंछड़े चोखी लागवा लागी है कांई ?'

अमीना बोली, 'सांची सांची कैय दूं । यो म्हनें काम में घनो झेलो देवे । फ़ळफूळ तोड़ दे, सिकार कर न लाय दे । कोई काम भळावो दोड़ चो आवे । घणी दाण मन में आवे के ईं ने धांकल धूंकल सूवो कर दूं पण ईं रे तो लागे ई नीं । म्हूं खूब नाराज व्हे ईं ने वाकलूं, 'दाळिया, म्हनें थारा पे रीस आय री है तो आज सांव म्हांरो मूंडो देखवो करे न मुळकवो करे । ईं देख री हंसी ई एड़ी व्हेती व्हेला । दो चार थापां मार दो आप साव घणा राजी । थोई कर न देख लीवो म्हें । देखोनी घर में जड़ दीवो । आप बड़ा मजा में है । आडो खोलतां ई देखजो, मूंडो अर आख्यां लाल चिरहूं व्हेयरी व्हेला; बैंठ्यो चूला में फूंकां देय रियो व्हेला । बतावो, अबै कांई करूं म्हूं तो काई व्हेणी ।'

जुलेखा बोली, 'ठैर म्हूं गैले घालूं ईं ने ।'

अमीना हंसती थकी, जुलाई सूं बोली, 'हाथ जोडूं जीजा, अबै थैं ईं ने कांई मत कैवजो ।'

अमीना या बात ईंयां कही जांणे वो बोफो मोट्यार वीं रो पाळयोड़ो हिरण है, जांणे वीं में जंगळी आदतां ओजूं है कि वारळा मिनख न देख न चनक न भाग नीं जावे ।

अतराक में माछळीमार आय न बोलियो, 'आज दाळियो नीं आयो, निर्मी ?'

'आयो है नीं ।'

'कठै गियो ?'

'चाळा कर रियो जो ओवरी में घाल न जड़ दीवो ।'

डोकरो विचार में पड़ गियो, बोलियो, 'तंग करे तो सेहण कर लेवो कर वेटा । ओड़ी औस्था में सैंग ई चाळागारा व्हैवो करे । घणो मत काया करवो कर वीं ने । दाळिये काले एक 'थकूं' देय म्हारा सूं तीन माछळा मोलाया, जाणे के ?'

'थकूं' रो अरथ व्हे म्हार ।

अमीना बोली, 'सोच मत कर काका, आज म्हूं दो थळु थांने वसूल कराय दूंला, एक ई माछळो नीं देवणो पड़े ।'

डोकरो आपरी उछेरियोड़ी छोरी री ओछी ओस्था में स्याणप न कमाउ बुद्धि देख राजी व्हियो, माथा पे लाड सूं हाथ फेर परो गियो ।

[४]

अचंभा री वात तो या ही के दाळिया रो आवणो जावणो जुलेखा ने ई सुंवाय गियो । देखी जावे तो एड़ी अचरज री वात ई कांई कोयनी । नंदी रे एक आडी ने तो धारा व्हे दूजी आडी ने कनारो व्है, जस्यां ई लुगाई रा हिवड़ा में एक कानी तो मन रो वेग व्है दूजी आडी ने व्हे लोकलाज । पण वीं अराकान रा चौड़ा चपट पड़िया चौगान जेड़ा देस में 'लोक' है कठै जिंरी लाज व्हे ।

वठै तो रुत रे लारे लारे रूंखा विरच्छां रे फूलड़ा लागे न झड़े । मूंडा-गली वा लीली नंदी । चौमासा में ढाबा तोड़ती बैवे, आसोजां में पाणी ने निथारती बैवे । सियाळां में भेळी भेळी व्हे, वसंत रुत में लाज्यां मरती मरती उनाळा में तो एड़ी दुबळी पतळी व्हे जावे के देखतां ई रै जावो । चिड़कलियां री चूं चूं । कोई रोको न टोको, उच्छाह सूं भरियोड़ी मीठी बोलती । आपणी नांई नीं तो किं रो ई साखावादो करे न नीं किं पे ई मौसा मारै । दखणांद रो वायरो कदी कदी नंदी रा ईं कनारा सूं पैला कनारा पे जावतो । कनारा रा गांम रा मिनखा री आंणद री ल्हेरां लेतो आवतो पण किंरो ई न्यावटो नीं करतो ।

ढूंढा व्हियोड़ा घरां में धीरे धीरे दोबड़ो जमतो जावे ज्यूं अठा रां रैवा वाळा रा हिवड़ा सूं ई लोकलाज री नींवण भींता टूटती जावे । अठा री परकरती, मिनख सुभाव ने बदल देवती । रैवतां रैवतां धीरे धीरे लोक लाज रो संको मन सूं निकळ जावे ।

लुगाई ने, दो हिवड़ा ने, दो जोड़ी रा मिनखां ने मिलतां देखवा में घणो रस आवे । अतरो मोटो चोज, अतरो सुख अर अतरो कौतक लुगाई ने और दूजी की वात में नीं दीखे ।

कांकड़ री ईं टपरी में, गरीबी री छाया में जुलेखा री कुळरी कांण, घराणां री रजवट्ट री रारड़ियां ढीली पड़वा लागी, अवै वी ने कैलू रा रूंख री छाया में अमीना अर दाळिया री मिलण राम्मतां देखवा में रस आवा लागो ।

कदाच वीं रा जोवन छाया हिवड़ा में ई कोई ऊणायत आवती व्हेला । वीं रो हिवड़ो ई विचळाय जावतो व्हेला । वीं ने यां रो मिलणो देखवा में अतरो रस आवा लाग गियो के कदेई दाळिया के आवा में मोड़ो व्हे जातो तो जुलेखा

वाट नाळती। वां दोई जणां ने रमता खेलतां ने जुलेखा मुळकती जांवती अर हेत सूं अस्यां देखती जांणे चित्तारो आप रा नवा बणाया चित्तराम ने थोड़ोक दूरो मेल न निरखतो व्हे। कदी कदी लड़ती ही, कदेई ऊपरला मन सूं वाकला धूकली करती, कदे ई अमीना ने घर में जड़ वीं रे मिलवा में आडअडायत व्हेती।

राजा रो अर कांकड़ रो एक सो सुभाव व्हे। दोई मन रे मत्ते चालणिया व्हे। दोई आप आप रा राज रा धणी व्हे। दोई, दूजा रा बतायोड़ा नेम हुकम में नीं चालवो करे। दोई जणा में सुभाव सूं ई वड़ापणो व्हे अर सादी सल्ला रा व्हे। जो आदमी बचेट्या व्हे, नीं घणा मोटा न नीं घणां छोटा। वे लोक सास्तर रा आखरां ने गिण गिण न वां माथे चाले। एड़ा मिनखां री वांण दूजी तरै री व्हे। वे आप सूं लूंठा ने देख न तो चाकर वण जावे। गरीबां माथे ठाकरी जतावे। वारणे मांयने अणसेंदी जायगा वां ने अत्त सूझे न गत्त। वोफो दाळियो बिलालो जीव है।। सायजादियां रे मूंडागे वो संके नीं। सायजादियां ई वीं ने आप रो बरोबरियो समझे। दाळियो मुळकतो रै। सादी सल्ला रो अणंदी जीव है। डर भौ वीं रे अड़ न ई नी निकळ्यो। संकणों वीं सीख्यो ई नीं। वीं री चालचलगत में बोदापणां रा कोई एनांण ई नीं।

ये रम्मतां तो व्हेती पण जुलेखा रो हिवड़ो एकणदम फाटवा लागतो। वा विचारती, 'सायजादी रो जमारो यूं वीतणो चावे ?'

एक दिन परभात रा दाळिया रे आवतां ई जुलेखा वीं रा हाथ मसकाय न बोली। 'दाळिया, अठा रा बादसा ने म्हनें बतावणी आई थारा सूं ?'

'देखाय तो दूं पण क्यूं ?'

'म्हांरा कनें एक कटार है, वीं री छाती में मारणी है।'

पेलां तो दाळियो अचंभा में पड़ गियो। पछे सूरापणो चढ़ियो जुलेखा रो मूंडो देख, पछे वैर लेवा री खुसी सूं दमकतो मूंडो देख दाळिया रो मूंडो ई हँसी सूं विगस गियो। वीं ने यूं लागी जांणे एड़ा मजा री वात वीं पैला कदी सुणी ई नीं वस रोळ ई कोई करे तो असी सायजादी ने सोवे जसी। वो कटार मारवा री तसवीर मन में उतारवा लागो। मिलतां ई कोई बोलणो न चालणो, झट देणी री आवीक कटार बादसा री छाती में गरड़ गप्प। किया बादसा चेता चूक व्हे जाय। वो वात करतो जावे न मुळकतो जावे। पछे तो हंसतो हंसतो लोट पोट व्हे गियो। दूजे ई दिन जुलेखा कने रैमत रो पोसीदा पत्तर आयो। वीं लिखियो, 'अराकान रा नुंवा धणी ने वेरो पड़ गियो है के थां दोई वैनां माछळामार री झूंपड़ी में हो। वां छानेकरी अमीना ने देख ई लीधी है। वे अमीना पे रीझ गिया है।

वे व्याव करवा री त्यारी कर रिया है। वैर लेवा रो अबै औसर आयो है। एड़ो औसर चूकणो नीं।'

[५]

जुलेखा, अमीना रा पुणचा ने काठो पकड़ न बोली, 'अमीना, खुदा रो फ़रमांण है यो। थूं थारा धरम ने निभाव अबै। अबै हंसणो रमणो छोड़ त्यार व्हेजा।'

दाळियो वठै ऊभो हो। अमीना वीं रा मूंडा साम्ही चोघो। देखे वो ई हूंस रियो जांणे बड़ो मजो आवेला।

वीं ने यूं मुळकतो देख अमीना रा हिवड़ा पे जांणे हथौड़ो पड़ियो। बोली, 'जांणे दाळिया ? म्हूं बेगम बणवा वाळी हूं।'

दाळियो हूंस न बोलियो, 'थोड़ी देर सारूं ई ज तो।'

अमीना दूखता मन सूं अर अचरजभरया चित्त सूं विचारवा लागी, 'यो तो सांचे ई कांकड़ रो रोझ है, ईं रे सागे आदमी री नांई बरताव करणो बेंडापणो है।'

अमीना दाळिया ने चेतावा ने पाछी बोली, 'पण बादसा ने मार न म्हनें कोई पाछी आवा देवेला कांई ?'

दाळियो ईं वात ने वाजब जांण न बोलियो, 'हां, पाछी तो नीं आवा दे।'

अमीना री आतमा अणचेत व्हेगी, वीं जुलेखा री आडी ने मूंडो कर न लांबो सांस लेय न कहियो, 'जीजा, म्हूं त्यार हूं।'

पछे दाळिया री आडी ने फिर न, जखमायल मन सूं फीकी हूंसी हूंस न बोली, 'बेगम वणता ई सब सूं पै'लां बादसा री हरामखोरी में थनें डंड दिरावूं। पछे जो करणो वे ई जो करावूं।' सुण न दाळिया ने घणो मजो आयो। जांणे डंड मिल्यां वीं ने कोई आछो आणंद आय।

हाथी र घोड़ा, पालकी र पींजस, बाजा र गाजा, एडी जान आई के आगला कीच न पाछला पाणी। जांणे माछळामार री टपरी पियादां रा पगां में ई पीसणी आय जाय। बादसा रा म्हेला सूं दो सोना रा जड़ाव जड़ियोड़ा पींजस आया सायजादियां ने लावा ने।

अमीना, जुलेखा रा हाथ सूं कटार लेय लीधी। घणी देर तांई तो वा वीं री हाथी दांत री मूठ ने देखती री। पछे कांचली ने ऊंची कर छाती पे एक दांण वीं री धार ने परखी। एक दांण तो काळजा रे कटार ने अड़ाई पछे म्यांन में घाल कांचळी में लुकाय लीधी।

वीं रा मन में ऊणायत ही के मरवा सूं पैलां एक दांण वा दाळिया ने देख लेती। पण वो तो काल सूं ई कोनी आयो। वीं दिन दाळियो हंस रियो हो जो कदाच वीं हांसी में रूस जावा रा तुडंगिया हा।

पींजस में बैठवा लागी तो जळजळाया नैणां सूं वीं घर ने देख्यो वीं रूंख ने देख्यो, वीं नंदी ने देखी।

माछळीमार रो हाथ पकड़ न बूजते कंठ बोली, 'काका, म्हूं तो चाली, थांरी तिन्नी तो जायरी है। थारे पळींडे पाणी कुण भरेला ?'

डोकरो, टाबर री नांई रोवा लागगियो।

अमीना बोली, 'काका, दाळियो आवे तो या वींटी देय दीजो। कैय दीजो, तिन्नी जाती वेळा देयगी है।

यूं कैय वा चट देणी री पींजस में बैठगी।

गाजा बाजा सूं पींजस चाल्यो। अमीना, वीं री अर वीं रा काका री टपरी, केलू रा रूंख नीचलो चूंतरो देखती जाय री। वे अंधारा में छिपता जाय रिया हा।

दोई पींजस तिरपोळिया में व्हे जनानी डोडी में वळया। दोई बेनां पींजस सूं नीचे उतरी।

अमीना रा मूंडा पे कोई मुळक नीं ही, नीं नैणां में आंसू ई हो। जुलेखा रो मूंडो बोळो फट्ट व्हेयरियो। फरज अळगो भळगो हो जतरे तो वीं रा मन में उच्छाह हो, छाती बध री ही। अबै कांपते काळजे, उबकती छाती, घणा हेत सूं अमीना ने छाती रे लगाय लीवी। मन कैयरियो, प्रीत री डाळ सूं ई विगसता फूल ने म्हूं तोड़ न लोहया में लाळवा ने कठै ले आई हूं।'

अबै सोचणे री वेळा ई कठै ? डावड़ियां जगमग जगमग करता हजारां दीवा र पीलसोतां लीधां ऊभी। वांरा चांनणा में दोई बैनां धीरे धीरे चालवा लागी।

बादसा रा खास म्हेलां रा बारणा कनें जाय एक खिण सारूं अमीना ठम न बोली, 'जीजा।'

जुलेखा, अमीना ने काठी बाथ में घाल लाड़ कीधा। पछे दोई धीरे धीरे मांयने वळी।

देख्यो, म्हेलां रे अधबिचै ढोल्या पे मोड़ा रो भड़ो लीधां बादसा, साही पोसाक में बैठ्या है।

अमीना संक गा, वारणा कनें ऊभी रेगी ।

जुलेखा आगे पांवडा देय वादसा कनें गी, देखे तो वादसा छानो मानो वैठो वड़ा मजा सूं मुळक रियो है ।

जुलेखा एकणदम वरळाई, 'दाळियो ।'

अमीना झांप खाय हेटे पड़गी ।

दाळियो उठ न जखमायल व्हियोड़ी चिड़ी री नांई अमीना ने गोद में उठाय न ढोल्या पे लेयगियो ।

चेतो आयां अमीना कांचळी मांय नूं कटार काढ जुलेखा रा मूंडा साम्ही झांकी, जुलेखा दाळिया रा मूंडा साम्ही झांकी, दाळियो छानो मानो मुळकतो थको दोवां रा ई मूंडा साम्हो झांकतो रियो । कटारी, म्यांन वारणे थोड़ोसोक मूंडो काढ ईं रम्मत ने देख, चम चम कर न मुळकवा लागगी ।

●

संस्कार

पापां री लेखो जोखो राखणिया चित्तरगुतजी रा वहीड़ा में घणां एड़ा पाप मोटा मोटा आखरां में मांडियोड़ो है जां पापां रो बेरौ वां रा करणियां पापियां ने ई कोय नीं है। अस्यां ई, दुनिया में एड़ा पाप ई है जां ने खाली म्हूं ई ज पाप मानूं; दूजा कोई पाप नीं माने। आज जो म्हूं बात केवूं वा एड़ा ई ज पाप री है। चित्तरगुतजी रे मूंडागे जुवाब देवणो पड़ी जठा पैला ई वीं पाप ने कबूल कर लूं तो, कदाच थोड़ो भार ओछो पड़ जावे।

काती री पूनम, थावर रो दिन हो। म्हांका मोहल्ला री सड़क माये व्हे एक मोटी असवारी निकळ री ही। म्हूं म्हारी अस्त्री कळिका ने साये ले मोटर में वैठ, म्हारा भायला नैणमोवन रे घरे जाय रियो हो, चाय पीवाने।

म्हारी अस्त्री रो नाम, म्हारा सुसराजी रो काढियोड़ो है, ईं रो जुम्मेवार म्हूं नीं। नाम जेड़ो उण रो सुभाव नीं हो। कळिका यूं तो मन री वातां मन में छिपायां राखती पण जठे मत मतांतर री वात आवती वठे उण रा विचार, मत, साफ हा। वड़ा वजार में विलायती कपड़ां पे धरणो देवा ने वा गी तो उण री मजबूताई देख साथ वाळा उन रो नाम काढ दीवो 'ध्रुवव्रता।' म्हारो नाम है गिरींदर। कळिका रा सायी संगी, टोळीवाळा म्हने कळिका रा खावंद रा नांम सूं ई जांणे म्हारा नाम रो वठे मोल नीं। भगवान री किरपा सूं, बाप दादां री कमायोड़ी पूंजी सूं म्हारा नाम रो थोड़ो घणो मोल हो, वीं पे लोगां री निजर पड़ती चंदो भेळो करती वेळां।

घणी रो अर लुगाई रो सुभाव न्यारो न्यारो व्हियां सायद उणां में बणत

ठीक रे, मेळ बैठ जावे, पाणी'र सूखी माटी रो बैठे ज्यूं। म्हारो सुभाव ढीलम-ढाळ है, कोई वात व्हे पकड़ न नीं राखणी आवे। म्हारी अस्त्री पकड़वां मिजाज री है जि वात ने पकड़ती पाछी छोड़ती नीं। म्हारी तो या पक्की धारणा है के म्हांके धणी लुगाई रे बणत री वा ईं उलटा सुभाव रे कारण ई ज री।

खाली एक जगा म्हारे'र वींरे बीच में विरोध रियो, अर वो विरोध जीवती री जतरे नीं मिटियो, चालतो रियो। कळिका रे मन में जमियोड़ी ही के म्हनें म्हारा देस सूं म्होवत कोय नीं। उण रे या वात ऊंडी जमियोड़ी ही। या ई ज वजे ही के ज्यूं ज्यूं म्हारा देस परेम रो सबूत देतो गियो ज्यूं ज्यूं म्हारा देस परेम पे उण रो वेम् बधतो गियो। क्यूं के वा देस परेम रा अैहनांण बतावती वे म्हारा में नीं हा।

कीतावां रो कीड़ो तो म्हूं वा पणां सूं ई रियो हूं। कोई नुवी पोथी छापा बारै निकळी नीं न म्हें मोलाई नीं। या वात तो म्हारा वैरी मानता के वां री पोथियां ई म्हूं पढूं। संगीड़ा साथीड़ा तो खूब जांणता के पोथी बांच न म्हूं उण माथे चरचा करूं वादविवाद करूं, आळोचणा करियां बिना तो म्हां री रोटी नीं पचे। घणां साथीड़ा तो म्हारी इणी ज बांण सूं डरपता, बेस मुबाहिसा सूं बचवाने, म्हारे लारे ऊठणो बैठणो छोड दीधो। अबै तो वां मांयलो एक ई ज साथी बाकी बचियो है जीं ओजूं हार नीं मानी। वन विहारी रे लारे ओजूं ई दीतवार रे दिन मजलिस जुड़ै। म्हें उण रो नाम राख दीधो 'खूणां विहारी।'

कदै ई कदै ई तो म्हां दोई जणां चानणी पै एकमाड़ा बेठा वातां में अतरा विलम जावां के रात री दो दो वज जावे। जां दिनां म्हांका पे यो भूत चढ़ियोडो हो वो जमानो म्हां सारूं संवळो नीं हो। जमानो एड़ो हो के पुलिस किं रा ई घर में गीताजी पड़ियोड़ा देख लेती तो राजद्रोह रो सबूत साबित करती ताळ नी लगावती। वीं जमाना रा देस भगत ई एड़ा हा के किरे ई घर में विलायत री छपियोड़ी पोथी रो फाटियोड़ो पानो ई लाध जावतो तो घर रो चाकर ई ठाकर ने देसद्रोही समझवा लागतो।

म्हने तो वे काला रंग पे धोळी आरास पोतियोडो "श्वेत द्वैपायन" मानता। म्हारी बात ने गप्प नीं मानो तो म्हूं तो अठा तांई कैवूं ला के देस भगतां सुरसती री पूजा करणो छोड़ दीधो क्यूं के सुरसती रो रंग गोरो है। गोरी वसत मात्र सूं लोग चिड़वा लाग गिया। वां दिनां तो एक एड़ो धारो चालग्यो लोगां रे मन में तो अठां तांई जमगी के जीं तळाव में सफेद कंवळ रा फूल खुले उण तळाव रो पांणी तक त्याज्य है। पांणी सूं तो वासदी बुझे पण वीं तलाव रा पाणी ने छिड़किया देस ने भसम करवा वाली वासदी और वत्ती भभके।

म्हारी सायवण आछी आछी नजीरां म्हारे मूंडागे राखती, रोजीना

ताकिदा करती पर म्हें खादी नीं पैरी। ईं रो यो कारण नीं के खादी खोटी है के कोई गुण नीं। कै म्हनें ओढ़वा पैरवा रो घणो कोड़ है। मैलो जाड़ो कपड़ो ढीलम ढाळ रैवारी म्हारी आदत ही। कळिका ने सुदेसी री धुत्त नीं चढी जि पैला सूं चौड़ा फावा री देसी पगरखिया पैरतो। वां पै रोज रोज काळग चोपड़णी भूल जावतो, मौजा पैरणो तो मरणो लागतो। कमीज कोट नीं पैरतो, कुड़तो गळा में घालणो सोरो लागतो। वीं री एक दो गूंडिया टूट जाती तो पड़ी चालती। ये वातां थांरी म्हारी निजर में भलांई छोटी व्हो। भगवान झूंठ नीं बोलावे म्हनें तो घर भाग जावा री संका व्हेवा लागती। कळिका जदी देखो जदी कैवा लागती, 'म्हूं तो थांरे सागै जावती, लाज्यां मरूं। म्हूं कैवतो, म्हारे लारे मत चाल। थारो जीव करे जठै अकेली परी जा।'

आज जमानो तो पलट गियो पण म्हारी तकदीर नीं पलटी। आज ई कळिका रा मूंडा सूं ये ई बोल निकळे 'म्हूं तो थांरे सागै जावती लाज्यां मरूं' कळिका पैला जि पालटी में सामिल ही वीं पाळटी री वड़दी म्हें नीं पैरी। आज जि पाळटी री मेम्बर है वीं री वड़दी म्हारा सूं नीं पैरणी आई। म्हारे सारूं म्हारी अस्त्री रा विचार यूं रा यूं वणियां रिया। यो म्हारा सुभाव रो ई कसूर हो। कोई पाळटी री पोसाक व्हो, म्हने भेख बदळतां लाज आवे। म्हारा सूं वा लाज कदै ई छोड़णी नीं आई। वठीने कळिका ने म्हारो रैण सैण बरदास्त नीं व्हियो। झरता झारणा रो पांणी चक्कर खाय न धार रे बीचे पड़िया मोटा टोळ रे आय न टकरावे, उलाळवा री एहळी कोसिस करे ज्यूं कळिका री आदत ही दूजी राय राखवा वाळा रा मन में जाय न टक्करां मारवा री। हालतां चालतां, ऊठतां वैठतां रात दिन चूंगट्या भरणो आदत में सुमार हो। 'अलग राय' रो नाम सुणतां ई वा चमकती, डील में कचमची लाग जाती र फां फूं करवा लागती।

काने चाय रा नूंता में जावा लागा, म्हारे खादी रा गाबा नीं दीखिया तो कळिका एक हजार आठ दांण नांक चढायो, मजो यो के नटा नटी में कठै ई मिठास नीं, अपणायत नीं। म्हारा में ई थोड़ोक अकल रो गरूर है जो बिना वेस कीधां वीं रा हुक्म ने माथे चढावणी नीं आयो। आदत री मजबूरी मिनख ने अहळी कोसिसां करावो करै। म्हारा सूं ई नीं रैवणी आयो, म्हूं ई उत्तर रा पड्डुत्तर दैवतो रियो। कस कस न चूंगट्या, भरिया, 'लुगायां भगवान री दीधी आंखियां रे लारे अकल ने ई घूंघटा सूं परी ढांके। रीत रो रायतो घोळती चाले।' 'बिचारणी तो आवे नीं, सुणी सुणाई ने तांणती फिरे।' 'लुगायां री आदत व्हे जिंदगी रा खुलदस्त खेलता खाता वैवार वरता व ने खैंच ने जनाना में घाल न घूंघटो नीं कढावे जतरे वां ने जक नीं पड़े।' 'रीत रिवाजां रा फंदा में फंसियोड़ा

ईं देस में खादी पैरणो ई एक रीत बणगी। माळा फेरो, तिलक छापा करो ज्यूं ई खादी पैरो। जो पकड़ले लुगायां वीं रीत ने पूरी करायां जक लै।' एड़ा घणां ई चूंगटचा बोटिया।

देवी कळिका तो रीस सूं राती पड़गी। वीं री तीखी बोली सुण न तो पाड़ोसी री डावड़ी अंदाजो लगाय लीधो के जरूर घर धणियाणी री मरजी माफिक गैणां गड़ाय घर धणीं नीं लायो दीखे।

कळिका बोली, 'जो गंगा सिनान रो महात्तम है वो महात्तम खादी पैरवारो है। आंपणे देस रा मिनखां रा हिड़दा में जि दिन या वात ऊंडी जम जाय वीं दिन आंपणा देस रो निस्तार व्हे जाय। पैला मिनख विचारे, वे विचार आदत बण जावे, जड़ां पसार दे जदी वे संस्कार वाजे। पछे मिनख वां संस्कारा रे कारण आंख मींच न अभै व्हियां चाले। थां री नांई दुविधा में पडियो डगमग डगमग नीं करे।' यो फरमांण दरअसल में मास्टर नैणमोवन रा मूंडा रो है। खाली ऊपरळी मोहर छाप मिटगी ही। कळिका देवी मन में जांणती या वीं री अकल री ऊपज है।

'बोबड़ा रे वैरी नीं व्हे' ईं केणावत ने चलावा वाळो जरूर कंवारो हो। म्हें पाछो कांई जुवाब नीं दीधो तो कळिकादेवी दूणीलाल बंब व्हे न बोली, जात रा भेद भाव ने थां खाली कैवणी में नीं मानो। कथणी और है करणी और है। म्हां लोगां खादी पैर भेदभाव पै अखंड धोळो रंग चढाय दीधो। कपड़ा रो भेदभाव उठाय जातरा भेदभाव ने खतम कर दीधो।

म्हारा मूंडा पै तो आई के कैदूं, 'मूंडा रो जाति भेद तो म्हूं जद रो ई नीं मानूं जि दिन सूं मुसलमान रा हाथ रा कूकड़ा री अखनी पीवा लागो हूं। मूंडा री म्हारी या कथणी नीं है करणी है। जिरी गति मांयली आड़ी ने जावे। पण थारो कपड़ा सूं जाति भेद ने ढांकणो तो वाहरळी चीज है। थां खादी सूं ढांक भलां ई लो। थांरी करणी तो भेदभाव मिटावा री कोयनी।' पण मूंडा बारे निकळी नीं। छाती नीं चाली, डरपोक मिनख ठैरियो। म्हूं छानो रैगियो। म्हूं जाणतो, आपसरी में आपां जां वातां, जां नुकतां पै बैठ न वहस करां, वां नुकतां ने कळिका आपरा साथियां रे घरे ले जाय, धोबी रा गाबा री नांई भट्टी में चढाय पछांट पछांट न धोय न्हाके। भारतीय दर्शन रा सास्तरी नैणमोवन रे अठा मूं पडूत्तर लाय न म्हनें सुणावे। चमकता नैण बिनां दोलिया आपरी बोली में कैवता रे 'अबै आई अकल ठिकाणै।'

नैणमोवन के घरे जावा रो म्हारो मन जावक नीं हो। म्हने पक्की ठा ही के चाय री मेज पै गरम चाय रा घूवां ज़ेड़ा ई झीणा विषय पै बेहस चालियां बिना

रैवा नै नीं के 'हिन्दू संस्कृति में संस्कारां री, स्वाधीन बुद्धि रा आचार विचारां री कतरी ऊंची जगां है ? या वातां आपां रा देस ने दूजा देसां सूं कतरो ऊंचो उठाय दीधो।' यां वातां सूं वठा रो वातावरण धुंधळाय जाय। म्हारो जीव तो लाग रियो सुनैरी पुट्ठा वाळी नुवीं पोथियां में, जो अवारूं हाटां मायनूं आय म्हारा गींदवा कनें पड़ी वाट नाळ री ही। भूरा रंग रा पत्रेटियोड़ा कागज रो घूंघटो ई हाल नीं उघाड़ियो हो। म्हारा हिवड़ा में वां रो मोह खिण खिण बधतो जाय रियो हो। तो ई लुगाई रे लारै बारै जावणो ही पड़ियो। ध्रुवव्रता री मरजी रे खिलाफ चालतो तो एड़ी आंधी र भतूळियो आवतो के म्हूं वीं भतूळिया में गरोळा खांवतो फिरतो।

घर सूं निकळ न गळी में निकळिया, सदर सड़क पै मोटर पूगी नीं व्हेला के आगे देखां तो कंदोई री हाट आगे मिनख भेळा व्हेयरिया। भीड़ लाग री, हाका हल्ला व्हेयरिया। म्हांका पाड़ोसी मारवाड़ी बौमोला गाबा पैर कोई जुलूस में सामिल व्हेवा ने जाय रिया हा। भीड़ देख न गाड़ी ने रोकणी पड़ी। सुणियो, लोग कैयरिया 'मारो, मारो'। म्हें जाणियो कोई जेबकतरो पकड़ियो गियो दीखे।

मोटर भूं भूं करती, धीमी धीमी चालती, रोळा करती भीड़ कने पूगी तो देखां कांई के म्हांकां मोहल्ला का बूढा सरकारी भंगी ने मिनख ठोक रिया है। गळी रा सरकारी नळ सूं वालटी भर, कांख में झाड़ू घाल न जाय रियो जो किसूं ई भींटाय गियो। लारे ही वीं रो आठेक वरस रो पोतो। पोतो रींराय रियो। दादा ने छोड़ देवा ने हाथाजोड़ी कर रियो। दोई जणा साफ कपड़ा पैर राखिया, दोई देखवा में साजा सांतरा दीख रिया। वूढो कैय रियो 'बापजी म्हारी गलती व्हेगी, माफ करो।' ज्यूं वो हाथाजोड़ी करतो अहिंसा ध्रम पालणियां पुण्यातमा री रीस री झाळ में और पूळो मेलणी आतो। डोकरा री आंखियां मांय नूं झर झर आंसू बैय रिया, डाडी सूं लोही टबक रियो।

म्हारा सूं नीं देखणी आयो'नीं मिनखां सूं लड़वा ने म्हारा सूं उतरणी आयो। म्हें विचारी डोकरा ने र छोरा ने मोटर में चढाय अळगो लेजाय उतार दूं। म्हारी अरधांगणी ने बताय दूं के म्हूं यां नामधारी धरमातमा मांयलो नीं हूं। म्हने आगो पाछो व्हेतां देख कळिका म्हारा मन री वात भांपगी। काठो हाथ पड़ लीवो म्हारो। वोली, 'कर कांई रिया हो, भंगी है।'

म्हें कियो, 'भंगी है तो पड़ियो व्हो। अठे मिनख ठोकेला ई ने।'

कळिका वोली, 'दोस तो ई रो ई ज है। गेला रै वीचे क्यूं चाले ? एक आडी ने व्हे न नीं निकळणी आवे ?'

म्हें कियो, 'या तो म्हूं कांई जाणूं। गाडी में बैठाय आगे लेजावूं ईं ने।'

कळिका बोली, 'तो म्हूं तो उतरूं मोटर सूं। बोळो बळाई व्हे तो आघो ई बळो। छेवट चूंड़ौ है।'

म्हें कियो, चूंड़ौ व्हे तो कांई व्हियो, कपड़ा तो साफ पेर राखिया है, न्हा गो घोयो साफ है। ये ऊभा जां मांयला घणा जणां सूं साफ है।'

'तो कांई व्हियो है तो भंगी रो भंगी।' यूं कैय वीं ड्राइवर ने हुकम दीधो, 'गाडी चला।'

म्हारी हार व्ही, कमजोर हूं म्हूं।

वीं दिन नैणमोवन गैर गम्भीर दृष्टांत दे दे दर्शन सास्तर री खील खील खोल मूंडागे राख दीधी। पण उण री एक ई वात म्हारा कानां मांयने नीं पड़ी, नीं म्हूं बोलियो ई।

●

हारजीत

राजा री कंवरी रो नाम हो अपराजिता। राजा उदेनारायण रा राज-कवि हा शेखर। वां आंखियां सूं कदेई कंवरी ने देखी नीं। पर वे दरीखाना में बैठ न आंपणी कविता बोलता तो कंठ ऊंचो कर न बोलता। वां रो ऊंचो साद ऊंचा ऊंचा म्हेलां रा झरोखा में बैठ्योड़ा रै कानां में पड़तो। वे दीखती तो नीं पण वां रा कानां में वां रो कविता पाठ रस घोळ देतो। वे एक अणजांण तारालोक में रस सूं भिजियोड़ा संगीत रा सन्देसा भेजता। जठै रा ग्रेह मंडल में जांणे वांरी जिंदगी रो एक सुभग्रेह है। उण ने वे ओळखे तो नीं पण वो अण दीखती मेहमां लीधां विराजियोड़ो है।

शेखर री कल्पना री राजकंवरी उणां ने दीखती, कदेई छाया में दीखती कदेई घूंघरां री झमक वण न सुणीजती। वे वैठिया बैठिया सोचवो करता, वे पग छेड़ाक व्हेला? जिणा में सोना रा घूघरा बंधियोड़ा है, वे ताळ ताळ पे ठमका करता गीत गाता रै। वे दोई गोरा गोरा, कंवळा कंवळा, राता राता, पगलिया घरती पे अड़ै जो कजांणा कतरी वां री महर है, दया है घरती माथे। कवि तो वां चरणारविंदां री आपरा हिवड़ा में थरपना थाप लीधी। मौको लाधतां ई उणां रो मन वां चरणारविंदा में जाय लागतो, वां घूघरां रा झमाकां रे लारै गीत गावा लाग जातो।

उण भगती भरिया हिड़दे में कदी कोई वेम या सवाल ई नीं उठियो के जिण छाया ने म्हें देखी है, वा छाया है किण री? जां घूघरा रा झमाका म्हूं सुणु हूं वे घूघरा है किण रा?

अपराजिता री डावड़ी मंजरी, पणघट पे पाणी भरवा जावती तो कवि रे घर रे बारे व्हे न निकळती। आवती जावती कवि सूं वातां रा दो टप्पा मारियां बिना नीं रैवती। औसर लाध जातो तो सांझ सुबै शेखर रे घरे जाय बैठती। जतरी दांण वा पणघट पे जावती वतरी दांण काम व्हे तो ई ज, या वात नीं कैय सकां। पण या वात ई नीं के बिना काम यूं ई जावती व्हे। पण पणघट पे जाती वेळा नखरा सूं सुरंगी ओढणी ओढ, कानां में आंबां री मांजरां टांकवा री कांई जरूरत पड़ जाती, इण री वजै हेरियां ई नीं लाधी। मिनख मूंडा पे हाथ देय न दांत काढता, कानां में वातां करता। इण में मिनखां रो दोस ई कोयनी। मंजरी सूं मिल शेखर रो हिवड़ो विगसतो, अर वो इण पे पड़दो न्हांकणे री कोसिस ई नीं करतो। डावड़ी रो नाम हो मंजरी। यूं आंपां देखां तो मामूली डावड़ी रो नाम अतरो घणो ई है। पण शेखर इण नाम रे सागै आंपणी कविता जोड़ न कैवतो 'बसंत मंजरी।' मिनख सुणता र कैवता 'कांई कैवणो।' अतरी ई ज नीं शेखर बसंत पे कविता बणावतो जिमे जठै देखो जठै 'मंजुल-मंजरी लगाय देतो। वात व्हेतां व्हेतां राजा रे कानां तक पूगगी। राजाजी आंपणा कवि रा रसीला सुभाव पे घणां राजी व्हेता, रोळां करता। शेखर ई पाछो रोळां रो जुबाब रोळां में देवतो।

राजा जी हंस न पूछता, 'भंवरो बसंत रा दरबार में खाली गावो ई ज करे?'

कवि जुवाब देतो, 'नीं तो, फूलां री मंजरी रो रस ई चाखे।' यूं आपसरी में रोळ तमासा कर मन ने राजी करता। अपराजिता ई रावळा में कदै ई मंजरी सूं हंसी मजाक करती ई व्हेला। मंजरी ने ई रीस नीं आती व्हेला।

मिनख री उमर यूं बीत जावे, थोड़ो सांच व्हे थोड़ो झूठ व्हे। थोड़ो घणो भगवान बणावे, थोड़ो घणो मिनख आप बणायले, थोड़ो घणो पांच जणां मिल न बणायले। मिनख री जिंदगी तो एक पचरंगो लेहरियो है। थोड़ो सांच व्हे, थोड़ो झूठ व्हे। थोड़ी कल्पना व्हे, थोड़ो तथ्य व्हे। जिन्दगी तो खोटा अर खरा रो भेळ है पण गीत जो वो कवि गातो हो सांचा अर पूर्ण हा। गीत व्हेता राधका जी रा, क्रस्ण रा, आदू नर रा आदू नारी रा। अणांदि दुख रा अणंत सुख रा। वां गीतां में जो वातां व्हेती वे अथारथ ही। उण जथारथ री अमरापुर री सारी नगरी रो मिनख पारख्या कर चुक्यो हो। उण रा गीत बच्चा बच्चा री जीभ पे हा। चांद ऊगतां ई, दिखणादी वायरो चालतां ई उण रा गीत आकास में गूंज जाता। कवि रा गीत गोखड़ां री जाळियां सूं सुरसुर करता वायरा में सुणीजता, मारग चलतां ने सुणीजता। रोई में गूंजता रेता आंगणां में रमता रेता। कवि रा नाम री अर ख्याति रो कोई चांको नीं हो।

यूं घणां दिन बीत गिया। कवि कविता बणावतो, राजा सुणतो, दरबारी दाद देता मंजरी पणघट पे जावती। रावळा रा झरोखा री जाळियां सूं कदी कदी छाया आय पड़ती, कदी कदी रमझोळां रा घूघरां री झमक कानां में आय पड़ती।

(२)

दक्खणदेस रा एक कवि राजा रा दरबार में आया। ये दिग्विजै करता आय रिया हा। वे आपरे देस सूं निकळ गैला में जतरा राज पड़िया वठा रा सगळा राज कवियां ने हराता अमरापुर आया। आवतां ई सादूळ विक्रीड़ छन्द में राजा री स्तुति कीधी।

राजा आवकार दीधो, 'मांगो, मांगो।'

कवि पुण्डरीक बड़ा गरव सूं, बोलिया, 'जुद्ध चावूं।'

राजा री, राज री इज्जत रो सवाल। जुद्ध तो देवणो ई पड़ैला। पण राजकवि शेखर ने तो या ई ठा नीं के थाक जुद्ध देवे कियां है। शेखर तो सोच रा सागर में डूब गिया। मन में संका बैठगी। आखी रात नींद नीं आई। वे तो जठी ने झांके जठी ने पंच हत्थो पुण्डरीक दीखे। खांडा री धार जेड़ो तीखो नाक, दरप सूं ऊंचो उठियोड़ो माथो ई माथो दीखे।

दिन ऊगियो कांपते काळजे कवि रणखेत में पूगियो। दिन री ऊगाळी सूं ई मिनखा रो ठाठ लागरियो। दरीखानो ठसाठस भरियो। हाकोहूल्लो व्हैरियो। चौवटो बंद हो। शेखर मांढाणी मूंडा पे घणी दोरी मुळक लाय न कवि पुण्डरीक सूं मुजरो कीधो। अणमणांपणां सूं पुण्डरीक धीरेक रा माथो हिलाय मुजरो झेलियो; आंपणे साथवाळा चेला चांटियां, साम्हो झांक न मुळकियो। शेखर रावळा रा झरोखा आड़ी ने छानेकरो झांकियो। जाणगियो हजारां हिरणाक्खियां री आगती उतावळी कौतग भरी आंखियां नीचे लाग री है। शेखर रो मन एक ध्यान व्हे दूजा ई लोक में पूग गियो। जागती जोत री वंदणा करवा लागियो। मन ई मन कियो, 'हे देवी अपराजिता, जो आज म्हारी जीत व्हे जावे तो थारो नाम ई ज सारथक व्हेला।'

बांकियो वाजियो। 'खम्मा खम्मा' करतो सारो दरबार ऊभो व्हेगियो। धोळी पोसाक धारण कीधां राजा उदैनारायण पधारिया, जांणे सरद रूत रो धोळो वादळो आयो। गादी पे बिराजिया।

पुण्डरीक उठिया, जाय गादी रे आगे ऊभा व्हिया।

सारो दरबार चतराम री पूतळी ज्यूं ऊभो।

लंवे चौड़े दाटक पुण्डरीक, छाती चौड़ी कर, गावड़ ऊंची कर गहर गंभीर साद में राजा री स्तुति बोलवा लागियो। कंठ सुर तो म्हेलां में मावै नीं।

जांणे समंदर गरजना करवा लागो । म्हेलां री भींतां, थांभा, छाजा हालवा लागिया । सुणवावाळा रा काळजा री खिड़कियां थर थर धूजवा लागी । कवि रा कौसळ रो कांई कैवणो कांई तो उणांरी जुगतियां है, कांई कैणे रो ढंग है । कांई कविता में सगती है । उदैनारायण नाम री कतरी तरै रो तो वां व्याख्या कर दीवो । राजा रा नाम रा आखरां रो कतरी आडी ने सूं, कतरी तरै सूं विन्यास कीधो । छन्दां रो अर यमकां रो तो कोई हिसाब ई नीं ।

पुण्डरीक कविता सुणाय जाय न आपरा आसण पे बैठिया थोड़ी देर तक तो म्हेल वां रा कंठ री प्रतधुनि सूं गूंजतो रियो । घणी देर तांई हजारां हिवड़ां रा, मुखड़ां सूं निकळी वाह वाही गूंजती री । दूरा दूरा देसां सूं आयोड़ा विद्वान, पिंडत, हाथ ऊंचा कर कर 'रंग हे, रग है थनैं,' करवा लागिया ।

राजा, शेखर रा मूंडा साम्हा चोघिया । शेखर ई राजा साम्हा देखियो, नजर में भगती, नेह, अरमान भरियो पण सागे ई संकोच अर गरीबाई ही । धीरे करो उठियो ।

भगवान रामचंदरजी प्रजा ने राजी राखवा ने सीताजी ने दूजी दांण अगनी परिक्षा देवा ने कियो जदी सीता ई पति रा मूंडा कानी देखती यूं ई ज रामजी रा सिंघासण मूंडागे उभी व्ही ।

. कवि री चोज भरी नजर राजा ने केय री ही, 'म्हूं थांरो ई ज हूं । थां जे दुनिया आगे ऊभो राख न परीक्षा लेणी चाणो तो लो थांरी मरजी । पग.......' पछे आंखियां नीची कर लीधी ।

पुण्डरीक तो ऊभो हो सोनेरी न्हार री नांई । शेखर ऊभो सिकारियां सूं घिरियोड़ी हिरणी री नांई । शेखर मोट्यारडो छोरो । लुगायां जेड़ी थोड़ी थोड़ी लाज़, नेह भरियोड़ो, कंवलो रूपाळो मूंडो । पीळा रंग रा गाल । सरीर रो लळ-वळियो । यूं लागे जांणे भावना रे अड़तां ई इण री देह वीणां रा तारां री नांई कांप न वाजवा लाग जाय ।

शेखर मूंडो ऊंचो कर न घणांई मीठा मीठा वोलवा लागिया । पैलड़ो स्लोक तो पूरी तरै सगळा सूं सुणिजियो ई नीं । पछे माथो धीरे धीरे ऊंचो कीधो, जठी ने नजर न्हांकी वटा सूं सारा लोगां ने, म्हेलां री भाटां री भींता ने चीरतो, छेटी घणी छेटी अतीत में जाय नजर पूगी ।

मोटियारड़ा कवि रो मीठो, साफ, कंठ सुर कांपतो कांपतो वासदी री सुनैरी झांळ नांई ऊंचो जावा लागियो । पैलां तो वां राजा रा चंद वंस रा वडाउवां रा विड़द वखाणियां । पछे धीरे धीरे कजाणां कतरां ई जुद्धां रा झगड़ां रा, सूरता

रा पराक्रम रा, जग्य रा, दान रा, अनुस्ठानां वखाण करता करता यां राजा रा जमाना री वात पे उतरिया। कवि बीतियोड़ा जमाना री जूनी याददास्त में उळजियोड़ी नजर ने अरमी खेंच राजा रा मूंडा पे जमाई। अवे वे राजा री, समसत प्रजा री भावना रो अर प्रीत रो रूपक बांधवा लागिया। प्रजा री उण प्रीत रो वखांण करवा लागिया जो हिवड़ा में हिलोळा ले अर जीभ सूं समझावणी नीं आवे। उण अणकत्थ प्रीत रो सबदां सूं अर छंदा सूं वो ठाठदार वरणन कीधो जांणे वा मूरती व्हेय सभा रे बीचे मूंडागे आय ऊभी रेगी। यूं लागवा लागो जांणे वा लाख लोगां रा हिवड़ा मूं निकळ, दौड़ दौड़, यां जूना म्हेलां सूं बाथां भर भर मिल री है। म्हेलां रा एक एक भाटा ने, एक एक ईंट ने छाती रे लगाय री है, लाड कर री है। ए, वा ऊपरे उडी, रावळा रा झरोखा, गोखड़ा में पूगी। राजलक्ष्मी जसी म्हेलां री लछमियां रा चरणां में नेह भरिया, भगती भाव सूं लोट पोट व्हेगी वा प्रीत पाछी आई, राजा रे, राजा री गादी रे आणंद सूं उछळती परकम्मा देवा लागी। पछे कवि बोलियो 'पिरथीनाथ, वाक्यां में, बोलवा में म्हूं हार सकूं पण भगती में म्हनें कुण हराय सके?' यूं कैय धूजता लगा आप री जगां आय बैठ गियो।

परजा रा लोग जळजळी आंखिया सूं, गळगळा गळा सूं 'वाह वाह' करवा लागिया। पुण्डरीक हंसिया, जांणे वे धिरकार रिया व्हे। जनता री भावना री बेकदरी करता पाछा ऊभा व्हिया अर गरब सूं गरजना करता बोलिया 'वाक्य सूं वढकर और है ई कुण?'

सब जणां छानामाना व्हेगिया।

पुण्डरीक अनेकानेक छंद बोलवा लागिया, वां री पिड़ताई बतावा लागिया, वेद वेदांत अर आगम-निगमां सूं परमाण देवा लागिया 'संसार में सब सूं श्रेष्ठ वाक्य है। वाक्य ई ज सत्य है, वाक्य ई ज ब्रह्म है। तीन ई देवता, ब्रह्मा, विष्णु महेस वाक्य रा वस में है ईं वास्ते वाक्य वां सूं ई ऊंचो है। ब्रह्माजी रे चार मूंडा है, तो ई वांसूं सगळा पूरा वाक्य नीं कैवणी आया। पंचानण के पांच मूंडा व्हेता थकां ई वाक्यां रो अंत नीं पायो जो छानामाना व्हे, ध्यान में लीन व्हेय वाक्य सोध रिया है।'

ईं तरे पिंडताई पे पिंडताई वताय, सास्त्रां पे सास्त्रां रो ढिगलो लगाय, वाक्य ने बैठा वा ने एक आभा तांई ऊंचो सिंघासण जमाय दीधो। यूं पुण्डरीकजी वाक्य ने मिरत्युलोक अर देवलोक रा माथा पे जाय बैठायो। पछे बीजळी री नांई कड़क न पूछियो—'वाक्य सूं वत्तो कुण है, वताओ?'

पुण्डरीकजी गरब सूं चारूं पासे देखियो। सगळा चुप। कोई जवाब नीं।

वे धीरे धीरे जाय आपरा आसण पे बैठ गिया। पिंडत लोग 'धन्न धन्न' कैवा लागिया। राजा अचंभा सूं देखता रैगिया। कवि शेखर इण ग्यान रा सागर आगे आपने नाडूलियो समझ लीवो। दरीखानो बरखास्त व्हियो।

[३]

दूजे दिन कवि शेखर आय कविता गावा लागा। विंदरावन में पेल परथम बंसी बाजी तो गोपियां ने खबर ई नीं पड़ी के कुण वजाय रियो है, कठे बाज री है। एकदांण लागियो जांणे दिखणांद रा वायरा में बाज री है, दूजे निमख लागियो जांणे उत्तराद रा वायरा में गोरधन परबत पे बंसी री धुन आय री है। यूं लागियो जांणे उदयाचळ पे ऊभो कोई मिलवाने बुलाय रियो है, पछे लागियो अस्ताचळ रा खूणा पे बैठियो कोई विजोग रा दुख सूं रोय रियो है। पछे यूं लागवा लागियो जमना री ल्हैर ल्हैर सूं बंसी री धुन आय री है। आकास रो एक एक तारो बंसी रो बेजको है। कुंज कुंज में, गैला घाटा में, फूल फूल में, जळ थळ में, ऊंचे नीचे, मांयने बारणे, रज रज में बांसरी बाजवा लागी। बंसी कांई कैय री है या ई कोई नीं समझियो, बंसी रे पडूत्तर में हिवड़ो कांई कैवणो चावै जो ई किण सूं ई तै नीं करणी आयो। खाली दोई आंखियां में आंसू भर आया अर अलोक श्यामसुन्दर रा मिलण री वांछा सूं हिड़दा हुलसाय गिया।

कवि शेखर सभा ने भूल गियो, राजा ने भूल गियो, आप ने भूल गियो, अगला ने भूल गियो। जस अपजस, हार जीत, उत्तर पडूत्तर, सब ने भूल आपणी निरजण हिवड़ा री बाड़ी में अकेलो ऊभो ऊभो वीं बंसी रो गीत गावतो ई गियो। उणां ने तो याद री बस एक जागती जोत मनड़ा में बसियोड़ी मूर्ति, उणां रा काना में खाली उण रा चरणारविंदा रा रमझोळा रा घूघरां री झमक बाज री ही।

कवि शेखर जद आप रा गीत ने संपूरण कर बारळा ग्यान सूं सूना व्हे आप री जायगां बैठा तो एक एड़ा मीठास सूं आकास भरगियो के कैवणी नीं आवे। विरह री व्याकुळता सूं म्हेल, दरीखानो एड़ा भरीज गिया के किणि रा मूंडा सूं 'वाह वाह' तक नीं निकळियो।

भावां रो जोर सीळो पड़ियां पछे पुण्डरीक जाय राजा री गादी आगे ऊभा व्हिया। पूछियो 'कुण राधा है अर कुण क्रस्ण है?' कैय न चारूं आडी ने नाळिया, चेला चांटियो साम्हा झांक न मुळकिया। मुळक न पाछो पूछियो 'कुण राधा है अर कुण क्रस्ण है?' अर अबै आप री जबरजस्त पिंडतांई बताता लगा आप ई पडूत्तर देवा लागा।

केवा लागा, 'राधा प्रणव है, ओंकार है; कृष्ण धियान है, जोग है; ब्रंदावन दोई भूंवारा बीचलो बिंदु है। पछे तो इड़ा सुसमना पिंगळा, नाभिपदम, हृदपदम, ब्रह्मरंध्र सगळां ने लायां पटकिया। 'रा' रो अरथ कांई र 'धा' रो कांई, क्रस्ण सब्द रा 'क' सूं लगाय 'ण' तक आखरां रा जतरी तरै रा न्यारा न्यारा अरथ निकळता, वां सगळां री मीमांसा कर न मेल दीधी। एक दांण समझाया, क्रस्ण वेद है अर राधा खट दरसण, दूजी दांण समझाया, कृस्ण जग्य है राधा अगनी है; तीजी दांण अरथायो क्रस्ण शिक्षा है राधा दीक्षा है, राधा तरक है तो कृष्ण मीमांसा है; राधा उत्तर पड्तर है अर क्रस्ण जय लाभ है।

यूं अरथाय पुण्डरीक राजा साम्हा झांकिया, पिंडता साम्हां झांकियां, जोर री ठट्ठो लगाय शेखर साम्हा झांक न गरब रे साथे आप री जायगा जाय न बैठ गिया।

पुण्डरीक री इण गजब री सगती पै राजा झूम गिया पिंडतां रे अचरज रो चांको नीं रियो। राधा क्रस्ण री नुवी, नुवी व्याख्या, बंसी री धुन, जमना री ल्हेरां अर प्रीत रा मोह ने अळगा काट न फैंक दीधा, जांणे वसंत रा रंग सूं रंगियोड़ी पिरथी परळा हरिया रंग ने पूंछ न कोई गाय रा पवित्तर गोबर सूं लींप दीधो व्हे। अतरा दिनां रा अवेर अवेर न राखियोड़ा गीतां ने शेखर अवरथा समझवा लागिया। ईंरा पछे तो वां में गीत गावा री सामरथ ई नीं री। उण दिन री सभा समापत व्ही।

[४]

दूजे दिन पुण्डरीकजी पाछी व्यस्त, समस्त, द्विव्यस्त, द्विसमस्त, वृत्त, तार्क्ष्य, सौत्र्य, चक्र, पदम, काकपद आद्युत्तर, मध्योत्तर, अंतोत्तर, वाक्योत्तर, स्लोकोत्तर वचनगुप्त, मात्राच्युतक, च्युतदत्ताक्षर, अर्थगूढ, स्तुतिनिंदा, अपह्नुति, शुद्धापभ्रंश, शाब्दी, काळसार, प्रहेलिका, वगैरा वगैरा सब्दां रा नाम ले ले ऐड़ी अदभुत चतराई वताई के सभा रा मिनखां अचंभा सूं दांते आंगळी देय दीवी।

शेखर री कवितां तो घणी सरळ, समझवा में कोरी व्हेती। वीं री कविता ने तो मिनख, राजी व्हेता तो गावता, वेराजी व्हेता तो गावता। खुसी रा मौकां पै गावता, आणंद उच्छबां में गावता। आज मिनखां परतख देख लीधो के शेखर री कविता में एड़ी कांई खास सिफ्त नीं, एड़ी तो वे चावे तो वे ई बणायले। कविता बणाणे री कोसिस नीं कीधी वां अभ्यास कोनी ज्यू, मौको मिले तो वे ई बणायले एड़ी तो। कांई दोरी थोड़ी है, कोई नुवी वातां ई उणां में नीं। शेखर री कविता सूं नीं तो लोगां ने कोई नुवी सीख ई मिले नीं कांई फायदो ई है। पण आज जो पुण्डरीकजी सूं सुणियो वो तो अलभ है, कदी सुणियो ई नीं। काले जो वातां

सुणी उणां में घणी सीख मिले, नरी वातां तो सोचवा विचारवा री है। दूरा देस रा पुण्डरीक री पिंडताई अर ग्यान रे आगे वां ने घर रो कवि शेखर बिलकुल टाबर अर फोरो पातळो लागवा लागियो। घर रा जोगी जोगड़ा, बार गांमरा सिद्ध।

मांछळी री पूंछ हालवा सूं पाणी रे मांयने जो हिलोळ पैदा व्हे उणां री टक्करां री सरोवर मांयला कंवळ रा फूलां ने बेरो पड़े ज्यूं शेखर ई मांयला मन में समझ रियो के एड़ेमेड़े बैठियो लोगबाग उण रे वास्ते कांई सोच रियो है।

आज आखरी दिन है। आज ई हारजीत रो फैसलो व्हेला। राजा कवि रे मूंडा साम्हा झांकिया। जिण रो मतलब यो हो के, 'आज चुप बैठियां काम नीं चालवा ने है, जीतवाने पूरो जोर लगा।'

शेखर सभा रा एक खूणां सूं ऊभा व्हिया। खाली ये ई बोल निकळिया, 'ऐ वीणापांणि सुरसती, कमळ वन ने सूनो कर जै थूं ई मल्लजुद्ध रा अखाड़ा में आय ऊभी रै ई तो हे देवि, थारा चरणां रा चाकरां री, भगतां री जो अमरत रा तिरसाया है उणां री कांई गत व्हेला ?

शेखर यां लफजां ने मूंडो थोड़ो ऊंचो कर घणां ई ज करुणा सूं बोलियो। बोलणे रो लेहजो एड़ो हो जांणे वीणापाणी सुरसती रावळा रा झरोखा में साख्यात ऊभी व्हे।

सुणतां ई पैला तो पुण्डरीक खूब हंसिया। पछे 'शेखर' लफज रा पाछला दो आखरां पै धड़ाधड़ स्लोक बोलता गिया। कैवा लागा, कंवळ वन रे लारे 'खर' रो कांई मेळ ? संगीत री अतरी महैमा गाई पण वीं मिनख लाभ कांई उठायो। सुरसती रो वासो तो पुण्डरीक (धोळा कंवळ) में ई ज व्हे। रावळा राज में सुरसती एड़ो कांई कसूर कीधो जो खर रो वाहण देय उण रो अपमाण करियो ? या जुगती सुण सगळा ई पिंडत हंसवा लाग गिया। सारो दरबार ई इण हंसी में सामिळ व्हे गियो। वां री देखा देखी, सगळो लोग ई हंसवा लाग गियो। समझिया वै ई हंसवा लागा, नीं समझिया वे ई हंसवा लागा।

इण कटाक्ष रो मौजूं पडूत्तर देवा ने राजा आप रा कवि रे आंख री आंगछ कतरी दांण चुभाई पण शेखर रे तो अड़ी ई नीं। वो कजांणां कांई धियान में डूबियोड़ो, उण ने खबर ई नीं पड़ी, पखाण ज्यूं बैठियो रियो। राजा मन में घणा बेराजी व्हिया। वे गादी सूं उठिया, गळा मांयने सूं मोतियां री माळा खोल पुण्डरीकजी रे कंठ में पैराय दीधी। सभा रो लोग 'धन्न है धन्न' बोल उठियो। रावळा मांयने एक साथे कतरी चूड़ियां रो खणकारो र नेवरियां रो झणकारो सुणीजियो। सुण न शेखर उठिया, धीरे धीरे दरीखाना वांरै निकळ गिया।

[५]

काळी चवदस री रात। चारूं कांनी अंधारो। फूलां री खसबोई सूं भीनो दिखणाद रो पवन, समदृस्टी दातार री नांई गोखडां सूं नगर रा घर घर में वळ रियो।

शेखर पांटा परळी सेंग पोथियां नीचे उतार मेल दीधी। मूंडागे उणां रो ढिगलो कर दीधो टाळ टाळ आपरी मांडियोड़ी पोथियां ने न्यारी कीधी। नराई दिनां पैलां री मांडियोड़ी घणी सारी पोथियां ही, वां मांयली घणी खरी कवितां ने तो वे भूल ई गिया हा। वां ने उळट पुळट, अठी नूं वठी नूं वांच न देखवा लागिया। आज उणां ने वे सारी कविता, गीत, बिलकुल तुच्छ लागिया। एक लांबो नीसासो भर न बोलिया, 'आखी उमर री या ई ज कमाई है। थोड़ाक छंद, र लफज, थोड़ीक वैणसगाई, बस।'

आज उणां ने आपरी रचना में नीं तो रूप निजर आयो नीं रस निजर आयो। नीं हिवड़ा हुळसावणियो आणंद ई दीस्यो। मांदा मिनख ने धान नी भावे मूंडा में कूवो मैलतां ई उबकाई आवे ज्यूं ई आज शेखर रे हाथ कनें जो वसत आई अळगी वगाता रिया। राजा री मित्तरता, नामवरी, हिवड़ा रो हुलास, कल्पना रा सुरंग रंग, सब कुछ आज री इण काळी रात में बिना सार रा लाग-रिया, जांणे हँसी कर उणां ने चिड़ाय रिया है। एक एक कर आपरी सारी पोथियां ने मूंडागे बळती सिगड़ी में न्हाकवा लागिया।

अचाणचक उणां ने एक कोगत री बात याद आयगी। हंसता हंसता बोलिया, 'बड़ा बड़ा राजा माराजा अस्वमेध रो जग्य करवो करता, आज म्हारो यो काव्यमेध रो जग्य है।' तुरंत विचार आयो, या ओपमा ठीक नी बैठी। अश्वमेध रो घोड़ो तो सब जगां सूं जीत न आवतो जदी अश्वमेध व्हैतो, अरं म्हूं तो जिण दिन म्हारो कविपणो हारियो उणी दिन काव्यमेध करवा ने बैठियो हूं। इण सूं पैलां कर न्हाकतो तो चोखो रेवतो।'

शेखर तो एक एक कर आपरी सगळी पोथियां अगनदेव रे चढ़ाय दीवी। वासदी री ऊंची ऊंची झाळां निकलवा लागी तो कवि रीता हाथां ने पटकता बोलियो 'देय दीधो देय दीधो। देय दीधो थनें देय दीधो थनें। रूपाळी झाळ, सब कुछ थारे अरपण कर दीधो। अतरा वरसां सूं थनें ई ज म्हारा सर्वस्व री आहुती देतो रियो, आज बिलकुल खतम व्हेगियो हूं। घणां दिनां सूं थूं म्हारे काळजा में सुलग री ही। मोवनी, जो म्हूं सोनो व्हैतो तो तप न कुंदन व्हेगियो व्हेतो पण म्हूं तो तुरकलियो हूं तुरकलियो जो बळ न भसम व्हेरियो हूं।'

आधी रात ढळ री ही। मांझल रात रा सणणाटां में शेखर उठिया।

घर री सैंग खिड़कियां, वारियां चौपट खोल दीधी। सौक रा फूल सांझ रा ई वाड़ी सूं चूंट न ले आया हा। सैग धोळा फूल हा, मोगरो, जूही, चांदणी। मुट्ठियां भर न फूलां ने ऊजळा धोळा झक्क विछावणां पूं बिखेर दीधा। घर में चौपासे दीवा जोय दीधा। विख री गांदळ ने सहद में मिलाय गिट गिया। मूंडा पे चिंता फिकर री कोई रेखड़ी नीं। धीरे धीरे जाय उण ढोलिया माथे सोयगिया। डील ठंडो पड़वा लागियो, आंखियां मींचवा लागी।

अतराक में घूघरा बाजिया। वायरा रे लारे केसगंध आई।

आंखियां मींचिया मींचिया ई कवि बड़वड़ायो 'देवी, चाकर पे दया कीधी कांई। अतरा वरसां सूं आज दरसण देवा आई हो।' एक मीठो सो साद कानां में पड़ियो, 'कवि, म्हूं आयगी।' शेखर चमक न आंख खोली, निजरिया रे आगे रंभा जेड़ा रूपवाळी अस्तरी ऊभी।'

काळ छायोड़ी, आंखियां सूं सावळ सूझियो नीं। जाणियो मन में बसियोड़ी मूरती री छाया है। वा वारे निकळ आई है जो अंत रे वगत आंख गडाय उणने देख री है।

पदमण बोली 'म्हूं अपराजिता हूं, राजकंवरी।'

शेखर घणो दोरो किया ई ऊठ न बैठो व्हियो।

कंवरी कियो "राजा सूं थारी जीत हार रो अद्दल न्याव नीं करणी आयो। जीत थांरी व्ही है। इण सारूं थांने जैमाळा पैरावने आई हूं।

यूं केतां ई अपराजिता, आपरे हाथ री गूंथियोड़ी माळा आपरा गळा सूं उतार शेखर रा गळा में पैराय दीधी।

कवि रे दोळूं तो काळ फिरगियो हो ढोलिया माथे ढळगियो।

●

भूखा पाखांण

म्हूं म्हारा एक सगतीका रै सारै दुरगापूजा री छुटीयां में देसाटण कर न पाछो कलकत्ते आयरियो हो। रेल में एक जणा सूं मिलणो व्हेगियो अर वांसूं वातां रा फटकारा लागवा लागिया। वां रो पैरावो देख न पैलां तो म्हैं वैम व्हियो के वे सिख्खी रा मुसलमान होसी। पछै वां री वातां सुण सुण न तो मरमजाळ में फंसतो ई गियो। दुनिया रा एक एक मामला में वे यूं वात करता जाणे दुनियां ने चलावणियो परमातमा वां ने पूछ पूछ नीं पे काम करतो व्हे। वे केवा लागा, जगत में मांयनै ई मांयनै असी असी मेरपी वातां व्हैरी है जो आपां नौं तो देखी हां नीं सुणी हा। रूस रा मिनखां इतरी तरक्की कर लीवी है, अंगरेज छाने छाने कांई गुप्त कर रिया है। देसी रजवाड़ा में कनांणी कांई कांई व्हैयरिया है। आपां ने कांई ठा है न ठकाणो, नचींता पड़िया घोर खैंचरियां हां। पछै मुळकता थका बोलिया। There happen more things in heaven and earth, Horatio, than are reported in newspapers." मतलब यो के 'होरेशिओ, थांरा वां अखबार में छपणवाळी खबरां सूं मोकळा वत्ता वाका ई धरती पे र आकास में व्हैबो करे।'

वात या ही के म्हां घर सूं पैली दांण अवकाळे बारै निकळ्या हा। म्हां तो वांरी वातां सुण न वांरो ढाळो देख न चकचमान व्हैगिया। वे तो फिरधीनाय छोक छोक वात पे कदी विग्यान री कदी वेदां री अर कदी फारसी रा वैतां री झड़ी लगाय देवता के म्हारी अकल चकरावणी। वेद, विग्यान अर फारसी दोनी में म्हैं तो कांई समझता तो हा नीं म्हारी श्रद्धा वां पे वधती गी। म्हारा वेली रो

थियोसोफी जांगवावाळा हा वां रा तो मन में ठुकगी के यो कोई न कोई करामात जरूर जांणै । भलांई मेगनेटिजम जांणो भलांई देव माया, योग विद्या के भूतपरेत विद्या जांणतो व्हो, पण कांई न कांई एड़ी कोई विद्या जांणे जरूर है । वे वीं गजब रा मिनख री वात ने एड़ा एकचित्त व्हेन सुणरिया हा के वारळो वां ने कांई चेतो ई नीं हो । सागै ई म्हारी आंख टोळाय न वांरी कोई कोई वात ने मांडता ई जाय रिया हा । वीं गजबी ने ई ठा पड़गी ही अर वो मनोमन राजी व्हेयरियो हो ।

रेल आय न जंकसन पै ऊभी री, म्हां दूजी गाड़ी री वाट नाळता वेटिंग रूम में आय ने बैठ्या । रात रा कोई साढाक दस वज्या होसी । ठा लागी के गैला में खोटमाळी व्हेगी जो गाड़ी मोड़ी पूगेला । म्हें मेज माथै विछाणो ऊरळो कर न सोवा री कररियो हो जतराक में वीं गजबी आदमी एक सुंवावणो दासतान छेड़ दीधो के सैंग रात किनें ई नींद ई नीं आई ।

वे कैवा लागा,

राज काज रा काम में किमत्तो मेळ नीं खाधो जो म्हूं जूनागढ़ रो काम छोड़ न हैदराबाद राज में परोगियो । वां म्हने जुवान अर जोरदार आदमी देख भड़ोच में रूई री डांण पै डांणी वणाय दीवो ।

भड़ोच घणी रळियावणी जायगा । निरजण मंगरिया रे हेटे कांकड़ में सुस्ता नंदी वैवे । संस्कृत रा 'स्वच्छतोया' नाम बगड़ ने सुस्ता व्हगियो । वा सुस्ता मंगरिया मांयनू खळ खळ करती, चक्कर खाती, पैंड पैंड पै बांकी तिरछी व्हेती, चतर नाचवा वाळी ज्यूं नाचती गी है । वीं नंदी रै कनारे मकराणा रा भाटा रो एक मोटो म्हेल वणियोड़ो हो । कोई ढोढसोक पैड़ियां ऊंचो चढ़णो पड़ै । ऊपरे जाय न वो म्हेल अकेलो ऊभो हो, आड़े पाड़े कोर मनख रो जायो नीं, घर रो नाम नीं । भड़ोच री रूई री मंडी वठा सूं नरी दूरी ही ।

कोई अढाई सौ वरसां पैलां दूजे मैमूद साह आपरे रंग राग, सुख विलसवा ने, एकमाड़ी जायगा देख ईं म्हेल ने वणायो हो । कोई जुग में ईं रां सिनानघरां में गुलाबजल रा फूंवारा चालता हा । सिनान घरां में मकराणां रीं सूंवाळी सिलाड़ियां माथै, ईरान देस री, जोवन छाई गुललंजा वैठी रैवती । वठा रा निरमल पांणी में कंवळा पगां ने उघाड़ पसार न वैठती । सिनान करवा सूं पैला काळा काळा लांवा लांवा घूंघराळा केसां ने विखेर, गोद मांय नें सितार मेल न दाखां री वेलड़ियां नांई झूम झूम न गजलां गावती ।

अबै वे फूंवारा नीं चाले, गजलां ई नीं गवीजे, नीं पैलां री नांई धोळा, ऊजळा मकराणा पै जोवन छाई गोरड़ियां रा गोरा गोरा कंवळा पग ई मेलीजे । अबै तो वो म्हेल म्हां जस्या चूंगी कलक्टरां रे रैवा सारू लांवो चौड़ो, रीतो ढीबो

पड़ियो है। दफतर रे बूढ़ै अेलकार करीमखां म्हने वठै रैवा न वरजियो। वीं कियो, आपरी मरजी है तो दिने दिने भले ई रैवो पण रात पड़ियां वठै कदी मत रैवजो' वीं री वात ने म्हें रोळ में उड़ाय दीवी। दूजा नौकर चाकर तो साफ नन्नो भण गिया संझा तांई वठै काम कर लेवां पण रात ने तो रेवां ई ज नीं। म्हें कियो ठीक। वात या ही के वीं म्हेल री अतरी हवा उड़गी ही के रात ने तो चोर ई पग नी देवता।

पैलपोत जद वीं म्हेल में पग मेल्यो तो बठा रो सणणाटो अजगर सांप री नांई म्हारी छाती पै जम न बैठगियो। म्हूं तो घणो खरो बारै ई ज रैवतो। काम सूं थाक न आवतो। आवतो ई सोय जावतो।

एक अठवाड़ो व्हीयो व्हेला न वीं म्हेल रो एक अजब नसो धीरे धीरे म्हारा मन पै चढ़वा लागो। म्हारा मन री जो गत व्ही वीं ने कैवणो ई दौरो है, वीं वात पै किण ने भरोसो करावणो तो और ई दौरो है।

ऊनाळा री रूत ही। रूई रो वैपार मंदो हो, म्हारा कनें कोई एड़ो काम ई नीं हो। दिन आंथियां री वेळा, नंदी रे कनारे घाट माथै नीचे पगथ्या पै म्हूं आराम कुरसी पे वैठ्यो, विसराम कर रियो हो। जां दिनां नंदी में पांणी घणो नीं हो। परलो कनारो, नंदी रो सूखो रेतरड़ो आंथमता सूरज भगवान री किरणां सूं रंगीज गियो हो। अठीले कनारे घाट रा पगथ्यां नीचे निथरियोड़ो ओछो पांणी हो जीं में गोळ गोळ लोडियां चमक री ही। वायरा रो नाम नीं पानड़ो तक नीं हालरियो हो। मंगरिया परळा जंगल मांयनू अड़क तुळसां री, वरीयाळी री खसवोई आपरी ही। खसवोई सूं तरावट आय गी ही।

सूरज मंगरा रा टूंचका रे लारे छिपगियो तो जांणे दिन री रंगसाळा में पड़दो पड़ गियो। वीं जायगा मँगरा वीचै आयगिया जो सूरज आंथती वेळा ऊजाळो व्हे जो अर अंधारा रो मेळ घणी देर तांई नीं ठेरे। घोड़ा पे चढ़ न स्हेल करवा ने जावा सारूं ऊठ ई ज रियो हो। अतराक में तो म्हने घणां जणां रा एक लारै पग वाजता सुणीज्या। पाछो फिर न नांळ्‌ तो कोई नी दीख्यो।

कानां ने भरम व्हेगियो दीखे। पाछो फिर न बैठो तो पाछा वे ई ज पग वाजता सुणीज्या। यूं लागियो जांणै सेहलियां रो झूमको झमझम करतो नीचे उतर रियो व्हे। कि तो मन में संका व्ही पण एक अनोखा आणंद री ल्हेर म्हारी रग रग में भरगी। म्हने आंखियां सूं तो कोई दीख नीं रियो हो पण म्हने साफ साफ लागरियो के ऊनाळा री वीं संझया वेळा में अचपळी कामणियां रो झूलरो नंदी रा पांणी में न्हावा ने जाय रियो है। वीं वगत डूंगरा रे नीचे, नंदी रे कनारा माथे, वां सूना म्हेल में कोई पान खड़कवा तक री आवाज नीं ही कठै

ई। पण व्हैं सागेसाग सुणियो के झरणां रा मधरा मधरा खळखळाटा री नांई कौतक भरी हंसती थकी, सिनान करवा वाळियां, एक दूजी रे लारे भागती थकी बिलकुल म्हारे पसवाड़े, व्हेन निकळगी। म्हारा आडी ने कोई चोघी तक नीं। जांणे वे म्हने नीं दीखे पण म्हूं वां ने दीखूं। नंदी पैला री नांई सांत ही। पण म्हूं सागैसाग म्हारी आंखियां रे आगे देखवा लाग्यो के सुस्ता नंदी री ओछा पांणी री धार एकणदम घणी सारी चूड़ियां बाजती बांहियां सूं हिलावणी आयगी। वे साथणियां हँस हँस न एक दूजी पे पांणी उछाळ री। तिरवा वाळियां रा पगां सूं उछळ उछळ न पांणी री बूंदा मोतियां री नांई आकस में बिखर री।

म्हारो हिवड़ो हाल गियो राम जांणे डरपता थकां रो के आणंद सूं। म्हारो मांयलो मन कर रियो के यांने भली भांत देखूं। पण देखवा ने कांई हो ई नीं। पछे मन में आई कान देय न सुणूं तो यां री वातां सुणीजेला। चित्त एक जगा कर घणो ई कान दीधो पण खाली भींभरी रो झणकारो सुणीज्यो। म्हने लागवा लागियो अढाई सौ वरसां पैलां रो काळो पड़दो म्हारे आगे ई ज लटक रियो है।

म्हें डरपते डरपते वीं रो थोड़ोक खूंणो पकड़ न मांयने झांकियो। कदाच मांयने मैफिल जम री व्हेला। पण वीं घोर अंधारा में कांई नीं सूझचो।

अतराक में अमूजा ने मेटतो खूब जोर रो वायरो वाज्यो। सुस्ता रो थिर पांणी अपछरां रा घूंघराळा केसां री नांई भेळो व्हे गियो। संझया री छाया सूं छायोड़ी सारी वनराजि जांणे, सपनो देखती जागगी। सांच मानो भलां ई सपनो जांणो, म्हारा मूंडागे अढाई सौ बरसां पैलां रा चित्तराम सीकोट ज्यूं मंडगिया हा वे एक पल में मटगिया। वे मायावणी गोरड़ियां जाबक म्हारे भड़े व्हे न निकळी ही, जांरे देही तो नीं ही पण सांतरी सांतरी चाल री ही। सबद तो नीं हो पण खलखलाय न हंसती, दौड़ती भागती सुस्ता नंदी में जळकेळ कर री ही वे पाछी गाबा निचोय न म्हारे कने व्हेय न नीं निकळी। वायरो खसबोई ने उड़ायन परी ले जावे ज्यूं वे ई बसंत रा एक नीसासा सागै उड न कजांणा कठै ई परी गी। अबे म्हारा मन में संका आई के कठै ई म्हने एकलो देख न कविता देवी तो आपरो वाहण नीं वणाय री है। म्हूं वापड़ो रूई रो डांण वसूल कर न आपरो गुदरांण करूं। कठै ई वा सत्यानासणी म्हारो नास करवा तो नीं आयंगी है।

विचारचो खाली पेट अस्या उदमाद उठवो करे। खूब पेट भर न खाय न सोय जांवणो आंपांरे। वीं ज वगत म्हें म्हारा खानसामा ने बुलाय न खूब घी मसाला न्हाक 'मुगली खाणो' वणावा रो हुकम दीधो।

दूजे दिन, रात रीं वातां हांसाखेल री लाग री ही। खाय पीय राजी राजी

सा'व री नांई टोप, कोट पैर न, टम टम चलावतो काम पै परो गियो। वीं दिन म्हनें तिमाही रिपोट लिखणी ही, जो मोड़ा घरे आवा री ही। दिन ढळतां ढळतां तो जांणे म्हनें कोई घर कानी खैंचवा लागो। कूण खैंचरियो ठा नीं पड़ी पण जीव ताड़ातोड़ी करवा लागो के घरे परा चालां, वे सगळी वैठी व्हेला।' रिपोट ने आधी ने ईं छोड़ म्हूं तो टोप उठाय न रूंखारी छाया सूं छायोड़ा गैला पे, टमटम रो घोड़ो हाक दीधो। कवेळो वगत ही, मंगरा वाळा, अंधारा, सुनसान ढीवो पड़िया म्हेलां रो गैलो लीधो।

पगथ्या चढतांई साम्हलो दीवाणखानो मोटो सारो हो। वीं में मोटामोटा ढीगाडीगा थांवा री तीन ओळां ही। वां रा कवांणा पे लदाव री छात ही। छात माथे चित्तराम हा जो देखवा जोग हा। वो लांवो चौड़ो दिवाणखानो रीतो पड़ियो जो दिन में ई खांऊखांऊ करतो। उण दिन संभ्या रा दीवो नीं बाळयो हो। आडा ने धक्को देय खोल न ज्यूं म्हूं मांयने वळियो वठे तो एकणदम भागा दौड़ी माचगी। यूं लाग्यो जांणे मैंफिल भांग ने सगळी भाग री है। बारणो दीख्यो तो बारणो, वारी दीखी तो वारी जठी ने गैलो दीख्यो वठी ने ई दौड़गी। दूजे ई पल वो रो वो सुनसान। वठै किने ई नीं देख न म्हूं चकतमान व्हेगियो। म्हारो रूं रूं ऊभो व्हेगियो। जूना तेल फुलेल अर बौमोला अतर री मधरी मधरी वासना म्हारा नाक में वळवा लागी। वीं अंधारा सूना म्हेल में, धोळा भाटा रा थांवां वीचे म्हूं ऊभो ऊभो सुणरियो झर झर करता फूंवारा रो पाणी धोळा भाटां पैं पड़रियो है। कठी ने ई घूघरा वाजरिया, कदी सोना रा गैणां रो झणकार वाजतो, कदे ई जड़ाव रा गैणां री चमक दीखती। कदी राज दरबार री घड़ियाळ रा टकोरा सुणीजता, कदी दूरी नौबतखाना रो भणकारो सुणीजतो, वायरा सूं हालता, वल्लोरी कांच रा झाड़ फानूसां री टणटण सुणीजती। वारणे तिवारा पे बुलबुल गावती सुणीजती तो कदी वाग मांयने पाळघोड़ा सारसां रा बोल सुणीजती। जांणे एड़े मेड़े चारू-कानी भूतावळी जाग गी व्हे।

म्हनें तो चित्तभरम व्हेगियो। यूं दीखवा लागो जांणे जो म्हनें दीख नीं रियो है वो ई ज सांच है, वाकी रो जगत कूड़ है। म्हूं तो भूल गियो म्हनें ई जं, म्हनें यो ई चेतो नीं रियो के कांई म्हारो नाम है, म्हूं किरो वेटो हूं, साढा चार सौ रिपिया री तनखा वाळो डांण रो दरोगो हूं, रोजीना टमटम में चढ़ न कचैड़ी काम करवाने जावूं। म्हनें तो ये वातां वना हाथां पगां री झूठी लागवा लागी, जांणे हंसी री वातां व्हे। म्हूं तो वीं अंधारा सूना दरबार भवन में ऊभो यां वातां पे ठट्ठो मार न जोर सूं हंस्यो।

अतराक में म्हारो मुसलमान चपड़ासी घासलेट रो दीवो हाथ में लीधां

वळियो। वीं म्हनें चित्तभरम सोच्यो के नी पण वीं ज वगत म्हारो चित्त ठकाणे आयो के म्हूं कुण हूं किरो बेटो हूं। अबै म्हूं सोचवा लागो दुनियाँ में कठै ई आंख सूं नीं दीखणिया फूंवारा चाले है के नीं, आंगळियां दीखे तो नीं पण वां रा तणकारा सूं सितार रा तार वाजे है के नीं, ये वातां सांची है के भूठी वो तो भगवान ई जांणै पण म्हूं भड़ौचरी मंडी में रूई रो डांण वसूल करणियो हाकम हूं ईं में तो कोई फरक ई नीं, चौड़े धाड़े रो सांच है। दीवा आगे अखबार बांचतो जाय रियो न वीं मोहमाया री वातां ने चींतार चींतार हंसतो जाया रियो।

अखबार पढ़ मुगळीखाणो खाय न खूंणां मांयला छोटासाक कमरा मांयने दीवो बुभाय न सोयगियो। म्हारे आगे वारी खुली ही, अंधारा कांकड़ मांयली मंगरी मथारे एक दपदप करतो तारो, करोड़ा जोजना परै वैठ्यो, एक डांण रा डांणी ने खाट पै पड़्या ने देखिरियो हो। म्हूं वीं ने देखतो देखतो सोयगियो खबर नीं। कतरी देर सूतो रियो जो ई खबर नीं।

एकणदम ओझक न म्हूं जाग गियो। कमरा में कोई आयो व्हे ज्यूं पग वाज्या। अंधारा में मंगरी रे माथे तारो दमक रियो हो वो आंथ गियो हो, अंधारा पख री फीकी चांदणी वारी मांयने व्हेय न आय री पण विना हुकम आय री जो डरपन भेळी भेळी व्हेती जाय री।

म्हनें म्हारा कमरा में कोई दीख्यो तो नीं पण साख्यात म्हनें लाग्यो के कोई आय न कंवळो कंवळो हाथ अड़ायन म्हनें जगाय री है। म्हूं जाग गियो। दीख्यो मूंडा सूं वा कांई नीं वोली पण वींठीया सूं चमकती पांचू आंगळियां हिलाय म्हनें वीरे लारे लारे सावचेती सूं आवा ने कैयरी है।

म्हूं ई धीरेक रो उठ्यो, वीं मोटा म्हेल में जिमें सैकड़ा ओवरा ओवरी हा, कोई मिनख रो जायो नीं हो पण एक एक पग मेलतां म्हनें संको व्हेय रियो के कठै ई कोई जाग नी जावे। म्हेलां रा घणाखरा कमरा तो जड़्या पड़िया हा, म्हें कदी वां में पग ई नीं दीधो हो।

रात रा वीं अंधारा गुप्प में धीमा धीमा, पगलिया मेलतो, सांस ने रोक्यां, वीं अणदीखती बुलावावाळी रे लारे लारे म्हूं जाय रियो हो। कतरी अंधारी संकड़ी नाळां र सुरंगां में व्हेतो थको, कतरा ई लांवा चौड़ा तिवारा चौवारा में व्हेतो, कतरा ई सुनसान दरीखानां में व्हेतो थको, कतरी छोटी मोटी जड़ी पड़ी ओवरिया में व्हेतो थको कजांणा कठै कठै जाय रियो हो।

वा अणदीखती दूती आंख्या सूं तो नीं दीख री ही पण वीं री शकल मन ने अणदीखती नीं ही। ईरान देस री गुलन्नंजो ही। कपड़ा री ढीली ढीली वाहियां में वीं रा दूधिया रंग रा धोळा मकराणां जेड़ा करड़ा कंवळा, गोळ गोळ हाथ

दीख रिया हा। माथा पे लाल रंग रा मुखमल री टोपी ही वीं रा नीचे झीणां कपड़ा री नकाव ही जो वीं रा गोळ, गुलाबी मूंडा पे घणी ओप री ही। कमर पे एक रेसम रो फेंटो वंधियोड़ो हो जि में एक वांकड़ो कटारो खसोल राख्यो हो।

म्हें जांण्यो, 'अलिफ लैला' री हजार रातां मांयली एक रातड़ी परीलोक मूं उड न आयगी दीखे। मांझल रात रा अंधारा में मूती वगदाद रा विना दीवा री सांकड़ी गळियां में म्हूं जांणे अभिसार करवा ने निकळ्यो हूं।

लेजातां लेजातां म्हारी वा दूती एक गेरा लीला रंग रा पड़दा कनें जाय न एकणदम ऊभी रैगी, आंगळी ने नीची कर म्हने झांकवा रो इसारो कीवो। नीचे हो तो कांई नीं पण म्हारा काळजा रो लोही थीज गियो। म्हने साख्यात दीखवा लागो के पड़दा रे मूंडागे धरती माथे खीणखाब री पोसाक पैरयां, खोळा में नांगी तरवार लीधां, दोई पगां ने पसारयां एक डाकी रो डाकी काळोकट्ट हवसी खोजो वैठ्यो। म्हारी दूती अधर पग मेलती वीं रा पगां ने ऊलांग पड़दा कनें गी, धीरेकरो पड़दा रा एक खूंणां ने अरमो कीवो।

मांयलो थोड़ोक म्हनें झांको पड़ियो। म्हने दीख्यो, आंगणे फरस माथै फारस देस रो नामी दलीचो विछ्योड़ो है। तखत पै कुण वैठ्यो जो म्हनें सावळ नीं दीख्यो। खाली केसरियां रंग रो ढीलो ढालो पायजामो न पगां में जरी री मोचड़ियां दीखी। गोरा गोरा गुलाबी पग लाल मुखमल रा आसण माथे टक रिया हा। फरस पै एक पसवाड़े लीला रंग रा बिल्लोरी कांच री तासळी में सेवां, नासपाती र अंगूरां रा झूमका पड़िया हा। कनै ई एक नान्हींसोक पियालो र सोनेरी रंग रो दाखां रो दारू चुसकी में भरयो हो। मांयनूं उदमाद कर देण्यो तरै तरै रा धूपां रो धूंवो आय रियो। उण री खसबोई म्हने उदमादो कर दीवो।

म्हूं कांपते काळजे वीं खोजा रा पगां ने उलांघ न मांयने वळणो ई ज चावतो हो के वो ठालोभूलो जाग गियो। वीं रा खोळां पै धरयोड़ी तरवार झणण करती धोळा भाटां रा आंगणां पै जाय पड़ी।

सुणियो कोई जोर सूं कूकायो व्हे, एकणदम चमक न जाग्यो देखूं तो म्हूं म्हारा माचा माथै पड़्यो हूं। पसीना सूं जाणे सांपड़ियो व्हूं। पोह फाटवा वाळी है, अंधारा पख रो चांद, आखी रात जाग्योड़ा मांदा मिनख री नांई पीळो पड़रियो हो। वारै वो वैंडो मेहरअळी रोजीना री नांई गैला में कूकावतो जायरियो हो 'दूरा रो, दूरा रो। सैंग कूड़ है सैंग कूड़ है। वो कूकावतो जाय रियो न म्हेलां रे चारूं पासे दौड़तो जाय रियो। यूं अलिफ लैला री एक रात तो देखतां देखतां कटगी, ओजूं तो हजार रातां और है।

म्हारो दिन और हो रात और ही। दिन में म्हूं लातरियोड़ो काम माथे

जावतो आखो दिन वठे वां सूना सपना री रातां ने गाळयां काढवो करतो । सूरज आंथतां ई दिन रा जो म्हूं काम करतो वो नाकुच्छ लागतो, वे वातां अतरी मामूली तुच्छ लागती के वां पै हाँसो आवतो । म्हारा पै एक अजब नसो चढ़ जावतो, म्हूं म्हने आपने सैंकड़ां वरसां पैलां रो एक खास आदमी समझवा लागतो । म्हने वो अंगरेजी काठो कोट र पतलून अभूनां लागवा लागतो । म्हूं लाल मुखमल री टोपी, ढीलो पायजामो, फूलांवाळो कबो र रेसमी लांबो चुगो पैर न रेसमी रूमाल में अतर लगाय न सौरधोरां व्हे जातो । सिगरेट ने परमो फैंक न लांबी नेज रा हुक्का ने गुलाबजळ सूं भर न गादी मोड़ो लगाय न यूं बैठतो जांणे कोई खांतीलो आसक मूंघी माळूगी मूं नीठा नीठ मिलवा ने उमगायो बैठो व्हे ।

पछे ज्यूं ज्यूं अंधारो गैरो व्हेतो जातो ज्यूं ज्यूं अणव्हेणां अनोखा अनोखा वाका व्हेवो करता । यूं लागतो जांणै अजब गजब रा दासतान रा फाटचोड़ा पाना, वसंत रा वायरा सूं ऊड न वीं म्हेल रा ओवरा ओवरी में उडता फिर रिया । थोड़ा घणां पानां रो तो सिलसिलो जुड़े पण पाछला पाना नीं लाधे । म्हूं वां पानां ने हेरतो हेरतो वां रे पाछे सैंग रात ओवरा ओवरिया में रूळतो फिरतो ।

सपनां रा न्यारा न्यारा खंडा में कदी हिना रा अतर री सुगंध कदी सितार रा तारां रो भणकारो आतो । कदी कदी खसबोदार पांणी रा सीळा सीळा छांटा रे लारे आंवता वायरा रा झोला में म्हने खिण खिण में बीजळी रा पळाका री नांई वा दीख जावती । म्हारी वा मन सूं दीखण वाळी अभसारका केसरिया रंग रो पायजामो पैरयां, गुलाबी पगां में जरी री मोचड़ियां पैरयां, कठण पयोधरां पै जरी रा काम री कांचळी कस्यां, माथा पै सौनेरी झालरीवाळी संदूरी रंगरी वांकी टोपी लगायां अंधारा में बीजळी रा झबाका री नांई दीखती न पाछी लुक जावती ।

म्हने तो वीं उदमादो कर दीधो । म्हू वीं री वाट नाळतो, वठा री माया-नगरी में ओवरी ओवरी में वीं ने हेरतो फरतो । कदी कदी दिन आंथियां रा म्हूं वठा रा मोटा दरपण रे दोई आडी ने मैणबत्तियां बाळ न सायजादा जैड़ी पोसाक पैरतो । वीं दरपण में म्हारा परतबंब रे बिलकुल सांगणे वीं ईरानी अपछरा री छाया रो झबको पड़ जावतो । वीं ज पल वा वीं री सुराईदार गाबड़ ने हलाय, मोटा मोटा काळा काळा नैणां ने मटकाय कटाछ, करती, नांचती व्हे ज्यूं जोबन छाई देही वेलड़ी ने लचकाय न वीं दरपण री दरपण में गायब व्हे जाती ।

पछै मंगरा री, वन री गंध ने लूटतो थको वायरा रो एक उछांछळो झोलो आवतो म्हारी मैणवत्तियां ने बुझाय परो जावतो ।

म्हूं ई म्हारा सिणगार धिणगार छोड़ खूंणा में पड़्या माचा पे जाय पड़तो ।

बिछावणां पै पड़तां ई म्हारो तन मन हरियो व्हे जावतो, म्हूं आंख्यां मींच न सोय जावा री करतो। वीं वगंत पवन वागां वाञड़िया, घाटां वाटां री सौरभ लातो, भूखी प्रीत रा घणां घणां सनेसा, घणां घणां लाडकोड़, मीठा मीठा परस सूं वीं निरजण अंधारा ने भर देवतो। दो वठे रो वठे गरोळा खावो करतो। म्हारा कानां रे कनें मन भावणी भणक सुणीजती, म्हारा ललाट पं सुंवावणी सांस आय अड़तो घड़ी घड़ी रो सुगंघ सूं भीन्योड़ो रेसमी दुपट्टो आय म्हारा गालां रे अड़ अड़ जावतो। उण रा सरसराटा सूं वीभळाय जातो। धीरे धीरे वा मोञनी म्हारी नड़ी नड़ी ने कस न बांध लेवती। म्हूं गैरा गैरा सांस लेवतो गेरी नींदा में अचेत व्हे जातो।

एक दिन म्हें विचार्‌यो के दिन आंथवां सूं पैलां ई घोड़ा पै चढ़न वारे स्हेल करवा ने परो जावूं पण पाछूं म्हने कोई वरजवा लागी। पण म्हूं नीं मानियो। एक खूंटी पे टोप न कोट टांक राख्या हा। म्हूं वां ने उठाय न पैरवा लाग्यो जतराक में सुस्ता नंदी री रेत ने अर सूखा पानडा ने उडातो भतूळयो आयो म्हारा कोट ने अर टोप ने उडाय न लेय गियो। लारे री लारे मीठी भींणी हंसी सुणीजी जो भतूळया रे लारे ऊंची उडती सूरज आंथे वठे जाय न गायब व्हेगी।

वीं दिन म्हारा सूं घोड़ा पं सवार व्हे वारे नीं जावणी आयो। दूजा दिन सूं तो म्हें कोट पैंट पेरणो ई छोड़ दीवो।

वीं दिन मझ्यान आधी रात रा म्हूं ओझक ने जाग गियो। म्हे सुणियो, कोई छाती कूट कूट न डिडाय डिडाय न रोय री है। म्हारा माचा रे हेटे, धरती रे मांयने, वीं म्हेल री भाटा री भींत री नींव हेटे, अंधारी केमाई लगी कबर मांयने, कोई रोय रोय न कैयरी हो 'म्हने ई माया वारै काढ, यां भूठा झंझाळा ने तोड़ न थारा घोड़ा पे चढ़ाय, छाती सूं चपटाय म्हने लेय जा, यां डूंगरियां में व्हे कांकड़ में व्हे. नंदी रे पार थारा सूरज वाळा देस में ले चाल। म्हने उबार।'

म्हूं कुण हूं, कस्यां थने उबारूं ? थूं कदी व्ही, कठै ही ? कस्या सीळा पाणी रा भरणा कनारे, कस्या खजूरां रा वन में किण धरवायरी रेती में रेवा वाळी री कूंख में थूं जनमी ? कुण बट्टमार बेलड़ी माथूं कळी री नांई, थनें मां री गोद मांयनूं चूंट लीवी ? नौलखा अरबी घोड़ा पे बैठाय न, वासदी री नांई बळता रेगिस्ताना ने चीर न, अमीरां रा सैहर में गुलामां रा वजार में थनें वेचवाने कुण लायो ? तुरत रा खुलियोड़ा फूल ने, लाज सूं लाल पड़ता जोबन री छटा ने देख न सोना रा सिक्का देय कुण मोल लीवी थनें ? वांका गैला घाटा डकातो, समंदर नें पार करतो सोना री पालकी में बैठाय साही म्हेलां में कस्या बादसा रो मरजीदान खिदमतदार नजर कर गियो थनें ? वां म्हेलां री छटा कसीक ही जां दिनां ? वठा

री सारंगियां रा तणणाटा, रमझोळा रा घूघरां रा झणणाटा, सुनैरी सीराजी रा प्यालां रा छळछळाटा. बीचै बीचै चमकतो कटारां रा चळचळाटा, जैर री झाळां, तीखा नैणां री चोटां। वे स्हेल सौक री चीजां के जां रो चांको नीं लारै वा कैद के ऊमर भर छूटवा रो काम नीं। मांयने दोई ग्राडी ने दो गोलियां हीरा री चूंड़पां दमकावती चंवर झल री है, सांहसाह वादसा सलामत, मोती मांणक जड़ी मोचडिया वाळा गोरा गोरा पगां पं लोट रिया है। बारणै, बारणा रे माथे जम रा दूतां जेड़ा हवसी देव दूतां जेड़ी पोसाकां पैरयां, हाथां में नांगी तरवारां लीवा ऊभा है। ग्रर थूं? लोह्यां सूं लाल व्ही, खार ईसका रा झागां चढो पड़पंच पाप री वैवती धारा में थूं कठा सूं ग्रायगी। थूं? मरुथळ रा फूला री मांजर थूं ग्रठै म्रतलोक में कठा सूं ग्राय फसगो? कुण जल्लाद, कुण पापी, कुण हत्यारो थारी बळि चढाय गिये ग्रठै? हे देवी, थूं कदी ही, कठै हो, कठै है? म्हूं थारो उद्धार कस्यां करूं?

ग्रतराक में ग्रचांगचक वीं बावळा मेहरग्रली रो रोळो सुणीज्यो, 'ग्रळगा रैवो ग्रळगा रैवो, सब कूड़ है कूड़ है।'

ग्रांख खोलूं तो दिन ऊग ग्रायो। चपरासी म्हारा हाथ में लाय न डाक झेलाई। खानसामे पूछ्यो 'ग्राज कांई बणावूं जीमण में?' म्है कहियो, 'बस ग्राज सूं ईं घर में रेवणो ई नीं।'

वीं ज वगत सारो सामान उठाय दफतर ग्राय गियो। दफतर रो जूनो डोकरो कामैती करीमखां म्हने देख मुळक्यो। वीं रा मुळकवा पै म्हनें रीस ई ग्राई पण म्हूं कांई बोल्यो नीं। काम में लागगियो।

ज्यूं ज्यूं संझ्या पड़वा लागी ज्यूं ज्यूं म्हारो जीव ग्रणमणो व्हेवा लाग्यो। यूं लागण लाग्यो जांणे म्हनें कठै ई ग्रबार रो ग्रबार जावणो है। रूई रा लेखा जोखा री जांच करणी म्हनें फजूल लागी के ईं में सार कांई है। ग्राखो ई परगणो रो परगणो म्हने नाकुछ दीखवा लाग्यो। जो चारूं कानी दीखरियो हो वो सब नाकुछ लागवा लाग्यो। चालता फिरता मिनख, काम काज, खावणो पीवणो सब वेकार दीखवा लाग्यो।

म्हूं कलम ने फैंक मोटा मोटा वहीड़ा ने समेट एक दम ऊभो व्हेगियो। टमटम माये चढ स्हेल करवाने निकळ गियो। देखूं कांई के गघूळी वेळा व्हेतां ई वा टमटम मन रे मत्तो वीं पखांण रा म्हेलां रा बारणा ग्रागे जाय न ऊभी रेगी। म्हूं उतरतो ई झट झट पगथ्या चढ ग्रागतो थको मांयने वळगियो।

ग्राज चारूं कानी सूनो सूनो लाग्यो। यूं लाग्यो जांणे म्हेलां री सेंग री सेंग सुरंगा ग्रोवरियां म्हारा सूं नाराज व्हेय री व्हे, मूंडो चढायां बैठी व्हे।

दुख अर पछतावा सूं म्हारो जांणे काळजो फाटवो लागे। अबे म्हूं गुना वगसवा ने किण ने कैवूं, माफी मांगूं तो किण सूं मांगू, कोई है ई तो नीं। म्हूं म्हारा पीड़ भरया हिवड़ा ने लीयां अठी ने वठीने फरवा लागो। म्हारो जीव करवा लागो के अबार सितार लेन किणने ई सुणावा ने गांवूं अर केवूं, 'वळती वाती रा दिवला, जो पतंगो थने छोड़ न भागणो चावतो वो पाछो आय थारा पैंतावा में पड़यो है। वळवा ने आयो है। अबकाळे थूं गुनो वगसदे, माफ करदे। वीं री दोई पांखां ने वाळ भसम करदे।'

अतराक में दो आंसूवां रा टोपा म्हारा ललाट माथे आय पड़िया। वीं दिन मंगरा माथै घटा टोप वादळा छायरिया हा, अंधारो जंगळ अर नंदी रो स्याई छेड़ो स्याह पांणी विलकुल थिर व्हेयरियो हो। एकणदम, जळ थळ, आभो एकण सागै खळवळाय गिया, जवरदस्त आंधी वीजळी रा दांत कड़कड़ पीसती, मस्त हाथी री नांई, चरळावती लगी दौड़ती आई। म्हेलां रा मोटा मोटा वारणां में सूंसाटा करती वा वळी, यूं लागरियो जांणे माथा फोड़ फोड़ दरद रा मारया वे कमरा रोय रिया व्हे।

म्हारा सैंग हालीनवाली आज दफतर वाळा घर में हा। म्हेलां में दीवो वाळणियो ई कोई नीं हो। वादळा सूं छायोड़ी अमावस री रात में म्हेला रे मांयने काजळ वरणा अंधारा में म्हने परतख दीख्यो के एक मोट्यार जुवान कांमणी, ढोल्या रे हेटे दलीचा पै ऊंधी पड़ी माथा रा विखरयोड़ा भींटा ने खैंच री। वीं रा गोरा सुंवाळा ललाट सूं लाल लाल लोही टवक रियो। कदी तो वा जोर जोर सूं 'हाय हाय' कर न कूकावती कदी डिडाय डिडाय न रोवा लागती। दोई हाथां सूं कांचळी रा कसणां तोड़ न छाती में घमेड़ा मार मार न रोवती। आंधीं रा झाटकां लारे वारियां मांयनूं आय आय वरखा री पछांट सूं वीं रो तपियो सरीर भींजरियो।

वीं दिन आखी रात नीं तो वरखा ई रुकी नीं वा रोवती रुकी। म्हूं आखी रात पछतातो लगो वठा री सुरंगा में, ओवरिया में भागतो फिरयो। कठै ई कोई दीखै ई नीं दिलासा देवूं तो किण ने देवूं। यो जखमायल व्हियोड़ो किण रो गळ्र है? यो दुख, या मन री पीड़ा किण री है? कठा सूं निकळरी है? कांई ज समझ में नीं आई।

अतराक में तो वो वेंडो मेहरअली कजाणा कठा सूं वरळायो, 'अळगा रैवो, अळगा रैवो, सब कूड़ है, सब कूड़ है।"

देखूं कांई पौ फाटगी। मेहरअली एड़ी जबरजस्त आंधी मूसळधार वरखा में ई नित्त रा नैम ज्यूं वीं पत्तांण रा म्हेल रे परकम्मा देवतो, हाका करतो दौड़

रियो हो। एकणदम मन में आई कठै ई मेहरअली म्हारी नांई, करमां री मारयो, इं म्हेल में आय न तो नीं रियो हो। वैंडो व्हेय न ईं म्हेल बारै भाग्यो व्हेला पण या भाटां रो मोह वीं ने श्रोजूं बुलावे जो यो रोज सुबै परकम्मा देवा ने आवे।

म्हूं वीं ज वगत वीं आंधी मेह में भाग्यो भाग्यो मेहरअली कने गियो। पूछवा लाग्यो, 'भाई मेहरअली, कूड़ कांई है म्हने ई तो वता।'

म्हारी वात रो तो वीं कांई जुवाव नीं दीधो। धक्को देय नीचे पटक दीधो। वो तो मोह में फंस्योड़ा पंछी री नांई वीं भूखा पखांण रा म्हेलां रा चक्कर काटवा लागो। बरळावतो जायरियो न दौड़तो जाय रियो। रूक रूक ने हाका करतो जाय रियो, अळगा रैवो, अळगा रैवो, सब कूड़ है कूड है।

म्हूं वींज वगत, वींज दसा में, आंधी मेह में भीज्योड़ो, घबरायोड़ो दफतर में गियो। डोकरा करीम ने बुलाय पूछ्यो "ईं रो अरथ कांई है म्हने अरथाय न कै। डोकरे कह्यो उणरो कस यो हो के एक जमाना में वीं पखांण रा म्हेल में हजारां भूखी, मन री वांछा ने दबावणी आतमांवां रैवती। वे काळजा पे भाटा मेल, रत्ती रत्ती कर न मन री हूंस, ऊणायत अर इच्छावां ने दबावती। वे जीवती री जतरे मन री भूख सूं हाय हाय करती री मरी तो मन री भूख लीधां मरी। वांरो हायकूटो, ईं पखांण रा म्हेल रा रज रज में समाय रियो है। ईं वास्ते पखांण रो एक एक खंड भूखो तिसायो हाय हाय करे। वे कोई जीवता मिनख ने कनें देख ने भूखा भूत री नांई वीं ने खावा ने दोड़े। तीन दिन जो वीं म्हेल मांयनें रैयगिया वां मांय नूं कोई ज जीवतो नीं रियो एक मेहरअली जीवतो रियो जो ई बैंडो व्हेन बारै निकळयो।

म्हें पूछयो, 'म्हारा उद्धार रो ई कोई गैलो है के नीं ?'

डोकरो बोल्यो, 'खाली एक गैलो है। वो ई घणो दोरो है। म्हूं बतावूं हूं पण वीं गुलबाग री मोल लीधी ईरानी बांदी री कैणी आप पैलां सुणलो। एड़ी अचरज भरयोड़ी वात अर काळजो हलाय देवणियो वाको आज पैलां कदी सुणियोई नीं व्हेला।'

अतराक में तो टेसण रे कुलियां आय न खबर दीधी 'गाड़ी आयगी है हजूर।"

अतरी झट। चटपट बिछावणां बांधवा लाग्या जतरेक तो गाडी आय ऊभी रैगी। वीं गाडी रा फर्स्ट क्लास डिब्बा री बारी मांयनूं एक अंगरेज मूंडो काढ़ न टेसण रो नाम पढ़वा री कोसिस कर रियो हो। वीं री नजर म्हांका वां बाबू सा'ब पे पड़ी। वां ने देखतां ई वीं अंगरेज हैल्लो कैय न हेलो पाड़ियो, वां ने डिब्बा में आवा रो समचो कीधो। वे वीं रा कनें परा गिया। म्हां एक सेकिन्ड क्लास रा

डिब्बा में वळगिया। पछे तो वां बाबू सात रो आज दिन ताई कांई ठा ठकाणो नीं लाग्यो। मन में दुख ई रियो के एड़ा वढिया दासतान रो पाछलो हाल हवाल म्हांने सुणवा ने ई नीं मिल्यो।

म्हें म्हारा साथ वाळा मित्तर ने कियो, 'देख्या नीं, आंपां ने कस्याक बावळा बणाय नाठ गियो। अलल टप्पू वात जोड़ न आंपां ने सुणाई जीं में कोई कोर न कसर। सैंग मन री जोड़चोड़ी झूठी वात ही।' या वात सुण न म्हारा मित्तर वड़ा वेराजी व्हिया। म्हां के बीचे एड़ी जोर री झड़प व्ही के म्हां को उमर भर साइं बोलणो चालणो बंद व्हेगियो।

दुरासा

घणां दिनां री जूनी वात है। म्हूं दारजिलिंग गयो हो। वठे वरखा बरस री ही वादळा घटाटोप छायरिया हा। बारणै निकळवा रो जीव ई नीं करतो। घर मांयने धस्यां धस्यां जीव घबराय गियो। एक दिन म्हूं होटल में जीमचूंठ, पगां में मोटा मोटा बूट पेर, माथा सूं लगाय पगां तांई बरसाती कपड़ा पैर बारै स्हेल करवाने निकळियो। झरमर झरमर मेवलो बरस रियो हो। चारूं मेरे काळा वादळा धरती ने ढांक्या जायरिया हा। यूं लागरियो जाणै हैमाळा सूधी ईं दुनिया री तसबीर ने भगवान रबड़ लेय ने रगड़ न मटाय देवारी कर रियो है। कलकत्ता रोड सूनी पड़ी ही, कोई ज मिनख नीं हो। म्हूं अकेलो टैलतो जाय रियो र सोचतो जाय रियो, जठी ने देखो जठी ने वादळो और कांई ज नीं दीखे, यो इंदर रो एक छत्र राज तो आछो नीं लागे। आंपा रे तो आपणी वा ई ज रूप, रस, गंध अर वर्ण वाळी, अजब अनोखी धरती माता ई ज चोखी। वीं ने आंपणी पांचू इंद्रियां सूं पांच कानी सूं पकड़ लेवां तो आछो।

अतराक मे कनैं ई, बिलख बिलख न रोवती लुगाई रो साद म्हारे कानै पड़ियो। ईं म्रतलोक में रोग अर दुखां सूं रोवा वाळां रो कोई घाटो थोड़ो ई है, रोवणो सुणतां ई रेवा हां। कि दूजी जायगा व्हेतो के कोई दूजी वेळा व्ही व्हेती तो म्हूं मूंडो फेर न निकळ जावतो। पण वीं अथाग इंदर झड़ी में म्हनें वीं रो रोवणों यूं लाग्यो के आखी दुनिया तो पांणी में डूबगी है संसार में एक मिनख बच्यो है वो रोयरियो है। ईं वास्ते वो रोवणो म्हने नाकुछ नीं लागियो।

रोवा री अवाज आयरी जठीने म्हूं चाल्यो । थोड़ाक पांवडा दीधा न देखूं भगमा गावा पैरयोड़ी एक लुगाई बैठी है । माथा पे सौनेरी रंग रा सूखा केसां री जटा रो जूड़ो बांध्योड़ो व्हे जो ज्यूं लागरियो हो । गैला रे भड़े एक छोटीसी सिलाड़ी माथे बैठी धीरे धीरे रोयरी । वीं रो रोवणो ताता घावां रो रोवणो नीं लाग्यो । यूं लाग्यो के दुखां सूं भरी थकी है, सैंपीड़ी व्हेयरी है जो वादळां रा अंधारा में, भाखरां रा नाळचा में, अेकली पड़ी रो वो दुख छाती फाड़ न आज निकळ जाय ।

म्हूं मनोमन केवा लागो, या ई चोखी व्ही घरे वैठां रे एक कैणी रो मसालो हाथे लागियो । म्हें कदेई विचारियो ई नीं हो के काकर पे वैठी संन्यांसण रोयरी है अर म्हूं देख रियो हूं ।

कांई जात री लुगाई व्हेला, अटकळिज्यो कोयनीं । म्हें घणी कंवळी कर म्हांरी वोली ने बोलियो 'कुण हे ? कांई व्हियो ? रोवे क्यूं है ?'

एकर तो वीं कांई पडूत्तर नीं दीधो । पांणी भरयोड़ां नैणां सूं म्हां कानी चोघ मात्तर लीधो ।

म्हूं पाछो बोलियो, 'डरप मती, म्हूं भलो मिनख हूं ।'

सुणतां ई वा हंसी साद में घणो ईज थकैलो पर कंठ घणो मीठो । बोली, किसू ई नीं डरपूं । डरपणो छोड़ियां ने तो घणां बरस व्हेगिया । लाज सरम ने ई लात मार न काढ दीधी । बाबूजी, वे ई दिन हा जद म्हूं जनानखाना रा सात परकोटा मांयने रैवती जठे सगो भाई बैन ने पूछाया बिना मांयने पग नीं देवण पावतो । आज ? आज सकळ जगत रे आगे बिना पड़दा री व्हेयगी हूं ।'

एकर तो म्हने छनीसीक रीस आई । म्हूं तो कपड़ा लत्ता सूं बिलकुल सा'ब वादर बणियोड़ो हो, वीं खोड़ीली खटाक देणी रो म्हने बाबूजी कैय न बतळाय लीधो । मन में तो आई के ईं वात ने अठे ई धरी रेवा दूं । सिगरेट रो घूंवो उड़ातो, फकफक करती सा'बी फेसन री रेलगाडी ज्यूं रवाना व्हे जावूं । मन मांयने वात जाणवा री लाग री जो ही देखां कांई मांयनू भेद निकळे । ईं विचार म्हनें जावता ने रोकियो । म्हें क्यूंक मन में मोटोपणो लाय, गाबड़ वांकी कर न पूछियो, 'म्हूं कांई झेलो देवूं थने ? बता कांई म्हां सू करणी आवे तो ।'

वीं आंख जमाय न म्हारो मूंडो देखियो । पछे दो टप्पा रो पडूत्तर दीधो 'म्हूं वदायूं रा नवाव गुलामकादर री डीकरी हूं ।'

यो बदाऊं कठे है, नवाब गुलामकादर कुणसो नवाव है, वां री धीवड़ कांई दुख सूं जोगण वण दारजिलिंग री कलकता रोड़ पे बैठ न रोवे, म्हने यां रो कांई ठा ठोड़ नीं हो । नीं म्हनें यां वातां पे कांई भरोसो ई है पण म्हें जांण्यो कठे ई रंग में भंग नीं पड़ जावे । वात चालवा दां, कैंणी चोखी जमती जाय री है ।

हां, तो नवाबजादी साहवां री तारीफ री पैली ओळ सुणता ई, म्हें खटाक देणी रो झुक न सलाम कीधो। सलाम कर न बोलियो, 'नवाबजादी सायबा, म्हारा गुन्ना बगसो। म्हें सरकार ने ओळखिया नीं।'

नीं ओळखवा री वजै तो घणी ई ही। पैली वात अर मोटी वात तो के म्हें पैली कदी देखिया ई नीं, दूजी वात या ही के वादळा री घंवर एड़ी गैरी पड़ री ही के वां रा हाथ पग ई सांवळ कोनी दीख रिया हा।

नवाबजादी, जीमणां हाथ सूं एक भाटो बताय न हुकम बगसियो, 'बैठ जावो।' देखियो, ईं जोगण रा भेख में ई हुकम देवा री तागत नवाबजादी में है। घंवर सूं आलो व्हियोड़ा, कांजी सूं भरयोड़ा टोळ माथै बैठवारी, बैठक री इज्जत म्हने मिली तो एड़ी खुसी व्ही के वा इज्जत मिलगी है जि रो सपनो ई म्हें नीं देखियो हो। बरसाती ओढ न म्हूं बारे निकळियो हो जदी म्हने कांई खबर ही के आज म्हारो भाग खुलेला। बदाऊं रा नबाब गुलाम कादरखां री नबावजादी, जेबुन्निसा के मेहरून्निसा के नूरउलमुल्क सायबा खुद म्हने, वां रे नजीक, बराबरी री बैठक बगसेला।

हिमाले री छाती पैं, सुनसान भाखरां में, सिलाड़ी पे बैठियां दो गैले चालणियां नर अर नारी री घरबीती, सुणवा वाळा ने, गरमा गरम दूवा भरी कैणी जेड़ी लागेला। सुणवाळा ने दूरा परवतां में झरता लगा झरणां रा झरराटा जेड़ी राग ईं वात में सुणीजेला, काळिदासजी रा बणायोड़ा मेघदूत र कुमारसंभव जेड़ा अजब अनोखा लेहरा रो भणणाटो सुणवा वाळा रा कानां में पड़ेला। पण म्हारा जेड़ा कोट बूट बरसाती सूं लेस व्हियोड़ा सा'ब बादर ने आपरी सान ने रोबदाब ने निभावणो कोई सौरो काम नीं हो। वा सिलाड़ी जि पे म्हूं बैठ्यो हो कांजी सूं सूगली व्हेय री, पांणी सूं भींज री ही, म्हूं सा'ब बादर री पोसाक में वां सूगली सिलाड़ियां पे बैठो हो, भड़े जोगण रा भेख में एक अणजांण सायजादी बैठी। म्हूं वीं रे लारे वातां कर रियो हो। सा'ब वादर री सान एड़ी दसा में निभावणो सोरो काम थोड़ो ई है? पण भाग भलो हो, घंवर सूं चारूं कानी अंधारो व्हेय रियो हो; लाजां मरवा जेड़ी कोई वात ही नीं। वीं इंदर झडी कांठळ छड़ी में म्हां दो जणां ई हा। एक तो वदाऊं रा नबाब गुलाम कादरखां री धीवड़ी, दूजो म्हूं नवो नवो ई ज बणियोड़ो हिंदुस्तानी सा'व। एक सा'ब बादर न एक जोगण रो यो अजब सम्मेलण देखणियो और कोई नीं हो। नीं तो हंसतो।

म्हें कहियो, 'नवाबजादी सायबा, आपरा ये हवाल कुण कीधा?

बदाऊं री नवाबजादी करम ठोक न बोली, 'ये सब करण हाळा कुण है?

रूड़ा मोट मोटा भाखरां वाळा हिमाळे परवत ने ई बापड़ी धंवर सूं ढांकगियो कुण है ?'

म्हें वाद नीं कीवो, वीं री वात मान लीवी। वोलियो, 'सांची कैवो, भाग ने कुण खोल न देखियो है, आंपा तो हां ई कांई, मांछर छांछर ज्यूं हां।'

वाद करण जो म्हूं ढूक जावतो तो नवावजादी ने सोरे सांस नीं छूटवा देवतो, पण मन री वात म्हांसूं वीं वोली में कैवणी नीं आई। उड्डू तो म्हने माड़ी आवती। कलकत्ता रोड रे भड़े वैठ न नवावजादी रे लारे अदृष्टवाद अर ईच्छावाद माये वैहस करूं अतरी उड्डू आवती नीं ही।

नवावजादी बोली, 'म्हारी जिंदगानी री वात आज ई खतम व्ही है, हुकम व्हे तो सुणावूं ?'

म्हूं आगतो व्हेय वोलियो, 'आप ई कांई फरमाय रिया हो। आपने र म्हूं हुकम दूं। हाँ, आप फुरमाणेरी म्हेरवानी फरमावो तो म्हां माये म्हेरवानी व्हे।'

या मत जांणजो के म्हें ये सागीणा आखर किया हा। मन में कैवारी जरूर ही पण सामरथ कोय ही नीं। नवावजादी बोल री ही जद यूं लागरियो है के ओस सूं वुपियोड़ा चीकणां सलफ सांवळा रंग रा धान रा खेतां में सोनेरी साळू माथे परभाते रा पोहर रो धीमो धीमो मीठो मीठो वायरो झाला देतो जाय रियो है। बोल बोल पैं वा लुळती झुकती, एक एक हरफ, एक एक बोल में रूप ल्हेराय रियो हो। म्हूं तो दो टप्पा रा एड़ा सूवा पडूत्तर देयरियो जांणे कोई वोफो वोलरियो। म्हने तो वोलवा में अदव कायदो आवतो ई नीं हो, नीं लुळताई सूं ई वात करणी आवती। नवावजादी रे सागे वात करतां पैली पोत म्हने आज वोल वोल पे ठा पड़ री ही के म्हने वोलणो नीं आवे।

नवावजादी कैवा लागी, 'म्हारा बाप रा वंस में दिल्ली रा तखत रो राजसी खून हो। वीं खून री इज्जत राखवा सारूं म्हारो कठै ई सगपण नी व्हियो। म्हारे जोग कोई सायजादो लाधियो ई नीं। म्हारे साथे सगपण रो वड़ाळो लखनऊ रा नवाब रो आयो पण म्हारा बाप टाळा टोळी कररिया ई ज हा के फतराक में गदर फैलगियो। कारतूसां रे दांता सूं वटका भरवा रा झोड़ में सरकार रे खिलाफ फौजां झंडो उठाय लीवो। तोपां रो धूंवो आखा हिंदवाण में घटाटोप छाय गियो।

कोई लुगाई रा मूंडा सूं अर वा ई नवावजादी रा मूंडा सूं म्हें ओजूं तांई उड्डू नीं सुणी ही। आज सुण न समझ गियो के उड्डू मोटा मिनखां री अमीर उमरां री वोली है। जांने सुख विलसवा रे सिवा कांई काम नीं करणो पड़तो हो। वा जणां री वोली है वां रो जुग अवै नीं रहियो। म्हूं उणां री कांई

दुरासा

घणां दिनां री जूनी वात है। म्हूं दारजिलिंग गयो हो। वठे वरखा बरस री ही वादळा घटाटोप छायरिया हा। बारणै निकळवा रो जीव ई नीं करतो। घर मांयने धस्यां धस्यां जीव घबराय गियो। एक दिन म्हूं होटल में जीमचूंठ, पगां में मोटा मोटा बूट पैर, माथा सूं लगाय पगां तांई बरसाती कपड़ा पैर बारै स्हेल करवाने निकळियो। झरमर झरमर मेवलो बरस रियो हो। चारूं मेरे काळा वादळा धरती ने ढांक्या जायरिया हा। यूं लागरियो जाणे हैमाळा सूधी ईं दुनिया री तसबीर ने भगवान रबड़ लेय ने रगड़ न मटाय देवारी कर रियो है। कलकत्ता रोड सूनी पड़ी ही, कोई ज मिनख नीं हो। म्हूं अकेलो टैलतो जाय रियो र सोचतो जाय रियो, जठी ने देखो जठी ने वादळो और कांई ज नीं दीखे, यो इंदर रो एक छत्र राज तो आछो नीं लागे। आंपा रे तो आपणी वा ई ज रूप, रस, गंध अर वर्ण वाळी, अजब अनोखी धरती माता ई ज चोखी। वीं ने आंपणी पांचू इद्रियां सूं पांच कानी सूं पकड़ लेवां तो आछो।

अतराक में कनैं ई, बिलख बिलख न रोवती लुगाई रो साद म्हारे कानै पड़ियो। ईं अतलोक में रोग अर दुखां सूं रोवा वाळां रो कोई घाटो थोड़ो ई है, रोवणो सुणतां ई रेवा हां। कि दूजी जायगा व्हेतो के कोई दूजी वेळा व्ही व्हेती तो म्हूं मूंडो फेर न निकळ जावतो। पण वीं अथाग इंदर झड़ी में म्हनें वीं रो रोवणों यूं लाग्यो के आखी दुनिया तो पांणी में डूबगी है संसार में एक मिनख बच्यो है वो रोयरियो है। ईं वास्ते वो रोवणो म्हने नाकुछ नीं लागियो।

रोवा री अवाज आवती जठीने म्हूं चाल्यो। थोड़ाक पांवडा दीवा न देखूं काला गाभा पैरयोड़ी एक लुगाई बैठी है। माथा पै सोनेरी रंग रा सूखा केसां री जटा रो जूड़ो बांध्योड़ो व्हैवो ज्यूं लागरियो हो। गैला रे गड़े एक छोटीसी सिलाड़ी माथे बैठी धीरे धीरे रोयरी। वीं रो रोवणो ताता घावां रो रोवणो नीं लाग्यो। यूं लाग्यो के दुखां सूं भरी थकी है, दैबीड़ी व्हैवरी है जो बादळां रा अंधारा में, तारां रा नाळका में, ऐकली पड़ी रो वो दुख छाती फाड़ न आज निकळ जाय।

म्हूं मनोमन कैवा लागो, या ई चोखी व्ही घरे बैठां रे एक कैणी रो मसालो हाथे लागियो। म्हैं कदैई विचारियो ई नीं हो के भाकर पै बैठी संन्यासण रोयरी है अर म्हूं देख रियो हूं।

कांई जात री लुगाई व्हेला, अटकळियो कोयनीं। म्हैं घणी कंवळी अर म्हारी बोली ने बोलियो 'कुण है? कांई व्हियो? रोवै क्यूं है?'

एकर तो वीं कांई पडूत्तर नीं दीवो। पांणी भरयोड़ा नैणां सूं म्हां कानी जोय भाळर लीवो।

म्हूं पाछो बोलियो, 'डरप मती, म्हूं भलो मिनख हूं।'

सुणतां ई वा हँसी साद में घणो ई थकेलो पर कंठ घणो मीठो। बोली, 'किणसूं ई नीं डरूं। डरपणो छोड़ियां ने तो घणा बरस व्हैगिया। लाज सरम ने ई मार मार न काढ दीवी। बाबूजी, वे ई दिन हा जद म्हूं जनानखाना रा सात परकोटा मांयने रैवती अठै सगो भाई बैन ने पूछ्यां बिना मांयने पग नीं देवन पावतो। आज? आज सकळ जगत रे आगे बिना पड़दा री व्हेयगी हूं।'

एकर तो म्हने छींटाक रीस आई। म्हूं तो कपड़ा लत्ता सूं बिलकुल सांव बाबर बणियोड़ो हो, वीं छोड़ीसी लटाक देनी रो म्हने बाबूजी कैय न बतळाय लीवो। मन में तो आई के ईं बात ने अठै ई धरी रैवा दूं। सिगरेट रो धूंवो उड़ातो, फकफक करती सांवी फैसन री रेलगाडी ज्यूं रवाना व्है जाऊं। मन मांयने बात जाणवा री लाग री जो ही देखां कांई भांयलू भेद निकळे। ई विचार म्हनें जाबता ने रोकियो। म्हैं थूंक मन में गोटीजणो लाय, गाबड़ वांकी कर न पूछियो, 'म्हूं कांई कैणो देवूं थने? बता कांई म्हां सूं करणो आवे तो।'

वीं आंख उठाय न म्हारो मूंडो देखियो। पछे दो दम्मा रो पडूत्तर दीवो 'म्हूं बदखूं रा नवाब गुलामकादर री छोकरी हूं।'

यो बदखूं कठै है, नवाब गुलामकादर कुणसो नवाब है, वां री बीवड़ कांई दुख सूं जोगण बन दारजिलिंग री कलकत्ता रोड़ पै बैठ न रोवै, म्हने यां री कांई वा ठेड़ नीं ही। नीं म्हनें यां बातां पै कांई भरोसो ई है पण म्हैं जांण्यो कठै ई रंग में भंग नीं पड़ जावे। बात चालवा दो, कैनी चोखी जमती जाय री है।

हां, तो नवाबजादी साहबां री तारीफ री पैली ओळ सुणता ई, म्हें खटाक देणी रो झुक न सलाम कीवो। सलाम कर न बोलियो, 'नवाबजादी सायबा, म्हारा गुना बगसो! म्हें सरकार ने ओळखिया नीं।'

नीं ओळखवा री वजे तो घणी ई ही। पैली वात अर मोटी वात तो के म्हें पैली कदी देखिया ई नीं, दूजी वात या ही के वादळा री घंवर एड़ी गैरी पड़ री ही के वां रा हाथ पग ई सावंळ कोनी दीख रिया हा।

नबाबजादी, जीमणां हाथ सूं एक भाटो बताय न हुकम बगसियो, 'बैठ जावो।' देखियो, ई जोगण रा भेख में ई हुकम देवा री तागत नवाबजादी में है। घंवर सूं आलो व्हियोड़ा, कांजी सूं भरयोड़ा टोळ मायं बैठवारी, बैठक री इज्जत म्हने मिली तो एड़ी खुसी व्ही के वा इज्जत मिलगी है जि रो सपनो ई म्हें नीं देखियो हो। बरसाती ओढ न म्हूं वारै निकळियो हो जदी म्हने कांई खबर ही के आज म्हारो भाग खुलेला। बदाऊं रा नबाव गुलाम कादरखां री नबाबजादी, जेबुन्निसा के मेहरून्निसा के नूरउलमुल्क सायबा खुद म्हने, वां रे नजीक, बराबरी री बैठक बगसेला।

हिमालै री छाती पै, सुनसान भाखरां में, सिलाड़ी पै बैठियां दो गैले चालणियां नर अर नारी री घरबीती, सुणवा वाळा ने, गरमा गरम दूवा भरी कैंगी जेड़ी लागेला। सुणवाळा ने दूरा परवतां में झरता लगा झरणां रा झरराटा जेड़ी राग ई वात में सुणीजेला, काळिदासजी रा बणायोड़ा मेघदूत र कुमारसंभव जेड़ा अजब अनोखा लेहरा रो भणणाटो सुणवा वाळा रा कानां में पड़ेला। पण म्हारा जेड़ा कोट बूट बरसाती सूं लैस व्हियोड़ा सा'ब बादर ने आपरी सान ने रोबदाब ने निभावणो कोई सौरो काम नीं हो। वा सिलाड़ी जि पे म्हूं बैठ्यो हो कांजी सूं सूगली व्हेय री, पांणी सूं भींज री ही, म्हूं सा'ब बादर री पोसाक में वां सूगली सिलाड़ियां पै बैठो हो, भड़े जोगण रा भेख में एक अणजांण सायजादी बैठी। म्हूं वीं रे लारे वातां कर रियो हो। सा'ब बादर री सान एड़ी दसा में निभावणो सोरो काम थोड़ो ई है? पण भाग भलो हो, घंवर सूं चारूं कानी अंधारो व्हेय रियो हो, लाजां मरवा जेड़ी कोई वात ही नीं। वीं इंदर झडी कांठळ छड़ी में म्हां दो जणां ई हा। एक तो बदाऊं रा नबाव गुलाम कादरखां री धीवड़ी, दूजो म्हूं नवो नवो ई ज बणियोड़ो हिंदुस्तानी सा'ब। एक सा'ब बादर न एक जोगण रो यो अजब सम्मेलण देखणियो और कोई नीं हो। नीं तो हंसतो।

म्हें कहियो, 'नवाबजादी सायबा, आपरा ये हवाल कुण कीवा?

बदाऊं री नवाबजादी करंम ठोक न बोली, 'ये सब करण हाळा कुण है?

इड़ा मोट मोटा मामरां वाळा हिमाळै परवत ने ईं वापड़ी चंवर सूं ढांकगियो कुण है ?'

म्हें वाद नीं कीवो, वीं री वात मान लीवी । बोलियो, 'सांची कैवो, भाग ने कुण खोल न देखियो है, आंगा तो हां ईं कांई, नांछर छांछर ज्यूं हां ।'

वाद करण जो म्हूं ढूक जावतो तो नवावजादी ने सोरे सांस नीं छूटवा देवतो, पण मन री वात म्हांसूं वीं बोली में कैवणी नीं आई । उड्डू तो म्हने माड़ी आवती । कलकत्ता रोड रे मड़े वैठ न नवावजादी रे लारे अहंदवाद अर इल्लावाद मायं वैहता करु अतरी उड्डू आवती नीं ही ।

नवावजादी बोली, 'म्हारी जिंदगानी री वात आन ईं खतम व्ही है, हुकम व्हे तो सुणावूं ?'

म्हूं आगतो व्हेय बोलियो, 'आन ईं कांई फरमाय रिया हो । आपने र म्हूं हुकम दूं । हां, आप फुरमाणेरी म्हेरवानी फरमावो तो म्हां मायं म्हेरवानी व्हे ।'

या मत जांणजो के म्हें ये सागीणा आवर कियां हा । मन में कैवारी जरूर ही पन सानरय कोय ही नीं । नवावजादी बोल री ही जद यूं लागरियो है के ओस सूं धुपियोड़ा चीकणा सलफ सांवळा रंग रा वान रा खेतां में सौनेरी साळू मांये परभाते रा पौहर रो धीमो धीमो मीठो मीठो वायरो झाला देतो जाय रियो है । बोल बोल पै वा लुळती झुकती, एक एक हरफ, एक एक बोल में रूप ल्हेराय रियो हो । म्हूं तो दो टप्पा रा एड़ा गूंगा पडूत्तर देयरियो जांणे कोई बोफो बोलरियो । म्हने तो बोलवा में अदव कायदो आवतो ईं नीं हो, नीं लुळताई सूं ईं वात करणी आवती । नवावजादी रे सागै वातं करतां पैली पोत म्हने आज बोल बोल पै वा पड़ री ही के म्हने बोलणो नीं आवे ।

नवावजादी कैवा लागी, 'म्हारा वाप रा वंस में दिल्ली रा तखत रो राजसी खून हो । वीं खून री इज्जत राखवा सारूं म्हारो कठै ईं सगपण नीं व्हीयो । म्हारे जोग कोई सायजादो लाधियो ईं नीं । म्हारे साथे सगपग री वड़ाळो लखनऊ रा नवाब रो आयो पण म्हारा वाप टाळा टोळी कररिया ईं ज हा के वतरक में गदर फैलगियो । कारतूसां रे दांतां सूं वटका भरवा रा झोड़ में सरकार रे खिलाफ फौजां झंडो उठाय लीवो । तोपां रो धूंवो आखा हिंदवाण में घटाटोप छाय गियो ।

कोई लुगाई रा मूंडा सूं अर वा ईं नवावजादी रा मूंडा सूं म्हें ओजूं तांई उड्डू नीं सुणी ही । आज सुण न समझ गियो के उड्डू मोटा मिनखां री अमीर उमरां री बोली है । जांने सुख विलसवा रे सिवा कांई काम नीं करणो पड़तो हो । वा जणां री बोली है वां रो जुग अबै नीं रहियो । म्हूं उणां री कांई

बरोबरी करूं ? आज तो रेल न तार व्हे जावा सूं मिनख रे माथै काम रो भारो बधतो जावा सूं मोटा-मोटा अमीर-उमरां रा घराणां रूळ जावा सूं सब कुछ फीको फीको रंग बायरो व्हेगियो। वे मोट मरजादां जावती री, ओछापणो सो आयगियो। नबाबजादी री खाली बोली सुण नीं ज म्हारी आख्यां रै आगै जूना जमाना री तसवीर खंचगी। बैठ्यो तो म्हूं अंगरेजां रा बसायोड़ा नुवानगर दारजिलिंग में हो, वठै गैरी धंवर रा अंधारा में ई म्हारा मन री आंखिया आगे मुगल बादसां री पुरी बसगी। धोळा-धोळा मकराणां रा भाटा रा आसमांन रे अड़ता घुम्मटा। मुखमल पै जरी रा काम रा जीण कस्योड़ा घोड़ा। सोनेरी रूपैरी झूलां, सोना चांदी रा होदा वाळा हाथी चालता थका। मूंडागै सुरंगी मोहर गजवाळी पागां बांधियोड़ा, रेसम तनजेब रा जामा पायजामा पैर्योड़ा अमीरजादा चालरिया। जां रे कड़ियां में बांकडा कटारा लटकरिया, खड़ाखूंच मोचड़ियां मचड़-मचड़ कर री। ढीली ढीली नीची नीची पोसाकां। बोल बोल में अदब, पांवडा पांवडा में कायदो, मान मुलाहिजो अदब र आदाब।

नवाबजादी कैवा लागी, 'हां तो म्हा लोगां रो किलो जमनाजी रे कनारे रा माथै हो। म्हांकी फौजां रा मुसायब हा एक हिंदू बिरामण, नाम हो केसरलालजी।"

नबाबजादी पाछलो हरफ 'केसरलालजी' बोली तो कंठ रो सैंग मिठास ई नाम में घोळ दीधो। म्हूं हाथ री कामड़ी ने धरती पै न्हाक कान खोल न वात सुणवाने जम न बैठगियो।

नवाबजादी कैवा लागी, केसरलालजी पक्का हिन्दू हा। म्हूं रोज वेगी ऊठ न गोखड़ा मांय नू झांकवो करती जो देखती के केसरलालजी जमनाजी में छाती छातीवाणां ऊंडा पाणी में ऊतर न सूरज रे हाथ जोड़ न, गरण गरण फरता जावता न पाणी री अंजळी देवो करता। पछे आला गाबा पैर्यां घाट माथै बैठ न एक चित्त व्हेय न जप करता। पछै मीठा, पियास भरिया गळा सूं भैरवी में भजन गावता घरे जावता।

यूं तो म्हूं मुलसमान री बेटी ही पण म्हूं म्हारा धरम री वातां कांई ज नीं जांणती। धरम कांई कै, कुरान कांई कै, इबादत कांई है म्हूं जांणती ही नीं ही। वात या ही के वां दिनां सुख बिलसवा सिवा म्हांका घर रा आदमी कांई जांणता ई नीं हा। सराब कबाब अर मैखाना में एड़ा गरक व्हेयरिया हा के एक ऊपरळो मजहब रो देखावो देखावो हो। ईं ज वास्ते म्हांका हरम में रंग-म्हेलां में ई धरम-करम जीवतो जागतो नीं हो। कोरो नाम नाम हो।

वेमाता म्हारे जनम रे लारै ई धरम करम सीखवा रा आंक मांड दीधा

हा के कांई और कारण हो। म्हूं ऊगे सूरज, वीं पीळोड़ा परभात में, जमनाजी रा लीला पांणी पै धोळी पेड़्यां माथे केसरलालजी ने पूजा करती देखती। वां ने पूजा पाठ करता देख नींद सूं तुरत जागियोड़ो म्हारो मन स्रद्धा, भगती सूं भर जावतो।

नैम धरम सूं रैवणिया केसरलालजी रो उघाड़ो गोरो डील जगमग करता दीवला री जोत री नांई दमकतो। वां रा पुन्न परताव रे आगे म्हारो, एक मुसलमान री डीकरी रो मूरख मन ई उणां रा पगां में झुक जावतो। कैवती केवती एक खिण सारू वा रुकगी। म्हने यूं लागियो वीं रा मूंडा पै केसरलालजी रा तेज परताप रो चानणो छायगियो अर वा एक झटको देय वीं चानणां ने अळगो कर पाछी वात जमावणी चावती व्हे। केसरलाल री वात करतां वा ऊंचा संस्कृत रा सबद बोल री। म्हूं देखतो रैगियो या सायजादी बोल री है के साधुणी।

संन्यासण कैवा लागी, 'म्हारे एक हिंदू दासी ही, वा रोजीना धोक देय केसरलालजी रा पगां री रज लावो करती। वीं ने देख म्हारो मन हरखीजतो ई हो अर ईसको ई आवतो। वरत वडूलियो करती जद वा म्हारी दासी विरामण भोजन करावती दक्षणा ई देवती। म्हूं ई उण ने पैइसा टका रो झेलो देय देवती न कैवती 'थूं केसरलालजी ने नीं बुलावे'ना कांई?' वा होठां ने दांता सूं दवाय न कैवती, "त त त त, केसरलालजी वापजी धरम पुन्न रो पैइसो थोड़ो ई झेले।"

केसरलालजी ने म्हांसूं मारी भगती जतावणी नीं आई। नीं चौड़े जतावणी आई नीं छाने ई वां सारूं कांई करणी आयो जो म्हारो भूखो मन लळचावतो रैवतो। म्हारा वडाडवा मांयलां कोई वामण कन्या माढाणी परण ले आया हा। म्हूं म्हेलां में एकमाड़ी वैठी देखती के म्हारा हाड़ मांस वीं विरामण दादी पड़दादी रा अंस सूं वणियोड़ा है, म्हारा मन में क्यूंक संतोस आवतो के म्हारा अर केसरलालजी रा लोही में क्यूंक तो मेळ है।

उण हिंदू दासी सूं म्हूं हिंदूवा रा धरम री वातां पूछती, देवी देवतां री अजव अनोखी वातां सुणती, रामायण र महाभारत री कथावां ने संका र समाधानां साथे सुणती। सुणतां सुणतां म्हारा अंतस में हिंदूवां री केई चीजां रा चित्तराम उतर जावता। देवी देवतां री मूरतियां, घू घू कर न वाजता संख, टणणाट करता घंटा, सोना रा कळस चढियोड़ा सिखरबंद मिंदर, धूप रो धूंवो, अगर, चंदण, फूलां री खसबोई। योग रा चमतकार, साधु जोगियां री सिद्धियां, विरामणां रा देवी महातम, मिनखां रा भेख में देवी देवतां री लीला। म्हारा मन री आंखियां आगै एक मायालोक वस जावतो। म्हारो चित्त विना धूंसाळा रा पंछी नांई उडियो उडियो फिरतो।

अतराक में फिरंगियां री सरकार सूं झगड़ो माच गियो। म्हाका नान्हासाक बदाऊं रा किला मांयने ई गदर रा एहनांण दीखिया। केसरलालजी बोलिया, 'अवै तो यां गौ हत्यारा गोरां ने हिंदवांण सूं बारे काढ न, हिंदू मुसलमानां ने राज ने पाछो पगां नीचे करवा ने एक मत्तो व्हेणो पड़ैला।'

म्हारा बाप घणां चतर र स्याणा हा। वे बोलिया, 'ये फिरंगी ओछी माया नीं है। हिंदवाण रो लोग यां सूं झगड़ो जीतवाने नीं। म्हूं पेट मांयला री आसा में गोद वाळा ने नीं फेकूं। कंपनी सरकार सूं झगड़ियां म्हारी है जो धरती पगां नीचे सूं परी जावै।'

उण वेळा आखा हिंदवांण रा हिंदू मुसलमाना रो लोई ऊकळ रियो हो। म्हारा बाप री यां बाणियां जसी वातां पे म्हांरो सगळां रो मन उणांने धरकार रियो हो। म्हारी बेगम मांवां ई कैवा लागी के झगड़ो झेल लेणो चावे।

केसरलालजी तो कमरां बंधी फौज सागे आय न म्हारा बाप सूं बोलिया, 'नबाब सा'व, जे आप म्हांके भेळे नीं भलो तो आप ने म्हां नजरबंदी में लां। झगड़ो चाले जतरे नजरबंद राखां। ई किला रो भारतोड़ म्हूं झेलूं।'

नबाब साब बोलिया, 'अतरो फसाद क्यूं करो, म्हूं थांरे भेळो हूं।'

केसरलालजी बोलिया, 'खजाना मांयतूं क्यूंक रिपिया काढो।'

नबाबसाब अतरोक ई ज कहियो 'चावता जाय ज्यूं देवतो रेवूं।'

एडी सूं लगाय न चोटी तांई म्हारे जतरा गेणां हा सगळा री गांठड़ी बांध म्हें उण हिंदू दासी सागे केसरलालजी कनें भेज दीधा। वां म्हारी ई नजर ने कबूल कर लीधी। म्हारो आभरण बायरो अंग अंग हरख सूं फूल गियो, रूंम रूंम ऊभो व्हे गियो।

केसरलालजी का'ट चढियोड़ी बंदूकां री नाळां सुधरावा लागा, जूनी तरवारां रे वाढ़ देवावा लागा। अतराक में अचांणचकां रा कंपनी रो गोरो साब, लाल वड़दीवाळी गोरी पळटन रे लारे, आभा तांई धूळो उडावता, किला में आय वळियो।

नबाबसाब छानेकरा गदर व्हे जावा रा समीचार भेज दीधा हा।

बंदाऊं री फौजां केसरलालजी रा एड़ा कैणां में ही के वां री आंगळी ऊंची करतां ई जूनी बंदूकां का'ट झाल, चढियोडी तरवारांसूंत न गोरां माथै आय पड़िया।

दगाबाज बाप रो म्हेल म्हने नरक जेड़ो दीखवा लागियो। ओलज सूं, दुख सूं अर नफरत सूं म्हारो काळजो कड़कवा लागियो। पण नैण सूं एक टोपो आंसू रो नीं पड़ियो। म्हारा कायर भाई रा मरदाना गावा पैर, भेख बदल म्हेलां बारे निकळगी। वठे देखवा चोखवा री वगत कींने ही। उण वेळा गोळा गोळियां

रो धूंवो मिट गियो हो, घायलां रो बरळाणो ई थम गियो हो। जळ में, थळ में चारूंपासे मौत रो सो सणणाटो छाय रियो हो। जमना रा पांणी ने राता रंग सूं रंग न सूरज ई आंथ गियो हो। निरमळ आभा में चांनणा पख रो चांद चमक रियो हो। रणखेत लोहियां सूं लथड़ पथड़ व्हे रियो हो। दूजी कोई वेळा व्हीं व्हेती तो दया सूं म्हारो हिवड़ो फाट जावतो। पण वीं दिन तो म्हूं वां लोथां मांयने फिर फिर केसरलालजी ने हेर री ही। हेरतां हेरतां आघी रात रा जाय न चांद रा उजाळा में रणखेत रे कने, जमना रे तट पे, आंबा रा गोड रे नीचे म्हनें केसरलालजी री लोथ दीखी। पसवाड़े ई ज वां रो स्यामखोर चाकर देवकीनंदण पड़ियो हो। म्हूं समझ गी के घायल व्हियां पछे कैतो चाकर ठाकर ने अठै लाय हिफाजत री जगा सुवाया है कै ठाकर चाकर ने लाय सुवायो है। दोई जणां बड़ी तसल्ली सूं कजा री खोळ मांयने माथो देय सोय गिया है।

पैलां तो म्हें म्हारी घणां दिनां री भगती री भूख ने बुझाई। गोडां गोडां तांई लटकता माथा रा केसां ने खोल, केसां सूं कतरी दांण वां रा पगां री रज ने पूंछी, म्हारा माथा पै वां रा ठंडा पगां ने राखिया। पछे वां रा चरणारविंदा रे होठ अड़ावतां अड़ावतां तो म्हारा नैणां सूं गंगा जमना बैवा लागी।

अतराक में केसरलालजी री देही हाली, सैंपीड़िया कुरणाया। म्हें चमक न वां रा पगां ने छोड़ दीधा। मींच्योड़ी आंख्या सूं, सूख्योडा कंठ सूं धीमेकरो साद निकळियो, 'पांणी।' म्हूं भागी जमना पै। जमना रा पांणी में म्हारी ओढणी आली कर न लाई। ओढणी निचोय वां रा मूंडा में पांणी चेवियो। वां री डावली आंख न माथा पै गैहरो घाव लागियोड़ो हो वठे ओडणी फाड़ पाटी बांधी।

यूं कतरा ई गरड़का जमना वीचै न वांरा वीचे लगाया। पाणी चेवती री, आंखियां पे पांगी न्हाकती री। धीरे-धीरे चेतो आयो। म्हें पूछियो, 'पाणी लावूं ?'

केसरलालजी बोलिया, 'कुण है थूं ?'

म्हासूं रेवणी नी आयो। म्हे केय दीधो 'आपरा चरणां री चाकर, नबाव गुलाम कादरखां री बेटी हूं।'

म्हें तो सोची के मरता मरता केसरलालजी वांरी भगत ने चाकर ने ओळखता जाय। यो पैलो मिलणो ई है अर छेल्लो मिलणो ई है। ईं सुख सूं अबै म्हने अळगो करगियो कोई नीं।

पण हाय, म्हारो नाम सुणता ई केसरलालजी तो न्हार री नांई गरजन बोलिया, 'दगाबाज बेईमान री बेटी। तुरकड़ी, मरता लगा ने हाथ रो पांणी पाय म्हारो धरम भस्ट कर दीधो।' यूं केवतांई वां तो म्हारा जीमणा गालड़ा पै खैंच न एक धंणगट री मारी। आंखियां आगे काळा पीळा आयगिया, झांप खाय हेटे पड़गी।

जद म्हूं सोला वरसां री कुंवारी कन्या ही, म्हेलां वारै वींज दिन पग वारै काढियो हो। जठा तक तो लोभी सूरज री किरणां ई म्हारा गालां री ललाई अर कंवला ई ने नीं चोरी ही। वीं दिन दुनिया में वारै पग देतां ई, ई संसार अर म्हारी पूजा रे देवता म्हारो यो लाड़ कीधो। पैलोड़ी आसीस म्हने म्हारा देवता सूं या मिली।

यूं केय नबावजादी छानी रेगी।

ओजूं तांई म्हूं हाथ में सिगरेट लीधा मंतरियोड़ो व्हे ज्यूं छानोमानो कैणी सुणरियो हो। कांई तो बोली सुणरियो हो, कांई धुन सुणरियो हो। कांई नी केवणी आयो, मूंडां में जांणै जीभ ई नीं ही।

अबे म्हासूं नी रैवणी आयो, मूंडा वारे अचांणचको निकल गियो,

'ढांढो हो।'

नवाबजादी बोली, 'कुण ढांढो हो ? पिराण निकलती वेळा कांई ढांढो मूंडा कने आया पाणी ने छोड़ दे ?'

म्हूं लजाय न बोलियो, 'सांची केवो, देवता हो'

वा चटाकदेणी री बोली, 'देवता कस्यो। देवता, चरणा में आयोड़ा भगत रे लात मारे कांई ?'

म्हूं बोलियो, 'आप सांची फरमायरिया हो।' यूं कैयन छानो रैगियो।

नवाबजादी केवा लागी,

'पेला तो म्हने घणो ई ज दुख व्हियो। यूं लागियो जांणे सारी दुनियां ई कांई तारामंडल ई टूक टूक व्हेन म्हारे माथै आय पड़ियो। थोड़ी देर पछै म्हारो चेत्तो ठकाणे आयो। म्हें वीं पवित्तर पण कठण हड़दा रा विरामण ने दूरा सूं नमसकार कीधो। मनोमन बोली. 'हे विरामण देवता, थां परायो धन नीं लो, परायो अन्न नीं लो। पराई लुगाई रा नेह, जोबन ने थां अड़ो तक नी, हीण मिनखां री सेवा नीं लो। थां धिन्न हो, थां ने वांधणियो कुण ? म्हूं ईं जोगी कठै के थांरा पेतावां में आय पड़ूं।'

नवाबजादी ने धरती पे पड़ न सास्टांग डंडवत करतां देख न केसरलालजी कांई जाणियो व्हेला, म्हनें खवर नीं। पण वांरा मूंडां पै म्हने अचंभो नी लागियो। वां रा मूंडा रो रंग वदलियो नी। थिर नजर सूं म्हारी कानी झांकिया, पछै उठवा ने कुरणावता ऊंचा नीचा व्हिया। म्हूं विचलाय न वांने झेलो देवा ने म्हारा हाथ आघा कीधा, पण वां छाना रैय म्हारा झेला ने नामंजूर कर दीधो। घणा दोरा टेंकता थका उठिया, धीरे-धीरे थागा लेता जमना रा घाट पे पूग्या। वठै एक डूंडो वंधियो हो। नीं तो कोई नाव चलावणियो हो नीं कोई पार करणियो

ई ही। वा नाव नाव में बैठ न नाव ने चलाय दीवी। देखतां-देखतां नाव धार में उतरगी, धीरे-धीरे आंखियां सूं अळगी व्हेगी। म्हारा मन में आई के दुखां रा बोझा ने क्यूं खैंचूं। अण आदरिया भगती भाव लीवां, डूब मरूं आवी। नाव गी जीं दिसा कानी हाथ जोड़, ईं मंझधान रात में, डाळी सूं टूट पड़ी काची कूंपल ज्यूं म्हूं देही ने भांग दूं, रज-रज कर न उडाय दूं। आभा में चमकते चांद ई म्हने मरजावा री सल्ला दीवी। जमना रे पैला पार रा जांबू रा रूंखड़ा ई कियो के मरजा। काळंदी रे काळे पाणी, आंबा री आंबावाड़ी चांदणी में चमकता किला रा घुमटा, सैंग जणां केवा लागिया, जीवा में कांई सार नीं, मरजा। जळ, थळ, नभ, सगळां ई राय खप जावा री दीवी। पण खळखळ वेवती जमना री धार में बैंय न परीगी ही, वीं जूनी नाव म्हने मरवा नी दीवी। कजा री खोळां मांयनूं म्हने खैंच न ले आई। म्हूं मोह मांयने उळझी लगी जमना रे कनारे किनारे चाल पड़ी। कठै ई लांबो लांबो कमरखांणो चारो, कठै ई रेतरड़ो, कठैई ऊंची नीची धरती तो कठैई खाळा। गैरा जंगळा ने अंवळा परबतां ने डाकतां चाली।

अतरी वात कैय नवाबजादी पाछी छानी रैयगी। म्हूं कांई नी बोलियो। नरी देर पछै वा बोली।

ईं रा पछै वीती जो तो ओर ही खोटी ही। न्यारी न्यारी कर न थां ने कस्या अरथावूं। एक गैरा जंगल में व्हेयन निकळी। कठी ने व्हेयन निकळी, अवै हेर न बतावणो चावूं तो नी बतावणी आवे। कठूं तो सरू करूं कठै खतम करूं। कांई कांई वातां तो कैवूं न कांई कांई छोड़ दूं। थां ने किण तरै वा कैणी केवूं के थां ने वा अणव्हेणी अणूती नीं लागै।

पण हां, अतराक दिना में ई ज म्हूं समझगी के दुनिया में अणव्हेणी बात तो कांई है ई ज नीं। नवाब री हरम रा सात ताला में रेवणी नवाबजादी साहूं बारली दुनिया दुरगम व्हेवो करे। पण म्हूं जांणगी के या मन री कोरी भरमना है। एक दांण बारै पग काड लो तो चालवानैं गैलो आपणैं आप लाधतो जावे। हां, नवाबी गैलो तो व्हे नी पर गैलो जरूर व्हेतो जावे। वीं गैला में मानवी आप अनाद सूं चालियो आय रियो है, गैलो अंवळो संकड़ो, भलां ई व्हो वीं गैला में हदबंदी भला ई मत व्हो। गैला पड़गैला घणांई फंटिया है वी में, दुख सुख घणांई है पण है वो गैलो ई ज।

वीं गैला में अकेली भटकती नवाबजादी री कैणी सुणवा में कोई मिनख ने आणद नीं आवेला सांची तो या है के म्हने ईं सुणावा में कांई रस नीं आवे। लाख वात री एक वात, दुख, सुख, भूख, तिस, आदर, अणादर घणां ई भोग्या हा

पण काल तांई पिराण रा बोझा ने खैंच्यां जाय री ही। काल सूं म्हूं हीमत हारगी, पापी पिराणां रो बोझो अबे म्हां सूं नीं घींसणी आवै। अतरा वरस तो आतसवाजी री नांई म्हूं सुलगी ही तो चक्कर ई आतसवाजी री नांई तेजी सूं काटिया। काल तांई तो म्हूं चक्कर काटती री म्हने ठा ई नीं पड़ी के म्हूं बळरी हूं। पण म्हारा दीवा री लौ एकणदम वायरा रा एक झोला सूं बुझगी। म्हारा जीवन री जातरा, म्हारी जिंदगाणी री मूंघी मुसाफरी खतम व्हेगी। लारै म्हारी केणी खतम व्हेगी।

अठै आय न नवाबजादी छानी रैयगी। म्हें मनोमन मायो हलायो ऊंहूं अठे आय न कस्यां खतम व्हे। थोड़ी देर छानो रैय अधकचरी उड़दू में वोलियो 'कसूर माफ करो; पाछली वात री क्यूं खुलासा करो तो म्हारो मन सोरो व्हे जावे।'

नवाबजादी हँसी। समझ गियो म्हारी अधकचरी उड़दू काम काढ लीधो। जो म्हूं उड़दू धड़ाकाबंद बोलतो व्हेतो तो म्हां आगे वींरी लाज मळगी नीं व्हेती। म्हूं वींरी बोली थोड़ी समझूं हूं नीं जो वीं बीचै म्हां बीचै पड़दा रो काम कर गियो, या ई ज आबरू ही।

वा पाछी केवा लागी।

केसरलालजी री खबरां तो म्हने लाग जावो करती। पण मेळो कोनी व्हियो। वे तांत्या टोपी रे सागे रळगिया। गदर रा दिनां में कदी अगूणां तो कदी आंथूणा, कदी दिखणांद में कदी उत्तराध में अणगाजी र अणघोरी बीजळी री नांई कड़कड़ाट करता पड़ता व्हे अर छिण में विलाय जावता पाछा।

म्हूं जोगण वण कासी में सिवानंद स्वामी ने गुरू वणाय संस्कृत रा सास्तर भणवा लागी। समसत हिंदवाण री खबरां वांरा चरणां में आय पूगवो करती। म्हूं पूरण भगती सूं सास्तर पढ़ती, संका भरियोड़ा चित्त सूं, अकुळायोड़ी गदर री खबरां ही जांणवो करती।

धीरे धीरे कंपनी री सरकार, गदर री लाय ने पगां सूं मसळ न वुझाय दीवी। पछै केसरलालजी री खबरां मिलणी रूकगी। गदर री वेळा जो नामी नामी व्हादरां री मूरतियां खिणखिण में दीखती वे सैंग विलाय गी।

अवे तो म्हारा सूं नीं रैवणी आयो। म्हूं तो गुरू रो आश्रम छोड़ भेरवी रा भेख में निकळगी। तीरथ जातरा मिंदर मठ, सिनान वियान करती फिरती री। कठै ई केसरलालजी रो पतो नीं लागियो। एक दो जणां रा मूंडा सूं, जो वां ने जांणता हा, सुणियो के, के तो वे रणखेत में काम आय गिया कै वां ने फिरंगियां फांसी पे चढ़ाय दीधा। म्हारो मांयलो मन इं वात ने मानतो ई ज नीं, वो कैवतो, 'या कदे ई नीं व्हे। केसरलालजी मरिया तो नीं, वा पवित्तर झळझळ

करती अगनी सिखा बुझी नीं। म्हारा आतमा री आहुति लेवा ने, कठे ई न कठे जग्य री वेदी माथे झळझळ करती वा सिखा वळ री व्हेला।'

हिंदू सास्तर में लिखियोड़ो है के तप सूं र ग्यान सूं, सूद्र ई बिरामण व्हेगिया पण या कठे ई नीं लिखी के तप कर न कोई मुसलमान, बिरामण व्हियो के नीं। वीं वगत मुसलमान हा ई नी, लिखता कठा सूं सांस्तरां में। म्हूं जांणती के म्हारो केसरलालजी सूं मेळो व्हेवा में घणी जेज है, मेळा व्हे जीं सूं पैलां म्हने बिरामण व्हेणो है। म्हूं मांयनूं कांई ने बारणूं कांई बिरामण व्हेयगी। आचार विचार सूं मन वचन करम सूं बिरामण बणगी। म्हारी वां बिरामण दादी रो खून, निसपाप तप तेज सूं म्हारी देही में दौड़वा लागियो।

गदर रे वगत, केसरलालजी री व्हादरी री वातां में कतरी सुणी ही पण म्हारा हिवड़ा मांयने वे मंडी कोयनीं। वीं आधी रात रा, चाँद री चाँदणी में, जमना री मंझधारा में छोटीसीक नाव माथे अकेला केसरलालजी ने जावता देख्या हा। वा तसवीर म्हारे काळजा में मंडगी ही। म्हूं तो रात दिन देखवो करती के वो तपस्वी वरोवर आगे महारहस्य कानी बधतो जायरियो है। वां रो नीं तो कोई संगी है नीं साथी है। उणां ने कीं री चावना ई कोयनी। वो तो निरमळ आतमा में मंगन पुरस अपणे आप में पूरण है। आभा रा सूरज, चांद र तारा ई छाना माना वां ने देखरिया है।

वां दिनां ई ज खबर लागी के, राजदंड सूं केसरलालजी निकळ भागिया, नेपाल कानी गिया है। म्हूं नेपाल जाय पुगी। वठै घणां दिन री। खबर लागी केसरलालजी नेपाल सूं ई कजांणां कठी ने ई परा गिया।

पछे म्हे परवत परवत हेर लीवो, कठै ई पतो नीं लागियो। वो हिंदूवां रो देस नीं है। भूटानी मलेच्छ मिनख रै वै। यां ने आचार विचार रो कांई ज धियान नीं। वठा रा देवतां री पूजा पाठ री सैंग विवि जुदी है। म्हें अतरा वरसां तांई साधना कर सुद्धि परापत कीधी ही वीं में कठै ई दागो नी लाग जावे। म्हूं डरपी, कठे ई म्हूं यां लोगा सूं भिटाय नीं जावूं जो बचती बचती चालवा लागी। म्हूं जांणती ही के म्हारी नाव कनारे लागवा वाळी है, म्हारो जमारो सुधरवा वाळो है।

पछे ? कांई कैवूं थांने। पाछली वात तो घणीज थोड़ी है। दीवो बुझण लागे जद खाली एक फूंक सूं बुझ जावे। अबे लांबी चौड़ी बधाय ने कांई कैवूं। अड़तीस वरसां पछै दारजिलिंग में आय न आज सुबे म्हें केसरलालजी ने अठे देखिया। बोलवा वाळी ने अठै ई ज रूकती देख न म्हें पूछियो 'कांई देखियो ?'

नवावजादी बोली, देख्यो, भूटानी वस्ती में भूटानी लुगाई रे लारे अर

भूटानी लुगाई रा पेट रा पोता पोतियां रे साथै मैला कुचैला गाबा पैरयां खेत में काम कर रिया हा ।'

कैणी खतम व्ही । म्हें सोची, कोई दिलासा री वात केवणी चावै । वोलियो, अड़तीस वरसां तांई वरोवर जीं ने रात दिन पिराणां रा डर भौ सूं दूजी जात वाळा सागै रैवणो पड़े, वो आचार विचार कस्यां निभावै ?'

नबाबजादी वोलीं, 'म्हूं कांई नीं समझूं हूं ईं वात ने ? पण म्हूं अतरा दिन किण मोह में उळझी भटक री ही । जी आदमी रे धरम करम म्हारा जुवान मनड़ा ने विलमाय लीधो हो, म्हने कांई खबर ही के वा तो एक आदत ही । खाली संस्कार मात्तर हा । म्हूं तो जांणती ही के वो धरम है आद है अनाद है, सदामद एक सरीसो रैवेला । अस्यो म्हूं नीं जांणती तो वीं सोळवां बरस में, नवो उघड़िया फूल जस्या म्हारा तन मन ने क्यूं चढावती ? तन मन ने अरपण करती वगत वीं धरम करम जाणणिया बिरामण रा जीमणां हाथ रा परसाद ने माथै क्यूं चढावती ? वीं चंरगट ने गुरू रा हाथ री दीक्षा जांण माथो झुकाय दूणां भगती भाव सूं माथै क्यूं झेलती ? हाय, धरमातमा, थैं तो थारी एक आदत री जायगा दूजी आदत धारण कर लीधी । पण म्हने वीं एक जोबन अर जिंदगानी री जायगा दूजो जोबन र जिंदगानी कठे लाधैला ?'

यूं केवतांई वा चट देगी री ऊभी व्हेगी । बोली 'नमस्कार' । बोलतां ई वीं आंपणी गलती ने दुरस्त कीधी ।

'सलाम, वावू साब ।'

ईं मुसलमानी ढंग री रामासामी रे सागै वीं, रेता में रुळता वोदा हिंदू धरम सूं सीख लीधी । म्हूं वीं ने कांई कैवूं जठा पैलां तो वा हिमाळै री भूरा रंग री धंवर वादळी री नांई विलायगी ।

म्हूं थोड़ीक देर आंखियां मींच्यां नबाबजादी री कैणी ने मन रा पाठा पे उतारवा लागो । जमना री तट पै वणियोड़ा किला रा झरोखा कने मोड़ो लगायां गुललंजा नवावजादी ने मांडी, तीरथां रा मिंदरा में संझया री आरती री वेळा भगती भाव सूं, गळगळी व्हेती तपसण ने उतारी । दारजिलिंग रा पहाड़ा में कलकत्ता रोड रे कने एक चतर अधकड़ लुगाई री मूरती मांडी जींरो हिवड़ो टूक टूक व्हियोड़ो हो, जो निरासा री मूरती लाग री ही ।

आंख्यां खोली तो देखूं वादळा फाट गिया है, सूरज री सुंवावणी किरणां निरमळ आभा में चमचम कर री है । रिकसां में वैठ न अंगरेज लुगायां न घोड़ां पे

चढ न अंगरेज आदमी स्हेल करवा ने निकळ रिया है । एक हिंदुस्तानी गळा में गुळबंद बांधिया, म्हारी आडी ने मुळकतो जाय रियो है ।

म्हूं झटपट उठियो । सूरज रा चानणां में चमचम करती दुनिया में म्हने वा कैणी सांची नीं लागी । म्हने यूं लागियो, धंवर रे लारे सिगरेट रो धूंवो मिलाय न म्हें एक कैणी जोड़ लीधी ही । वा मुसलमान बिरामणी, वो बिरामण व्हादर, जमना तट रो किनारो, कोई ज सांचो नीं है ।

देज लेज

पांच बेटां माथे बेटी जनम लीधो तो मां बापां घणां कोड सूं नाम काढियो निरूपमा। ईं घराणां में ओजू तांई एड़ो सौक रो नाम कोई टाबर रो नीं पाड़ियो हो। नाम आज तांई देवी देवतां माथे गुणेस, रामू, सीता, पारवती जेड़ा नाम चालता आया हा।

निरूपमा रा सगपण री वातां चाल री ही। बाप रामसुंदर घणोई हेरियो, जोइयो पण मन माफग वर कोई दीख्यो नीं। छेवट में फिरतां फिरतां एक रायवादर रे बेटा री खबर लागी, लूंठो घर, एकाएक बेटो। रायबादर रा घर में पैलां बाप दादा री धन दौलत, तो ठिकांणे लागगी ही, खेत कूड़ा ई पगां नीचे नीं रिया हा। पण घर रो नामून मोटो हो।

रायबादर दस हजार रिपिया टीका में मांगिया, दायजा में ई गैणां गांठा, सोनो चांदी गैरो मांगियो। रामसुंदर आगली पाछली तो विचारी नीं देवणो हुंकार लीधो। वां सोचियो के व्हेणो व्हे ई जो व्हेई, एडा लड़का ने हाथां बारै निकळवा नीं देणो।

रिपिया रो परबंध करवाने वे घणां ई भागिया पण रिपिया हाथे नीं लागा जो नीं लागा घर री आठापूंजी गैणे मेल दीधी तोई सातेक हजार रो तोड़ो तो रैय ई गियो, उधारा पायो ई कीधो पण काम नी सरियो। अठीने फेरा रो दिन आय गियो। करड़ा ब्याज माथे एक जणो रिपिया देवा ने राजी ई व्हे गियो पण एन वगत माथै वो कजांणा कठे जाय छिपियो। ब्याव रा मांडपा में हाय हूय माचगी, लोग नाराज व्हेगिया, रूसणां रूसणी व्हेवा लागा। रामसुंदर,

रायबादर रे धणी हाथा जोड़ी कीधी 'सुभ वेळा टळ जाय, आप फेरा तो फिरवा दो। आपरी पाई पाई म्हूं आपने देवूं कौल कर बदलूं नीं।' रायबादर रो टका जस्यो जुबाब दीधो, 'रिपिया म्हारे हाथ में नीं मेलो जतरे वींद रो गंठजोड़ो बंधणो नीं।'

मांयने लुगायां रोवा झींकवा लागी। जीं रे पूंछड़े यो कळेस व्हेय रियो वा परणेतू छापल ओढियां, गैणो गाबो पैरयां, ललाट पै चंदण री खोळ काढियां, छानी मानी बैठी। सासरा वाळा सारूं वीं रा मन में कतरोक मोह अर इज्जत वध री व्हेला ?

अतराक में एक नयो गूंपो फूटियो। वींद अचाणचका रो बाप रो कहियो मानवाने नट गियो। बाप ने उपड़तांई जुबाब दीधो 'मोल तोल, लेज देज म्हूं नीं जाणूं। म्हूं तो परणवांने आयो हूं जो परण न मांडो छोड्ंला।'

बाप कांई करै सुणावा लागा, 'देख्यो जमानो ?' सागै एक दो स्यांणा समझणां हा वां ई सुर में सुर मिलायो, 'भणायलो और। धरम नीति री पढायां तो अबै करावे नीं जीं रा फळ है ये।'

नवी पढाई रो यो जैरीलो फळ, घर में ई फळतां देख रायबादरजी ढीला पड़गिया। ब्याव तो खैर कियां ई व्हियो ई ज पण रस नीं रियो। गरण गटोळिया खुवाय दीधा। सासरे सीख देवता बाप री छाती फाटवा लागी। लाडली बेटी ने छाती रे लगाय लीधी, आंखियां सूं चौसरा छूट रिया।

बेटी बाप री छाती में माथो घाल न पूछियो 'अबे वठा वाळा म्हनें पाछी अठै नीं आव देवेला ?'

बाप रूंझ्या गळा सूं बोलियो, 'आवा क्यूं नीं देय बेटा। म्हूं आय न थनैं ले जावूं।'

[२]

रामसुंदर धणी विरियां बेटी सूं मिलवाने जावता। पण बियाईजी रे घरे कोई वां रो आव आदर नीं। चाकर छोरी तकात वां ने गनारता नीं। रावळा सूं बारै, नियारी ओवरी में चार पांच मिनट सारूं बेटी सूं मिलाय देवता, कदी कदी तो मेळो व्हेतो ई नीं, पगरखियां रगड़ता पाछा फिरता।

बियाई सगा में एड़ो अणादर तो अबे बरदास नीं व्हे। रामसुंदर विचार लीधी के चावे जो व्हो रिपिया तो वां ने देय ई देणा पण देवे कठा सूं माथै तो केस है जतरो लेहणो व्हेय रियो। वो ई चूकावणी नीं आय रियो हो। दाळ रोटी रो खरचो ई दौरो निभ रियो हो। रोज नित नूवा आळखा लेय लैणार बोहरा सूं नीठानीठ पिंड छुड़ावता।

सासरा में निरूपमा ने रोज ओ'टा टो'टा सुणणा पड़ता । सासरा वाळा तो मां वापां ने कंवळा आगे ई ज ऊभा राखता । सुणावणां सुणतो सुणती गळा तांई भर जावती तो बापड़ी आडो जड़ रोय रोय छाती उरळी करती । सुणावणां सुणणो न रोवणो नित्तनैम हो । सासू तो गाळियां री वरखा ई ज करती रैवती । कोई पाड़ पाड़ौसण आवती न कैवती 'वींदणी रो मूंडो तो देखावो ।' सासू झडाकदेणी रो मौसां रो भड़ाको लगाय देवती 'देखे मूंडो, जेड़ो घर घरांणो है वेड़ो ई मूंडो व्हेला ।'
सासू तो बीनणी ने खावा पैरवारी ई नीं पूछती । जै कोई भलो मांणस पाडौसग, बीनणी रे खावा पैरवा री पूछती तो सासू कड़कन केवती 'घणो ई है । और कांई दे फेर ।' ईं रो अरथ तो यो व्हियो के जै बाप पूरा रोकड़ा चूकावतो तो खातर ई पूरी व्हेती । सैंग जणां यूं रैवता जांणै बीनणी रो तो ईं घर में लेवणो देवणो ई कांई, या तो जांणे मनमत्ते आय घर में वळी व्है । छानी कस्यां रैवती, बेटी रा अणादर री, फोड़ा री वात बाप जाणियो ई । वां तो घर ने बेच देवा री धारी ।

अठीने वठीने बेचवा री वातां चलाई पण बेटां सूं छानै । मन में नक्की कीधी के छाने रो छाने घर ने बेचं वीं ज घर न भाड़े लेय रैवांला एड़ी तरकीब करूं के कानो कान किनेई ठा ई ज नीं पड़े ।

बेटां ने भणकारो पड़गियो । सैंग बेटा मिल न बाप कने रोवा लागिया । वां मांयने ई तीन बेटा तो पराणिया थका हा, छोरा छापरा ई हा वांरे । वां तो राड़ो कीधो ई ज । छेवट में घर बेचवा नीं दीधो । अबै रामसुंदरजी मूंडे मांगिया व्याज पै, थोड़ा थोड़ा रिपिया उधारा लाय भेळा करवा लागिया । फळ यो व्हियो के टोटा फासी चालवा लागी ।

निरूपमा बाप रो मूंडो देख न समझगी । बूढा बाप रा धोळा केसां, अर उतरियोड़े मूंडे बताय दीधो के वे करज में कळ रिया है, जीव में यांरे जक नीं है । चित्ता, चित्ता री नांई वाळ री है । बेटी रो गुनेगार बाप व्हे जद वीं गुनै रो पिछतावो छिपावणी थोड़ो ई आवै । रामसुंदर बियाई रे घरै जावतो, इजाजत मिलियां ऊभां ऊभां बेटी सूं वात कर न पाछो निकळतो जीं वेळा वीं री छाती बरड़ाटा मेलवा लागती जांणै अबै वड़की । वां रा मूंडा सूं ई मन री दसा जांणणी आय जावती ।

बाप रा जखमायल जीवड़ा ने हिमळास देवा सारूं वा पीयर जावा ने आगती उतावळी व्हेगी । बाप रो मुरझायोड़ो मुखड़ो वीं ने सालवा लागो । दो दिन भेळी रेवूं तो बाप ने हिमळास तो दूं । एक दिन वीं बाप ने कहियो 'म्हने घरे ले चालो ।'

नीं चूकावूं जतरी बेटी म्हारी नीं। वियाई रे डेळी पै पग नीं नेलूं।

३

घणां दिन व्हेय गिया। निरुपमा बाप ने बुलावा ने आदमी भेजती री, पण वे कदी घरे लाविया ई नीं। बाप सूं मिलियां ने घणां दिन व्हेगिया तो वा पींगळियां पड़वा लागी। काई व्हेय न आदमी भेजणो ई रोक दीवो तो बाप रा काळजा पै करोतां वेवा लागी। पन वां बेटी रे घरे पग नीं दीवो।

आसोज रो म्हीनो आयो। रामसुंदर बोलियो, अबकाळे पूजा में बेटी ने बुलायन रैवूं। नीं लावूं तो म्हूं..........' करड़ी आखड़ी लेयलीवी।

नौरता री पांचम रे दिन, पछेवड़ा में नोट पळेट न चालिया। अतराक में पांचेक वरस रे पोतो आय न दादा रे लट्टूवियो, दादाजी, म्हारे सारू गाड़ी लाय रिया हो कांई ?'

वीं ने रवड़ रा पैडा री ठेला गाड़ी माथै चढ़ न खेल करवा रो कोड़ चढ़रियो हो, पण सीकं पूरी ज नीं व्हीं ही। छै वरसां री पोती आय न रोवा लागी, 'दादा, पूजा रे दिन म्हूं कांई ओढूं ? म्हारे ओढवा ने ओढणी कोय नीं।"

रामसुंदर ने ठा ही, वां ने पैलांई सोच लागरियो हो के रायवादर रा घर सूं पूजा में जावारो बुलावो आय गियो तो वे वां री वींनणिया ने ई दसा में भेजेला कांई, मंगतियां री नांई जावती आछी लागेला कांई। वे सोचता अर गेरा गेरा नीसासा गेरता। नीसासा गेरियां व्हेतो कांई ललाट रा सळ गेरा पड़वा सिवाय। नातवानी रा रोवणां कानां में गूंजरिया हा, रामसुंदर वियाई री पोळ में पग दीवो। आज वीं रा मन में कोई संको नीं हो। पैलां तो चाकर छोरां साम्हा झांकता वां ने ओलज सी आवती पण आज वीं रा पग ई और ढव सूं पड़ रिया। वे आज घर में यूं वळियो जांणे खुद रा घर में वळ रिया है। मांयने गियां ठा लागी के रायवादरजी बारै गियोड़ा है, थोड़ीक वाट नाळणी पड़ेला। रामसुंदर सूं मन री छोळ दवावणी नीं आई, बेटी सूं मिलिया। आंणद रा आंसूवां री झड़ी लागगी, बाप ई रोया, बेटी रोई। किरा ई मूंडा सूं बोल नीं निकळियो, हेत सूं छाती कवकती री। पछे रामसुंदर बोलियो 'वेटा, अबकाळे म्हूं थनै लेय न जावूं। अबै कोई आड अडावण नीं।'

अतराक में तो रामसुंदर रो वड़ो वेटो हरमोवन, वीं रा दोई टावरां सागै हरड़ देणी रो घर में आय वळियो। आवतां ई बोलियो 'म्हांने मंगता कर जावां रो ई ज मतो कर लीवो के ?'

रामसुंदर एकगदम रीस सूं रातो पड़ न बोलियो, 'तो थां सारू म्हूं नरकां रो गामी वणूं के ? म्हारा करयोड़ा कोल सूं फिर जावूं कांई ?'

रामसुंदर आप रा घर ने वेच न्हाखियो। सावचेती तो घणी वरती के छोरां ने ठा नीं पड़ै पण कजाणां किण तरै वां ने वेरो पड़गियो। वीं ने असी झाळ छूटी के आपा वारै व्हेगियो। सागे पोतो ई हो, वो वां रा दोई गोडां रे लटूंब न ऊंचो मूंडो कर न वोलियो 'दादाजी, म्हारे गाडी ?'

रामसुंदर माथो झुकायां ऊभो। दादो कांई वोलियो नीं तो निरूपमा रे जाय लटूंवियो, 'भुवा, म्हने एक गाड़ी लाय दे।' निरूपमा अटकळ लगाय लीधी। वोली, 'थां एक काणी कौडी म्हारा सुसरा ने मत दीजो। जो थां एक धींगलियो ई देय दीवो है तो म्हूं माथो फोड़ न मर जावूं, थांरा सोगन नीं मरूं तो।'

'नीं वेटा, यूं कैवे कदी। जो म्हें रिपिया नीं चुकाया तो ई थारा वाप रो मांजनो जावै, थारो ई जावै।'

'मांजनो तो जावै रिपिया चुकायां। थां री बेटी री कोई इज्जत कोयनी है कांई ? म्हारी वकत रिपिया पूंछड़ै ई ज है कांई ? रिपिया नीं तो म्हारी कीमत ई नीं ? नीं, वापजी, रिपिया देय म्हारी वेइज्जत मत करो। थां रा जमाई तो रिपिया चावै ई नीं पछै थां क्यूं दो।'

'तो वेटा थनैं ले जावा नीं देय म्हनें।'

'नीं ले जावा दे तो रैवा दो, थांई लेवाने मत आवजो।'

रामसुंदर धूजता हाथां सूं नोटां ने पछेवड़ा रे पल्ले वांध न पाछा चोर री नांई घर सूं वारै निकळिया।

ये वातां छानी रेवा री थोड़ी व्हे। कोई चाकर छोरी कान लगाय न सुण लीवो वीं जाय सासु ने सुणाई रामसुंदरजी तो रिपिया लाया हा पण बेटा आड़ा फिर गिया, वेटी नटगी। कांई पूछणी वात। सासु रा हिया में होळी तो वळ ही री मायने पूळो कांई भारो न्हांखणी आय गियो।

निरूपमा रे तो सासरो सूळां री सेज वणगियो। वीं रो परणियो तो डिपटी मजिस्ट्रेट वण गियो जो वारै चाकरी पै परो गियो।

निरूपमा तो माचो पकड़ लीधो। ईं में कोरी सास रो ई कसूर नीं हो, निरूपमा डील रो धियान नीं राखती। काती म्हीना में, ओस पड़ती रैवती न वा सिरांत्या री वारी खोल न सोवती रैवती, उवाड़ी पड़ी रैवती कांई ओढती ई नीं। खावा पीवा रो धियान राखती नीं। डावड़ियां कदी कलेवो लावणो भूल जावती तो वा मूंडा सूं कैवती नीं के लावो। वीं रा मन में जचगी के वा तो ईं घर में चाकर छोरी ज्यूं पड़ी है, सासू सुसरा दो टुकड़ा न्हांखे जो वां री किरपा है। सासू ने वींनणी रो यूं रैवणो ई तो नीं सुंवावतो। खावती पीवती नी तो चटाक देणी

रा सुणावा सुणावा लाग जावती 'वयू' जीमे। राजा री बेटी है। गरीबां रा घर री रोटी यांने थोड़ी भावै।

सासू जी रा जींकारा बहूजी रा मरण।

एक दिन निरूपमा सासू रे हाथ जोड़ न बोली, 'बूजीसा, एकर बाप अर भायां ने बुलाय म्हने मेळो कराय दो।'

सासु बोली, 'ये पीयर जावा रा चरित्तर है।'

कहियां तो कोई भरोसो नीं करेला पण वीं ज संझ्या रा निरूपमा ने उल्टो सांस चालवा लागगियो। वीं ज दिन डॉक्टर वीं ने पैलीपोत देखियो न वो ई ज छेल्लो देखणो हो।

घर री बड़ी वीनणी मरी, चाल चलावो ई जोरदार व्हियो। रायबादर रे घरै नौरता में दुरगा री मूरती बोळावो घणां ठाठ सूं व्हेता। मिनखां में नाम हो वां री मूरती वोळावारो। वस्या ई ठाठ सूं बेटा री वीनणी ने, घर री गणगौर ने वां वोळाई। चंदण काठ री चिता चुणगी। लारै करिया करम, मौसर ई वस्यो ई व्हियो जस्यो रायबादर रा घर में व्हेणो चावै। मनख कैवे के क्यूंक माथे ई कढावणो पड़ियो रायबादर ने।

गांम रा मिनख रामसुन्दर रे घरे बेठवा ने जावता दिलासा देवता तो लारे री लारे चरचा करता के वांरी बेटी रो चलावो कस्योक धूमधाम रो व्हियो।

अठी ने डिपटी मैजिसट्रेट रो कागद आयो 'म्हें अठे घर लेय लीधो है वीनणी ने भेजो।'

रायबादरणी पडूत्तर दीधो, बेटा, थारी सगाई दूजी जायगा तै व्हेगी है। सीख ले घरे झट आय जा।

अब काळे टीका में रोकड़ा बीस हजार हाथे लागिया। रायबादरजी पैला वाळी भूल नी कीधी। पैला रोकड़ा गिण पछे परणायो।

राजतिलक

नवेन्दुसेखर, अरुणलेखा रे गंठजोड़ो बांध न चंवरी में बैठ्यो जदी वैमाता थोड़ीक मुळकी। वधाता ने जां रम्मता में मजो आवै वे रम्मतां मानवी ने हमेसां हँसावो नीं करै। नवेन्दुसेखर रा वाप पूरणेन्दुसेखर रो अंगरेजी राज में पासो हो। 'वड़ा हुकम में फायदो' रो फायदो वे जांणता हा, ई नुसखा ने अजमाय न वे 'रायबादर' बणगिआ हा। उणां रै कनें एड़ा नुसखा घणां ई हां, पण व्हेणार री वात के पचपन वरस री ओस्था में ई वे वीं लोक में सिधार गिया जठै खिताब नीं व्हे। विग्यान वाळा कैवो करे के सगती रो नास कदै ई नीं व्हे, वा रूप भलांई वदल ले, जायगा बदल ले पण वा खतम नीं व्हेवो करे। 'बडो हुकम रा फायदा' रा नुसखां सूं, अचपळी लिछमी वाप परा गिया तो वेटा रा माथा पै खावंदी रो हाथ मेल दीधो। नवेन्दुसेखर रो माथो अंगरेजा रा चरणां री रज ने चढावा लागो।

नवेन्दु री पैलां री परणी, कूंख फाटियां बिना ई मरगी। अबै जो लौड़ी परण न आई वीं रा पीयर वाळां रो ढाळो ई दूजो हो। वीं रा मोटा भाई प्रमथनाथ री आंपणां पराया में इज्जत ही, वां रो नामून हो। छोटा मोटा वांरा चालियोड़ा गेला पै चालता हा। प्रमथनाथ बी ए. तांई भणियोड़ा हा। अकल रा तो उंजीर हा। पण वां री तनखा मोटी नीं ही, कुरसी र कलम री ताकत वां कनें नीं ही। व्हेती कठा सूं ? अंगरेज वां सूं दूरा रैवता तो वे ई अंगरेजां सूं दूरा रैवता। 'तुम हमसें करड़े तो हम भी करड़े लट्ठ' वाळी वात राखता। ओळख

पिछांण वाळा, घर वाळा, तो वां ने घणां ऊंचा, जोगा समझता। पण दुनिया ने वां में कोई वडापणो नीं दीखतो।

ये ई प्रमथनाथ एक र तीन बरसां सारू विलायत परा गिया। वठै अंगरेजां रो भलापणां वां ने अतरा मोय लीधा के देस रा टळकता आंमूड़ा ने वे भूल गिया। पाछा देस आया अंगरेजी पोसाक पैरियोड़ा। सा'वां री पोसाक मांयने देख भाई बेन अर कडूंबा रा मिनख एकर तो भेळा भेळा व्हिया। पछै पांच दस दिनां पछै कैवा लागिया, 'अंगरेजी पोसाक यांने ओपे कतरीं है, केड़ा फूटरा लागै।' पछै धीरे धीरे अंगरेजी पोसाक माथे वे आंजसवा लाग गिया।

प्रमथनाथ विलायत सूं ई ज धार न आया हा के, अंगरेजां रे लारै कस्यां वरोबरिया रो बरताव राख्यो जावे, या म्हूं देस वाळा ने परतख बताय दूंला। मिनख कैवे के विना लुळियां अंगरेजां सूं मिलणी नीं आवे। या तो वां री आप री कमजोरी है वे हकनाक ई अंगरेजां ने दूसण दे। प्रमथनाथ विलायत रा ठावा ठावा सा'व वादरां रा सारटीफकेट सागै ले आया हा। वां रा जोर पै हिंदवांण में रैवणिया अंगरेज ई आदरवा लागगिया। और तो और अंगरेजां रे अर वां री लुगायां रे सागै वां ने चाय पाणी पीवा रा, खाणा खावा रा, खेल तमासा देखणे रा औसर ई मिल जावता। यां कुरब कायदा सूं वां रो माथो सूजवा लागो।

यां दिनां ई ज हिंदुस्तान में नुवी नुवी रैल री लैण चलू व्ही। रेल कंपनी; छोटा लाटसा'व री पधरावणी कीधी। सागै सागै राज में पासी राखणिया, ठावा ठावा ने ई बुलाया। रेल में चढिया, वां में प्रमथनाथजी हा।

रेल में पाछा आवतां, वां ठावा मानीजता सिरदारां ने एक अंगरेज दरोगे, सैलून मांयनूं मांजनो पाड़ नीचे उतार दीधा। सा'व बादर वणियोड़ा प्रमयनाथजी मांजनो जावतो देख पैलां ई ज नीचे उतर जावा ने आघा पाछा व्हिया तो दरोगे वां ने कहियो, 'आप क्यूं उतरो, विराजिया रैवो आप तो।' आंपणो अतरो मान देख एकदांण तो वे फूल गिया। गाडी छूटी। प्रमथनाथ एकला वैठिया रेल री वारी मांयनूं गुर दांव न वंगाळा री भोम ने जोय रिया अर सोचरिया। विचारतां विचारतां वां री आंखियां सूं ऊना ऊना आंमूवां रा चौसरा छूट गिया। वां ने एक जूनी कैणी चीतां आई। एक गवेड़ो रथ खेंचिया जाय रियो हो वीं रथ में ठाकुरजी री मूरती ही। दरसण करगिया गैला में पड़ पड़ वा रज उठाय माथा रे लगाय रिया हा, गैला वीचे पड़ सास्टांग डण्डवत कर रिया हा। वी मूरख गधेड़े जांणियो के ये तो म्हारी नमना कर रिया है। प्रमयनाथ कैवा लागिया वीं गवेड़ा मे अर म्हारा में अतरोक ई ज आंतरो है के वो समझियो नीं अर म्हूं

मरम समझ गियो हूं के यो मान म्हारो नीं, मान वीं बोझा रो है जो म्हारे माथे लदियोड़ो है।

प्रमथनाथ घरे आय न कडूंब रा छोटा मोटां सगळा ने बुलाय एक होम कीधो। वीं होम मांयने विलायती गावां री आहूत्यां देवा लागिया। वासदी री झाळ ज्यूं ऊंची जाय री ज्यूं टावर हुलस हुलस न फदक रिया हा। उण दिन सूं प्रमथनाथ अंगरेजां री चाय अर रोटी रा टुकड़ा छोड़ दीधा। आप रे घरे बैठ गिया। दूजा खितावां रा मौताज पैलां ज्यूं ई अंगरेजां री पोळ माथे पागड़ियां झुकाया झुकाय लटका करता रिया।

भाग री वात नवेन्दुसेखर वीं ज घरांणा री बेटी ने बीनणी वणाय घरे ले आया। प्रमथनाय री वचेट बेन रे लारे ब्याव कर लीधो। ईं घर री टावरियां जेड़ी रूड़ी रूपाली ही वैड़ी भणियोड़ी गुणियोड़ी ही। नवेन्दु जाण्यो 'जीत्यो।' पण वीं घर री बेटी आय न झटके ई वताय दीधो के 'म्हने परण न जीत्या कोय नी थां।'

वांतां करतां करतां नवेन्दु जेब मांय नूं काढ न कागद यूं मेलदेतो जांणे पड़िया हा जो भोळप में निकळ गिया। वे कागद व्हेता हा सा'बांरा मांडचोड़ा वाप रे नाम। साळियां रा राता पातला होठां में तीखी हंसी री धार चमकती जांणे मुखमल रा म्यांन में तरवार चमकी। जद नवेन्दु चमकतो के गजब व्हो, कुठोड़ कागद काढिया।

साळियां में सैंगा सूं मोटोडी लावण्यलेखा जो रूप गुणां में ई मोटी ही, एक दिन आछो भलो दिन देख विलायती बूंटा ने नवेन्दु रा सुणेट रा ओवरा री ताक मांयने जमाया न बूंटा रे संदूर चरचियो, माळीपनां लगाय, फूल चढाय, दीवो जगाय, धूप वाळ्यो। नवेन्दु ज्यूं ई घर में वळियो के दो साळिया नवेन्दु रा दोई कानी सूं कानड़ा पकड़ न वोली, 'थांरी कुल देवी रे धोक दो। यां री मानता करो जो थां मोटा ओहदा पै चढो।' तीजी साळी किरणलेखा घणां दिनां तांई फोड़ा देख एक चादरो वणायो जीं पे राता डोरा सूं सा'वां रा नाम कसीदा में काढिया, जोन्स स्मिथ, टामसन, पूरा अठोत्तर नाम। पूरो जलसो जोड़ न वांरी वंसावळी रा नाम वाने सुणाय चादरो नजर कीधो। चौथोड़ी ससांक लेखा। जीं री गणती तो खासा मांयने कोयनी ही तो ई आय न वोली, 'जीजाजी म्हूं थांरे एक माळा लाय दूंला जो थां अंगरेजां रा नाम जपवो करजो।' मोटोड़ी वेनां धाकल दीधी 'जा जा, थूं या ई वादरी वतावा ने आई है।'

वापड़ा नवेन्दु ने मन में रीस ई आई न ओलज ई आई पण साळिया सूं अलगो ई तो नीं रेवणी आवे। खास कर न मोटोड़ी साळी सूं जो अपछर रे

उणियार ही । वीं रा मूंडा मांयनूं अमरत ई झरे तो सूळां ई थोड़ी कोय ही नी । वा बोलती जद नसो ई चढतो न कांटा ई गड़ता जावता । दीवा री ळौ री लपट सूं रीयासन फड़को भणण भणण ई करे अर एड़े मेड़े चक्कर खावतो ई नीं रुके । फड़का वाली दसा नवेन्दु री ही । साळियां रे मोह में पड़ नवेन्दु अंगरेजां री वातां करतो लजावा लागो । जींदिन बड़ा सा'ब रे मुजरे जावतो तो साळियां ने केवतो 'सुरेन्द्र बनर्जी रो भापण सुणवा जाय रियो हूं । दारजिलिग सूं वचला सा'ब पाछा आवता न वो साम्हो टेसण पै जावतो तो साळिया ने केय न जावतो, 'विचला मामाजी सूं मिलण ने जायरियो हूं ।'

सा'ब अर साळी । यां दो नावां में पग देय न बापड़ो अवखाई में पड़ गियो । साळिया मन में हँसी 'थां री दूजी नाव रे पीदा में छेकलो कीयां विना रेवणी म्हां नी ।'

राणी विक्टोरिया रा आवता वरस गांठ पै नवेन्दु खितावां रा सुरगलोक रो पैलो पगथियो 'रायवादर' रो खिताव धारण करेला । एड़ीक सुळसुळी सुणीजी । वीं मिलण वाळा कुरव री वधाई साळियां ने देवा री छाती नवेन्दु री नीं पडी । पग एक दिन, सरद रात रा चांनणा पख री ऊजळी, खोड़ीली रात में, मन री छोळ मांय ने परणी पातळी आगे वा वात मूंड़ा वारै निकळगी । दिन ऊगतां ई वा तो पालकी में वैठ वैन रे घरे पूगी, आंखियां जळजळी कर न साद गळगळो कर न वैन ने मन री व्रिथा सुणाई । लावण्य वोली, 'खोटी वात कांई है तो । रायबादर रो खिताब लेवा मूं थारा बालम रे कोई सींगड़ा पूंछड़ा थोड़ो ई ऊग जाय जो थूं लाजां मरे ।'

अरुणलेखा वोली, 'जीजी, चावै जो व्हो, म्हूं रायवादरणी तो मरियां ई नीं वणूं ।'

मांयली वात या ही के अरुणा री जांण पिछांण रा भूतनाथवावू राय वादर हा ज्यूं वा नीं चावती । छेवट में लावण्य भळांवण लीवी थूं कांई ज सोच मत कर । म्हूं थारो मनचींत्यो कर देवूं ।'

लावण्य रो परणियो नीलरतन वक्सर में रेवतो । सरद रूत उतरतां उतरतां नवेन्दु रे वठा सूं बुलावो आयो । वे राजी राजी वक्सर चालिया । रेल पै चढती वेळा नीं तो वां री डावली आंख फड़की नी डावल्यो भुज ई फड़कियो ।

लावण्य सरद रुत री नदी कनारा रा कांस रा गोड़ ज्यूं झोला खाय री । वीं झोला लेणी पै नवेन्दु री आंखिया अटक गी । पीळोड़ा परभात में, झोला लेती मालती रे वेलड़ी में नुवा विगसियोड़ा फूलां सूं जांणै सीळो सीळो ओस झर रियो जीं ने देख नवेन्दु री आंख ठरगी । मन रा हुलास सूं, वठारा हवा पाणी सूं

नवेन्दु रो अणपचो रोग कट गियो। रूप निरखतो जद वीं ने लागतो के वी रे पांखड़ा आयगिया है जो आभा में उड़तो फिर रियो है। साळी रा हाथ री सेवा चाकरी करावा रा विचार सूं ई वीं रो रूंम रूंम नाचवा लागतो। वाड़ी रे मूंडागे गंगा वेय री जो नवेन्दु ने लागती के वींरा मन री छोळ सूं वा हड़ड़ करती वेयरी है। सुवै सुवै नंदी कनारा पै टैल न पाछो आवतो जदी सीयाळा रा परभात रो मीठो मीठो तावड़ो यूं लागतो जांणे पियारी धण साथे मिलाप व्हियो। पछै सौक सूं साळी रे सागे रसोवड़ा में जाय बळतो। घड़ी घड़ी रो काम बगाड़तो, ढोळाफोळा करतो। साळी चिरड़ती, वांरा कीवा कामा में वखोणां काढती, वो हँसतो वा मुलकती, वो ऊंवो मूंडो करतो वा चिड़ती घणो आणंद आवतो। साळी केवती, मसाला मिलावो, कड़ाई में खुरपो फेरो, केलड़ी उतारो। वीं सूं आटा में पांणी घणो कूडणी आय जावतो के मसालो बळ जावतो। ई फूड़पणा पै साळी वाकलती, हँसती। रोजीना चिरड़वा चिरड़ावा रो मजो लेवतो।

दुपैर व्हेतां व्हेतां पेट में भूख ई लागती, ऊपरै साली री मनवारां चाव सूं रांधियोड़ा तेरा तीवग व्हेता। पछे तेरा तीवग रांधवा वाली मनवारां कर कर न जीमावती जो नवेन्दु ने पेट री खबर नीं रेवती, रंज न जीमतो।

जीम चूंठ न तास रमवा वैठता तो तास ई नवेन्दु सूं आछी नी रमणी आवती। पल पल पै लाटी खावतो। दूजां रा पत्ता झांकतो, खोसा खोसी करतो, जोर सूं हाका करवा लागतो। हारतो तो ई आप री हार नीं मानतो। साळी सत्तरा वातां सुणावती वो ठीं ठीं कर न हँस न रैय जावतो।

एक आंतरो अठै आयां पछै जरूर पड़ियो वीं में। अंगरेजां रा पैंतावा री पूजा ने घरम करम मान राखियो हो जो अबाळ वो पूजा पाठ वंद हो। अठै एक वात और ई ही। लावण्य रो खावंद नीलरतन अठा री कचैड़ी में नामी उकील हो पण अंगरेजां रा देव दरसणां ने नीं जावतो। कदै ई वात चाल जावती तो कैवतो, 'आंपां क्यूं जावां? आंपां रे सागै वे आछो वरताव नीं राखे तो आंपा रो जीव कळपै ई ज। मलयळ री धरती दीखण में घणी ई धोळी धप्प फूटरी है पण वीज वायां सालां तो नीपजे नीं।' धोळा रंग ने कांई चाटां। फळ नीपजै तो काळी माटी उण सूं सिरे।'

वात या ही के नवेन्दु देखा देखी वां भेळो रळ गियो, फळ री चिंता नीं कीवी। वां रा वाप दौरा व्हे न जो धरती जोती ही, संवारी सुधारी ही वीं में 'रायवादरी' रो फळ लागवा री आसा लाग री ही पण पांणी तो सींचणो पड़े ई ज। अंगरेजां री स्हेल री एक नगरी में नवेन्दु घणा टका खरच कर एक घुड़दौड़ रो चौगान बणाय दीवो हो।

अबै कांगरेस रो अधिवेसन नजीक आयो। चंदा रा पाना फिरवा लागा। नवेन्दु बड़ा मजा सूं लावण्य सागे तास रम रिया हा। अतराक में नीलरतन चंदा रो पानो लेय न घर में वळियो। बोलियो, 'ईं पे दसगत कर दो, भाई।'

नवेन्दु रो मूंडो फीको पड़ गियो।

लावण्य चटाक देणी री बोली, 'है हें, दसगत मत करो। नीं तो थांरो वो घुड़दौड़ रो चौगान धूळा में मिल जाय।'

नवेन्दु ऊंचो व्हेय बोलियो, 'ए हे हे, जांणे म्हूं डरपतो व्हेवूं।'

नीलरतन भरोसो देवावतो बोलियो 'थां खातर जमा राखो। थां रो नाम कीं अखबार में नीं छपेला।'

लावण्य मूंडो ठावो कर न घणी चिंता सूं बोली, 'कजांगा भाई कीं ने ठा, कोई छाप ईं देवे तो।'

नवेन्दु तेज व्हे न बोलियो 'रैवा दो, अखबार में छपियां म्हारो नाम घस थोड़ो ई जाय।' नीलरतन रा हाथ मांयनूं चंदा रो पानो लेय एक हजार रिपिया मांड दीवा। मन में भरोसो हो के नाम नीं छपैला।

लावण्य माथो पकड़ न बोली, 'यो कांई कर दीवो थां।'

नवेन्दु गरब कर न बोलियो, 'क्यूं, कांई व्हेगियो ?'

लावण्य बोली 'सियालदा टेसण रो गार्ड, ह्वाइट वे दुकान रो नायब, हार्ट ब्रदर्स रा साइस अंगरेज थां पे नारज व्हे गिया तो ? थां रे अठे पूजा में आय न सेम्पेन नीं पीधो तो ? थां री डाली नीं झेली तो ?

नवेन्दु कळप न बोलियो, 'हां, जांणे म्हूं मर ई जावूं ?'

थोड़ाक दिनां पछे, एक दिन चाय पीवतो जाय रियो न नवेन्दु अंगरेजी रो अखबार वांचतो जाय रियो। चिट्ठी पत्तरी रा खाना पे नजर पड़ी। गुमनाम रे एक कागद लिखणिये घणां घणां धिनवाद, वां ने कांगरेस में चंदो देवा सारू दीधा। पाछी नूं जावतां यो ई मांड दीधो के एड़ा आदमी रो भडो मिलियां कांगरेस ने घणो झेलो मिलियो। कांगरेस ने झेलो मिलियो ? हाय रे सुरगां रा वासी पिता पुर्णेन्दुसेखरजी, कांगरेस ने झेलो देवा ने थां ई कपूत ने जनम दीधो हो कांई।

दुख सुख रो जोड़ो व्हे ! नवेन्दु ने एक तरै रो आंजस ई आयो। नवेन्दु कोई छोटो मोटो मिनख नीं है। एक आडी ने तो कांगरेस वां ने झाला दे न बुलाय री है दूजी आडी ने अंगरेज बांवट्यो पकड़ न खांच रिया है। या वात छानै छिपाय न राखवा री ही कांई ? नवेन्दुजी तो मुळकता मुळकता पधार न अखबार रो पानो लावण्य ने झेलायो। लावण्य अखबार ने यूं बांच्यो जांणे कांई ठा ई नीं है। अंचभो जताय न बोली 'हैं, यो लो। यो भांड़ो कुण फोड़ियो ?

जरूर थां रो कोई वैरी है। भगवान वीं री कळम में कीड़ा पटके, वीं री स्याई में धूळो पड़े, वीं रा अखबार रे उदई लागे।'

दो दिनां पछे ई ज अंगरेजां रो एक अखबार नवेन्दुजी कनें आयो। यो अखबार कांगरेस रे उलटो बोलतो। वीं अखबार में, पैला वाळा अखबार री बात रो काट कीवो। वीं में मंडियोड़ो हो 'नवेन्दुजी पे कांगरेस में चंदो देवा रो कूड़ो दोस लगायो है। नवेन्दुजी कदै ई, कांगरेस ने चंदो नीं दे। म्हार आप री खाल रा रंग नें बदल दे तो बदल दे पण नवेन्दुजी कदी कांगरेस में नीं भळै। वे कोई ठाला मिनख नीं है। वे बिना मुवक्कलां रा उकील थोड़ा ई है जो कांगरेस में रळे। वें वां मिनखां मांयला कोयनी जो दो दिन वलायत में फिर न खाली कोट पैंट पैरणो सीख न, कठै ई थाग नीं लागियो जो लपलप करता मूंडो लेय न पाछा आय गिया। वे तो वां मिनखां मांयला है जो·······' वगैरा वगैरा।

हाय, म्हारा बाप, थां तो वैकुंठ में वासो कीवो। थां तो अंगरेजां में अतरो नामून कमायो, कुछ्र कायदो लीधो। आज ?'

वो अखबार ई, विछाय न साळी ने वंचावा जोग हो। ई सूं साफ है के नवेन्दु कोई ईंगजी धींगजी आदमी नीं है, वां रो आप रो एक नियारो रुतवो है।

वांचता ई लावण्य अचरज भरयोड़ी बोली 'यो कागज थां रे कुण से सैण छपायो? कुण है यो ? टिकट कलकटर है के चामड़ा रो दलाल है ?

नीलरतन सल्ला दीवी 'ई अखबार रो थां ने पडूतर देवणो चावै।'

नवेन्दु मोटा बण न बोलिया 'क्यूं दां ? मिनख लिखवो ई करे। कींरो कींरो जुवाब दूं।'

लावण्य ठट्ठो लगायो।

नवेन्दु लजाय गियो। बोलियो 'क्यूं हँसी ?'

लावण्य तो हंसे रे हंसे रे। जोवन फूलड़ा रा भार सूं लुळियोड़ी देही बेळड़ी झोला खाय री। नवेन्दु हैरान व्हे गियो। मसखरी री पिचकारियां सूं नवेन्दु झगाबोळ व्हेगियो तो चिरड़न बोलियो 'थां जांणता व्होला जुवाब देवतो म्हूं डरपूं ?

लावण्य बोली, 'डरपवा क्यूं लागा। म्हने तो सोच लागियो के आसा रा आधार वीं घुड़दोड़ रा चौगान रो कांई व्हेला। खैर व्हेला जो दीजी जावेला। सांसा जब लग आसा।'

नवेन्दु बोलियो 'जाणूं। थां जांणो के म्हूं ज्यूं ई ज जुवाब नीं लिख रियो हूं।' रीस में आय न वीं ज ताळ मांडवा ने बैठियो। पण लिखावट में रीस रा राता डोरा नीं पड़िया। लावण्य अर नीलरतन पाछो सावळ मांडवा री भळांवण झेली। पछे तो जांणै चूल्हा माये कड़ाई मेलणी आयगी। नवेन्दु तो पांणी में मसकाय

न घी लगाय न, सीळी सीळी नरम नरम पूड़ियां बंटतो, ये दो दो सुधारणियां। या जुगल जोड़ी चट देणी री कळकळती कड़ाई में पूड़ी न्हाक वीं ने करड़ी कर फुलाय देवती, गरमा गरम परुसता जाता। छेवट में लिख्यो के 'घर रा मिनख ई जंद वैरी बण जावे तो बारळा वैरियां सूं बत्ती हांण करै। आज सरकार रा दुसमण पठांण र रूसियां सूं वत्ता ऐंगलो ईंडियन है। वे जनता ने अर सरकार ने एक रस नीं व्हेवा दे। सरकार बीचे अर लोगां रे बीचै यां रा अखबार भींत व्हे न आडा ऊभा है।'

नवेन्दु मांयने ई मांयने डरप रियो हो पण या जाण न के लेख घणो आछो लिखणी आयो, मन राजी व्हेतो जाय रियो हो। माथो पटक देवतो तो वीं सूं एड़ो नीं लिखणी आवतो।

दोई कानी सूं अखबारां में उत्तर पड़ूत्तर चालता रिया। नवेन्दु रे चंदो देंवा रे अर कांगरेस में मिलणे री हाको फूट गियो। नवेन्दुजी यूं वातां करवा लागा जांणे साळियां री सभा में वे एक अडर देस भगत व्हेगिया है।

लावण्य मन में हँस न कैवती 'ठैरो तो, थां री अगनी परीक्षा तो ओजूं बाकी है।'

एक दिन सुबै री वगत, सांपड़वा सूं पैला नवेन्दु तेल री मालस कर रिया हा, चाकर आय न हाथ में एक कारड झेलायो। वीं रा पै खुदो खुद मजिस्ट्रेट रो नाम छपियोड़ो हो। लावण्य जीं वेळा कौगत री नजर सूं वां कानी झांक री ही।

तेल चौपड़ियां तो सा'ब सूं मिलणी आवे नीं। नवेन्दु कटियोड़ी माछळी री नांई फड़फड़ावा लागियो। झट देणी रो माथे पांणी कूढतां ई हाथै पड़ियो जो ई गाबो पैर न बारै भागियो। नौकर बोलियो 'सा'ब अठै बैठा हा अबारूं अबारूं बारै निकळिया ई ज है।'

यो झूठ आधो पड़धो नौकर रो हो आधो पड़धो लावण्य रो हो। विसूंबरा री कटियोड़ी पूंछ तड़फड़ावे ज्यूं नवेन्दु रो मन मांयने ई मांयने पछाड़ां खावा लागो। आखो दिन अमूजतो रियो, रोटी पांणी गळा हेटे सावळ नीं उतरिया, कीं में ई ज जीव नीं लागियो।

लावण्य हाँसी ने रोक न, फिकर जतावती घड़ी घड़ी रो पूछती री, 'आज थांरे व्हे कांई गियो है। जीव सोरो तो है?'

नवेन्दु माढाणी मूंडा पे हाँसी लाय न मौकासर जुबाब देतो रियो, 'थां रे घरे आय न म्हने तकलीफ व्हे? थां तो म्हारी धनवन्तरणी हो।'

मांढाणी लायोड़ी हँसी वीं ज ताळ मूंडा मूं उडगी। विचारवा लागियो,

एक तो म्हैं कांगरेस ने चंदो दीधो, अखबार में एक करड़ो कागद छपाय दीधो। उपरयां मंजिसस्ट्रेट आगे व्हेय न म्हारा सूं मिलण ने आया तो वां ने बेठायां राखिया। वां कांई विचारियो व्हेला। पछै कैवा लागो, म्हारा बाप, थारा कपूत ने माफ करजे। म्हूं एड़ो खोड़ीलो हूं नीं पण म्हने व्हेणो पड़रियो है।'

दूजे दिन सोरखोरां व्हेन घड़ी री चैन लटकाय न माथा पे एक मोटी पागड़ी बांध न चालिया। लावण्य पूछ ही तो लीधो,

'कठै चालिया ?'

'एक जरूरी काम है।'

लावण्य कांई नी बोली।

मजिस्ट्रेट साब रे बारणे जांय कारड काढियो। कारड काढतां ई अरदली बोलियो 'अबारू मुलाकात नीं व्हेला।'

नवेन्दु भट देणी रा दो रिपिया काढ न अरदली रा हाथ में पकड़ाया। अरदली सलाम कर न बोलियो 'म्हां पांच आदमी हां।' नवेन्दु चट देणी रो दस रो नोट काढ न हाथ में दीधो। सा'ब रा कमरा में बुलावो आय गियो। सा'ब स्लीपर पैर राखिया मोरनिंग गाउन पेरवाने हो। बैठा लिख रिया हा। नवेन्दु मांयने जाय सलाम कीधी। सा'ब आंगली रो इसारो कर न बैठवाने कहियो। साम्हा नाळियां बिना ई पूछियो. 'क्या केना मांगटा है बाबू ?'

नवेन्दु घड़ी री चैन ने हिलावतां, घणां अदब सूं बोलियो, 'काले आप म्हेरबानी कर म्हारे अठे मिलवाने पधारिया पण—' साब एकण दम ललाट में त्रिसळ घालिया, आंख री गुर बांध न बोलिया, 'हम टुम से मिलने गया था ? क्या वक ा है ?'

नवेन्दु ने गरळगप्प पसीनो आय गियो 'माफ करो सा'ब केतो थको किया ई ऊठ न कमरा बारै निकळियो। पाछां वळतां गैला में वांने लागरियो के धरती फाटे तो मांयने वळ जावूं। पण धरती फाटी नीं, खेम कुसळां घरै आय गिया। वीं दिन आखी रात बिछावणां पै पड़िया पड़िया सपना में सुणता रिया, 'क्या वकटा है।' लावण्य ने कैवा लागिया 'देस भेजवा ने गुलाबजल लेवा ने गियो हो।'

अतराक में तो लारे रा लारे मजिस्ट्रेट रा पांच छेक पिआदा आय ऊभा रिया, सलाम कर न नवेन्दु रा मूंडा सांम्हा चोघवा लागिया। लावण्य मुळकती थकी बोली, 'थां कांगरेस ने चंदो दीधो हो जो कठै ई गिरफतार करवा ने तो नीं आया है ?'

पियादा दांत चीरावता बोलिया 'बगसीस बाबू सा'ब।' पसवाड़ा वाळा कमरा मायनूं निकल नीलरतन बोलियो 'बगसीस कांई बात री ?'

पियादां पेलां री नां ई ज दांत चीरायन बोलिया, 'बाबू सा'व हजूर सूं मिलवा गिया जीं री·····'

लावण्य हंसती थकी बोली, 'मजिस्ट्रेट सा'ब आजकालां गुलाबजल बेचवा लागगिया है काई। पेलां तो उणां रो रूजगार एड़ो सीळो नीं हो।'

नीलरतन बोलियो, 'बगसीस रो कांई काम नीं व्हियो। जावो, बगसीस नीं मिले।'

नवेन्दु घणीज ओलज सूं भेळा व्हेतां, जेब मांयतूं एक नोट काढियो 'गरीब मिनख है, देवा में कांई हरज है।' नीलरतन, नवेन्दु रा हाथ मांयतूं नोट खोस लीवो 'यां सूं ई बत्ता गरीब मिनख दुनिया में है। वांने देय दूंला।' रूठियोड़ा महादेव रा गणां रो बळबाकळ खुसतो देख नवेन्दु घबराय गियो। पियादा करड़ी निजर सूं झांकता पाछा फिरया तो नवेन्दु गळगळो व्हे देखतो रियो, जांणै केय रियो व्हे, भाईयां म्हारो कांई कसूर है ये देवा नी दे।

कलकत्ता में कांगरेस रो अधिवेशन व्हेवा वाळो हो। नीलरतन बहू सूधां अधिवेसन में आया, सागे नवेन्दु ई आय गियो। कलकत्ता आवतां ई कांगरेस वाला नवेन्दु ने चारूं कानी सूं घेर लीधो, बधायां देवा लागा, स्तुतियां करवा लागा। जो देखो जो ई केबे, 'आप जेड़ा मातबर सरदार देस रा काम में सरीक नीं व्हे जतरे देस रो उद्धार नीं व्हे।' वात री असलियत सूं नटणी नीं आयो नवेन्दु बाबू सूं। ईं हाका हूला में वे कजाणां किस तरे नेता बणगिया। ईं री ठा वां ने नीं पड़ी। ज्यूं ई वां पांडाल में पग दीधो न सैंग जणां ऊभा व्हे गिया। सैंग जणां वां ने बधाया, हिप हिप हुर्रे रा हुर्राटया सूं पांडाल गूंज गियो। विदेसी ढंग रो वधावणो सुण हिंदवांण रो मूंडो लाज्यां मरतां रातो पड़गियो।

मलका री जनमगांठ आई। नवेन्दु रो राय बहादर रो खिताब त्रिगतिसगां री नांई विलाय गियो।

वीं दिन सांझ रा लावण्यलेखा एक जलसो कीधो, नवेन्दु ने नूंत न बुलायो। वां ने नवी पोसाक पेराई, ललाट पै लाल चंदण रो टीको काढियो। सगळी साळियां आप आप रा हाथ री गूंथियोड़ी फूल माळा पेराई। कसूमल पोसाक पेरयां अरुणलेखा गैणां में चमचम चमक री, लाज सूं राती पडियां जाय री ही। पसीना सूं आला अर लाज सूं सीळा पड़ियां हाथां में चौसर पकड़ाय न वीं री बैनां वींने घणी खैंची पण वा मानी नीं। वा जैमाळा नवेन्दु रा कंठा में पड़वा री वाट नाळ री ही आवी रात री।

साळियां नवेन्दु सूं बोली 'आज म्हां थांने रायबादर री जायगा राजतिलक कर राजा वणाय दीधा ।'

नवेन्दु ने ईं सूं दिलासा मिली के नीं जो तो वांरी आतमा जांणै के अन्तर जामी जांणै । म्हां ने तो क्यूं वैम ई है । म्हाने तो पूरो भरोसो है के वे मरवा सूं पैला एकर रायबादर तो बण न रैवला । वे मरेला जदी 'इंग्लिस मैन' अर 'पायोनियर' मांतम जरूर मनाय ।

खैर, आंपणी आडी तूं ई नवेन्दु ने तीन हुर्राटा, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ।

●

सुभ द्रस्टि

बाबू कांतिचंदर ओछी उमर रा ई ज है पण दूजो बियाव नीं कीधो। लुगाई मरगी तो लौड़ी लावा रा फेर में नीं पड़िया। वां तो सिकार में जीव रमाय दीधो। लांबा एकोलड़ा हाड़ां रा है वे। नजर घणी तेज, बंदूक असी बावे के निसांणो चूकै ई ज नीं। कपड़ा लत्ता विलायती काट रा पैरे। जावे जठै लारै रै पेलवान हीरासिंघ, छक्कणलाल, अर गावा बजावा रा उसताद खां सात्र। नवरा चाकरां रो ई टोटो नीं।

दो चारेक सिकार रा सोक राखगियां मितरा ने सागै ले, बाबूजी नंदी रे कनारे सिकार रमवा गिया। काती रो म्हीनो हो। दो मोटा मोटा बोटां में बैठ न आया हा। वां बोटां ने नदी में ऊभा कर दीधा। वे ई वां ई ज बोटां मांयने रात ने आय रैवता। तीन चारेक लारे नावां ई, वां में नौकर चाकर हजूरी हा। वे गांम रा घाट पै बैठा रैवता। गाम री नान्हीं लौडियां रो घाट पै जाय न पांणी भरणो सांपड़णो धुपणणो एक तरीयां रूकगियो। रात पड़ती न उसतादां रा गळा रा झणकारा र तंबूरा रा तणकारा गांम वाळा री नींद ने उछटाय देवता।

एक दिन परभात री पौर रा बोट पे बैठियां कांतिचंदर बंदूक री नळी साफ कर रिया हा। नजीक ई बत्तख री बोली सुण न माथो फेरियो तो देखे एक छोरी, बतखां री जोड़ी ने छाती रे लगाय घाट री पैड़ियां उतर री है। वठै नंदी घणी चौड़ी नीं है, कठैई धार बैयरी है तो कठै ई पांणी जम रियो है। छोरी बतखां रा जोड़ा ने पांणी में छोड़ दीधो। कठै ई बतखां दूरी परी नीं जावे, वा धियान लगायां बैठी देख री। घणां लाड सूं वा बतखां ने घेर री। यूं लागतो के सदामद तो या बतखां ने खुली छोड़ देवती व्हेलां पण आज सिकारियां

रा डर भो सूं वां ने संभाळ री है। छोरी रो रूप बिलकुल नुवो नुवो, तुरत रो ताजा हो, यूं लागरियो बिरमाजी अबाऊं अबाऊं ढाळ न सांचा बारे काढी ज है। औस्था रो अटकल लगावणो ई सौरो नीं, देही तो विगसियोड़ा फूल ज्यूं ही पण मूंडो तो काची कली ज्यूं लाग रियो, मूंडा पै अतरो काचापणो हो के जांणे दुनिया रे वायरे ओजू ईं ने भीटी नीं व्हे। वा आप नीं जांणती के वीं में जोबन झोला लेवा लागगियो है।

कांतिचंदर रा नळी साफ करता हाथ हा जठै थम गिया। वे देखता रेगिया, आंख्यां वीं रा मूंडा पै अड़ी नीं गड गी। वा सपना में ई नीं सोच्यो हो के एड़ी जगा एड़ो रूप देखण ने मिलेला। राजा रां रणवासा बीचै ई वो मुखड़ो अठै ईं जगा घणो मनहर लाग रियो। यूं लाग रियो के चारूं पासे जो कुदरत री कारीगरी दीख री है वा सब ईं मुखड़ा रा रूप ने चौगणी करवाने ई ज सिरजी गी है। सोना रा गुलदस्ता बीचै गोड़ माये फूलड़ा वत्ता सूंणा लागै।

छोरी रे पाछे सरद रुत री ओस सूं भीजियोड़ी, लांबी लांबी सैंवण माथे परभात री सौनेरी सौनेरी किंरणा पड़री। सैंवण वायरा सूं झोला लेय री. तावड़ा सूं चमक री। मूंडागै धीमा धीमा पवन सूं नंदा रो पांणी ल्हेराय रियो। वां दोवां रे ई बीचे ऊभी वीं नान्हकड़ी नाजु ने कांतिचंदर मंतरियोड़ा नाग री नाई ऊभा देख रिया। कालिदासजी वांरी पोथियां में लिखगो भूल गिया दीखता हा के गंगा रे कनारे नान्हकड़ी पारवती ईं या ई ज हंस बच्चां ने छाती रे लगायां फिरती ही।

अतराक में वा छोरी एकणदम चमक न डरपी, कांपण लागी, रोवणो आयगियो व्हे ज्यूं व्हेगी। दोई वतखां ने छाती रे चमटाय, भींच्या गळा सूं चीरळी मारती घाट पर सूं भाग गी। कांतिचंदर वात कांई हे जांणवा ने बारै निकळिया। देखे तो वां रो छैलो हजूरी हाथ में रीती बंदूक लेय वतखां पै निसाणो ताकियां ऊभो है। कांतिचंदर पाछी नूं आय मूंडापै कस एक रैपट री मारी, हाथ मांयनूं बंदूक खोस लीवी। रंग में भंग पड़गियो हजूरीजी भागिया। कांतिबाबू मांयने जाय पाछी बंदूक साफ करवा लागा।

कांतिचंदर रा मन में कुतूळ आयो। किनारो पार कर न, रूंखां झाडां में व्हेता एक घर कने आय रुकिया। मोटो आंगणो हो जिमें ओळाझोळ धान रा कोठा केयरिया हा के खावता पीवता मिनख रो घर है। वरड़ा रा रूंख रे नीचे परभात वाळी वा छोरी, जखमायल पंखेरू ने छाती रे लगाय राखियो हो, डसूका भर भर न रोय री ही। गारा रा कूंडा मांयनूं पांणी में वीं रो पल्लो आलो कर कर वीं री चांच में चुवाय री ही। कने हेजियोड़ी मिनकी वोरी

पालगयी पै दोई आगळा पगां ने मेल वीं पंखेरू ने टुगर टुगर देख री ही। छोरी आंगळी ने नाक पै मेल वीं लुरची मिन्नी ने समझाय री ही के छानी मानी बैठी रै।

गांमड़िया गांम रा दौपैरा में सुनसघो रैवे। वीं आछा घोलचा लींप्या, मांड्या चूंड्यां घर रा आंगणा री सोभा, सांति देख कांतिचंदर आपो भूल गिया। करुणा सूं भरी रळियावणी छब री छाप वांरा हिवड़ा वै छपगी। छीदा पानड़ा वाळा रूंख री छाया अंर तावड़ो दोई वीं नानकड़ी नाजु पै पड़ रिया जांगै एक दूजा ने पकड़णो चावे पण हाथे नी आवता व्हे ज्यूं लाग रियो। कनै ई घापियोड़ी गायां वागोल कर री ही। पड़ी ही मस्त व्हियां। पूंछां सूं माखियां उडाय रीं ही। उत्तराद रो वायरा रो झोलो आवतो जद वांस रा झाड़ यूं खड़खड़ाट करतां जांणें कानां में वातां कर रिया है। आज सुवै नंदी रे कनारे जंगळ में वन कन्या दीख री वा अवारू आंगणा में वैठी साख्यात लिछमी सी दीखी।

कांतिचंदर वंदूक हाय में लीधा वीं कन्या रे आगे ओलज में पड़रिया हा। जांणै माल सूवी चोर पकड़ाईज गियो व्हे। मांयलो जीव कैवा लागो के किण तरै ईं ने जताय दूं के म्हारी गोळी सूं थारी वतख घायल कोनी व्ही है। वात चलावे किण तरै या सोच ई रिया हा के कोई हेलो पाड़ियो, 'सुवा!' छोरी चमकी। लारे रो लारे पाछो हेलो सुणिजियो 'सुधा।' वा झट देगी रीं जखमायल पंखेरू ने लीधां घर में वळगी। कांतिचदर केवा लागिया 'जेड़ा लखण है वेड़ो ई नाम टाळ न राखियो है सुवा।'

कांतिवावू पाछा फिरिया। वंदूक चाकर ने भळाय थोड़ीक देर पाछें अगवाड़ा सूं आय पौळ रे वारै ऊभा। मांयने एक अवकड़ आदमी वैठो हड़ुमान चाळीसा रो पाठ कर रियो। विरामग लागियो। लोडमोड़ मायो, मूंडा पे सांति, साधुपणो दीखियो। वां रा मन में दीखवा लागो के छोरी रा करुणा भरिया मूंडा सूं ई गैर गंभीर आदमी रो उणियारो मिले।

कांतिवावू जैरामजी री कर न कहियो, 'तिस लागी है पिंडतजी म्हाराज। पांणी रो लोटो…… ..'

पिंडतजी झट देणी रा उठिया, आव आदर कर वैठाया। मांयने जाय कांसो री वाटकी में थोड़ाक पतासा लाया, पांणी रो लोटियो लाया। वटाउ रे मूंडागै राखिया। पांणी पीधां पछै वां कांतिचंदरजी ने पूछ्यो, 'आप रो विराजवो कठै?'

कांतिचंदर आपरो नाम ठाम वताय वोलिया, 'म्हाराज, म्हां लायक कांई काम चाकरी व्हेतो वतावो।'

नवीनचंदर वंदोपाध्याय वोलिया, 'वेटा, म्हारे काम कांई है जो वताऊं। व्यावण जोग एक टावरी है सुधा। वीं रा पीळा हाय कर दूं तो संसार रा

सेग रिणां सूं उरिण व्हे जावूं। नजीक नेड़ो तो कोई टावर लाधियो नीं, म्हारा में अतरी आसंग नीं के बारे जाय हेरूं। घर में श्रीगोपीनाथजी री मूरती विराज्योड़ो है वां ने छोड़ बारै जावा रो जीव नीं करै।'

कांतिचंदर कहियो 'आप नाव पे आय न मिलजो। आपां वात करांला।' अठी ने कांतिचंदरजी जिण किण ने ई पूछाताछो कोयो, वीं या ई कही के वां रे जेड़ी सुलखणी वेटी दूजा घर में दीवो ले हेरियां नीं लावे।'

दूजे दिन पिंड़तजी वोट पै गिया तो कांतिचंदरजी वां रा पगां रे हाथ लगाय मिलिया। वां कहियो के वांरी टावरी ने वे खुद परण लेय। अणचींत्या आंणद सूं विरामण रा नैणां में पांणी भर आयो, गळो रूंध गियो, घणी देर ताई तो बोल ई नीं फूटियो। वां ने वां रा कानां पै भरोसो नी आयो खरायन पूछियो 'म्हारी वेटी रे लारै आप व्याव करोला ?'

'आप री मन्सा व्हे तो म्हूं राजी हूं।'

'सुवा रे लारै ?'

'हां।'

'पैलां वीं ने देख तो लो........'

कांतिचंदर भोळा वण न वोलिया जांणे वां पैलां कदी देखी ई नीं व्हे। वोलिया, 'अवारू कांई देखूं। सुभद्दष्टि री वेळा ई देख लेवूं।'

नवीनचंदर भरियोड़ा गळा सूं वोलिया 'सुवा म्हारी वेटी घणी स्याणी समझणी है। घर रा काम काज में तो वीं री जोड़ री दूजी नीं लावे। थां वीं ने विना देखियां परण रिया हो तो म्हारो ई अंतस सूं थांने आसीरवाद है के सुवा सती, सीता अर लिछमी री नांई थां री चाकरी करती रे। एक खिण सारू ई थां ने ऊनो वायरो नीं दे।

कांतीवावू केय दीवो के अवे लांवो वगत खैंचवा सूं कांई फायदो। माह रा म्हीना में सावा थिरप गिया। मजूमदारां री जूनी हवेली में व्याव मंडियो। जान आई, वींद हाथी रे हौदे, मसालां रा चानणा, वाजते ढोलां परणवा ने पौळ पै आय ऊभो रियो।

सुभद्दष्टि री वेळा वींनणी रो मूंडो वींद देखियो। वींनणी तो परणैतू पोसाक में ढांकी ढूंकी ही। चंदण सूं चरचियोड़ो मूंडो सावळ देखणी नीं आयो। पण हिवड़ा रा उछळता आणंद सूं वींद री आंखियां चूंधीजगी।

सुवागरात आई। मोहल्ला री दानी वूढी वींद रा हाथ सूं वींदणी रो नटानटी करतां घूंघटो उघड़ायो, कांतिचंदर मूंडो देखियो तो पगां हेटली खिसकगी। या तो वा नीं जीं ने वां देखी ही। अणगाजी र अणघोरी वीजळी माथे पड़ी।

सुवागरात री सुखसेज रा फूलड़ा सूळां री चुभवा लागिया। सुवाग मिंदर रा गेरा दीवला बुझ गिया, अंधारो छाय गियो। वीं अंधारा रा काजळ सूं नुवी वींनणी रा मुखड़ा पे ई सांवळी झांई छायगी।

पैलां वाळी वीनणी मरियां पछै कांतिचंदरजी तो मन में आखड़ी लेय लीधी ही के कदी दूजो व्याव नीं करूंला पण भाग वां री वीं आखड़ी ने तोड़ाय एड़ी मसखरी वां रे लारे करेला सपनां में ई वां या नीं जाणी ही! कतरा आछा सगपण आया पण वां धियान ई नीं दीदो। मित्तरा घणां घणां न्होरा खावा, गरजां कीधी मनवारां कीधी, पण मानिया नीं। मोटा मोटा ठिकाणां सूं सगपण व्हे जावा रा लोभ ने वां दाबियो, धन साम्हा वे नीं झांकिया, रूप रा मोह फंसियोड़ा मन ने ई वां समझायो। छेवट में जावता परणिया एक रांखड़िया गांम में, कांजी र कादा सूं भरी नैहर रे किनारे, एक गरीब विरामण रे घरै जीं ने कोई ओळखे पिछांणे ई नीं। वाह रे करम! लागती विलगती रा नें, मित्तरां ने, पांच वरोबरिया ने मूंडो कांई वतांय अवै।

पैलां तो रीस चढी सुसरा पै, 'आछी वीयाडोई कीधी म्हारे सागे। वताई दूजी छोरी परणाई दूजी छोरी।' पण पाछा आपो आप ई कैवा लागा, 'व्याव रे पैलां तो वां लड़की देख लेवा ने आगे व्हे न कहियो हो, म्हूं ई ज नट गियो तो पछे वां में कांई दूसण। हाथां कीवा कामड़ा कीं ने दीजे दोस। अवे केवणो न सुणणो कहियां मिनख आंपा रो ई हांसो करेला।'

कड़वी ओखद ने गल तो गिया पग मूंडा रो सुवाद बिगड़ गियो। सुवाग रात री हँसी मसखरियां अणखावणी लागवा लागी, वींदणी री स्हेलियां री रोळा ई सुंवाई नीं, साळियां अर साळाहेलियां रा झूलरा ई अलुणा लागिया। आप रे माथे अर दूजां रे माथै एड़ी रीस आय री ही के डील मांयने झाळां उठ री ही।

अतराक में, वां रे कनें वैठी वींदणीं, डरप, भीच्योड़ा गळा सूं ईं ईं कर न चमकी। कजाणां कठा सूं सूंसिया रो वचो फदकतो थको वीं री खोळा मांयने व्हेतो भाज गियो। लारे री लारे वीं दिन वाळी छोरी, सूंसिया रा वच्चा लारे भाजती थकी आई। सूंसिया ने खोळा में लेय न गालड़ा रे लगाय लगाय, गरण गटोळी खावती, प्यारिया लेवा लागी। अरे वेंडाळ आई, अरे वेंडाळ आई' कैवती थकी सारी जण्यां वीं ने परी जावा ने हाथां सूं समझावा लागी। पण वीं पट्ठी ने कांई ज परवा नीं, वींद वींदणी रे ऐन मूंडागे जाय जम न वैठगी, टाबरां री नांई जोवा लागी जांगे या कांई रम्मत व्हेयरी है। एक लुगाई बांवट्यो पकड़ न उठावा लागी तो वींदराजा नट गिया, 'रैवा दो, वेठी रैवा दो।'

पछै वीं ने पूछियो, 'थांरो नाम कांई है ?'

वा तो क्यूं ई बोली नीं, खाली हालवा लागी। सैंग कामणियां ही ही कर हँस दीवो।

कांतिचंदर फेरूं पूछियो, 'थांरी बतलां अबै कतरीक मोटी व्हेगी ?' छोरी रे आंख में संको को हो नीं, छानी मानी वींद रो मूंडो देख री ही।

हैरानगत व्हे कांतिचंदर अबकाळे छाती कर पूछियो, 'थां री वा बतख भूल व्हेगी कांई ?

क्यूं न कांई। वठै मेळी व्हियोड़ी नान्हकड़ी नारां यूं हँस री जांणे वींद री आछी मसखरी व्हेयरी है, आप री कौगत आप रे हाथां कराय रिया है। छेवट में पूछियां ठा पड़ी के छोरी जनम री बोबड़ी अर बैरी है। पसु पंछी ज ई रा संगीड़ा सायीड़ा है। वीं दिन 'सुभा' नाम रा हेला लागे मांयने परोगी जो तो इतफाक हो।

सुणतां ई कांतिचंदरजी रा हिवड़ा पै फूंवा मेलणी आया। जीं रे विना संसार वांने सूनो दीखरियो हो अबै वीं सूं पिंड छूटियो जांग लागियो के गंगा न्हायो। जो ई छोरी रा बाप कनैं पूग गियो व्हेतो तो वो जरूर ई छोरी ने म्हारे गळे बांध नीहाल व्हियो व्हेतो। भगवान भली कीधी।

ओजूं तांई तो कांतिचंदर रो मन मनचींती छोरी रा मोह में आंधो व्हे रियो, वीनणी साम्हा भली भांत झांकिया ई नीं हा। ज्यूं ई वां ने नंगे पड़ी के वा छोरी तो बोबड़ी र बैरी है, वां ने यूं लागियो के काळो पड़दो एकणदम अळगो व्हेगियो। साता री सांस लेय लाज सूं लुळी जायरी वींनणी रा मूंडा साम्हा जुगती सूं झांकिया। सांचेली सुभद्रस्टी तो अबै व्ही। हिया में चानणो सो छिटक गियो। मन रा सैंग बुझियोड़ा दीवला एकण साथै जग गिया। वां दीवलां रो उजालो एकण ठौड़ मेळो व्हे गियो, वीं चानणा में दमकवा लागियो सीळ सांति छायोड़ो फूल गुलाबी मुखड़ो। वे टमर टमर झांकता ई रैगिया। मन कैवा लागो, वीं पिंडत री आसीस जरूर फळेला।

●

संपूरण

अपूर्वकुमार बी० ए० पास कर न कलकत्ता सूं घरे आपरे गांम जाय रियो हो।

गैला में छोटीक नंदी पड़ती ! चौमासो निकळयां या सूखी पड़ी रैवती। अबारूं तो सांवण रो म्हीनो हो। नंदी ढाबा पूर चढ़ियोड़ी ही, गांम रा गौरमां में व्हेती बांस रा झाड़ां री जड़ां ने चाटती बैयरी ही उफणती थकी।

नराई दिनां सूं झड़ी लागरी ही, आज ई ज थोड़ोक उघाड़ दीधो हो। तावड़ो निकळियो हो।

नाव पे चढ़ियोड़ा अपूर्वकुमार रा मन मांयली तसवीर जे देखणी आय जावे तो वीं तसवीर में दीखतो के वीं जुवान री मंनसा नंदी तुरंत री बरखा सूं ढावापूर बैय री है। नंदी मांयली ल्हैरां चानणां सूं झलमल झलमल कर री है। वायरा सूं छपझप छपछप कर री है।

वगत पे नाव आय न घाटा पे रुकी। नंदी रा घाटा ऊपर-सूं, रूंखां री झामां मांयने, अपूर्व रा घर रो डागळो दीख रियो हो। घरे किण ने ई ठा नीं हो के अपूर्व आज आयरियो है नीं तो कोई न कोई घाटा पे लेवाने साम्हो आयो व्हेतो। नावड़ियो अपूर्व रो बैग उठावा लागियो तो अपूर्व मना कर दीधो। हाथ में बैग ने तोक न राजी राजी झटापट नाव नीचे उतरियो।

कनारा पै कांजी व्हेयरी, उतरतां ई पग रगस्यो जो धड़ाक देणी रो कादा में जाय पड़ियो। ज्यूं ई वो नीचे पड़ियो कजाणां कठा सूं एक मीठा गळा री जोर री हांसी, पीपळी पे बैठी चड़कल्यां ने चमकाय दीवी।

अपूर्व लाजां मरगियो। गावा झड़कातो झट उठियो! चाल आडी ने झांकवा लागियो। वीं देख्यो के कनारा माथै जठै नाव पर सूं वाणिया री ईंटा ऊतार ऊतार न एक जगा भेळी कीधी है, वां ईंटा माथै एक छोरी हंसती हंसती ऊंधी व्हियां जाय री है।

अपूर्व ओळख लीधी वा वीं री नुवीं पाड़ोसण री बेटी मृण्मयी है। पैलां तो यां रो घर अठा सूं घणो दूरो मोटी नंदी रे तटां पे हो। पण दो तीन बरस व्हिया नंदी री बाढ़ रे दुखां यां ने वो घर छोड़ अठै आवणो पड़ियो।

ईं छोरी री वातां चोखी सुणवा में नीं आवे। गांम रा मोटचार तो ईं ने लाड सूं बावळी कैवे पण लुगायां वीं रा फटोळ सुभाव सूं मन में चमकती रे अर घणां वैम राखे। वा रमे तो गांम रा छोरां रे लारे ई ज, हमउमर छोरियां लारे तो वीं री पटे ई ज नीं। टाबरां रा राज में तो या छोरी दुसमणां रा हल्ला ज्यूं लागती।

बाप री लाडली बेटी री जो किण रो ई डर भौ तो उण ने रियो नीं। मृण्मयी री मां आपरी साथणियां में बैठती जदी वा आपरा धणी री सिकायत करवो ई ज करती के वां बेटी ने लड़ बावळी कर राखी है, माथै चढ़ाय राखी है। पण बेटी ने वा ई घणो कांई केवती काजती नीं। वा जांणती के बेटी री आंख्यां में आंसू देख न बाप रा काळजा पे कतरणियां चालवा लागै। धणी परदेस गयोड़ो है, बेटी ने धाकलती तो परदेस गयोड़ा धणी री याद आय जावती के वे अवार अठे व्हेता तो कांई कैवा थोड़ा ई देवता। ईं री आंख्यां रा आंसू वां ने वठै बैठिया ने पीड़ा पूगावेला।

मृण्मयी रो रंग सांवळो है। छोटा छोटा घूंघरवाळा केस कड़ियां पे पड़िया रे। मूंडा पे बिलकुल ई टाबर पणो। मोटीमोटी काळीकाळी आंख्या में नीं तो लाज सरम, नीं डर भौ, हाव भाव रो कोई नाम ई नीं। डील लांबी रास रो, दीलड़ां हाडां री, सवळी देही। उण री उमर वत्ती है के ओछी, यो सुवाल तो किरा ई मन में आवे ई ज नीं। जै यो सुवाल किरा ई मन मे आवतो तो मिनख वातां कीधां बिना थोड़ा ई रैवता के 'मोटी व्हेयगी, ब्याव रो अत्तो पत्तो ई नीं।' गांव रा जमींदार री, जद कदी नंदी रा घाटा पै आय नाव लागती तो आखो गांम जमींदार री सरभरा में लाग जावतो। लुगायां मूंडा पै लांवा लांवा घूंघटा खैंच लेती। पण मृण्मयी ने कांई परवा नीं, वा तो कोई उघाड़ा पुघाड़ा छोरा छोरी ने कांख में घाल्यां, कड़ियां तांई घूंघरिया केसां ने विखेरियां आव ऊभी रैवती। जीं मुलक में कोई सिकारी नीं व्हे, कोई डर भौ नीं व्हे, वठा रा बाखोटिया किण सूं ई चमके नीं, डरपे नीं। मृणमयी वस्या देस री मोडियाण री

नांई निरभै थकी मोटी मोटी आंख्यां में कुतूळ भरियां टमर टमर देखवो करती। वठा सूं भागी जाय आपरा बाळ गोठियां बीचे बैठ वीं नुवा मिनख री हाली चाली री वातां मठाय मठाय वां ने सुणावती।

अपूर्वकुमार छुट्टियों में घरे आयो जद दो चार दांण ईं छूटपल्ला छोरी ने पैलां ई देखी ही। ठाले बैठां ई वीं देखी ही, काम रे वगत ई वीं देखी ही। कोरी देखी ज नीं ही वीं विचार ई कीधो हो। यूं तो धरती माथै अनेकानेक उणियारा देखवो करां पण कोईक उणियारो एड़ो व्हे है के देख्यो नीं के काळजा में ऊंडो गड्यो नीं, काढ्यां बारै कढै नीं। रूप रे पूंछड़ै यूं व्हेतो व्हे जो वात नीं, वा तो कांई सिफत ई ज अलेदा व्हे। कदाचत वा सिफत सुच्छताइ व्हेणी चावै। घणां खरा उणियारा माथे परकरती री आभा पूरी झलके कोयनी। हिवड़ा री सुच्छ-ताई अर परकरती री आभा सूं जो उणियारो पळका करे वो लाखां उणियारा में छिपियो नीं रे, आंख्यां आगै आवतां ई हिवड़ा में कोरणी आय जावै। ईं छोरी रा उणियारा पे आंख्यां में अचपळी ढेठी परकरती नारी री आभा पळकती रै। वा बन रा म्रगलां री नांई खुली भागती रे, रमती फिरती रे ज्यूं ई ज एकर वीं रो पांणीदार अचपळो उणियारो देखिया पछे सोरे ई नीं भूलणी आवे।

मृण्मयी हँसी जो मीठी भलां ई घणी व्हो पण बापड़ा अपूर्व रा जीव ने तो दुखायो ई ज। लाजां मरतां रो वीं रो मूंडो लाल बूंद व्हेगियो। हाथ मायलो बेग नावड़िया रा हाथ में झेलावतो ई वी तो सूधो घर रो गैलो पकड़ियो।

मौसम ई रळियावणो हो। नदी रो तट, रूंखा री छायां, चड़कलिया रा मीठा मीठा गीत, परभात रो सुंवावतो सुंवावतो तावड़ो सगळां ऊपर बीस साल री औस्था। ईंटा रो ढगलो अलबत्तां बखांण करां जेड़ो नीं हो पण वीं माथे मागस कन्या जो बैठो ही। ईंटा रा करड़ा आसण पै ई वीं रा रूप रो उजाळो छाय रियो हो। एड़ी रळियावणी वेळा में पग देवतां ई अपूर्व रा कविपणां री रोळ उडगी।

[२]

ईंटा रे ढेर ऊपर सूं हँसी सुणतो सुणतो, कादा सूं भरिया गाबा ने अवेरतो, बैग लीधां अपूर्व घरे पूग्यो। अचांणचको बेटा ने देख विधवा मां घणी राजी व्ही। वीं ज वगत आदमी दौड़ाया, मावो, दूध, दही, माछळा लैन आवा ने। आड़ा पाडा में हालोमेलो लागगियो।

जीम्यां चूंट्यां पछे मां बेटा रे आगे सगपण री चरचा चलाई। अपूर्व जांणतो हो के या चरचा चालेला। वडाळा तो पेलां रा ई आयोड़ा हा पण बेटा ने नुवा जमाना रो वायरो लागगियो जो वो अड़्यो बैठ्यो के बी० ए० पास

कर न व्याव करूं ला। अबै बी० ए० पास कर न आयगियो हो जो अबै आगे पाछे व्हेवा री गुंजाइस ई नी, जै व्हेतो साफ आळखो लेणां है।

अपूर्व बोलियो, 'पैलां लड़की तो देखो, पछे देखी जाय।'

मां बोली 'लड़की तो देख राखी है, थूं सोच मत कर।'

अपूर्व बोलियो, 'लड़की देख्यां विना म्हूं तो व्याव नीं करूं।'

मां विचारवा लागी, 'एड़ी अणव्हेणी वात आज तांई नीं तो देखी नीं सुणी।' पण राजी व्हेगी।

रात रा, दीवो बड़ो कर न अपूर्व बिछाणां माथै जाय पड़ियो। पड़तां ई मीठा गळा री हँसी री ऊंची अवाज वीं रा कानां में भणकवा लागी।

दूजे दिन अपूर्व ने लड़की देखवा ने जावणो हो। कोई घणो दूरो नीं, वास में ई ज लड़की वाळां रो घर हो। चतराई सूं गाभा पैरया। धोवती दुपट्टो नीं पैरयो। रेसम री अचकण अर पतलून पैरयो। माथा में रईसाना तरज री गोळ पागड़ी बांधी। पगां में रोगन कीधां पळका करता बूंट पैरया। रेसमी कपड़ा री मूंघा मोल री छतरी हाथ में लेय, चाल्यो। व्हेवा वाळा सासरा में पवारतां ई आव भगत, मान मनवार री धज बंधगी। लाडी रो काळजो धगधग कर रियो पण सिणगार सिणगूर, पैराय ओढाय, माथा में गोटो गूंथ गूंथाय, झींणी ओढणी में पळेट न लाडी ने लाडा रे मूंडागे लाया। बापड़ी लड़की एक खूंणा में गोडां बीचै माथो घाल काठ रा कुंवाड़िया ज्यू बैठी री। वीं रे पाछै हीमत देवावा ने एक अबकड़ दासी ऊभी ही। लड़की रो एक भाई जो टाबर ई हो, घर में आयोड़ा ईं आदमी री पागड़ी ने घड़ी री चैन ने टुगर टुगर देख रियो हो।

अपूर्व थोड़ी देर मूंछां पे हाथ फेर न बड़ो ठावो व्हे न पूछ्यो 'कांई पढो हो?'

गेणां कपड़ा सूं लदियोड़ी लाज री गांठड़ी मांयनूं सवाल रो कोई जवाब नीं निकळ्यो। वा अबकड़ डावड़ी पाछे ऊभी मोर थपेड़ बोलवा री हीमत देवावती जायरी ही। दो चार दांण पूछ्यां पछै धीरेकरो साद निकळ्यो, 'कन्या बोधिनी दूजो भाग, व्याकरण सार, भूगोल, अंक गणित, भारत वर्ष रो इतिहास।' एक ई सांस में बोल न साता री सांस लीवी।

अतराक में तो बारणे किरा ई आगता आगता आवा रा पग सुणीज्या। दूजे ई पल भागती थकी, मोरां पे केस बिखेर्यां मृणमयी आय ऊभी री। आंख ऊंची कर न अपूर्व साम्ही भांकी तक नीं। वा तो सूधी व्हेणवाळी लाडी रा भाई राखाल कनें पूगी, वीं रो हाथ पकड़ न खैंचवा लागी। राखाल वीं वगत व्हेणवाळा लाडा लाडी ने देखवा रो मजो लेयरियो हो। वा हाथ खैंचे अर वो सरके नीं। दासी आपरा गळा ने भींच, साद मुवरो कर मृणमयी ने धाकलवा

लागी। अपूर्व बड़ा ठिमरास सूं पागड़ी सूधी माथा ने ऊंचो कर बैठ्यो रियो, पतलून तांई लटकती घड़ी री चैन ने हिलावतो रियो।

छेवट में मृण्मयी देख्यो के राखाल तो हालवा रो नाम नीं लेवे तो वीं रां मोरां पे एक धमोड़ो मार, लाडी रो घूंघटो उघाड़तां ई ज्यूं आई ज्यूं भतूळया री नांई पाछी भागगी। बैन रो घूंघटो उघड़तो देख राखाल ही ही कर न हँसवा लाग गियो। ई आणंद में मोरां पे पड़्या मुक्का ने ई वो भूल गियो। एड़ा खेल तो व्हेवो ई करता। वां री रम्मतां री एक नजीर ई देणी घणी।

एक दिन कांई व्ही, मृण्मयी रा केस कड़ियां कड़ियां तांई लटक रिया हा, राखाल पाछा तूं आवतां ई ले कतरणी वीं 'रा केस काट दीधा। मृण्मयी ने आई रीस जो राखाल रा हाथ सूं कतरणी खोसतां ई हाथां सूं माथा रा केसां ने कतर कतर राखाल रा मूंडा पे मारवा लागी। घूंघरया घूंघरया केसां रा लच्छा रा लच्छा, डाळी पर सूं दाखां रा झूमकां री नांई धरती पे लटालट पड़वा लागा। यां दोवां रे ई आपस री में यूं ई राड़ झगड़ो चालवो करतो।

पछे वा मून परीक्षा री मैफिल जमी नीं। गाँठड़ी बणी लगी लाडी डील ने घणो दोरो लांबो कर दासी रे सागै मांयने वळगी। अपूर्व घणां ठिमरास सूं मूछयां पे हाथ फेरतो ऊभो व्हियो। वारणा कने जाय न देखे तो नुवा, रोगन सूं पलका करता बूंटा रो पतो नीं। अठी ने वठी ने घणां ई हेरया पण लाधा ई नीं। घरवाळा घणां हैरान व्हिया, चोर रे माथै कड़का करवा लागा, गाळयां रो रीठ लगाय दीधी। घणां हेरया, बूंट नीं लाधा तो छेवट में घरधणी री फाटी चट्टियां पैर पतलून, अचकण पागड़ी सूं सजिया धजिया अपूर्वजी, कादा में चतराई सूं चालता घर गे गैलो लीवो।

तळाव री पाल पे सूना गैला पै पूगतां ई एकणदम वीं ने वा जोर री हँसी सुणीजी। जांणे झाड़ां रा पानां री आड़ में बैठी वनदेवी, अपूर्व री वां कुजोड़ पगरखियां ने देख न हँसवा लागगी व्हे।

अपूर्व लाजा मर न ऊभो रैगियो, अठी ने वठी ने झांकवा लागियो। अतराक मांयने गैरा वन मांयनूं निकळ मृणमयी वीं रा मूंडागे नुवो जोड़ो मेल भागवा लागी। भागती रा अपूर्व दोई हाथां ने पकड़ लीवा। मृण्मयी वांकी डोढी व्हेय हाथ छुडावाने घणां ई ताफड़ा तोड़िया पण एक नीं चाली। घूंघरवाळा केस वीं रा गोलमटोल मूंडा पे विखर रिया, रूंखा रा पत्ता मायनूं छणछण सूरज री किरणां पड़ै ज्यूं केसां मांयनूं व्हेय वीं रा गोळमटोळ मुळकता मूंडा पे किरणां पड़ री ही। गैले चालतो पंथी सूरज किरणां सूं झळमळ करता नंदी रा निरमळ नीर में झुक न पींदो देखतो रै ज्यूं रो ज्यूं अपूर्व मृण्मयी रा

मूंडा पे झुक, वीं री अचपळी आंख्यां में आंख्यां धाल झांक्यो । पछे धीरेकरी मुट्ठी ढीली कर न बंधण में बंधी मृणमयी ने छोड़ दीधी । अपूर्व रीस में आय न ठोकतो तो मृणमयी ने कांई ज अचंभो नी आवतो । पण ई सुणसाण गैला में ईं अजब डंड रो अरथ वा कांई ज नीं समझी ।

नाचती थकी परकरती रा रमझोळां री झम्मक जेड़ी वा हाँसी एकर पाछी आभा में गूंजगी । चिंता में डूबियोड़ो अपूर्व धीमा धीमा पगलिया भरतो घरे वळियो ।

अपूर्व वीं दिन भांत भांत रा आळखा लेय नीं तो घर रे मांयने गियो, नीं मां सूं ई मिलियो । कठा रो ई नूंतो हो जो वठै ई ज जीम आयो । अपूर्व जेड़ो भणियो गुणियो, ठावा सुभाव रो जुवान एक मामूली अणभणी छोरी रे मूंडागै आपरी गयोड़ी इज्जत ने पाछी जमावाने अर आपरो बड़ापणो बतावाने अतरो आगतो क्यूं व्हेगियो, समझ में नीं आवे । रांखड़िया गांम री एक अचपळी छोरी वीं ने मामूली मिनख समझ लीधो तो व्हे कांई गियो ? पैलां तो एक पल सारूं वीं अपूर्व री कौगत कीधी पछे अपूर्व री हस्ती ने ई भूल राखाल जेड़ा अण समझ टाबर रे लारे खेलवा में लागगी तो ईं में अपूर्व रो बिगड़्यो कांई ? यां टाबरां रे आगे वीं ने बतावा री जरूरत ई कांई ही के 'विश्वदीप' जेड़ा म्हीनावार अखबार में वो समालोचना लिखे है । वीं री पेटी रे मांयने ऐसेंस, बूंट, पाती लिखवा रा रंगदार कागज पड़िया है । 'हारमोनियम शिक्षा' पोथी रे लारे एक पूरी त्यार कीधोड़ी प्रेस कापी पड़ी है जो आधी रात रा आभान में झांझरका री नांईं, छपवा री बाट नाळ री है । मन ने समझावणो दोरो व्हे । ईं गांमड़ैल, अचपळी छोरी रे आगे श्री अपूर्वकुमार राय बी० ए० हार मानवा त्यार नीं ।

सांझ रा अपूर्व घर रे मांयने गियो तो मां पूछ्यो, 'लड़की देख आयो कांई ? कसीक है, दाय आई के नीं ?'

अपूर्व थोड़ोसोक सरमावतो बोलियो, 'हाँ, देख आयो । वां मांयली एक लड़की म्हारे दाय आयगी ।'

मां क्यूंक अचंभो कर न बोली, 'कतरीक लड़कियां देखी थें वठै ?' दो चार उत्तर पडूतरां पछे मां ने ठा पड़ी के वीं रां बेटा रे, पड़ोसण सारदा री बेटी मृण्मयी दाय आई है । अतरो भणगुण न या पसंद ।

पैलां तो वो सरमावतो रियो पण मां वीं री पसंद ने बिसरावा लागी तो वीं री सरम अळगी व्हेगी । जिद्द में आय वीं तो अठा तांई केय दीधो के मृणमयी रे सिवा दूजी ने तो म्हूं परणुं ई ज नीं । वीं ने बतायोड़ी काठ री कुंवाड़ियां

जेड़ी लड़की रो ज्यूं ज्यूं खयाल आवतो ज्यूं ज्यूं परणवा सूं मन फाटवा लागतो ।

दो तीन दिनां तांई माँ बेटा एक दूजा सूं अणमणां रिया । मां खावणो, पीवणो, सोवणो तक बंद कर दीधो पण जीत बेटा री ज व्ही । मां आपरा मन ने भोळायो के मृण्मयी ओजूं टाबरी है, वीं री मां री आसंग नीं है । वीं ने भणावा पढावा री । परण घरे आयां पछे वा वीं ने सुधार लेय । धीरे धीरे वीं ने दीखवा लाग गियो के मृण्मयी रो मूंडो ई फूटरो है । पण वीं रा कोजां केसां री याद आवतां ई मन अणमणो व्हेगियो पण पाछो मन ने समझायो के ठीक तरैं सूं जूड़ो बांधिया, आछीं तरैं तेल घालियां या कसर ई सुधारणी आय जावेला ।

आड़ापाड़ा रा सैंग मिनख अपूर्व री इण पसंद ने 'अपूर्व पसंद' केवा लागा । बावळी मृणमयी रा लाड तो घणां जणां करता पण वीं ने आपरा बेटां ने परणावा जोग नीं समझता । मृणमयी रा बाप ईशानचंद्र मजूमदार ने समीचार घाल दीधा । वे एक स्टीमर कंपनी रा अैलकार हा । वे एक नंदी रे किनारे छोटाक टेसण पे टिगट बेचता । पत्तरड़ा छाई लगी ओवरी में माल लदावा रो उतरावा रो काम करता । देस सूं बेटी रा सगपण रा समाचार मिलिया तो दो ई आंख्यां सूं धरधर पांणी पड़वा लागियो । वां आंसूवां में कतरां दुख हो अर कतरो आणंद हो उण रो अंदाजो लगाणो दोरो है ।

बेटी ने परणावा ने ईशानचंद्र बड़ा दफतर में सा'ब कने सीख री अरजी भेजी । सा'ब ईं काम ने मामूली समझ सीख नामंजूर कर दीधी । वां घरे समीचार भेज्या के दसरावा पे एक अठवाड़ा री छुट्टी मिलेला जद व्याव मांडाला ।

अपूर्व री मां पाछो लिखियो, 'ई म्हीना रो सावो आछो है आगे व्याव नीं डिगावूं ।'

दोई कानी सूं अरजियां ना मंजूर व्हेगी तो दुखी बाप कांई नीं बोलियो, हमेसां री नांई माल तोलवा लाग गियो, टिगट बेचवा लाग गियो । बठी ने मृणमयी री मां अर आखा गांम रा दाना वूढा सब जणां मिल मृण्मयी ने नसीतां देवा लागिया आवावाळा दिनां में कांई करणो है । रात दिन सीख लागती रेती । वीं ने अकल देवता के बोलणो नीं रमणां नीं, छोरां रे सागे खेलणो नीं । सांतरो सांतरो नीं चालणो । ही ही करन हंसणो नीं । भूख लागैं तो खावा ने नीं मांगणो । जो देखो जो ई अकल देवतो रैवतो, यो ई मतकर, वो ई मतकर । यूं ईं मत चाल । मनमांनी अंट संट नसीतां कर कर मृण्मयी आगे तो व्याव रो भूत ऊभो कर दीधो ।

खुली फिरियोड़ी मृण्मयी तो जाणियो के बस जुलम कैद री सजा देय रिया

है पछे फांसी पै टांक देय। वा तो खोड़ीली मूंडा जोर रोंड री नांई अड़ न ऊभी रैगी के म्हूं तो नीं परणू, जावो।

[४]

परणणो ई पड़ियो। अबै सिक्षावां लागवा लागी। अपूर्व री मां रे घरे आवतां ई पैलोड़ी रात में ई मृणमयी री सारी दुनियां जांणे कैद में बंद व्हेगी। सासूजी वींदणी ने आंखन में राखवा लागा। वां घणां करड़ा व्हेय न वींनणी ने कियो 'देखो लाडी, थां कोई बोबो चूंघता टाबर नीं हो। म्हारा घर में यो फटोळ पणो चालवा ने नीं है।'

सासू जीं भाव सूं वे वातां कही ही मृणमयी वीं रो असली अरथ नीं समझी। वीं जांणियों यां रा घर में नीं चालै तो कोई दूजी जायगा जावणों पड़ैला।

दुपैरां में वींनणी घर में दीखी नीं। 'वींनणी कठै परी गी, वींनणी कठै परी गी' हेरो पड़ गियो। छेवट में राखाल विस्त्रासघात कर न छिपवा री जायगा बताय वीं ने पकड़ाय दीधी। वा तो बड़ला रे नीचे पड़िया राधाकांतजी रा टूटोड़ा रथ रे नीचे जाय न छिपगी ही।

सासू, मां, पाड़ पाड़ोसणियां, भली चावणियां धाकलवा लागी। वां कतरी धाकली व्हेला, मांजनों पाड़ियो व्हेला जो तो आप ई अंदाजो लगाय लो।

रात ने वादळा खूब चढ़ गिया। झरमर झरमर मेहूलो वरसवा लागियो। अपूर्व धीरे धीरे मृण्मणी रा ढोल्या कनें जाय वीं रा कान नके मूडो ले जाय न बोलियो 'मृणमयी, म्हूं थनें साऊ नीं लागूं कांई ?'

मृणमयी बीजळी री नांई कड़की, 'नीं नीं, म्हनें बिलकुल साऊ नीं लागो।' वीं तो आपरी सगळी भेळी व्हियोड़ी रीस अपूर्व रे माथे काढी।

अपूर्व घणो दुखी व्हेन बोलियो, 'क्यूं, म्हें थारो कांई कसूर कीधो ?' कसूर री वजै वा कांई वतावती। अपूर्व मनोमन धार लीधो के ई बारोठिया व्हियोड़ा मन ने चावे ज्यूं व्हो तात्रे करणो है।

दूजे दिन सासू, वींनणी ने वीफरी लगी देख साळ में घाल ताळो जड़ दीधो। पींजड़ा में फंसियोड़ी चिड़कली री नांई घणी देर तांई वा पांखड़ा फड़फड़ाती री। भागवा ने कठै ई गैलो नीं लाधो तो बिछाणां पे रीस काढ़ी। दांतां सूं फाड़ फाड़ चादर रो चींथड़ो चींथड़ो कर फैंक दीधो। ऊंधे मूंडे धरती पे पड़ बाप री याद कर कर रोवा लागी।

धीरेकरो अपूर्व वीं रे कनैं आय न बैठ गियो, घणां हेत सूं धूळ में भरघा केसां ने गालां पर सूं दूरा करवा लागो। मृण्मयी तो माथा ने झंझोड़ वीं

रा हाथ ने परमो कर दीधो ।

अपूर्व धीरेकरो वीं रा कान कने मूंडो ले जाय न घणा ई ज मिठास सूं बोलियो, 'म्हें छानेकरो आडो खोल दीधो है । चाल, आंपा पछोकड़े वाड़ी में भाग जावां ।'

मृण्मयी जोर सूं रोवती थकी गावड़ झंझेड़ी, 'नीं ।'

अपूर्व वीं री ठोडी ने ऊंची कर न बोलियो, 'देख तो खरी, यो कुण आयो है ।' राखाल मृण्मयी ने धरती पे पड़ी देख चकरायो थको बारणा री डेळी पे ऊभो हो । मृण्मयी तो मूंडो ऊचो ई नीं कीधो, झाटको देय अपूर्व रा हाथ ने अळगो कर दीधो ।

अपूर्व पाछो बोलियो, 'देख तो खरी, राखाल थारे सागै रमवाने आयो है । खेलवा ने नीं जावेला ?'

'नीं ।' मृण्मयी रीस में ई ज बोली ।

राखाल देखियो या तो कांई गड़बड़ है, भाग गियो घर बारणै । अपूर्व छानो मानो बैठियो रियो । मृण्मयी रोवती रोवती थाक न सोयगी तो अपूर्व उठियो आडो जड़ बारणै सांकळ लगाय वठा सूं परो गियो ।

दूजे ई दिन मृण्मयी ने बाप रो कागद मिलियो । बाप आपरी काळजा री कोर बेटी रे व्याव में नीं आवा रा घणां घणां विलाप लिख न बेटी जंमाई ने घणी आसीसां लिखी ।

मृण्मयी सासू कनें जाय न बोली, 'म्हूं तो बापूजी कनें जावूंला ।'

सासू वींनणी री अचाणचकां री अणव्हेणी अरज सुण न धाकल दीधी, 'बाप रो कठै ई ठौड़ ठकाणो ई है के यूं ई बापूजी कने परी जाय । थारी तो तीन लोक सूं ई मुथरा न्यारी है । म्हनें नीं सुंवावे ये अणूंता लाड ।'

वींनणी कांई बोली नीं । ओवरा में जाय मांयतूं आडो जड लीधो अर हींमतहार मिनख री नांई रोवा लागी, भगवान रे हाथ जोड़वा लागी । रोवा लागी बाप ने कर कर याद, 'ओ बापूजी, म्हनें आय न ले जावो रे, अठे म्हारो कोई नीं है रे, म्हूं मर जावूंला रे ।'

घणी रात परी गी, जांणियो के अबे तो परणियो सोयगियो व्हेला । वा उठी छानेकरो आडो खोलियो, बारै निकळगी । यूं तो बादळियां आभा पे छाय री ही पण तो ई गैलो दीखे जतरी चांदणी परी ही । बापूजी कनें जावा रो गैलो कस्यो जो वा जाणै नी । वा तो अतरोक जांणती ही के जी गैने डाक ले जावणियां डाकिया जावै है वीं गैला सूं दुनियां में कठै ई परा जावो । मृण्मयी तो डाकवाळां रो गैलो पकड़ लीधो । कांकड़ में एक दो पंखेरू पांखड़ा फड़फड़ाय न बोलवा

वाळा हा पण वगत री पक्की ठा नीं पड़वा सूं बोलिया नीं दीखता हा। वीं वेळा रा मृण्मयी गैलो खतम व्हेतो हो वठे नंदी रे किनारे जाय पूगी। चौवटो सो दीखियो। वा मन में सोच री ही के अबै कठी ने जावूं अतराक में तो जांणी पिछाणी 'झमझम' री अवाज सुणी। थोड़ी देर में तो कांधा पे डाक रो थैलो लटकायां हांकतो लगो डाक रो हलकारो आय गियो।

मृण्मयी आगती थकी वीं रे कने जाय न दया आय जावे एड़ा साद में बोली,'म्हनें म्हारा बापू कनें कुसीगंज जावणो है, थां म्हने साथै लेता जावो नीं?' हलकारो बोलियो, 'म्हूं नीं जाणूं कुसीगंज कठै है।' दो टप्पा जुवाब देतां ई वो तो घाटा पै परोगियो। घाटा पै बांधियोड़ी डाक री नाव पै बैठ न नावड़िया ने जगाय नाव खोलाई। वीं वेळा वीं ने पूछवा ताळवा री के कीं पै ई दया बतावा री फुरसत थोड़ी ही।

देखतां देखतां जगेरो व्हेगियो, चोवटा में बजार में मिनखां रो हेरो फ़ेरो व्हेगियो। मृण्मयी घाटां पै जाय न एक नावड़िया ने पूछियो, 'म्हनें कुसीगंज ले चालोना।

नावड़ियो कांई बोले जठां पैलां तो पासे पड़ियोड़ी नाव में बैठिये थके कोई पूछियो, 'अरे, कुण? मीनूं बेटी, थूं अठै कस्यां आई?'

मृण्मयी घणी ज आगती व्हे न बोली, 'बनमाळी, म्हूं बापूजी कनें कुसीगंज जावूंला, थूं म्हनें थारी नाव पे ले चाल।'

वनमाळी वीं रा ई ज गांम रो नावड़ियो हो। वो ईं उछांछळा सुभाव री छोरी ने भली भांत ओळखतो हो। वीं कहियो 'बापू कने जावेला के? चाल म्हूं थनें पूगाय दूं।

मृण्मयी नाव पे चढ़ गी। नावड़िये नाव छोड़ दीधी। बादळा चढ़ रिया बरखा री टूक पड़वा लागी। सावण भादवा री नांई ढावापूर चढ़ियोड़ी नंदी उछाळा खाय खाय नावड़ा ने झंझेड़वा लागी। मृणमयी रो आखो डील थकैला सूं अर नींद सूं भांगवा लागो, आंख्यां नींद रा बोझा सूं नमगो। वा तो पल्लो बिछाय नाव में पड़गी। पड़तांई वा उछांछळी चाळागारी छोरी, सोयगी। नंदी हींड़ा देयरी ही अर वा परकरती री गोद में लाड सूं उछेरिया थका स्यांगा टाबर री नांई निसंक व्हेय सोयगी।

आंख्यां उघड़ी तो देखे सासरा रा घर में माचा पै पड़ी है। वीं ने जागती देखी तो डावड़ी बड़बड़ करवा लागी। वीं रो बड़बड़ावणो सुणतांई सासू ई आय ऊभी री अर लपूका जीमावा लागी। मृणमयी आंख्यां फाड़ियां छानी मानी सासू रो मूंडो देखती री। सासू तो सुणावा सुणावती मृणमयी री पीढियां भांड़वा

लागी, बाप पे जाय पूगी तो मृण्मयी तो झट देणी री ओवरी में जाय मांयनूं सांकळ जड़ दीधी। अपूर्व लाज सरम ने अळगी कर मां कने जाय कहियो, 'मां दो चार दिनां सारू' वीनणी ने पीयर भेजे दे नीं आघी।'

सुणतांई मां अपूर्व पे मोहरो कर दीधो। काळजा लूवा लागी, 'लायो है कजाणा कस्या ई ओदबायरा घर री। म्हारी छाती छोलावा ने, लोही पावा ने ये हेर सोध न लाडीजी ले न पधारिया है। म्हारे घर सारू' ई ज या कठै बैठी बळी ही। एड़ी लुगाई विना रंडवो ई चोखो रे।'

[५]

वीं दिन आखो दिन घर रे बारे वादळा टबूकता रिया, घर रे मांयने आंखियां टबूकती री।

दूजे दिन भरआधी रात रा अपूर्व धीरेकरी मृण्मयी ने जगाय बोलियो, 'मृणमयी, बापूजी कने जावे ?'

मृण्मयी चमक न झट देणी री अपूर्व री हाथ दबाय न ऐसान भरिया साद सूं बोली, 'हाँ, जावूं।'

अपूर्व धीरेकरो बोलियो, 'तो चाल, आंपा दोई जणां छानेकरा भाग जावां। घाटा पे नाव त्यार कर न आयो हूं।'

मृण्मयी घणी ज ऐसानभरी निजर सूं परणिया कानी चोघी, पछे झट देणी रा गाबा पैर चालवा ने त्यार व्हेगी। अपूर्व जांणियो पाछी तूं मां सोच करेला एक कागद मांड न मेल दीधो। दोई जणां चाल पड़िया।

मृण्मयी वीं अंधारी रात में गांम रा सूना पड़िया गैला में पैली दांण मन सूं, अंतस सूं अर भरोसा सूं परणिया रो हाथ पकड़ियो। हीवड़ा रा वेग भरिया परस सूं परणिया री नसां में ई झणझणाटो फूट गियो।

नाव वीं वगत चालगी, मृणमयी ने नींद ई झट आयगी।

दूजे दिन कस्यो आणंद हो, कसी आजादी ही। दोई आडी ने कतरा ई बजार गैला में दीखिया, घणां ई खेत दीखिया। दोई आडी ने नावां आयरी ही जायरी ही,। मृणमयी गैला में छोटी छोटी वातां परणियां ने पूछती जाय री।' 'वीं नाव पे कांई है' ये कठा सूं आयरिया है' ई 'जगां रो कांई नाम है।' एड़ा एड़ा सवाल कर री ही के अपूर्व ने आज तांई कॉलेज री पोथियां में कदै ई पढणे रो काम ई नीं पड़ियो। अपूर्व ई एक एक सवाल रो एक एक जवाब दीधो, जांणता र अणजांणता पडूत्तर वो देवतो गियो। तिल री नाव ने सरसूं री वताय रियो, पांच वेड़ा गांम रो नाम रायनगर वताय रियो। मुंसफी री कचैड़ी ने ठाकरां री कचैड़ी वतावतां झझकियो ई नीं। मजो यो के ये गोळमोळ पडूत्तर सवाल करवा

वींळा रा मन में जमता जाय रिया।

दूजे दिन संझ्या रा नाव कुसीगंज पूगी।

पत्तरड़ा छायोड़ी एक सूगली लालटैण वाळ नान्हींक डेस्क माथै चामड़ा री जिल्द वाळो चौपन्योमेल, उघाड़ा पुघाड़ा वैंठ्या ईशानचंद्रजी हिसाव मांड रिया। गुंवा परणिया वींद वींदणी झूंपड़ा में पधारिया।

मृण्मयी हेलो पाड़ियो, 'बापूजी।'

वीं झूंपड़ा में आज तांई गळा रो एडो साद कदैई नीं सुणवा में आयो हो।

आणंद अर मोह सूं ईसान री आंख्यां सूं टव टव आंसूडा टवकण लागिया। वेटी जंमाई जांणे मुलक रा कंवर कंवराणी है अवै यां पटसण री गांठां बीचै वांरे गादी कठै लगावे, यो विचार करतां करतां वीं री भटकियोड़ी अकल ओर वत्ती भटक गी। जीमावा चूंठावा रो कांई करे, ईं री चिंता ओर सिवाय लागगी। वापड़ो गरीव कामेती हाय सूं रोटी ठेक खाय लेवतो। पण आज मूंघा पांवणा री मनवार कांई करे।

मृण्मयी बोली, 'बापूजी, आज आपां सैंग जणां मिल न रसोई वणावां।' या वात अपूर्व ने घणी ज दाय आई। वीं छोटाक झूंपड़ा में जगा रो टोटो नीं हो। टोटो हो मिनखां रो, अन्नदेव रो। छोटा वेचका मांयतूं पांणी रो फुंवारो चौगणा वेग सूं छूटे ज्यूं ईशान री गरीवी रा सांकड़ा वेचका मांयतूं आंणद रा फुंवारा जोर सूं छूटवा लागा।

यूं करता तीन दिन निकळ गिया। दिन में दो दांण वगत पे जहाज आय न किनारे लागतो, पंथी आवता जावता, हाको हल्लो व्हेतो। सांझ व्हेतां व्हेतां नंदी किनारा रो हाको हड़वड़ सव मिट जावतो तो अपूर्व ने घणो खुलो खुलो लागतो, आजादी दीखती। तीनूं जणा मिल न रसोई करता, भूलता चूकता जावता कांई तो वणावता न कांई वण जावतो। खणखण करती चूड़ियांवाळा हाथां सूं मृण्मयी जीमण पुरसती, सुसरा जमाई साथे वैठ न जीमता। मृण्मयी ने काम करणो नीं आवतो जो वीं री हंसी करता जावता। वा पाछी टावरां री नांई लड़ती झगड़ती आपरा काम रा वखाण करती। सगळां ने घणो मजो आवतो।

अपूर्व जावा री सीख मांगी। मृण्मयी गळगळी व्हेय थोड़ाक दिन और रैवा री अरदास करवा लागी पण ईशान वोलियो के नीं, अवै घरे जावणो चावै।

सीख देवती वेळा ईशान वेटी ने छाती रे लगाय माथा पै हाथ फेर, आंख्यां में आंसू भरिया थकां वेटी ने आसीस दीधी, सीखामण दीधी, 'वेटा, सासरा में जाय चानणो करजे, लिछमी वण न रैवजे। कोई काम एड़ो मत करजे के म्हारा मीनू वेटा में कोई वांक काढै।'

मृण्मयी रोवती रोवती परणिया रे लारे व्हेगी । ईशान वींज टेण पड़ियोड़ी झूंपड़ी में पाछो घाणी रा बळद री नांई कांम में लाग गियो ।

[६]

दोई कसूरवारां री जुगलजोड़ी पाछी घरे आई तो मां किण सूं ई बोली नीं । मूंडो चढ़ायां बैठी री । मां दोवां मायनूं कीं रे ई माथे कोई दोस नीं लगायो, कीं रो ई कोई वांक नीं काढ़ियो जो वां ने सफाई देवा री जरूरत ई नीं पड़ी । दोई आडी ने मून चाल रियो, मन में करड़ा व्हेयरिया ।

छेवट में अपूर्व ने मून तोड़णो पड़ियो, 'मां कालेज खुल गियो । अबे म्हनें कानून भणवा ने जावणो है ।'

चित्त भंग व्हियां थकी मां बोली, 'बींनणी रो कांई करेला ?'

'अठै ई रैवा दे ।'

'नीं, बेटा, म्हारै नीं राखणी । थां थांके लारे ई लियां जावो ।'

यूं मां हमेसा अपूर्व ने 'थूं' कैय न बतळावती ।

अपूर्व ई ऐकार भरियो बोलियो, 'अच्छा ।'

कलकत्ता जावा री त्यारियां व्हेवा लागी । जावा रे एक दिन पैलां रात रा अपूर्व सोवा ने साळ में गियो तो देखे मृण्मयी बिछाणां पे पड़ी रोय री है ।

अपूर्व ने अबखाई आई, दुखी व्हेन बोलियो, 'मृणमयी म्हारे लारे कलकत्ता आवा रो थारो जीव नीं करे ?'

'नीं ।'

'म्हूं थने आच्छो नीं लागूं ?

ई सवाल रो कांई जुवाब नीं मिलियो । यूं देखो तो एड़ा सवाल रो जबाब देणो घणो सोरो व्हेवो करे । पण कदी कदी मन री गुत्थी एडी उळझियोड़ी व्हे के छोरियां सूं ई रो वाजिब जबाब देवणो दोरो व्हे जावे । अपूर्व पूछियो, 'राखाल ने छोड़ न थारो जीव अठासूं जावा रो नीं करे ?'

मृण्मयी घणी सोरी बोलगी, 'हां ।'

ई बी. ए. तांई भणियोड़ा विदवान जुवान रा मन में टाबर राखाल सांरूं ईसको जाग गियो । बोलियो, 'म्हूं घणां दिनां तांई पाछो घरे नीं आवूं ला ।' मृण्मयी ने ई वारे में कांई कैवणो ई नीं हो । अपूर्व पाछो बोलियो, 'दो ढाई वरस सूं वत्ता लाग जाय म्हनें वठे ।'

मृण्मयी हुक्म दीधो, 'पाछा आवो जदी राखाल सारूं तीन फळांवाळो चकू लेता आवजो ।'

अपूर्व डोडो व्हेयरियो हो, बैठो व्हेन बोलियो, 'तो अठे ई रेवेला ?'

मृण्मयी बोली, 'हां, मां कने रेवूं'ला ।'

अपूर्व वीरेकरो एक लांबी सांस ले बोलियो, 'आच्छी वात, वठे ई रैवजे । पण सुण, जठा तांई आगे व्हेन म्हनें आवा ने कागद नी भेजेला ज तरे म्हूं नीं आवूं'ला । अबे तो राजी व्हेगी के?'

मृण्मयी ईं वात रो जुबाव देवणो फिजूल समझ न सोवा लागी । पण अपूर्व ने नींद नीं आई । तकियो ऊंचो कर वीं रे भड़ो लगायां बैठियो रियो ।

सुवै वेगा अपूर्व मृण्मयी ने जगाय दीवी । कहियो, 'म्हारे जावा री वगत व्हेयगी । चाल, म्हूं थनें थारी मां रे अठै पूगाय दूं ।'

मृण्मयी बिछाणा सूं झट फट देगी री चानवा ने त्यार व्हेगी । अपूर्व वीं रा दोई हाथ पकड़ न बोलियो, 'म्हारी एक वात मानेला । देख, म्हूं थारे कतरी दांण आडो आयो हूं । आज परदेस जावती वेळा थूं म्हनें एक ईनाम देवेला?'

मृण्मयी अचरज सूं पूछियो, 'कांई?'

'थूं थारा चित मन सूं म्हने एक प्यारियो दे ।'

अपूर्व री ईं अजब अरज ने सुण, वीं रो ठावो मूंडो देख मृण्मयी हंसवा लागी । पछे घणी दोरी हंसी रोक न प्यारियो देवा ने आगे पांवड़ो भरियो । अपूर्व रा मूंडा कने मूंडो लेजावतां लेजावतां वो वीं सूं नीं रैवणी आयो ही ही करन हंसवा लागगी । अपूर्व कांई करतो, थाकलवा रे मिस वीं रा कान री लोळ ने पकड़ न हिलाय दीवी ।

अपूर्व वींरा मन में करड़ी आखड़ी लेय राखी ही के वो लूट न के धाड़ो पाड़ न कांई नीं लेवेला । खोस न खावा में आपरी हेटी समझतो । वो तो चावतो हो के देवता री नांई भाव भगती सूं भेंट करियोड़ी वसत ने अंगीकारे हाथ उठाय न तो वो लेवणो नीं चावतो ।

मृण्मयी पछे नी हंसी । परभात रा पौहर में, अपूर्व सूना गेला सूं वीं ने वीं री मां कने पूगाय आयो । पाछो घरे आय मां ने कहियो, 'मां, म्हें खूब सोची विचारी बीनणी ने सागे कलकत्तै लेगियां म्हारी पढ़ाई में हरजानो व्हे । थां थांरा कने राखणो चावो नीं जो वीं ने वीं री मां कने छोड़ आयो हूं ।

मन में ऐंकार भरिया मां बेटा यूं बिछड़िया ।

[७]

पीयर आयां मृण्मयी ने लागवा लागियो के अठे तो वीं रो अबै जीव ई नीं लागे । जांणै वो घर ई आखो और व्हेगियो, पैलावाळी कांई वात ई ज नीं री । वगत काटियां नीं कटतो । कांई करे, कठै जावे, किसूं वात करे, बैठी

अगताय जावती ।

मृण्मयी ने यूं लागवा लागियो जांणे घर में, गांम में कोई मिनख ई नीं है, भरी दुपैरी में सूरजग्रेण व्हेगियो व्हे । वीं रा सूं समझणी ज नीं आयो के आज वीं रो मन कलकत्ता जावा ने अंतरो फड़फड़ाय रियो है,, काले वीं रे कांई व्हेगियो हो । काल तांई वीं ने खबर नीं है के जां चीजां ने छोड़ न कलकत्ते जावणो वीं ने अतरो अबखो लाग रियो हो, वां चीजां में आज कांई सुवाद ई नीं रैवेला । डाळी पर सूं पाकियोड़ा पानां ने रूंख आप सूं डाळ हेटे फैंक देवे ज्यूं पैलांवाली रैवणी ने मृण्मयी आज आपरा मन सूं दूरी फैंक दीधी ।

जूनी कैणियां में सुणवो करता हा के पैलां रा चतर कारीगर एड़ी पतळी तरवार वणावता के कोई आदमी रे झाटको मारियां दो ढोल व्हे जाता पण खबर नीं पड़ती के कट गियो है । वीं ने हिलावता जदी दोई वटका न्यारा जाय पड़ता । वेमाता री तरवार ई एड़ीज पातळी अर धारवाळी है । वीं कजांणा किं वगत मृण्मयी रे टाबरपणां रे अर जवानी रे वीचे वार कीधो । वीं ने ठा नीं पड़ी । आज थोड़ोसो टल्लो लागतां ई वीं रो टाबर पणो, जुवानी सूं खिर ने अळगो जाय पड़ियो । वा अचंभागत देखती रैयगी ।

पीयर री वा पैलांवाळी ओवरी वीं ने अबै वीं री नीं लागती । जो मृण्मयी वठै रैवती अबै खबर पड़ी के वा वठै नीं री । अबै तो हिवड़ो एक दूजा घर में, दूजा ओवरा में, कोई दूजा ढोलिया रे आड़ेपाड़े ई ज भमतो रैवतो । मृण्मयी अबै बारे निजर नीं आवती । अबै वीं री हँसवा री आवाज ई बारे सुणवा में नी आवती । राखाल वीं ने देख न भौ मानवा लागगियो । रमवा कूदवा रीं वात तो अबै वीं रा मन में ई नीं आवती ।

मृण्मयी, मां ने कहियो 'मां, म्हनें सासरे ले चाल ।'

वठी ने कलकत्ता जावती वेळा बेटा रो उतरियो थको मूंडो चींतार चींतार मां री छाती में होळ्यां ऊठ री ही । रीस में आय वो वींनणी ने पीयर मेल आयो हो जो वीं री छाती में साल रियो हो ।

एक दिन घूंघटो काढ न, वीनणी वण न मृण्मयी घरे आय ऊभी री । मूंडो उतर रियो हो, आय सासू रे पगां लागी । सासू री आंख्या जळजळी व्हेगी, वीनणी ने छाती रे लगाय लीधी ।

एक छिन में दोवां रे ई हेत व्हेगिया । बहू रो मूंडो देख न तो सासूं अचंभा में ई रेयगी । अबै वा पैलांवाळी मृण्मयी री ज नीं । थोड़ाक मिनख ई ज एकणदम यूं बदलिया व्हेला । सासू मन में सोच री ही के धीरे धीरे वींनणी ने गैले घाल लूंला । पण वींनणी तो एकणदम गैले घली लगी घरे आई, जांणे नुवो जमारो

लीधो व्हे ।

अबै सासू वींनगी ने समभगी, वींनणी सासू ने समभगी । गोड़ रे लारे लारे डाळा पानड़ा जुड़ियोड़ा व्हे ज्यूं सासू वींनणी मिल घर ने एक अखंड वणाय लीधो ।

मृणमयी री सारी देही में, हिड़दा में, आतमा में, नस नस में लुगाईपणो छायगियो । वो नारीपणो अबै वीं ने पीड़ा देवा लागो । आसाढ रा काळा अर पांणी सूं भरिया वादळा री नाईं हिवड़ो भरियो रे । वीं री केरी री फांक जेड़ी आंखियां में हिवड़ा में छाया वादळां री छाया ओर ई गेरी गेरी दीखवा लागी । वा मनोमन, आपरा मन वसिया ने ओळभा देवती, म्हूं तो नादान ही पण थां तो नादान नीं हा । थां म्हनें म्हारी गलतियां पे डंड क्यूं नीं दीधो ? थां थांरी मरजी पे म्हनें क्यूं नीं चलाई ? म्हूं पांपण थांरे सागै कलकत्ता जावा ने नटगी तो थां मांढाणो क्यूं नीं म्हनें साथे ले गिया ? थां म्हारी वातां मानीज क्यूं ? क्यूं म्हारी जिद्दां पूरी करता गिया ?'

पछे वीं ने वो दिन चीतां आयो पैलापैल सुनसान गैला में अपूर्व वीं ने पकड़ कैद कर राखी पण मूंडा सूं कांई कहियो नीं, खाली मूंडो देखतो रियो । वीं ने वीं दिन री तळाव री, गैला री, रूंख रे नीचे छाया री, परभात रा सोनेरी तावड़ा री याद आई । लारे री लारे याद आई अपूर्व कसी निजर सूं वीं कानी झांकियो हो, आज अचांणचक रा वीं निजर रो अरथ वा समझगी । पछे रवानगी रे दिन वीं रा मूंडा तांई मूंडो ले जायन पाछो मूंडो कर लीधो जो याद आयो अबै वो अधूरो प्यारियो, तिरसाया हिरण री नांई मगतिसणा रे लारे भागवा लागो पण तिरस नी मिटी । अबै वा यां ई ज वातां में डूबी रे, बीं वगत यूं कर लीधो व्हेतो, यूं जुवाव देय दीधो व्हेतो ।

अपूर्व रा मन में घणो दुख हो के मृण्मयी वीं ने समभी नीं । आज मृणमयी सोच री ही के वां म्हनें कांई जांणी व्हेला, कांई सोचता व्हेला । वां जाणी व्हेला के उछांछळी, चरपरी, गंवार छोरी है, वां रा थलाथल हेत सूं भरिया सरोवर सूं प्रेम प्यास बुझावावाळी लुगाई वां म्हनें नीं समझी । वीं ने पछतावो आयरियो, लाज सूं धरती में गड़ी जाय री है । अपूर्व लाड करतो वो रिण वीं रा तकिया रा लाड कर कर न उतरवा लागी । यूं घणां दिन बीत गिया ।

अपूर्व जावती वेळा कैय गियो हो के, 'जठा तांई आगे व्हे नीं लिखेला जतरे म्हूं घरे नीं आवूंला ।' मृण्मयी वीं वात ने याद कर एक दिन साळ रो आडो जड़ कागद मांडवा लागी । अपूर्व वीं ने सुनैरी किनारा रा कागद देय गियो हो, वां ने काढिया । अबै सोचवा लागी कांई लिखे । घणी चतराई सूं

जमाय कागद मांडवा लागी। वांकी डोडी ओळां मांडी, आंगलियां स्याई सूं लींगयगी, नान्हा नान्हा आखर मांडिया, ऊपरे वतळावण रो कांई नाम नीं लिखियो। मांडता ई यूं मांडियो, 'थां कागद क्यूं नीं लिखो? थां किस तरै हो? घरे झट आय जावो।' अवै और कांई लिखे जो सार वातां ही वे तो सगळी मांड दीधी। मिनख सुभाव री आदत व्हे असल में वात व्हे जिने वधाय न कैवा री। मृण्मयी ने ई कागद फीको लागियो। वीं सोच विचार दो चार ओळां और वधाय दीधी, 'अवै म्हनैं कागद देवजो, थां किस तरै रेवो जो लिखजो। घरे आवजो। मां राजी है, विसू पुत्ती राजी है। काले आंपा री गाय रे केरड़ो व्हियो।'

अतरो लिख कागद खतम कीधो। कागद ने खाम कीवो, एक एक आखर पे हिवड़ा रा हेत ने ऊंवावती लिखियो 'श्री अपूर्वकुमार वावू।' प्रेम भलां ई आखा ई हिवड़ा रो ऊंचो कर दीधो पण ओळां वांकी ज री, आखर रूपाळा नीं आया, काना मात री गलतियां रैयगी। लिफाफा पे नाम रे सिवा कांई नीं लिखियो। वा जाणती नीं ही के और ई कांई मांडणो पड़ै। कठै सासू के और कोई दूजी जणी देख नीं ले डरपती थकी भरोसा री डावड़ी सागे डाक में न्हकाय दीधो। वीं कागद रो जवाव आवणो ई नीं हो, नीं अपूर्व घरे आयो।

मां देखियो कानेज ई वंद व्हेगियो अपूर्व घरे नीं आयो। ओजूं ई रीस सीळी नीं पड़ी दीखे मृण्मयी जांणगी के परणियो वेराजी है। अवै कागद मांडियो, जीं ने याद कर न लाजां मरवा लागी। वीं कागद में तो वीं सूं कांई लिखणी नीं आयो, मनड़ा री कांई वात कैवणी नीं आई। कागद ने वांच न साम्हा वे वीं री हँसी करता व्हेला। वा तो तीर सूं विंधियोड़ा पराणी री नांई मन में तड़फवा लागी।

डावड़ी ने कतरी दांण पूछ लीधो, 'थैं वीं लिफाफा ने डाक में न्हाक तो दीधो हो?'

वा घड़ी घड़ी रो भरोसो देवावती, 'हाँ, लाडीसा, म्हारा हाथ सूं वंवा में घालियो।' वावूजी कनैं पूग गियो व्हेला।'

अपूर्व री मां एक दिन वींनणी ने कहियो, 'लाडी अपू घरे नीं आयो। जीव करे कलकते जाय न वीं सूं मिल आवूं। थैं ई साथे चालोला?' मृण्मयी माथो हिलाय हूंकारो भरियो। आपरी साळ में आय आडो अड़काय विछाणा पे पड़गी। तकिया ने छाती रे लगाय, लोट लोट, हँस हँस मन रा वोझा ने हळको करवा लागी। पछै ठिमरास सूं वैठगी, उदास व्हेगी, भांत भांत री संका कर रोवा लागी।

अपूर्व ने समीचार दीधां विना ई दोई तपता काळजा सूं कलकत्ते चाली

अपूर्व ने राजी करवाने मनावा ने।

कलकत्ते जाय अ र्व री मां आपरा जंमाई रे घरे उतरी।

वीं ज दिन संझ्या रा मृण्मयी रा कागद आवा री भरोसो छोड़ अपूर्व कागद मांडवा बैठियो। कोई तो लफ्ज वीं ने जच नीं रियो हो। वो एड़ो संबोधन हेर रियो हो के जीं में प्रीत तो भरी व्हे पण सागे अभेमान ई पूरो झलके। एड़ो लफ्ज नीं लाधो तो वीं ने आपरी मातृभासा पे रीस आई। अतराक में तो बेनोईजी रो रुक्को आयो के 'थांरी मां आया, झट आय न मिलजो। सांझ रा अठे ई ज जीमजो।' समीचार भलां व्हेतां ई वीं रा मन में खोटा वेम उठिया, झट देणी रो बेनोईजी रे घरे चालियो।

मिलतां ई मांने पूछियो, 'मां, घरे सब राजी खुसी है ?'

'हां, बेटा, सब राजी खुसी है। छुट्टिया में थूं घरे नीं आयो जो म्हारो मन मानियो नीं। थनें लेवाने आई हूं।'

'थें फिजूल क्यूं फोड़ा देखिया। म्हनें कानून रो इमतिहान देवणो हो……।' असी घणी वातां कैय दीवी।

जीमती वेळा बैन पूछियो, 'दादा, थां आया जदी भाभी ने साथे क्यूं नीं लाया ? वठे ई ज क्यूं छोड़ आया ?'

भाई बड़ा ठिमरास सूं बोलियो, 'कानून री पढाई ही………' वगैरा वगैरा।

बैनोई हंस न बोलियो, 'ये सैंग वातां झूठी। असल में म्हारा सूं डरपता वां ने नीं लाया।

बैन बोली, 'होई ज अस्या के डरपणी आवे। छोटा मोटा टावर देख ले तो डरप न ताव चढ जावे।'

यूं रोळ मसखरी करवा लागा। अपूर्व उदास ई बैठियो रियो। कोई वात वीं ने सुंवाय नीं री ही। वो सोच रियो हो के मां अठे आई तो मृण्मयी ने लारे ले आवती तो कांई व्हे जातो। कदाच वीं कहियो ई व्हेला लारे आवा ने तो वा बावळी छोरी नटगी व्हेला। कांण मुनाहिजा सूं मां ने पूछणी नीं आयो। संसार री अर मिनख री रचना वीं ने फिजूल लागवा लागी।

बैन बोली, 'दादा अठे ई सोय जावो।'

'नीं म्हारे काम है, म्हनें जावा दे।'

बैनोई बोलिया, 'रात ने एड़ो कांई काम है थांरे। एक रात रंय जावो तो व्हे कांई ? थां ने अवार जाय न कठे ई हाजरी थोड़ी मंडावणी है।'

घणो कहियो काजियो तो मन नीं व्हेतां ई अपूर्व वठे सोवा ने राजी

व्हे गियो। बैन बोली, 'दादा, थां थाकिया थाकिया लागो, जावो सोय जावो।'

अपूर्व या ई ज चावतो के अंधारा में अकेलो जाय पड़ रैवे। वीं ने बोलणो ई नीं सुंवाय रियो हो।

सोवा ने जीं कमरा में गियो वीं में अंधारो व्हेय रियो हो। बैन बोली, 'दीवो वायरा सूं बुझ गियो दीखे, दूजो लेय आवूं।'

अपूर्व नट गियो, 'रेवादे, दीवो बळतो राख न म्हारी सोवा री बांण कोयनीं।' बैन परीगी। अपूर्व ढोलिया कानी पग दीधा। ढोलिया पे बेठवा वाळो ई ज हो के चूड़ियां बाजी, सागे ई कंवळी कंवळी बांहिया वीं ने बाथ में भर लीधो। फूलां जेड़ा नाजक होठ वीं रे मूंडा रे आय लागिया। अपूर्व एकर तो चमकियो पछे समझियो के घणां दिनां पेलां जो काम हंस देवा सूं अधूरो रैगियो वो आज संपूरण व्हेय रियो है।

•